श्री

प्रतिष्ठा प्रकाश

पुस्तक को छपी मूल्य पर ही खरीदें।

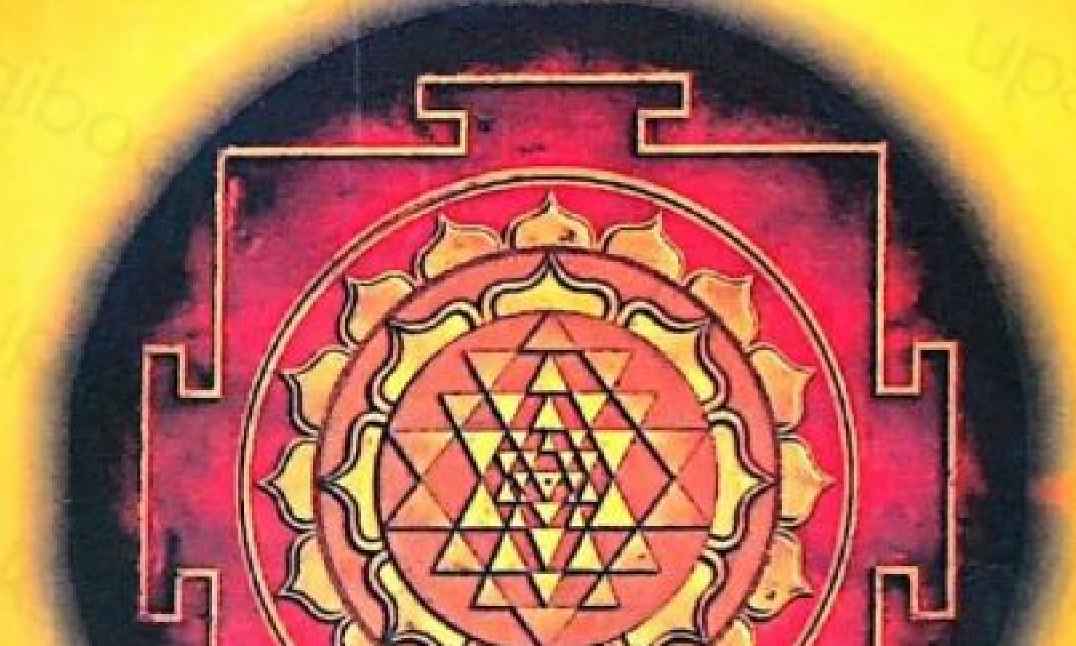

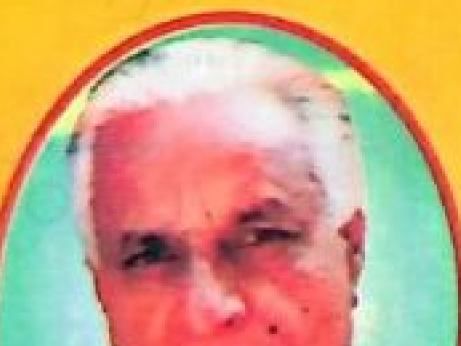

श्रीधर शास्त्री
पण्डित परिषद्, प्रयाग

शास्त्री प्रकाशन, प्रयाग,
१८७, बहादुरगंज, प्रयागराज,
०९४१५३६५७५९, ०९४५३७०८१११

upayogibooks.com

Guru Parampara
Spiritual Archive of Guru Parampara
GET IT ON
Google Play
गुरु परम्परा
गणेश जन्म कथा
कैसे बने प्रथम पूज्य?
POWERED BY:- GURU PARAMPARA
१८ आषाढ, २०८२, बुधवार
02 JUL 2025
Kathmandu
आषाढ, शुक्ल, सप्तमी
05:11:59
19:03:38
कर्मकाण्ड
अन्त्यकर्म/ श्राद्ध
षोडश संस्कार
महापुराणम्
पुराणोपनिषद्
उपयोगी कथा
गुरु परम्परा
संगीत/अडियो
विडियो
पुस्तकें
ज्योतिष

प्रतिष्ठा प्रकाश

⊙

श्रीधर शास्त्री, महामंत्री

पंडित परिषद्, प्रयाग

शास्त्री प्रकाशन, प्रयाग

१८९ बहादुरगंज, इलाहाबाद

मूल्य १५०.००

संस्करण : २०२४

upayogibooks.com

(क) प्राप्त पद्धतियों में

- देव प्रतिष्ठा सम्बन्धी पद्धतियों में शिल्पी मूर्त्तिकार के घर जाकर पूजा-अर्चा-हवन आदि कर्म सम्पूर्ण कर मूर्त्ति बनाने तथा लाने की प्रक्रिया लिखी है।

- पद्धतियों में कई स्थलों पर शिल्पी के पूजन की विधि लिखी है, किन्तु आज कल बनी-बनायी मूर्त्ति खरीद कर लाई जाती है, अथवा आदेश देकर मूर्त्ति बनवाई जाती है, मूल्य देकर मूर्त्ति ले ली जाती है, अतः शिल्पी मूर्त्तिकार के घर पर करने वाली पूजा-अर्चा-हवन आदि की विधि-प्रक्रिया इस पद्धति में नहीं दे रहा हूँ।

- प्राप्त पद्धतियों में पर्याप्त विभेद मिलता है। मन्त्रों में भेद, प्रक्रिया में भेद, कुछ लोकाचार भी है। एक ही देवता के लिए एक ही कार्य के लिए किसी ने कोई मन्त्र दिया है, किसी ने दूसरा मन्त्र दिया है। यद्यपि दोनों मन्त्र सही हैं, फिर भी कठिनाई होती है। मैंने प्रयत्न किया है, कि यह कठिनाई दूर हो सके, यथा शक्ति मैंने दूसरा मन्त्र टिप्पणी में दे दिया है।

(ख) प्रतिष्ठा प्रकाश

- मूर्त्ति प्रतिष्ठा की विधि मुख्यतः अग्नि पुराण में वर्णित है।
- मत्स्य आदि अन्य पुराणों में भी देव प्रतिष्ठा विधि का उल्लेख है।
- देव प्रतिष्ठा कर्म सात दिन, पांच दिन, तीन दिन, एक दिन में अपनी शक्ति और सुविधानुसार किया जा सकता है—यह उल्लेख धर्मशास्त्रों में किया गया है।
- मूर्त्ति प्रतिष्ठा २ प्रकार की होती है १. चर [चल] प्रतिष्ठा—इसमें मूर्त्तियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। २. अचल [स्थिर] प्रतिष्ठा—इसमें मूर्त्ति को हटाया नहीं जा सकता है।
- मूर्त्तियां—मिट्टी, लकड़ी, लोहा, रत्न, पत्थर, चंदन आदि की बनायी जा सकती है, यह अग्निपुराण के ४३वें अध्याय में वर्णित है।
- मूर्त्तियों की अचल प्रतिष्ठा के लिए मन्दिर [प्रासाद] बनवाना चाहिए।
- मन्दिर किसी नदी-तालाब या कुआं के पूर्व-उत्तर या पश्चिम की ओर होना चाहिए।
- मन्दिर यदि गांव के बीच में हो तो उसका द्वार पश्चिम की ओर रखे।
- गांव के पूर्व में मन्दिर बनवाने पर भी मन्दिर का द्वार पश्चिम की ओर रखे।
- यदि गांव के किसी कोण में मन्दिर बनवाया जाय तो मन्दिर का द्वार गांव की ओर रहे।
- गांव से दक्षिण या उत्तर या पश्चिम दिशा में मन्दिर बनवाया जाय तो मन्दिर का द्वार पूर्व की ओर रखे—इसका विस्तृत वर्णन अग्निपुराण में किया गया है।

- ⊙ अग्निपुराण के ३९वें अध्याय में लिखा है कि देवताओं को नगराभिमुख स्थापित करे, नगर-गांव की ओर उनका पृष्ठ भाग नहीं रहे ।
- ⊙ ब्रह्माजी का मन्दिर नगर-गांव के मध्य में ही बनवाना चाहिए
- ⊙ चण्डी, महेश का मन्दिर नगर-गांव के ईशान कोण में बनवाना चाहिए
- ⊙ विष्णु का मन्दिर सभी ओर बनवाया जा सकता है ।
- ⊙ वह सभी नियम सार्वजनिक मन्दिर के लिए हैं यदि कोई विशिष्ट व्यक्ति निजी रूप में मन्दिर बनवाता है तो नगर-गांव से तात्पर्य उसके निवास स्थान से लेना चाहिए
- ⊙ घर में ६ अंगुल से १२ अंगुल तक की मूर्त्ति की ही पुजा करनी चाहिये

(ग) प्रतिष्ठा मुहूर्त

- ⊙ देव प्रतिष्ठा वैशाख, ज्येष्ठ, फागुन माह में होती है
- ⊙ चैत्र माह में करने के लिए भी कुछ लोग लिखते हैं
- ⊙ विष्णु को छोड़ कर अन्य देवों की प्रतिष्ठा माघ में प्रशस्त है
- ⊙ विष्णु की प्रतिष्ठा चैत्र, आश्विन, श्रावण, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ और पौष में हो सकती है
- ⊙ मातृ, भैरव, वाराह, नृसिंह तथा त्रिविक्रम की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में करनी चाहिए
- ⊙ देवी की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में भी हो सकती है
- ⊙ आचार्य, पुरोहित, गुरु से मुहूर्त शोधकर देव मूर्त्ति प्रतिष्ठा करे

(घ) प्रतिष्ठा विधि

- मन्दिर बन जाने पर मूर्त्तियों की प्राण प्रतिष्ठा करके विधिवत् उनकी स्थापना करनी चाहिए
- मूर्त्ति स्थापना के पूर्व यथाविधि वेदी पुजन-हवन अन्नाधिवास-जलाधिवास-शय्याधिवास किया जाता है
- शिवलिंग प्रतिष्ठा में शिव पार्वती विवाह की भी प्रथा है। इस पद्धति में सभी विधियाँ क्रम बद्ध लिखी गयी हैं। इसी के अनुसार क्रमशः मूर्त्ति प्रतिष्ठा करानी चाहिये

(च) मण्डप निर्माण

- मंदिर बन जाने पर शुभ मुहूर्त में देव [मूर्त्ति] प्रतिष्ठा करनी चाहिए
- शास्त्रों के अनुसार मन्दिर के पूर्व अथवा पश्चिम अथवा उत्तर की ओर [सुविधानुसार जहां स्थान हो] महामण्डप अथवा छाया मण्डप बनाना चाहिए
- इसी मण्डप में पांचों पीठों [वास्तु, नवग्रह, योगिनी, क्षेत्रपाल, प्रधान] की पुजा करनी चाहिये। हवन आदि सम्पूर्ण कर्म इसी मण्डप में होता है।

(छ) सम्प्रति

- आज कल यदि मन्दिर के प्रासाद में [मंदिर के भीतर दालान-हाल आदि में] यदि पर्याप्त स्थान रहता है तो वहीं पर इन वेदियों को बनाते हैं। अलग से मण्डप नहीं बनाते हैं।

⊙ प्रासाद के भीतर अथवा मंडप में वेदी पूजन आदि करने का उल्लेख लघुदर्पणकार ने लिखा भी है ।

⊙ यदि मंडप बना कर पीठ पूजन किया जाय तो मण्डप निर्माण के लिए भूमि शोधन-भूमि पूजन करना चाहिये, उसके बाद मण्डप बनाया जाता है ।

⊙ यदि मंदिर के प्रासाद में [दालान में अथवा हाल में] पूजन करना है, तो मंडप पूजन नहीं होता है

✻ मण्डप निर्माण विधि

⊙ वेदी मंडप : मूर्त्ति प्रतिष्ठा में मंडप निर्माण की दो प्रक्रियाएं लिखी हैं—

⊙ पहली प्रक्रिया—एक प्रक्रिया यज्ञ मंडप की भांति सांगोपांग मण्डप बनाने की है

⊙ सांगोपांग मण्डप—में १६ बांस का मंडप बनता है ४ बांस भीतर लगा कर बीच का भाग ऊपर उठा रहता है

—४ बांस चारों कोने लगा कर तथा २-२ बांस [पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण] चारो ओर बीच में लगा कर द्वार बनाया जाता है

—इस तरह १२ बांस बाहर लगा कर उसके ऊपर सरपत आदि से छा देना चाहिये

—केला का पत्ता चारों द्वार पर चारों कोने लगा कर, आम्रपल्लव का वंदनवार आदि बांध कर मंडप को सजा देना चाहिए

⊙ दूसरी प्रक्रिया --छाया मंडप बनाने की है । चारो कोने ४ बांस तथा चारों ओर बीच में २-२ बांस लगा कर ऊपर सरपत आदि छा देना चाहिए

upayogibooks.com

—चारों ओर बीच में जो दो-दो बांस रहता है, वह द्वार बनाने के लिए लगाया जाता है

— इन द्वारों की चौड़ाई २ हाथ ८ अंगुल होनी चाहिए

—छाया मंडप में कुल १२ बांस जमीन में गाड़ा जाता है

⊙ मंडप प्रमाण —मंडप चौकोर होता है २० अथवा १६ हाथ लम्बा चौड़ा होना चाहिए [यजमान या आचार्य के हाथ से १६ हाथ नापना चाहिये]

—शास्त्रों में १२ अथवा ८ हाथ का भी मंडप बनाने का उल्लेख तो मिलता है, किन्तु उसे प्रशस्त अच्छा नहीं माना है

⊙ मंडप सज्जा —मंडप को केला का पत्ता, आम्रपल्लव आदि से सजा देना चाहिए

⊙ मंडप के भीतर—मंडप की भीतर की भूमि को साफ कर ले गोबर से लीप कर शुद्ध-पवित्र कर ले

—मंडप की पूरी भूमि को सुत या डोरी से नाप कर ९ भागों में बांट दे [पूर्व से पश्चिम तीन भाग एवं दक्षिण से उत्तर तीन भागों में विभाजित [बांट] कर ले

⊙ यदि —मंडप नहीं बनाया गया है, दालान अथवा हाल में ही वेदी पूजन करना है, तो १६ हाथ का चौकोर स्थान शुद्ध साफ कर लें, उसी को मंडप स्थल मान कर वेदी बनाए

✻ वैदो विर्माण

⊙ मंडप के भीतर क्रमशः यथा निर्दिष्ट स्थानों में देवताओं की वेदी बनाए

⊙ ईशान कोण में— १. [पूर्व-उत्तर के कोण वाले भाग में] नवग्रह तथा रुद्र कलश

⊙ अग्नि कोण में— २. [पूर्व-दक्षिण के कोण वाले भाग में] — (क) षोडश मातृका (ख) स्थल मातृका
(ग) घृत मातृका (घ) ६४ योगिनी

⊙ नैऋत्य कोण में— ३. [दक्षिण-पश्चिम के कोण वाले भाग में] वास्तुपीठ

⊙ वायव्य कोण में— ४. [पश्चिम-उत्तर के कोण वाले भाग में] क्षेत्रपाल,

⊙ पूर्व भाग में— ५. वेदी के बीच पूर्व वाले भाग में [नवग्रह-षोडश मातृका के बीच वाला भाग] प्रधान पीठ,
प्रधान पीठ के आगे १.कलश तथा गौरी-गणेश

⊙ मध्य भाग में— ६. प्रधान पीठ के पश्चिम [मंडप के बीच वाला भाग] बीच वाले भाग में हवन कुण्ड

⊙ पश्चिम भाग—पश्चिम वाले भाग में (हवन कुंड के पश्चिम) यजमान सपरिवार बैठते हैं

टिप्पणी —१. [कुछ लोग नवग्रह-क्षेत्रपाल के बीच वाले भाग में (उत्तर की ओर बीच वाले भाग में) हवन कुण्ड लिखते हैं]

२. [कुछ लोग मंडप के बीचो बीच (मध्य भाग में) प्रधान पीठ तथा शय्याधिवास लिखते हैं]

⊙ दक्षिण भाग—दक्षिण की ओर मध्य भाग [षोडश मातृका—वास्तु पीठ के बीच वाले शेष भाग] में ब्राह्मण गण बैठेंगे

⊙ उत्तर मध्य भाग—उत्तर की ओर बीच वाले भाग में स्नान वेदी बनाए

⊙ जलाधिवास—क्षेत्रपाल पीठ के निकट ही जलाधिवास करें

⊙ शय्याधिवास—नवग्रह तथा प्रधान पीठ के बीच पूर्व वाले शेष भाग में शय्याधिवास करें

⊙ अन्नाधिवास—नैऋत्यकोण में वास्तुपीठ के पास ही अन्नाधिवास होता है।

* पूजन की प्रक्रिया

⊙ शास्त्रों के अनुसार सर्वप्रथम मंडप के लिए भूमि शोधन तथा भूमि पूजन किया जाता है।

⊙ फिर मंडप बनाया जाता है, मंडप के भीतर सभी वेदी बनाई जाय।

⊙ शास्त्रों के अनुसार जलयात्रा-प्रायश्चित्तदशदान, मंडप प्रवेश होता है।

टिप्पणी—१. शास्त्र के अनुसार महामंडप के उत्तर ८ अथवा ४ हाथ का चौकोर चार द्वार का एक अलग स्नान मंडप बनाना चाहिए।

२. शास्त्र के अनुसार महामंडप के पश्चिम ४ हाथ का चौकोर एक द्वार का पृथक् जलाधिवास मंडप बनाना चाहिए।

३. लघुदर्पणकार के अनुसार महामंडप के बीच में ५ हाथ लम्बी चौड़ी एक हाथ ऊंची महावेदी बनाये और महावेदी के पश्चिम एक हाथ लम्बा-चौड़ा कुंडे बनाना चाहिए।

इसके बाद

- मूर्त्ति प्रतिष्ठा पूजन का कार्यक्रम प्रारम्भ होता है ।
- इसी क्रम से यह पद्धति तैयार की गई है, क्रमबद्ध सारी प्रक्रिया दी गई है ।

पूजन पद्धति

- सात दिन, पांच दिन अथवा तीन दिन में प्रतिष्ठा होती है । प्रति दिन सर्वप्रथम गौरी-गणेश-कलश तथा स्थापित पीठों का पंचोपचार पूजन करना चाहिए, उसके बाद उस दिन का पूजन कार्य सम्पादित करें ।
- प्रतिदिन के पूजन में स्थापित पीठों का आवाहन आदि नहीं होता, केवल पाद्य अर्घ—आचमन—पंचामृत स्नान, गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-फल-ताम्बूल-दक्षिण चढ़ा कर केवल पंचोपचार पूजन कर लिया जाय

शिखर कलश स्नान

- पद्धतियों के अनुसार, मूर्त्तियों में प्राण प्रतिष्ठा करने के बाद प्रासाद (मन्दिर भवन) तथा शिखर कलश [मंदिर के ऊपर लगने वाला पीतल का कलश] का भी स्नान तथा अधिवास होता है ।
- मंदिर भवन में प्रासाद स्नान तथा शिखर स्नान के लिये ८१ खाना बनाकर ८१ कलश स्थापित करें ।

⊙ यह ८१ खाना ६-६ खाना का कुल ६ कोष्ठक बनाना चाहिए, जैसे नवग्रह का कोष्ठक बनता है, उसी तरह २-२ अंगुल का बीच में अन्तर देकर ६ कोष्ठक बना ले।

⊙ एक-एक कोष्ठक में ६-६ कलश रखे. इस तरह कुल ८१ कोष्ठक में ८१ कलश रखा जाता है।

⊙ इन ८१ कलशों की पूजा कर उसके जल से शिखर कलश तथा मंदिर भवन को स्नान कराये।

⊙ इन ८१ कलशों में वही सामग्री-जल रखा जाता है, जो मूर्त्तियों के स्नान के लिए १०८ कलशों में रखा जाता है।

⊙ इन ८१ कलशों के पूजन की विधि तथा मन्त्र भी उन्हीं १०८ कलशों वाले मन्त्र हैं।

⊙ इसलिए सुविधा की दृष्टि से १०८ कलशो से मूर्त्तियों के स्नान के बाद कलश तथा जल को सुरक्षित रख ले, उन्हीं से शिखर कलश तथा प्रासाद को भी स्नान करा दे।

⊙ कुछ लोग मूर्त्तियों के साथ शिखर कलश को भी रख लेते हैं, साथ-साथ कलश को भी स्नान करा देते हैं।

⊙ मंदिर भवन (प्रासाद) में पूजन होने पर १०८ कलशों से मूर्त्तियों के स्नान कराते समय मन्दिर की दीवारों पर भी जल छिड़क देते हैं।

♦ **कृपया : ध्यान देंगे—**

⊙ इस पुस्तक से सभी प्रमुख देवों की प्रतिष्ठा करायी जा सकती है।

⊙ स्थान-स्थान पर देव मूर्त्तियों के भेद से प्रतिष्ठा संकल्प, न्यास आदि अलग-अलग उस देव मूर्त्ति के नाम से लिखा गया है।

— ⊙ —

अनुक्रम — पृष्ठ

१. भूमि शोधन-पूजन — १
२. प्रायश्चित्त दशदान — १३
३. जल यात्रा मंगल स्नान-मंडप प्रवेश — ३४
४. पूजन आरम्भ-प्रतिज्ञा संकल्प — ४०
५. गौरी-गणेश पूजन — ४५
६. कलश स्थापन — ५१
७. पुण्याह वाचन — ६१
८. षोडश मातृका पूजन-कलश पूजन — ७४
९. सप्त स्थल मातृका पूजन — ८०
१०. सप्तघृत मातृका पूजन — ८१
११. नांदीमुख श्राद्ध — ८५
१२. रक्षा विधान — ९०
१३. आचार्य वरण-जापक वरण — ९१
१४. पंचगव्य करण — ९३
१५. मंडप पूजन-इन्द्रध्वज पूजन — ९५
१६. वास्तुपीठ पूजन — ९९
१७. वास्तुपीठ कलश पूजन — १०३
१८. वास्तु मूर्त्ति प्रतिष्ठा-पूजन — १०३
१९. क्षेत्रपाल पीठ पूजन — १०५
२०. क्षेत्रपाल कलश प्रतिष्ठा — ११०

अनुक्रम — पृष्ठ

२१. क्षेत्रपाल प्रतिमा स्थापन पूजन — ११०
२२. ६४ योगिनी पीठ पूजन — ११२
२३. योगिनी कलश प्रतिष्ठा — ११८
२४. योगिनी प्रतिमा स्थापन-पूजन — ११९
२५. अग्नि स्थापन-अग्नि पूजन — १२१
२६. मंडप स्थित ब्राह्मण वरण — १२३
२७. नवग्रह वेदी-कलश स्थापन पूजन — १२४
२८. नवग्रह पूजन — १२५
२९. रूद्रकलश स्थापन-पूजन — १३६
३०. सर्वतोभद्र पीठ पूजन — १३७
३१. सर्वतोभद्र पीठ पर प्रधान कलश स्थापन — १४५
३२. प्रधान देव स्थापन पूजन — १४५
३३. कुशकण्डिका — १५०
३४. हवन — १५४
३५. कर्मकुटी-जलाधिवास — १६४
३६. अन्नाधिवास — १७२
३७. देव स्नान मंडप-वेदी-पूजन — १७६
३८. नयी मूर्त्तियों की स्नान प्रक्रिया — १७८
३९. नेत्रोन्मीलन-कलश स्नान — १९३
४०. सकलीकरण — २१६

अनुक्रम	पृष्ठ
४१. रथयात्रा	२२७
४२. शिवपार्बती विवाह	२३१
४३. शय्याधिवास	२३५
४४. निद्रा कलश स्थापन	२३९
४५. हुवन	२४७
४६. देवन्यास विधि	२४८
४७. शिवलिंग में विशेष न्यास	२६९
४८. पार्वती मूर्त्ति विशेष न्यास	२७६
४९. गणेश मूर्त्ति विशेष न्यास	२७७
५०. विष्णु मूर्त्ति विशेष न्यास	२७९
५१. देवी मूर्त्ति में विशेष न्यास	२८८
५२. सूर्य मूर्त्ति विशेष न्यास	२९४
५३. नृसिंह मूर्त्ति में विशेष न्यास	२९७
५४. आहुति-हुवन	२९८
५५. प्रासाद शिखर कलश पूजन	३००
५६. प्रासाद स्नान	३०६
५७. शिखर कलश स्थापन	३१२
५८. प्रासाद वास्तु पूजन	३१३
५९. प्रासाद उत्सर्ग	३१४
६०. पिण्डिका पूजन	३१५

अनुक्रम	पृष्ठ
६१. मूर्त्ति स्थापन	३१९
६२. मूर्त्ति प्रतिष्ठा	३२१
६३. मूर्त्ति षोडशोपचार पूजन	३२५
६४. मन्दिर नामकरण	३३०
६५. पूजन सामग्री संकल्प	३३१
६६. प्रतिष्ठा होम	३३२
६७. दिक्पाल वलि	३३३
६८. नवग्रह वलि-क्षेत्रपाल वलि	३३६
६९. पूर्णपात्र दान—पूर्णाहुति	३३८
७०. तर्पण-मार्जन	३४०
७१. कर्पूर आरती	३४१
७२. अभिषेक-तिलक-आशीर्वाद	३४२
७३. गोदान-आचार्य दक्षिण दान आदि	३४३
७४. पीठस्थ देव विसर्जन	३४५
७५. मंडप आदि का दान	३४६

परिशिष्ट

क—कलश स्थापन विधि	३४७
ख—प्राण प्रतिष्ठा विधि	३५२
ग—६४ योगिनीनाम	३५६
घ—मंडप स्थापन पूजन	३५८

।। भूमि-शोधन पूजन ।।

⊙ मंडप के लिए भूमि शोध कर उसे बराबर कराले ।

⊙ उस भूमि से अपवस्तुओं को [ढेला-कंकड़-तुष आदि निषिद्ध चीजों को] हटवा कर साफ करवा ले ।

⊙ यजमान पूजा सामग्री तथा आचार्य के साथ मडप भूमि में जाकर सर्वप्रथम भूमि पूजन करे ।

⊙ मंडप भूमि के मध्य में पूर्व मुख यजमान [सपत्नीक] बैठे ।

⊙ उत्तर मुख करके आचार्य-पुरोहित बैठें ।

⊙ सर्वप्रथम गौरी—गणेश की पूजा करे ।

।। पूजा विधि ।।

⊙ कुशा या आम्र पल्लव से अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर जल छिड़कें ।

।। ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

⊙ तीन बार दोनो [यजमान और उनकी पत्नी] आचमन करें ।

।। ओम् नारायणाय नमः ।। ।। ओम् केशवाय नमः ।। ।। ओम् माधवाय नमः ।।

⊙ हाथ धो लें **।। ओम् हृषीकेशाय नमः ।। पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।।**

⊙ दोनो हाथ की अनामिका अंगुली में पवित्री [कुशपैंती] पहन ले ।

।। ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत् पुनाम्यच् छिद्रेण पवित्रेण रश्मिभिः । तस्यते पवित्र पते पवित्रपूतस्य यत् कामः पुने तच्छकेयम् ।।

upayogibooks.com

⊙ हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर स्वस्ति वाचन करे।

।। हरिः ओम् आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीता स उद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधे असन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवानां भद्रा सुमतिर् ऋजूयतां देवाना ७ राति रभि नो निवर्तताम्। देवाना ७ सख्यमुपसे दिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीव से।। तान् पूर्वया निविदा हू महे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रि धम्।। अर्यमणं वरुण ७ सोम मश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत।। तन्नो वातो मयो भु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्व मव से हू महे वयम्। पूषानो यथा वेद सा मसद् वृधे रक्षिता पायु रदब्धः स्वस्त ये।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह।। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै रंगैस्तुष्टुवा ७ सस्तनू भिव्यशेमहि देवहितं यदायुः।। शतमिन्नु शरदो अन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषता युर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौ रदितिरन्तरिक्ष मदितिर्माता स पिता सपुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जात मदितिर्जनित्वम्।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्तिः रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्ति र्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरू प्रजाभ्योऽभयन्नः।। पशुभ्यः।। विश्वानि देव सवित दुंरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।।

॥ ओम् सुमुख श्चैकदन्तश्च कपिलो गज कर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्र केतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
अभीप्सितार्थं सिद्ध्यर्थम् पूजितो यः सुरासुरैः । सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाम मंगलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः ॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव तारा बलं चन्द्र बलं तदेव ।
विद्याबलं दैव बलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रि युगस्मरामि ॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दी वरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ । निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्री विजयाभूतिर् ध्रुवानीति मतिर्मम ॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥
स्मृते सकल कल्याण भाजनं यत्र जायते । पुरुषं तजमं नित्यं व्रजामि शरणं मम ॥
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवा दिशन्तु नः सिद्धि ब्रह्मेशान जनार्दनाः ॥

श्रीमन् महागणधिपतयेनमः । वाणी हिरण्य गर्भाभ्यां नमः । लक्ष्मी नारायणाभ्यांनमः ॥
उमा महेश्वराभ्यां नमः ॥ शचीपुरन्दराभ्यां नमः ॥ मातृ पितृ चरण कमलेभ्योनमः ॥
इष्टदेवताभ्यो नमः ॥ कुल देवताभ्यो नमः ।

ग्राम देवताभ्यो नमः ।। वास्तुदेवताभ्योनमः ।। स्थान देवेभ्यो नमः ।। सर्वेभ्यो देवेभ्योनमः ।।
सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्योनमः ।। सिद्धि बुद्धि सहिताय श्रीमन् महागाधियतयेनमः ।।

⊙ हाथ का अक्षत पुष्प सामने भूमि पर छोड़ दे।

⊙ कुश-जल-अक्षत द्रव्य लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे—

।। हरिः ओम् ।। तत् सत् ।। विष्णु विष्णु विष्णुः ।। अद्य ओम् नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेत वाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तारे अष्टा विंशति तमे युगे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मा वर्त्तैक देशे पुण्य क्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवत्सरे यथायने सूर्ये यथाऋतौ च महामांगल्यप्रादे मासे.......मासे...पक्षे ....तिथौ...वासरे यथा नक्षत्रे यथा राशि स्थिते सूर्ये यथा-यथा राशि स्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु यथालग्नमुहूर्त योग करणान्वितायां—एवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ श्रुति-स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ति कामः....गोत्रः...नामाऽहं [सपत्नीकोऽहम्] करिष्यमाण [अमुक] देव प्रतिष्ठा कर्माङ्गत्वेन मण्डपादि निर्माणं कर्तुम्-अविघ्नता परि समाप्त्यर्थम् भूमि कूर्मानन्त वाराह-विश्वकर्मणां पूजनं तेभ्यः संदीप दध्यादिवलिदानं च करिष्ये । तत्रादौ गणपतिपूजनं करिष्ये ।।

⊙ हाथ का कुश-अक्षत-जल-द्रव्य सामने भूमि पर छोड़ दे।

।। पृथिवी पूजन ।।

⊙ सामने पृथिवी पर ३ बार जल छोड़ दें। ⊙ रोली-अक्षत-फूल चढ़ा दें। ⊙ निम्न वाक्य पढ़ता रहे :—

।। ओम् पृथिव्यैनमः । ओम् भूम्यै नमः।।

।। गौरी-गणेश पूजन ।।

⊙ अक्षत-फूल लेकर—गौरी-गणेश का आवाहन करें—

।। ओम् गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान् त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां
त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम । आहम जानि गर्भधं मा त्वम जासि गर्भधम् ।।

हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिका त्रयम्बकात्मज । सिद्धि बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभ पितुः पितः ।।
नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम् । भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुश परश्वधैः ।।
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थम् च ममक्रतोः । इहागत्य गृहाणत्वं पूजां यागं च रक्ष मे ।।

।। ओम् भूर्भुवः स्वः सिद्ध बुद्धि सहिताय गणेशायनमः । गणपति मावाहयामि । स्थापयामि । पूजयामि ।।

⊙ थोड़ा अक्षत गणेशजी पर चढ़ा दें । ⊙ शेष अक्षत-फूल लिए गौरी का आवाहन करें ।

।। ओम् अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन् । ससस्त्यवश्यकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ।।
हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकर प्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीं गौरी मावाहयाम्यहम् ।।

।। ओम् भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः । गौरी मावाहयामि । स्थापयामि । पूजयामि ।।

⊙ हाथ का अक्षत-फूल गौर पर चढ़ा दें ।

⊙ फिर अक्षत लेकर गौरी—गणेश पर छोड़े ।। मंत्र ।।

।। ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञं समिमन्दधातु ।।
विश्वेदेवा स इह मादयन् तामोम् प्रतिष्ठ । गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवत ।।

⊙ तीन बार जल गौर-गणेश के सामने छोड़ दें ।

।। ओम् पादयोः पाद्यं हस्तयोरर्ध्यम् मुखे जल माचनीयं समर्पयामि ।। स्नानीयं जलं समर्पयामि ।।

⊙ रोड़ी-हल्दी चढ़ा दें ।

।। ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ।।

⊙ अक्षत चढ़ा दें ।

।। ओम् अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण गण नायक ।।

⊙ गौरी को सिन्दूर लगा दें ।

।। ओम् सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं प्रियवर्धनम् ।
सुखदं मोक्षदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ १ टुकड़ा कलावा (रक्षा सूत्र या वस्त्र) चढ़ा दें ।

।। ओम् सर्वाभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे ।
मयोप पादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ दो बार जल छोड़ दें ।

।। ओम् वस्त्रान्ते जल माचनीयं समर्पयामि ।।

⊙ गणेश जी को यज्ञोपवीत चढ़ा दें ।

।। ओम् यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

⊙ दो बार फिर जल छोड़ दें ।

।। यज्ञोपवीतान्ते जल माचनीयं समर्पयामि ।।

⊙ माला फूल चढ़ा दें ।

।। ओम् माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मया नीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ।।

⊙ धूप करें ।

।। ओम् वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ दीप आरती करें ।

।। ओम् आज्यं च वर्त्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह ।।

⊙ हाथ धोकर नैवेद्य लगावें ।

।। ओम् शर्कराघृत संयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् । उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ दो बार जल छोड़ें ।

।। ओम् आचमनीयं मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि ।।

⊙ फल चढ़ा दें ।

।। ओम् इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज् जन्मनि-जन्मनि ।।

⊙ पान सुपारी चढ़ा दें ।

।। ओम् पूगीफलं महद् दिव्यं नागवल्लैर्दलैर्युतम् । एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ दक्षिणा चढ़ाएं ।

।। ओम् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

⊙ एक दोनिया में जल-गन्ध अक्षत-फूल-द्रव्य लेकर अर्घ दें ।

ओम् रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक । भक्तानामभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात् ।।
द्वैमातुर कृपा सिन्धो षाण्मातु राग्रज प्रभो । वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ।।
अनेन सफलार्घ्येण सफलोऽस्तु सदा मम ।।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करें ।

।। ओम् विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बो दराय सकलाय जगद्धिताय
नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।।
भक्तार्तिनाशन पराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्त प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते
गणेश पूजने कर्म यन्न्यून मधिकं कृतम् । तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम ।।
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम् न मम ।।

upayogibooks.com

⊙ फूल गौरी-गणेश को चढ़ा दें।

।। कूर्म-अनन्त पूजन ।।

⊙ यजमान अपने सामने भूमि पर एक पीठ या पत्ता पर कपड़ा बिछाकर ५ जगह अक्षत पुंज [थोड़ा-थोड़ा अक्षत] रख दे।

[इसी अक्षत पुंज पर कूर्म-अनन्त-वराह-विश्वकर्मा का आवाहन पूजन होता है]

⊙ पीठ के पास की भूमि को दाहिने हाथ से छू लें।

।। ओम् भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ꣳह पृथिवीं माहि ꣳ सीः ।।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करें।

ओम् कूर्मपृष्ठोपरि स्थितां शुक्ल वर्णाम् चतुर्भुजाम्। पद्म शंख चक्र शूल धरां प्रसन्नाननाम् ।।
आगच्छ सर्व कल्याणि वसुधे लोकधारिणि। पृथिवि ब्रह्मदत्ताऽसि काश्यपेनाभिवन्दिता ।।

⊙ फूल भूमि पर छोड़ दें।

⊙ अक्षत लेकर—अक्षतपुञ्ज पर क्रमशः छोड़े ।। मंत्र पढ़े—

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मोम् प्रतिष्ठ ।।

।। १ ।। ओम् भूम्यै नमः ।। २ ।। ओम् कूर्मायनमः। कूर्ममावाहयामि ।।

।। ३ ।। ओम् अनन्तायनमः। अनन्त मावाहयामि ।।

टिप्पणी—गौरी गणेश की संक्षिप्त पूजा यहाँ लिखी है विस्तार में करना हो तो इस लेखक की वेदी पूजन से करना चाहिए।

⊙ कुछ लोग पुण्याह वाचन भी करते हैं, वेदी पूजन से कर लें।

।। ४ ।। ओम् वराहायनमः । वराहमावाहयामि ।।
।। ५ ।। ओम् विश्वकर्मणेनमः । विश्वकर्माण मावाहयामि ।। ओम् भूम्यादि देवताभ्योनमः ।।

⊙ हाथ का अक्षत चढ़ा दें ।

⊙ यथाविधि गन्ध-अक्षत-पुष्प आदि चढ़ा कर पांचों देवताओं की पूजा कर दें ।

⊙ हाथ में जल लेकर छोड़ दें, कहें—

ओम् अनेन पूजनेन भूम्यादि देवताः प्रीयन्तां न मम ।।

⊙ एक पात्र में जल-दूध-कुशा-अक्षत-तिल-जवा-सरसों-फल-द्रव्य लेकर अर्घ दे,

[दोनो पैर का घुटना मोड़कर बैठ कर अर्घ दिया जाता है]

।। मन्त्र ।। ।। ओम् उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतवाहुना । दंष्टाग्रैर्लोलयादेवि यज्ञार्थम् त्वं प्रतिष्ठिता ।।
ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च । पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्दं वैश्रवणेन च ।।
यमेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया । मण्डपम् कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्वम् शुभ लक्षणम् ।।
गृहाणार्घमिमं देवि प्रसन्ना वरदा भव ।।

⊙ पीठ के सामने जल-अक्षतादि चढ़ा दें ।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करें ।

।। ओम् उपचाराणि मां स्तुभ्यं ददामि परमेश्वरि । भक्त्या गृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गतः ।।
सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च मनं रूपं च पूजिते । करिष्यमाणां पूजां मे गृहाणानुग्रहं कुरु ।।

⊙ फूल भूमि पर चढ़ा दें।

⊙ एक पत्ता पर गन्ध-फूल-दही-उरद [दही-भात या खीर] सेतुआ-लावा-घी रख लें,

१ बत्ती जला कर उसी पर रख कर=भूमि के सामने रख दें। ⊙ जल छोड़ कर कहें—

।। ओम् स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः ।।

।। ओम् कूर्मानन्तवराह विश्वकर्मादिभिः सह भूम्यै सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीप दधिसक्तुलाजा पायसबलिं समर्पयामि ।।

⊙ फूल लेकर कूर्म-अनन्त-वराह-विश्वकर्मा की प्रार्थना करे।

।। ओम् यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम्। तस्मै देवा अधिब्रुवन् नयं च ब्रह्मणस्पतिः ।।

।। ओम् कूर्मायनमः ।।

।। ओम् विश्वकर्मा ह्यजनिष्टदेव आदिद् गन्धर्वो अभवद् द्वितीयः।

तृतीयः पिता जन तोषधीनाम पां गर्भम् व्यदधात् पुरुत्रा ।। ।। ओम् विश्वकर्मणेनमः ।।

।। ओम् खड्गो वैश्वदेवः श्वाकृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसा मिन्द्रा यः सूकरः सि ७ हो मारुतः।

कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ।। ।। ओम् वराहाय नमः ।।

।। ओम् नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

।। ओम् अनन्तायनमः ।।

।। ओम् समुद्र वसने देवि पर्वत स्तनमण्डले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं भूमिदेव नमोऽस्तुते ।। १ ।।

११ नन्दे नन्दय वाशिष्ठे वसुभिः प्रजया सह। जय भार्गव दायादे प्रजानां जय मावह ।। २ ।।

पूर्णे गिरिश दायादे पूर्णकामं कुरुष्व मे। भद्रे काश्यप दायादे कुरुभद्रां मतिं मम ।। ३ ।।

सप्तबीज समायुक्ते सर्वरत्नौषधीवृते । रुचिरे नन्दने नन्दे वाशिष्ठे रम्यतामिह ।। ४ ।।
प्रजापति सुते देवि चतुरस्त्र महीयसि । सुभगे सुवृते देवि गृहे काश्यपि रम्यताम् ।। ५ ।।
पूजिते परमाचार्यै गन्धमाल्यैरलंकृते । भवभूतिकरी देवि गृहे भार्गवि रम्यताम् ।। ६ ।।
अव्यक्ते चाहते पूर्णे शुभे चांगरिसः सुते । दृष्टवे त्वं प्रयच्छेष्टं त्वं प्रतिष्ठापयाम्यहम् ।। ७ ।।
देशस्वामि पुरस्वामि गृहस्वामि परिग्रहे । मनुष्यधन हस्त्यश्व पशुवृद्धिकरीभव ।। ८ ।।
पृथिवी कूर्मानन्तादि पूजाविधौ यन्न्यूनाति रिक्तं तत्सर्वम् परिपूर्ण मस्तु ।।

⊙ हाथ का फूल पंच देवताओं के आगे चढ़ा दें ।

⊙ आचार्य-पुरोहित ब्राह्मणों को गोदान-हिरण्यदान-दक्षिणादान दे ।

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ – गोत्रः नामाऽहम् करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा मण्डप कर्म परिपूर्णता वाप्तये इदम् गोनिष्क्रयी भूतं द्रव्यं हिरण्यं तन्निष्क्रयी द्रव्यं वा आचार्याय अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां च दातु मह मुत्सृजे ।।

⊙ हाथ जोड़कर प्रार्थना करें ।

ओम् प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तदं विष्णोः सम्पूर्णम् स्यादिति श्रुतिः ।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णता याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।
ओम् विष्णवे नमः । विष्णवे नमः । विष्णवे नमः ।।

।। इति भूमि पूजन ।।

[कुछ लोग कन्नी-वसूली आदि की पूजा लिखते हैं]

कुछ लोग शंकु [कीला] तथा रज्जू [पानी भरने के लिए रस्सी] की भी पूजा लिखते हैं।

लघुदर्पण में आयुध—खनित्री की प्रार्थना भी दी गई है—

⊙ आयुध प्रार्थना—

।। ओम् अज्ञानात् ज्ञानतोवापि दोषास्युश्चानयोद् भवा।
नाशय त्वं हि तान् सर्वान् विश्वकर्म न्नमोऽस्तुते।।

⊙ खनित्री प्रार्थना—

।। ओम् त्वष्ट्रा विनिर्मितं पूर्वं लोकानां हितकाम्यया।
पूजिताऽसि खनित्रित्वं सिद्धिदा भव नोऽधुना।।

⊙ कुछ लोग भूयसी दक्षिणा देने को भी लिखते हैं।

टिप्पणी—इसके बाद मंडप निर्माण करे।। सभी पीठ वेदी बनाए।।

।। प्रायश्चित्त पूजन-दशदान।।

⊙ यजमान नित्य कृत्य से निवृत्त होकर [स्नान-ध्यान आदि कार्य करके] शुद्ध वस्त्र धारण कर घर में अथवा प्रासाद अथवा मंदिर परिसर में शुद्ध आसन पर पूर्वमुख बैठे।

⊙ अपनी दाहिनी ओर अपनी पत्नी को बिठा ले

[पत्नी भी स्नान-ध्यान कर सौभाग्य सूचक वस्तुओं को धारण कर पति के बगल बैठे]

⊙ पति-पत्नी की गाँठ बाँध दी जाये

⊙ यजमान अपने सामने गौरी-गणेश तथा घी का दीपक जलाकर रख ले

⊙ गौरी-गणेश की पूजा करे—

।। गौरी-गणेश पूजन ।।

⊙ कुशा या आम्रपल्लव से अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर जल छिड़के—मंत्र पढ़े—

।। ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

⊙ तीन बार आचमन करें—

।। ओम् नारायणाय नमः ।। ओम् केशवाय नमः ।। ओम् माधवाय नमः ।।

⊙ हाथ धोले—

।। ओम् हृषीकेशाय नमः । पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।।

⊙ पवित्र (पैंती) पाहने—निम्न मंत्र पढ़ता रहे—

।। ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव ऽउन् पुनाम्यच् छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।

⊙ हाथ में अक्षत पुष्प लेकर स्वस्तिवाचन करे—

ओम् आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासो अपरीता स उद्भिदः । देवा नो यथा सद मिद् वृधे असन्न
प्रा युवो रक्षितारो दिवे दिवे । देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम् देवानां ꣳ रातिरभि नो निवर्त्तताम् ।

देवानां ऽ सख्यमुपसे दिमावयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे । तान् पूर्वया निविदाहू महे वयं भगं मित्रमदितिम् दक्ष मस्रिद्धम् । अर्यमणं वरुण ऽ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत् । तन्नो वातो मयो भुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना श्रुणुतन् धिष्ण्या युवम् । तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियन् जिन्व मवसे हू महे वयम् । पूषानो यथा वेद सा मसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । स्वस्तिन इन्द्रो बृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु । पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं या वानो विदथे षु जग्मयः । अग्नि जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह । भद्रं कर्णेभिः श्रुणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैः रंगस्तुष्टुवा ऽ सस्तनूभिर्व्यशे महि देवहितं यदायुः । शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तन्नाम् । पुत्रा सो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषता युर्गन्तोः । अदितिर् द्यौरदिति रन्तरिक्ष मदितिर्माता सपिता सपुत्रः । विश्वेदेवा अदितिः पंचजनाअदितिर्जात मदितिर्जनित्वम् । द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ऽ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्ति ब्रंह्मशान्तिः सर्व ऽ शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सामा शान्ति रेधि । यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः । पशुभ्यः । ओम् विश्वानि देव सवितंदुरतानि परासुव । यद् भद्रं तन्न आसुव । ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु । सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ।

हाथ का अक्षत-पुष्प अपने सामने पृथिवी पर छोड़ दे ।

⊙ दूसरा अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करे—

ओम् सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छ्रणुयादपि ।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णम् चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।।
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थम पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।।
सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्येत्र्यम्बके गौरिनारायणिनमोऽस्तुते ।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषा ममंगलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः ।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, तारा बलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव, लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रि युगस्मरामि ।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थोजनार्दनः ।।
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थो धनुर्धरः। तत्रश्री विजयाभूतिर् ध्रुवानीति मतिर्मम् ।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्रजायते। पुरुषं तजमं नित्यं व्रजामि शरणं मम ।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिः ब्रह्मेशान जनार्दनाः ।।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ।।
उमामहेश्वराभ्यां नमः। शची पुरन्दराभ्यां नमः। मातृ-पितृ चरण कमलेभ्यो नमः ।।
इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः ।।
स्थानदेवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।।

⊙ हाथ का अक्षत-पुष्प गौरी-गणेश के सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ दाहिने हाथ में कुश-अक्षत-पुष्प-द्रव्य-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे [पत्नी अपने दाहिने हाथ से पति [यजमान] के हाथ को स्पर्श किए रहे]

॥ प्रतिज्ञा संकल्प ॥

॥ हरिः ओम् तत् सत् विष्णुर् विष्णुर् विष्णुः अद्य ओम् नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे द्वितीय यामे तृतीय मुहूर्ते श्री श्वेत वाराहनाम्नि प्रथम कल्पे स्वायंभुव स्वरोचिसोत्तम तामस रैवत चाक्षुषेति षण्मनू नामति क्रम्यमाणे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त्तैक देशे पुण्य क्षेत्रे वौद्धावतारे [अमुक] नाम्नि संवत्सरे [अमुक] अयने सूर्ये [अमुक] ऋतौ महा मांगल्य प्रदे [अमुक] मासे [अमुक] पक्षे [अमुक] तिथौ [अमुक] नक्षत्रे [अमुक] वासरे[अमुक]राशिस्थिते सूर्ये तथा च यथा-यथो राशि स्थान स्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु यथालग्न मुहूर्त योग करणान्वितायाम्— एवं ग्रहगुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य पर्वणि [अमुक] गोत्रः [अमुक] नामाऽहं सपत्नीकोऽहं ममात्मनः सभार्यस्य-सपरिवारस्य सकल पापक्षयपूर्वकं दशावरान् दशापरान् आत्मना सहैक विंशति पुरूषान् पितृतो मातृतश्चोद्धर्तु कामनया क्षेम स्थैर्य दीर्घायु रारोग्यैश्वर्यं स्थिर लक्ष्मी पुत्र-पौत्र-धन-धान्यादि सम्पदभिवृद्धिपूर्वकं निरतिशय सानन्द ब्रह्मपद प्राप्ति श्री सर्वफलाक्षय्य सुख प्राप्त्यर्थम् च श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त फल प्राप्ति कामनया धर्मार्थकाम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धि द्वारा श्रीपरमेश्वर

टिप्पणी—जहाँ अमुक लिखा है वहाँ पर माह-पक्ष-तिथि-नक्षत्र आदि का वर्तमान नाम कहना चाहिए।

प्रीत्यर्थम्—स्वकृत शैल प्रासाद प्रतिष्ठा सहितां [शिवादिमूर्त्तीनाम्—विष्ण्वादिमूर्त्तीनां—रामचन्द्रादि मूर्त्तीनाम्—श्री हनुमद्देवमूर्त्तीनां—श्री राधाकृष्णादि मूर्त्तीनाम्—] स्थिर प्रतिष्ठां [चलप्रतिष्ठां] यथाकाले कर्त्तुं कामनया अद्य अधिकार प्राप्त्यर्थम् शरीर शुद्ध्यर्थम् च प्रायश्चित्त निमित्तकं दशदानादिकं नादिकं च करिष्ये । ।। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थम् गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये ।।

⊙ संकल्प पढ़ कर हाथ का कुश-अक्षत-जल आदि सामने भूमि पर रख दे

⊙ गौरी-गणेश की पूजा करे

।। गौरी-गणपति पूजन ।।

⊙ अक्षत-पुष्प लेकर–गणेश आवाहन

(१) ओम् गणानांत्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवा महे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवा महे वसो मम । आहम जानि गर्ब्भधमा त्वम जासि गर्ब्भधम् ।।

(२) ओम् हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिका त्र्यम्बकात्मज । सिद्धि बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभ पितुः पितः ।।
नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम् । भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुश परश्वधैः ।।
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः । इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे ।।

ओम् भू भुर्वः स्वः सिद्धिबुद्धि सहिताय गणपतये नमः ।
गणपतिम्-आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।।

टिप्पणी—⊙जिस देवता का मन्दिर स्थापित करना है उस देव मूर्त्ति का नाम पढ़ना चाहिए ।

⊙ गौरी-आवाहन

(१) ओम् श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण ।।

(२) ओम् हेमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीं गौरी मावाहयाम्यहम् ।।
ओम् भूर्भवः स्वः गौर्यै नमः । गौरीमावाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि ।।

⊙ प्रतिष्ठा

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।

ओम् अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्व मर्चायै माम हेति च कश्चन् ।।
गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवतम् ।

⊙ हाथ का अक्षत-फूल गौरी-गणेश पर चढ़ा दे

⊙ तीन बार जल छोड़े

ओम् पादयोः पाद्यं हस्तयोरर्घं मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि ।। श्रीमन् महागणाधिपतये नमः ।।
।। गौर्यै नमः ।।

⊙ एक बार फिर जल छोड़ें—स्नान करा दे

ओम् मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपाप हरं शुभम् । तदिदं कल्पितं देवाः स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।

⊙ वस्त्र या १ टुकड़ा कलाई चढ़ा दे

ओम् सर्वाभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे । मयोप पादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ वस्त्र के बाद आचमन—२ बार जल छोड़े

वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।।

⊙ गणेश जी को यज्ञोपवीत चढ़ा दे

ओम् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्रयं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।

⊙ दो बार जल छोड़े

यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

⊙ गौरी को हल्दी चढ़ावे

ओम् हरिद्रा निर्मितं देवि सौभाग्यं सुखसम्पदा । अतस्त्वां पूजयिष्यामि गृहाण परमेश्वरि ।।

⊙ गौरी को सिन्दुर

ओम् सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं प्रियवर्धनम् । सुखदं मोक्षदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ गौरीं-गणेश को रोली

ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ।।

⊙ अक्षत चढ़ावे

ओम् अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्तया गृहाण गणनायक ।।
गृहाण परमेश्वरि ।।

⊙ माला-फूल

ओम् माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मया नीतानि पुष्पाणि गृहाण गणनायक ॥
गृहाण परमेश्वरि ॥

⊙ दूर्वा (दूब) चढ़ावे

ओम् दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान मृतान् मंगलप्रदान् । आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ॥

⊙ अबीर-गुलाल चढ़ावे

ओम् अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दन मेव च । अबीरेणार्चितो देवा अतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

⊙ धूप करे

ओम् वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

⊙ दीप (आरती) करे

ओम् आज्यं च वर्ति संयुक्तं बह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह ॥
दीपं गृहाण देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा ॥

⊙ हाथ धोकर नैवेद्य लगावे

ओम् शर्कराघृत संयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् । उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

⊙ आचमन हेतु जल छोड़े

ओम् सर्वपाप हरं दिव्यं गांगेयं निर्मलं जलम् । आचमनीयं मया दत्तम् गृह्यतां गणनायक ॥
गृह्यतां परमेश्वरि ॥

आचमनीयं मध्ये पानीयम्-उत्तरापोशनं समर्पयामि ।

⊙ फल

ओम् इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि-जन्मनि ।।

⊙ पान-सुपारी चढ़ावे

ओम् पूंगीफलं महद् दिव्यं नागवल्लैर्दलैर्युतम् । एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ दक्षिणा चढ़ावे

ओम् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

⊙ हाथ में फूल लेकर पुष्पांजलि दें

ओम् नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च । पुष्पांजलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ।।
गृहाण परमेश्वरि ।।

⊙ विशेषार्घ—एक दोनिया में जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-दूर्वा-दक्षिणा लेकर निम्न मंत्र पढ़े—

ओम् रक्ष-रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक । भक्तानामभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात् ।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातु राग्रज प्रभो । वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ।
अनेन सफलार्घ्येण सफलोऽस्तु सदा मम ।।

⊙ दोनिया का जल-फूल आदि गणेश जी पर चढ़ावें : अर्घ चढ़ाते समय दोनों हाथ की हथेली अपनी ओर रहे

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे

ओम् विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय । लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।।
नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय । गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।।
भक्तार्ति नाशन पराय गणेश्वराय । सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय । भक्त प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते ।।

नमस्ते ब्रह्म रूपाय विष्णुरूपाय ते नमः । नमस्ते रुद्र रूपाय करिरूपाय ते नमः ।।

विश्वरूप स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे । भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ।।

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

त्वं विघ्न शत्रुदलनेति च सुन्दरेति । भक्त प्रियेति सुखदेति फल प्रदेति ।।

विद्या प्रदेति-अघ हरेति च ये स्तुवन्ति । तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ।।

गणेश पूजने कर्म यन्न्यून मधिकं कृतम् । तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम ।।
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम ।

⊙ फूल गौरी-गणेश के आगे छोड़ दे

।। दशदान ।।

⊙ गौरी-गणेश की पूजा के बाद प्रायश्चित्त प्रयोग करे

⊙ यजमान कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे

।। अद्य हर ओम् विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ [अमुक] गोत्रः [अमुक] नामाऽहं करिष्यमाण [अमुक] मूर्त्तिप्रतिष्ठा कर्माधिकारप्राप्त्यर्थम् मत् सकल पातक निवृत्त्यर्थं च शरीर शुद्ध्यर्थम् प्रायश्चित्तं करिष्ये ।।

⊙ हाथ का कुश-अक्षत-जल सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ फूल लेकर भगवान् विष्णु की प्रार्थना करे

।। १ ।। शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् । विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णम् शुभांगम् ।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् । वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम् ।।

।। २ ।। त्वमेव जगतां नाथ अन्तर्यामी त्वमेव च । शास्त्राणां च कवीशश्च वक्ता त्वं च जगत्पते ।।

।। ३ ।। वन्दे विष्णुं प्रभुं साक्षाल् लोकत्रय सुखप्रदम् । विश्वेशं विश्वकर्त्तारं पुराणं पुरुषोत्तमम् ।।
ओम् विष्णुः ।। विष्णुः ।। विष्णुः ।।

⊙ फूल सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ आचार्य-पुरोहित-ब्राह्मणों की पूजा करे

⊙ ब्राह्मणों को चन्दन-अक्षत लगा कर फूल माला पहना दे ⊙ हाथ जोड़कर प्रार्थना करे

।। समस्त सम्पत् समवाप्ति हेतवः समुत्थिता यत् कुल धूम केतवः ।
अपार संसार समुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपाद पांसवः ।।
आपद् घनध्वान्त सहस्रमानवः समीहितार्थार्पण कामधेनवः ।।
समस्त तीर्थाम्बु पवित्रमूर्त्तयो रक्षन्तु मां ब्राह्मणपाद पांसवः ।।

विप्रौघ दर्शनात् क्षिप्रं क्षीयन्ते पापराशयः । वन्दनान्मंगलावाप्तिरर्चनादच्युतं पदम् ।।
आधिव्याधिहरं नृणांमृत्युदारिद्रय नाशनम् । श्री पुष्टि कीर्तिदं वन्दे विप्राणां पादपंकजम् ।।

।। भो ब्राह्मणाः ! मम जन्म प्रभृति अद्यदिनं यावत् ज्ञाताज्ञातकामाकाम-सकृदसकृत् कृत कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीत-सकल पातकातिपातकोपपातक-गुरुलघु सूक्ष्मपातक-संकरीकरण-मलिनीकरण-अपात्रीकरण-जाति भ्रंशकर-प्रकीर्णक पातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थम्-अनुग्रहं कृत्वा प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवन्तः ।।

।। सर्वे धर्म विवेक्तारो गोप्तारः सकलाद्विजाः । ममदेहस्य संशुद्धिं कुर्वन्तु द्विजसत्तमाः ।।
मयाकृतंमहाघोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषम् । प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छत ।।
पूज्यैः कृतपवित्रोऽहं भवेयं द्विज सत्तमैः । मामनुगृह्णन्तु भवन्तः ।।

⊙ ब्राह्मण कहे— ।। उपदिशामः ।। अनुगृह्णीमः ।।

।। गोदान करे ।।

⊙ यजमान कम-से-कम तीन गोदान करे । ⊙ १-१ गोदान १-१ ब्राह्मण को दे

⊙ कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर प्रथम गोदान संकल्प पढ़े—

।। अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ [अमुक] गोत्रः [अमुक] नामाऽहं करिष्यमाण [अमुक] देव प्रतिष्ठा-अधिकार सिद्ध्यर्थम् सर्वप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन विहितमिदं यथाशक्ति गोवृष निष्क्रयीभूतं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

टिप्पणी—कुछ लोग भगवान् की प्रार्थना के साथ-साथ सलिगराम की पूजा भी करते हैं ।

⊙ कुश-अक्षत-द्रव्य एक ब्राह्मण को दे

⊙ इसी तरह दो गोदान और करे, दो अन्य ब्राह्मणों को दे

⊙ हाथ जोड़कर कहे— **अनेन श्री पापापहा महाविष्णुः प्रीयतां न मम ।**

।। अन्य दान ।।

⊙ इसके बाद क्रमशः—१. भूमिदान २. तिलदान ३. सुवर्णदान ४. घृतदान ५. वस्त्रदान ६. सप्तधान्यदान ७. गुड़दान ८. रजत (चाँदी) दान ९. लवणदान करना चाहिए ⊙ अथवा इनके लिए निष्क्रय मूल्य देना चाहिए

१ ।। भूमिदान ।।

⊙ ब्राह्मण का वरण करे [वरण संकल्प टिप्पणी में देखें]

टिप्पणी—धर्मशास्त्रों में प्रत्यक्ष गो देने का विधान है, इसी तरह ⊙ कम-से-कम ४५ संख्या में गोदान करने का उल्लेख है ।

⊙ किसी भी स्थिति में तीन से कम गोदान नहीं करना चाहिए ।

टिप्पणी—सभी प्रकार के दान के लिए पहले ब्राह्मण का वरण करे—

⊙ ब्राह्मण को गन्ध-अक्षत लगाकर फूल माला पहना दें

⊙ कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर वरण करे— [जिस वस्तु का दान करना हो अमुक के स्थान पर उस वस्तु का नाम लेले

।। अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः ···· नामाऽहम् करिष्यमाण अमुक दान कर्मणि अमुक गोत्रं शर्माणं ब्राह्मणं अमुक दान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ।।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे— ।। वृतोऽस्मि ।।

⊙ कुश-अक्षत-जल लेकर भूमिदान अथवा तन्निष्क्रय द्रव्यदान करे

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् षष्टिसहस्त्रवर्षमितं वैकुण्ठे विष्णु लोकावाप्तिकामनया करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा प्रतिष्ठार्थम् इमां भूमिं [तन्निष्क्रयी द्रव्यम्] सांगता सहितां गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे— ॥ स्वस्ति ॥

⊙ यजमान प्रार्थना करे

॥ सर्वेषामाश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता । अनन्त सस्यफलदा अतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
यस्यां रोहन्ति बीजानि वर्षाकाले महीतले । भूमेः प्रदानात् सफला मम सन्तु मनोरथाः ॥

२ ॥ तिलदान ॥

⊙ आचमन-प्राणायाम करके ब्राह्मण का वरण करे [वरण संकल्प पेज २६ की टिप्पणी में लिखा है]

⊙ कुश-द्रव्य-अक्षत-जल लेकर संकल्प करे

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ ... गोत्रः .... नामाऽहं मम सकल पापक्षय द्वारा श्री विष्णु लोकावाप्ति कामनया इमान् तिलान् सांगता सहितान् च गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे— ॥ स्वस्ति ॥

⊙ यजमान प्रार्थना करे—॥ ओम् विष्णोर्देहसमुद्भूताः कुशाःकृष्णतिलास्तथा । धर्मस्य रक्षणायार्थमेतत्प्राहुर्दिवौकसः ॥
महर्षे गोत्र संभूताः काश्यपस्त तिलाः स्मृताः । तस्मादेषां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु ॥

३ ।। सुवर्णदानं ।।

⊙ आचमन-प्राणायाम-ब्राह्मण वरण करे

⊙ कुश-अक्षत-जल लेकर सुवर्ण अथवा तन्निष्क्रय द्रव्य संकल्प करे

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ ... गोत्रः ... नामाऽहम् करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा परिपूर्णतावाप्तये पापक्षय पूर्वक पितृ तारण कामनया अक्षय स्वर्ग प्राप्ति कामनया च इदं सुवर्णम् [तन्निष्क्रयीभूतं द्रव्यम्] सांगता सहितं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे— ।। स्वस्ति ।।

⊙ यजमान प्रार्थना करे—

।। ओम् हिरण्य गर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसो । अनन्त पुण्यफलद मतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।

४ ।। आज्य (घृत) दान ।।

⊙ ब्राह्मण का वरण करे

⊙ कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर आज्य [घृत] दान करे

टिप्पणी—कुछ लोग तिलपात्र की परिक्रमा भी लिखते हैं, तदर्थ यह मन्त्र लिखा है—

।। ओम् यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्या समानि च ।
तिलपात्र प्रदानेन तानि नश्यन्तु मे सदा ।।

⊙ तिलपात्र के निमित्त निष्क्रयीभूत द्रव्य भी दिया जा सकता है ।

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ ""गोत्रः ''' नामाऽहम् करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा संसिद्ध्यर्थम् गोलोकावाप्ति कामनया श्री विष्णु देवता प्रीतये सदक्षिणाकमिदमाज्यं सोमदैवत्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे— ।। स्वस्ति ।।

⊙ यजमान प्रार्थना करे—

।। ओम् कामधेनोः समुद्भूतं सर्वक्रतुषु संस्थितम् । देवानामाज्यमाहारमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।

५ ।। वस्त्र दान ।।

⊙ ब्राह्मण का वरण करे ⊙ कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर वस्त्र दान करे

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ ''' गोत्रः ''' नामाऽहं करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थम् इदं वस्त्र द्वयं बृहस्पति दैवतं सदक्षिणाकं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे— ।। स्वस्ति ।।

⊙ यजमान प्रार्थना करे—

।। ओम् शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जया रक्षणं परम् । देहालंकरणं वस्त्र मतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।

टिप्पणी——पं० वायु नन्दनमिश्र ने अपनी प्रतिष्ठा महोदधि में सांगता दान का संकल्प अलग से लिखा है, अतः सांगता दान का संकल्प यहाँ लिख रहा हूँ जिससे आपको सुविधा होगी । संकल्प——अद्य कृतैतत् अमुक दान कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् दक्षिणा द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

६ ।। धान्य दान ।।

⊙ ब्राह्मण का वरण करे ⊙ कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर धान्य का दान करे—

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः ..... नामाऽहम् करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा परिपूर्णता प्राप्तये अक्षय पुण्य फल प्राप्ति कामनया इदं धान्यं सदक्षिणाकं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे— ।। स्वस्ति ।।

⊙ यजमान प्रार्थना करे—

।। ओम् सर्व देवमयं धान्यं सर्वोत्पत्तिकरं महत् । प्राणिनां जीवनं यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।

७ ।। गुड़ दान ।।

⊙ ब्राह्मण वरण के पश्चात् कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर गुड़दान करे

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ ..... गोत्रः ..... नामाऽहम् करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठाकर्मणि अधिकार प्राप्तये शुभता सिद्ध्यर्थं च सदक्षिणाकमिदं गुड़ं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे— ।। स्वस्ति ।।

⊙ यजमान प्रार्थना करे—

।। ओम् यथा देवेषु विश्वात्मा प्रवरश्च जनार्दनः । प्रणवः सर्व मन्त्राणां नारीणां पार्वती यथा ।।
यथा रसानां प्रवरः सदैवेक्षुरसोमतः । मम तस्मात् परां लक्ष्मीं ददस्व गुड़ सर्वदा ।।

८ ।। रजत (चाँदी) दान ।।

⊙ ब्राह्मण वरण करके रजत दान करे

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ ---- गोत्रः ---- नामाऽहम् करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा कर्मणि सकल पातक निवृत्यर्थम् कर्माधि कारार्थञ्च सदक्षिणाकं रजतं [तन्निष्क्रयीभूतंद्रव्यम्] गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे— ।। स्वस्ति ।।

⊙ यजमान रजत प्रार्थना करे—

।। ओम् प्रीतिर्यत्र पितृ्णाञ्च विष्णु शंकरयोः सदा । शिव नेत्रोद्भवं रौप्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।

९ ।। लवण दान ।।

⊙ ब्राह्मण वरण करके लवण [नमक] दान करे

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ ---- गोत्रः ---- नामाऽहम् अमुक देव प्रतिष्ठा कर्माधिकारार्थम् विष्णुदैवतं सांगता सहितं लवण गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे— ।। स्वस्ति ।।

⊙ यजमान लवण प्रार्थना करे—

।। ओम् यस्मादन्नरसाः सर्वेनोत्कृष्टं लवणं विना । शम्भोः प्रीतिकरं नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।

विशेष — ⊙ यदि दशदान पृथक्-पृथक् नहीं किया जाय, तो दश वस्तु के निमित्त द्रव्य लेकर एक ही साथ संकल्प करना चाहिए।

⊙ ब्राह्मण का वरण करे ⊙ कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर वरण संकल्प करे—

।। दशदान वरण ।।

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा कर्मणि प्रतिष्ठा अधिकारार्थं प्रायश्चित्त नैमित्तिकं दशद्रव्यदान प्रतिग्रहीतृत्वेन ···· गोत्रं ··· शर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे ।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे— ।। वृतोऽस्मि ।।

⊙ फिर कुश-अक्षत-जल तथा दशदान के निमित्त यथेष्ट धन लेकर संकल्प करे—

।। अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहं करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थम् तथा च प्रतिष्ठा कर्माधिकारार्थम् विष्णु दैवतं सदक्षिणाकं—गो-भू-तिल-हिरण्य-आज्य-वासो-धान्य-गुड़-रजत-लवण इति दशद्रव्य निष्क्रयभूतं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे— ।। स्वस्ति ।।

⊙ प्रार्थना— ।। ओम् इमानि दशदानानि दत्तानि मल शुद्धये । दानेन यज्ञ पुरुषः प्रीयतां न ममेति च ।।

यन्मयाकृत ममुक प्रायश्चित्तं तदच्छिद्रमस्तु ।

।। इति दशदान ।।

⊙ आचार्य को दक्षिणा दे

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ ... गोत्रः नामाऽहं कृतस्य प्रायश्चित्तादि कर्मणः सिद्ध्यर्थम् फलावाप्तये च आचार्याय इमां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ।

⊙ आचार्य दक्षिणा लेकर कहे — ॥ स्वस्ति ॥

⊙ कुछ लोग भूयसी दान भी लिखते हैं; उसका संकल्प—

॥ अद्य कृतस्य प्रायश्चित्तादि कर्मणः न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थम् इमां भूयसीं दक्षिणां यथाकाले यथानामेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे ।

⊙ आचार्य यजमान को तिलक-अक्षत लगा कर मन्त्राक्षत दे दे

⊙ यजमान हाथ जोड़कर प्रार्थना करे

॥ ओम् प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत् । स्मरणादेव तद्विष्णुः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुति ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्योवन्दे तमच्युतम् ॥

टिप्पणी— ⊙ कुछ लोग दशदान के लिए निष्क्रय मूल्य देते हैं उसमें दक्षिणा [सांगता] नहीं दी जाती है—यह लिखते हैं ।

⊙ कुछ लोग यह भी लिखते हैं कि निष्क्रय द्रव्य एक ही ब्राह्मण को देना चाहिए । बहुतों में विभक्त नहीं करे ।

⊙ कुछ लोगों ने दशदान के लिए निम्न वस्तुओं को लिखा है— १. वृष २. सोना ३. तिल ४. दासी ५. घोड़ा ६. भैंस ७. घर ८. कन्या ९. कपिलागौ १० भूमि (बाग-बगीचा) किन्तु ये दस दान मनुष्य को जीवन में अवश्य करने चाहिए ।

टिप्पणी—लोकाचार में यजमानपत्नी गौर को सिन्दूर चढ़ा कर सोहाग लेती हैं ।

ओम् विष्णवे नमः ।। श्री विष्णुः । श्री विष्णुः । श्री विष्णुः ।।

⊙ यजमान [पति-पत्नी] की गाँठ खोल दी जाय

⊙ दोनों सपरिवार सुहासिनी स्त्रियों तथा ब्राह्मणों के साथ मंगल स्नान के लिए नदी या जलाशय को जायँ

।। जलयात्रा-मंगलस्नान ।। मंडप प्रवेश ।।

⊙ इसके बाद यजमान अपनी पत्नी तथा ब्राह्मणों और सौभाग्यवती स्त्रियों के साथ पवित्र नदी या तालाब पर जाय

⊙ नदी के किनारे यजमान सपत्नीक पूर्वमुख बैठे ⊙ हाथ-पाँव धोकर आचमन कर ले

⊙ यजमान हाथ में जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ [अमुक] गोत्रः [अमुक] नामाऽहम् करिष्यमाण [अमुक] देव प्रतिष्ठा-अधिकार सिद्ध्यर्थम् जलमातृः पूजनं वरुण पूजनं मंगल स्नानं च करिष्ये ।

⊙ हाथ का जल सामने छोड़ दे

⊙ फूल लेकर वरुण देव का ध्यान करे—

टिप्पणी— ⊙ कुछ लोगों ने जलयात्रा नहीं लिखी है ।

⊙ जलाशय यात्रा में ८ या ६ कलश लेकर जाने का उल्लेख मिलता है ।

⊙ नदी-जलाशय के तट पर इन कलशों की स्थापना और उनमें वरुण पूजन की विधि प्राप्य है ।

।। ओम् एहि-एहि यादोगण वारिधानां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः ।
विद्याधरेन्द्रामर गीयमानः पाहित्व मस्मान् भगवन्नभस्ते ।।
तीक्ष्णायुधं तीक्ष्णगतिर्दिगीशं चराचरेशं वरुणं महान्तम् ।
प्रचण्ड पाशाङ्कुश वज्रहस्तं भजामि देवं कुल वृद्धि हेतोः ।।

आवाहयाम्यहं देवं वरुणं यादसां पतिम् । प्रतीचीशं जगत् प्राण सेवितं पाशहस्तकम् ।।
।। ओम् वरुणाय नमः । ध्यायामि ।। पूजयामि ।।

⊙ हाथ का फूल नदी के जल में छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल लेकर मातृका का ध्यान करे

।। १ ।। ओम् मत्स्यै नमः ।। मत्सीं पूजयामि ।।

।। २ ।। ओम् कूर्म्यै नमः ।। कूर्मीं पूजयामि ।।

।। ३ ।। ओम् वाराह्यै नमः ।। वाराहीं पूजयामि ।।

।। ४ ।। ओम् दर्दुर्यै नमः ।। दर्दुरीं पूजयामि ।।

।। ५ ।। ओम् मकर्यै नमः ।। मकरीं पूजयामि ।।

।। ६ ।। ओम् जलूक्यै नमः ।। जलूकीं पूजयामि ।।

⊙ नदी तट पर जलमातृका के पूजन के लिए वस्त्र पर ७ जगह अक्षत पुंज रखकर सप्त जलमातृकाओं का पूजन तथा ७ जगह अक्षत पुंज रखकर [illegible]मातृका के पूजन का उल्लेख भी कुछ लोगों ने किया है, जो शिष्टाचार-देशाचार है ⊙ कुछ लोग दिक्पाल-क्षेत्रपाल को बलि प्रदान करते हैं, हवन करते हैं ।

।। ७ ।। ओम् तन्तूवयै नमः ।। तन्तुका पूजयामि ।।

।। ८ ।। ओम् ऊर्म्यै नमः ।। ऊर्मि पूजयामि ।।

।। ९ ।। ओम् लक्ष्म्यै नमः ।। लक्ष्मीं पूजयामि ।।

।। १० ।। ओम् महामायायै नमः ।। महामायां पूजयामि ।।

।। ११ ।। ओम् पानदेव्यै नमः ।। पानदेवीं पूजयामि ।।

।। १२ ।। ओम् वारुण्यै नमः ।। वारुणीं पूजयामि ।।

।। १३ ।। ओम् निर्मलायै नमः ।। निर्मलां पूजयामि ।।

।। १४ ।। ओम् गोधायै नमः ।। गोधां पूजयामि ।।

⊙ फूल नदी में डाल दे ⊙ फिर फूल लेकर समुद्र का ध्यान करे—

।। ओम् समुद्रादूर्मिर्मधु मां उदार दुपा ४ सुना सम मृतत्वमानट् । घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ।। ओम् सप्तसागरं ध्यायामि ।। पूजयामि ।।

⊙ फूल जल में छोड़ दे ⊙ नदी जल की पूजा कर दे

⊙ अक्षत-चंदन-फूल-धूप-दीप तथा गोदुग्ध चढ़ा दे

⊙ फूल लेकर जलाशय-नदी की स्तृति करे

।। ओम् नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय सुश्वेत हाराय सुमंगलाय ।
सुपाश हस्ताय झषासनाय जलाधि नाथाय नमो नमस्ते ।।

प्रतीचीशं नमस्तुभ्यं सर्वाघौघ निषूदन । पवित्रं कुरु मां देव सर्व कार्येषु सर्वदा ।।
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यावान् विधि रनुष्ठितः । स सर्वस्त्वत् प्रसादेन पूर्णो भवत्वपांपते ।।

⊙ फूल जल में छोड़ दे ⊙ जल को माथ लगावे

⊙ तीन वार नदी जल का आचमन करे ⊙ नदी में स्नान करे

⊙ सन्ध्या-वंदन-तर्पण मार्जन आदि नित्य नैमित्तिक कृत्य करे

⊙ यजमान सौभाग्यवती स्त्रियों को हल्दी-पान तथा मंगल वस्तुएं दे

⊙ एक मिट्टी के कलश में जल भरकर सौभाग्यवती स्त्री को दे

⊙ सुहासिनी स्त्री तथा ब्राह्मणों को आगे कर घर वापस आना चाहिए

⊙ आवे मार्ग में किसी स्थान पर क्षेत्र फल के लिए दहीं-उरद तथा एक दीप जलाकर चुपचाप बलि प्रदान कर दे

⊙ मंगलगान करती हुई स्त्रियों के साथ भगवान् का ध्यान करते हुए यजमान मंडप के पश्चिम द्वार पर आवे

⊙ मंडप के पश्चिम द्वार पर खड़ा हो जाय ⊙ दोनों की गाँठ बाँध दी जाय ⊙ ब्राह्मण अर्घपात्र बना लें

⊙ एक ताम्र [ताँबा] पात्र में [कलश में] जल-फूल-चंदन-कुशा डालकर अर्घपात्र बना ले

⊙ यजमान दोनों हाथों में इस अर्घपात्र को लेकर [पश्चिम द्वार से प्रारम्भ कर] मंडप की एक परिक्रमा करे

⊙ ब्राह्मण गण शान्ति पाठ करें

टिप्पणी — ⊙ कुछ लोगों ने दशविध स्नान की प्रक्रिया लिखी है
⊙ कुछ लोगों ने मंगल स्नान के पूर्व बाल बनवाने [वपनकर्म] की विधि भी लिखी है

।। ओम् भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरै रंगैस्तुष्टुवा ७ सस्तनू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।।

ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर् ब्रह्मशान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।

ओम् शान्तिः । शान्तिः । शान्ति । सुशान्तिर्भवतु ।।

⊙ शान्ति पाठ के बाद = यजमान—उसी पश्चिम द्वार से अर्घपात्र लिये—मण्डप में प्रवेश करे [पहले दाहिना पैर भीतर रखना चाहिए] ।

⊙ ब्राह्मण भी मण्डप में प्रवेश करे । ⊙ सुहासिनी स्त्री जो जल यात्रा से जल भरा कलश लाई है उसे मण्डप में ईशान कोण में रख दे ।

⊙ प्रधान वेदी के पास = [पूर्व मुख] यजमान = शुद्ध आसन पर बैठ जाय । ब्राह्मण भी [उत्तर मुख] बैठ जायँ ।

⊙ अर्घपात्र सामने भूमि पर रख दे ।

⊙ दाहिने हाथ में अक्षत लेकर पृथिवी का ध्यान करे—

ओम् पृथिवीं चतुर्भुजां शुक्लां कूर्मपृष्ठो परिस्थिताम् । शंखपद्मधरां चक्र शूलहस्तां धरां भजे ।।
पृथिवि त्वं ब्रह्मदत्ताऽसि काश्यपेनाऽभिवन्दिता । आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोक धारिणि ।।

ओम् भूम्यै नमः । आवाहयामि । पूजयामि ।

⊙ हाथ का अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दे ।

⊙ भूमि का पूजन करे—३ बार जल छोड़े । गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दे ।

⊙ ब्राह्मण निम्नलिखित मन्त्र पढ़ता रहे—

ओम् स्योना पृथिवि नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्म सप्रथाः । ओम् भूम्यै नमः ।

⊙ भूमि पूजन के बाद यजमान दाहिने हाथ में अर्घपात्र ले ले । [जल गन्ध-अक्षत-फूल वाला अर्घपात्र जो लेकर परिक्रमा की है उसे]

⊙ ब्राह्मण निम्न मन्त्र पढ़े—

ओम् शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयो रभि स्त्रवन्तु नः ।।

ओम् ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च । पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्द वैश्रवणेन च ।।

देवेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया । गृहाणार्घ मिमं देवि ! प्रसन्ना वरदा भव ।।

⊙ उक्त मन्त्र पढ़ कर अर्घ [जल-पुष्प आदि] सामने भूमि पर चढ़ा दे

⊙ यजमान हाथ जोड़कर पृथिवी की प्रार्थना करे—

।। ओम् उपचारामिमां तुभ्यं ददामि परमेश्वरि । भक्त्यागृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गतः ।।

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना । दंष्ट्राग्रैर्लोलया देवि यज्ञार्थम् प्रणमाम्यहम् ।।

⊙ पृथिवी पर का जल अपने माथ लगाए ⊙ हाथ जोड़कर प्रार्थना करे

।। ओम् अन्यथा शरण्यं नास्ति त्वमेव शरणंमम । तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष परमेश्वर ।।

⊙ यजमान और उसकी पत्नी की गाँठ खोल दी जाय

⊙ दोनो उठकर आचार्य-ब्राह्मणों को प्रणाम करें ⊙ दक्षिणा दें ।

टिप्पणी—कुछ लोग मण्डप द्वार पर ही अर्घ देने को लिखते हैं
कुछ लोग अग्नि कोण में स्त्रियों द्वारा लाए गए कलश को रखने को लिखते हैं ।

टिप्पणी— ⊙ अग्निपुराण में इन सौभाग्यवती स्त्रियों को गुड़-नमक-धान्य देने को लिखा है

।। इति जलयात्रा—मंडप प्रवेश ।।

॥ प्रतिष्ठा-पूजन प्रारम्भ ॥ गौरी-गणेश पूजन ॥

⊙ यजमान प्रातःकाल नित्य-नैमित्तिक कार्यों से निवृत्त होकर रेशमी या पीली धोती-दुपट्टा-जनेऊ पहन कर, पाँव में रंग लगाकर पूजन के लिए मण्डप में आये

⊙ यजमान पत्नी भी शुद्ध वस्त्र-उपवस्त्र पहन कर सौभाग्यसूचक मांगलिक अलंकरण धारण कर पूजन के लिए मण्डप में पति के समीप जाय

⊙ यजमान पत्नी सहित हवन वेदी के पश्चिम पूर्व मुख शुद्ध आसन पर बैठे

⊙ पत्नी यजमान की दाहिनी ओर रहेगी ⊙ दोनों की गाँठ जोड़ दी जाय

⊙ ब्राह्मण उत्तर मुख बैठे। पूजन प्रारम्भ करे—

⊙ कुशा या आम्रपल्लव से अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर जल छिड़के— मन्त्र पढ़े—

ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

⊙ तीन बार आचमन करे —

ओम् नारायणाय नमः। ओम् केशवाय नमः। ओम् माधवाय नमः।

⊙ हाथ धोवे—

ओम् ऋषीकेशाय नमः। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

⊙ पवित्री (पैंती) पहने—निम्न मन्त्र पढ़ता रहे—

ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवउत पुनाम्यच् छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।

⊙ हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर स्वस्तिवाचन करें—

ओम् आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासो अपरीता स उद्भिदः। देवा नो यथा सद मिद् वृधे असन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम् देवानां ऽ रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवानां ऽ सख्यमुपसे दिमावयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे। तान् पूर्वया निविदाहू महेवयं भगं मित्रमदितिम् दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुणं ऽ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत्। तन्नो वातो मयो भुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विन श्रुणुतन् धिष्ण्या युवम्। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियन् जिन्व मवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेद सा मसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये। स्वस्तिनः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं या वानो विदथे षु जग्मयः। अग्नि जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह। भद्रं कर्णेभिः श्रुणुयाम् देवा भद्रं पश्येमाक्षभियजत्राः स्थिरैः रंगैस्तुष्टुवा ऽ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रा सो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषता युर्गन्तोः। अदितिर् द्यौरदिति रन्तरिक्ष मदितर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिर्जात मदितिर्जनित्वम्। दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे सुप्रजास्त्वाय सहसा। अथोजीव शरदः शतम्। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ऽ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वं ऽ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः। पशुभ्यः।

ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरतानि परासुव । यद् भद्रं तन्न आसुव ।।
ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु । सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ।।

⊙ हाथ का अक्षत-पुष्प अपने सामने पृथिवी पर छोड़ दे

⊙ दूसरा अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करे—

ओम् सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णम् चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।।
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थम् पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।।
सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्तितेषाम मंगलम् । येषां हृदिस्थो भगवान मंगलायतनं हरिः ।।

तदेवलग्नं सुदिनंतदेव, तारावलं चन्द्रवलं तदेव,
विद्यावलं दैववलं तदेव, लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रि युगस्मरामि ।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दी वरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।।
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थो धनुर्धरः । तत्रश्री विजयाभूतिर् ध्रुवानीति मतिर्मम ।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्रजायते । पुरुषं तजमं नित्यं व्रजामि शरणं मम ।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः ।।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ।
उमामहेश्वराभ्यां नमः । शची पुरन्दराभ्यां नमः । मातृ-पितृ चरण कमलेभ्यो नमः ।
इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः ।
स्थानदेवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।।

⊙ हाथ का अक्षत-पुष्प पृथिवी पर छोड़ दे ।

⊙ कुश-जल-अक्षत-पुष्प-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

हरिः ओम् तत् सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ओम् नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे-वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत-ब्रह्मावर्तैक देशे पुण्यक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवत्सरे यथायनेसूर्ये यथाऋतौ च महामांगल्यप्रदे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे यथानक्षत्र यथाराशिस्थिते सूर्ये यथा-यथाराशि स्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु यथालग्नमुहूर्त योग करणान्वितायाम्—एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलप्राप्तिकामः अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् स्वकीय जन्मलग्नतो वा दुःस्थानगत ग्रहजन्यसकलारिष्ट निवृत्त्यर्थम्-उत्पन्न-उत्पत्स्यमान-अखिलारिष्ट निवृत्तये-दीर्घायुष्य

सततारोग्यतावाप्तये धन-धान्य समृद्ध्यर्थम्-च-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विध पुरुषार्थ-प्राप्त्यर्थम् - च - धन - धान्य-पुत्रपौत्रादि - अनवच्छिन्न सत्संगतिलाभार्थम्-शत्रुपराजय-बहुकीर्त्यादि-अनेकानेक-अभ्युदय फल प्राप्त्यर्थम् यथाकालाधिवासन पक्षेण—

१. सप्रासाद सवृष शिवादि पंचायतनदेवानां स्थिर प्रतिष्ठा सहित सचल लिंग प्रतिष्ठां करिष्ये ।

२. अनयोः राधाकृष्ण मूर्त्योः देवकलासान्निध्यार्थम् सप्रासाद श्रीकृष्ण राधिका मूर्त्योः प्रतिष्ठां करिष्ये ।

३. आसु श्रीरामचन्द्र जानकी लक्ष्मण भरत-शत्रुघ्न-मारुति मूर्त्तिषु देवकला सान्निध्यार्थम् श्रीरामचन्द्रादिमूर्त्तीनां प्रतिष्ठां करिष्ये ।

४. आसु लक्ष्मीनारायण—आदि मूर्त्तिषु देवकलासान्निध्यार्थम् लक्ष्मीनारायणादि प्रतिष्ठां करिष्ये ।

५. आसु अमुक-अमुक मूर्त्तिषु देवकलासान्निध्यार्थम् अमुक मूर्त्तीनां चर प्रतिष्ठां [स्थिर प्रतिष्ठाम्] यथाकाले करिष्ये ।

तदंगत्वेन स्वस्ति पुण्याहवाचनं मातृकादिपूजनं ग्रहपूजनं नांदी श्राद्धादिकं तथा चान्यान्यदेवानां पूजनं करिष्ये तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थम् गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये ।।

⊙ संकल्प पढ़कर हाथ का अक्षत-पुष्प-कुशा आदि सामने भूमि पर छोड़ दे

टिप्पणी— ⊙ १ से ४ तक में जिस देवता की मूर्त्ति स्थापित करनी हो प्रतिज्ञा संकल्प में उसे पढ़े शेष छोड़ दे ।

⊙ पाँचवे संकल्प में [आसु अमुक-अमुक] लिखा गया है वहाँ पर जिस देव की प्रतिष्ठा हो उसका नाम जोड़ ले

⊙ चर प्रतिष्ठा । स्थिर प्रतिष्ठा—में जैसी प्रतिष्ठा हो—एक पढ़े

।। पृथिवी पूजन ।।

।। ओम् पृथिव्यै नमः ।।—

⊙ यह कहते हुए—तीन बार पृथिवी पर जल छोड़े ⊙ रोली-अक्षत-पुष्प छोड़कर पृथिवी का पूजन करे

।। गौरी-गणपति पूजन ।।

⊙ अक्षत-पुष्प लेकर— गणेश आवाहन

(१) ओम् गणनांत्वा गणपति ७ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ७ हवा महे निधीनां त्वा निधिपति ७
हवा महे वसो मम । आहम जानि गर्भधमात्त्वम जासि गर्भधम् ।।

(२) ओम् हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिका त्र्यम्बकात्मज । सिद्धि बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभ पितुः पितः ।।
नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम् । भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुश परश्वधैः ।।
आवाहयामि पूजार्थम् रक्षार्थम् च मम क्रतोः । इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे ।।
ओम् भू र्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धि सहिताय गणपतये नमः ।
गणपतिम्-आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।।

⊙ गौरी आवाहन

(१) ओम् श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्र पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषण ।।

(२ ओम् हेमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीं गौरी मावाहयाम्यहम् ।।
ओम् भूर्भवः स्वः गौर्यै नमः । गौरीमावाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि ।।

⊙ प्रतिष्ठा

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।

ओम् अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्व मर्चायै माम हेति च कश्चन ।।
गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवतम् ।

⊙ हाथ का अक्षत-फूल गौरी-गणेश पर चढ़ा दे

⊙ १ फूल चढ़ाकर निम्न मन्त्र पढ़े — आसन

ओम् गृहं त्वदीयं सकलं त्वदीय महं त्वदीयस्तव चासनं वै ।
स्वीकृत्य देवाऽनुगृहाण दासं त्वदर्थ मेवाद्य सुसज्जितं यत् ।।

⊙ तीन बार जल छोड़े १. पाद्य २. अर्घ्य ३. आचमन

ओम् त्वया गृहीतं सुरसंघ दत्तं पाद्यं पवित्रं बहुधाऽद्य यावत् ।
परं न देवेश कुतोऽपि लब्धं मोदाश्रुभिर्दृष्ट मतो गृहाण ।।
ओम् मूढोऽस्मि जानामि न चार्घ्यदानं, परं न चित्ता मयि तेऽर्घ्यदाने ।
यतो हि त्वं दीन जनानुकम्पी, गृह्णासि श्रद्धार्पित मेव देव ।।
ओम् श्रीमन् गृहाणाऽचमनीयमेतम्, मयार्पितं देव विसर्पि सन्धम् ।
तवोचितं नास्ति गणेश ! जाने, तथापि श्रद्धा रस पूरितं मे ।।

ओम् पादयाः पाद्यम्-हस्तयोः अर्घ्यम्-मुखे आचमनीयम्-जलं समर्पयामि ।

⊙ पंचामृत स्नान 'दूर्वा या कुशा से गौरी-गणेश पर पंचामृत छिडके

ओम् पंचामृतं मयानीतं पयोदधि घृतं मधु । शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ शुद्ध जल स्नान (जल छिड़के)

ओम् मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपाप हरं शुभम् । तदिदं कल्पितं देवाः स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ वस्त्र या १ टुकड़ा कलाई चढ़ा दे

ओम् सर्वाभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे । मयोप पादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ वस्त्र के बाद आचमन— २ बार जल छोड़े

वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।।

⊙ गणेश जी को यज्ञोपवीत चढ़ा दे

ओम् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्त तेजः ।।

⊙ दो बार जल छोड़े

यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

⊙ गौरी को हल्दी चढ़ावे

ओम् हरिद्रा निर्मितं देवि सौभाग्यं सुखसम्पदां । अतस्त्वां पूजयिष्यामि गृहाण परमेश्वरि ।।

⊙ गौरी को सिन्दूर

ओम् सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं प्रियदर्शनम् । सुखदं मोक्षदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ गौरी-गणेश को रोली

ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षाम् नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ।।

⊙ अक्षत चढ़ावे

ओम् अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण गणनायक ।।
गृहाण परमेश्वरि ।।

⊙ माला-फूल

ओम् माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वैं प्रभो । मया नीतानि पुष्पाणि गृहाण गणनायक ।।
गृहाण परमेश्वरि ।।

⊙ दूर्वा (दूब) चढ़ावे

ओम् दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान मृतान मंगलप्रदान् । आनीतांस्तव पूजार्थम् गृहाण गणनायक ।।

⊙ अबीर-गुलाल चढ़ावे

ओम् अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दन मेव च । अबीरेणार्चितो देवाः अतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।

⊙ धूप करे

ओम् वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ दीप (आरती) करे

ओम् आज्यं च वर्ति संयुक्तं बह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह ।।
दीपं गृहाण देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा ।।

⊙ हाथ धोकर नैवेद्य लगावे

ओम् शर्कराघृत संयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् । उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ आचमन हेतु जल छोड़े

ओम् सर्वपाप हरं दिव्यं गांगेयं निर्मलं जलम् । आचमनीयं मया दत्तम् गृह्यतां गणनायक ।।
गृह्यतां परमेश्वरि ।।

आचमनीयं मध्ये पानीयम्-उत्तरापोशनं समर्पयामि ।

⊙ फल चढ़ावे

ओम् इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि-जन्मनि ।।

⊙ पान-सुपारी चढ़ावे

ओम् पूंगीफलं महद् दिव्यं नागवल्लैर्दलैर्युतम् । एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ दक्षिणा चढ़ावे

ओम् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

⊙ हाथ में फूल लेकर पुष्पांजलि दे

ओम् नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च । पुष्पांजलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ।।
गृहाण परमेश्वरि ।।

⊙ विशेषार्घ—एक दोनिया में जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-दूर्वा-दक्षिणा लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

ओम् रक्ष-रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक । भक्तानामभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात् ।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातु राग्रज प्रभो । वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ।।
अनेन सफलार्घ्येण सफलोऽस्तु सदा मम ।।

⊙ दोनिया का जल-फूल आदि गणेश जी पर चढ़ावे ; अर्घ चढ़ाते समय दोनों हाथ की हथेली अपनी ओर रहे,

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे

ओम् विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय । लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।।
नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय । गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।।
भक्तार्ति नाशन पराय गणेश्वराय । सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय । भक्त प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते ।।
नमस्ते ब्रह्म रूपाय विष्णुरूपाय ते नमः । नमस्ते रुद्र रूपाय करिरूपाय ते नमः ।।
विश्वरूप स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे । भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

त्वं विघ्न शत्रुदलनेति च सुन्दरेति। भक्त प्रियेति सुखदेति फल प्रदेति ।।
विद्या प्रदेति-अघ हरेति च ये स्तुवन्ति। तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ।।
गणेश पूजने कर्म यन्न्यून मधिकं कृतम्। तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम ।।
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम।

⊙ फूल गौरी-गणेश के आगे छोड़ दे

।। कलश स्थापन ।।

⊙ कलश स्थान पर अष्टदल कमल बना दे

⊙ भूमिस्पर्श— [अष्टदल कमल बनी भूमि को दाहिने हाथ से छू ले]

ओम् भूरसि भूमिरस्य दिति रसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।
पृथिवीं यच्छ पृथ्वींदृ ँ ह पृथिवीं माहि ँ सीः।

⊙ कलश के नीचे सप्तधान्य स्पर्श—

ओम् धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वा दानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामिनु प्रसिति मायुषे धां देवो वः
सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णा त्वछिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम् पयोऽसि।

⊙ कलशस्पर्श—

ओम् आजिघ्र कलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दवः । पुनरूर्जा निवर्तस्व सानः सहस्रन्धुक्ष्वो रुधारा पयस्वती
पुनर्मा विशताद् रयिः ।।

⊙ कलश में जल छोड़े—

ओम् वरुणस्योत्तम्भन मसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसि ।
वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋत सदन मासीद ।।

⊙ कलश में कुशा छोड़े—

ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।।

⊙ कलश में गन्ध (रोली)—

ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

⊙ कलश में औषधि— [औषधि के अभाव में सतावर छोड़े]

ओम् या ओषधिः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रि युगम्पुरा । मनैनु बभ्रूणामह ँ शतन्धामानि सप्त च ।।

⊙ कलश में दर्वा—

ओम् काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि : एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।।

⊙ कलश में आम्रपल्लव—

ओम् अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ।।

⊙ कलश में सप्तमृत्तिका

ओम् स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः ।।

⊙ कलश में सुपारी

ओम् याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्व ሆ ह सः ।।

⊙ कलश में सूत्र बाँध दे ⊙ १ धोती १ अंगोछा चढ़ा दे [चारों ओर से लपेट दे]

ओम् युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः ।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ।।

⊙ कलश में द्रव्य छोड़े

ओम् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

⊙ कलश के ऊपर जवा भरा पियाला रखे

ओम् पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्ज ሆ शतक्रतोः ।।

टिप्पणी—कुछ लोग पंच पल्लव [५ वृक्षों का पल्लव] लिखते हैं, उसका मन्त्र है—

ओम् अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता । गोभाज इत् किलासथ यत् सनवथ पूरुषम् ।।

⊙ कलश पर १ नारियल वस्त्र लपेट कर रख दे

ओम् याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन् त्व ऽ ह सः ।।

⊙ हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे

ओम् तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तद शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणे ह बोध्युरुश ऽ स मान आयुः प्रमोषीः ।।

।। अस्मिन्कलशे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि ।।

⊙ हाथ का अक्षत कलश पर छोड़ दे

⊙ एक फूल लेकर प्रार्थना करे

।। ओम् कला कलाहि देवानां दानवानां कलाकला । संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते ।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा । अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ।।
कावेरी कृष्णवेणा च गंगा चैव महानदी । तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ।।
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथाऽपराः । पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलश स्थानि तानि वै ।।
सर्वे समुद्राः सरितस् तीर्थानि जलदा नदाः । आयन्तु मम कामस्य दुरितक्षय कारकाः ।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः । अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः ।।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा । आयन्तु मम शान्त्यर्थम् दुरितक्षय कारकाः ।।

⊙ फूल कलश पर चढ़ा दे

⊙ कलश पर अक्षत छिड़के—

।। ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।।

।। कलशे वरुणादि—आवाहित देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।।

⊙ १ फूल लेकर ध्यान आवाहन करे

।। ओम् आश्रित्य यं भवतिधन्यतरा प्रतीची, रत्नाकरत्व मुपयाति पयः समूहः।
पाशश्च यस्य भवपाश विनाशकारी, तं पाश वारिणमहं हृदि चिन्तयामि ।।

⊙ आवाहन ⊙ आसन

ओम् यद् दृष्टिकोण रहिता वसुधा सदैव, वन्ध्येव भाति विफलीकृत वीजशक्तिः।
तं वारि वारिणमहं वरुणं सदैव, धाराधरं सुखकरं प्रिय मावाहयामि ।।

ओम् अयि विभो शरणागत वत्सल, यदपि हीन मिदं भवतां कृत।
तदपि भक्तजनं खलु वीक्ष्य मां, समुचितं प्रिय मासन मास्यताम् ।।

⊙ हाथ का फूल कलश के आगे छोड़ दे

⊙ तीन बार कलश के आगे जल चढ़ावे—निम्न मन्त्र पढ़ता रहे १. पाद्य २. अर्घ ३. आचमन

ओम् अहो मदीयं खलु पुण्य सञ्चितं, श्रीमद्भि रद्यावधि रक्षितोऽस्मि यत् ।
अकिंचनोऽहं भवतां कृते यदि, तथापि पाद्यार्घ्यमिदं प्रगृह्यताम् ।।

ओम् विमल चम्पक पुष्प समन्वितं, त्रिविध ताप विनाशन नायकम् ।
प्रियकरं प्रियमर्घ्यमिदं विभो, परिगृहाण जलाधिप पाशभृत ।।

ओम् कस्तूरिका सुरभि चन्दन वास वासि, स्वेलालवंग लवली परिपूरितञ्च ।
मध्याह्न सूर्य प्रतिबिम्ब मिव प्रकाशं, दत्तं गृहाण वर माचमनं मयेदम् ।।

⊙ १ फूल चढ़ाकर निम्न मन्त्र पढ़े

ओम् सौवर्णपात्रघृत प्रीति विवर्धकेन, मिश्रीकृतेन मधुना पयसा घृतेन ।
संजीकृतं सविधिवन्मधुपर्क संज्ञं, देवो दधातु हृदये करुणाशयेऽस्मिन् ।।

⊙ गंगाजल छिड़क कर स्नान

ओम् कंकोलपत्र हरिचन्दन वासितेन, कश्मीरजेन घनसार समन्वितेन ।
एला लवंग लवली विमलोदकेन, स्नानं कुरुष्व भगवन्सुनिवेदितेन ।।

ओम् शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

⊙ कलाई का टुकड़ा चढ़ावे

ओम् वस्त्रम्-उपवस्त्रम्-समर्पयामि । वरुणाय नमः ।

⊙ जल छोड़े

वस्त्रान्ते आचमनीयं जलम् समर्पयामि ।

⊙ कलश में रोली लगा दे

ओम् निखिलभुवनमध्ये विस्तृता यस्य कीर्तिः, सुरनर मुनिवन्द्यो वन्दनीय प्रभावः ।
स खलु वरुणदेवो भक्तिपूर्वं प्रदत्तं, भुवि भवभयहारी अंगरागं दधातु ॥

ओम् गन्धं समर्पयामि । वरुणाय नमः ।

⊙ अक्षत चढ़ा दे

अक्षतं यास्तुमे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोवलम् । यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदामय ॥

ओम् अक्षतान् समर्पयामि । वरुणाय नमः ।

⊙ फूलमाला चढ़ा दे

लक्ष्मीर्वसतिपुष्पेषु लक्ष्मीर्वसतिपुष्करे । सामे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथाऽस्तुनः ॥

ओम् पुष्पमालां समर्पयामि । वरुणाय नमः ।

⊙ अबीर-बुक्का

५.७ ओम् नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि ।

⊙ धूप करे

ओम् कुंकुम सुगन्धि सुगन्धितं हि, कस्तूरि चन्दनद्रवैः परिवर्धितं तम् ।
विज्ञैर्बुधैश्च विबुधैः समुपासितं त्वं, धूपं गृहाण सुरभिं परिपावनञ्च ।।
ओम् धूपम् - आघ्रापयामि ।

⊙ दीप करे

ओम् तमोनाशकं दीप्ति दीप्तं प्रदीप्तं, प्रभा भासुरं भासयन्तं गुहान्तम् ।
स्फुरज्ज्योतिषं वर्तियुक्तं सुदीपं, जगद् देव देवः त्वमंगी कुरुष्व ।।
ओम् दीपम् दर्शयामि ।

⊙ हाथ धोकर-नैवेद्य दे

ओम् सौवर्णपात्रे समलंकृते ऽस्मिन्, यथायथं तं विनिवेशितं च ।
सुस्वादु शीतं मधुरं नवं च, नैवेद्य मंगीकुरु देवदेव ।।
ओम् नैवेद्यं निवेदयामि ।

⊙ आचमन हेतु ३ बार जल छोड़े

आचमनीयं मया दत्तं सर्वतृप्तिकरं परम् । अखंडानन्द सम्पूर्ण गृहाण जलमुत्तमम् ।
नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि । मध्ये पानीयम्-उत्तरापोशनं समर्पयामि ।।

⊙ पान-सुपारी चढ़ा दे

ओम् एला लवंग लवली क्रमुकादि युक्तं, सुस्वादु गन्धिसुरभि सुमनोहरं च ।
भूपै प्रयाण समये प्रियमाद्रितं तं, ताम्बूल राग मुररीकृत देव देव ।।
ओम् ताम्बूलं-पूंगीफलं समर्पयामि ।

⊙ दक्षिणा चढ़ा दे

ओम् धूसुरैः सुरसमै रखिलैर्या वन्दिताऽमृतभुजैः समुपास्या ।
तां गृहाण निजभक्त निवेद्यां दक्षिणां सुमनसामपि पूज्याम् ।।
ओम् दक्षिणाद्रव्यम् समर्पयामि ।

⊙ १ फूल चढ़ाकर नीराजन

ओम् कस्तूरि कुंकुम सुगन्धि सुगन्धितेन, एला लवंग घनसार समन्वितेन ।
सौवर्ण पात्रघृत गोमय वर्धकेन, नीराजना मयि करोमि तवाति थेयीम् ।।

⊙ फल चढ़ा दे

ओम् ऋतुफलं समर्पयामि ।

⊙ हाथ घुमाकर प्रदक्षिणा

ओम् समागतानां भव पाशनाशिनां, भवादृशानां त्रय ताप हारिणाम् ।
विधीयते यां विदुषां गृहे सदा, प्रदक्षिणां दक्षिण ते करोमि ताम् ।।

⊙ पुष्पांजलि : १ फूल लेकर निम्न मन्त्र पढ़े

ओम् हे पाशभृत वरुणनात जलेशदेव, दीने दयां मयि विधेहि सदा सुदेव।
नातः परं किमपि प्रार्थयि तथ्य मस्ति, पुष्पांजलिं ननु गृहाण सदा मदीयम् ।।

⊙ फूल कलश के आगे छोड़ दे

⊙ हाथ में जल लेकर निम्न वाक्य पढ़े और जल पृथ्वी पर छोड़ दे

ओम् एतानि गन्धाक्षत - पुष्प - धूप - दीप नैवेद्य - ताम्बूल - पूंगीफल - दक्षिणा द्रव्येण अनया पूजया वरुणादि आवाहित देवताः प्रीयन्तां न मम ।

⊙ अक्षत लेकर प्रार्थना करे—

ओम् देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ।।
त्वत् तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।।
शिवाः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः ।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः। त्वत् प्रसादादिमं कर्म कर्त्तुमीहे जलोद्भव ।।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा। क्षेमकर्त्ता, तुष्टिकर्त्ता, पुष्टिकर्ता, वरदो भव ।।

⊙ प्रार्थना के बाद अक्षत कलश पर चढ़ा दे

⊙ कलश के पास एक घी का दीपक जलाकर ⊙ पूजा कर दे

⊙ दीपक की सुरक्षा कर दे [बुझे नहीं]

॥ पुण्याहवाचन ॥

⊙ अपने सामने पृथिवी पर रोली या हल्दी से अष्टदल कमल बनाएं

⊙ कमलदल पर पुण्याहवाचन के लिए एक कलश स्थापित करे

⊙ कलश स्थापनविधि इस प्रकार है—

⊙ भूमि स्पर्श (अष्टदल कमल को छुवे)

ओम् मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमीक्षताम् । पिपृतान्नो भरीमभिः ।

⊙ कमल पर सप्तधान्य रखे

ओम् ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ७ राजन्पारयामसि ॥

⊙ धान्य पर १ मिट्टी का कलश रखे

ओम् आजिघ्र कलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दवः ।
पुनरूर्जा निवर्तस्व सानः सहस्रन्धुक्ष्वो रुधारा पयस्वती पुनर्मा विशता द्रयिः ।

⊙ कलश में जल भरे

ओम् वरुणस्योत्तम्भन मसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदनमसि
वरुणस्य ऋत सदनमासीद ।

⊙ कलश में रोली छोड़े

ओम् त्वां गन्धर्वा अखनंस्त्वा मिन्द्रस्त्वाम् बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मावमुच्यत ॥

⊙ दूर्वा छोड़

ओम् काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।।

⊙ आम्रपल्लव या पंच पल्लव छोड़े

ओम् अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज इत् किला सथ यत् सनवथ पूरुषम् ।।

⊙ सप्तमृत्तिका छोड़े

ओम् स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः ।।

⊙ ओषधि छोड़े

ओम् या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा। मनैनु बभ्रूणा मह ꣳ शतन्धामानि सप्त च ।।

⊙ कुशा छोड़े

ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य - यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।।

⊙ सुपारी छोड़े

ओम् याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्व ꣳ ह सः ।।

⊙ कलश में सूत्र लपेटना

ओम् युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ।।

⊙ कलश में द्रव्य छोड़े

ओम् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

⊙ कलश में पंचरत्नी छोड़े

ओम् परिवाजपतिः कवि रग्नि र्हव्यान्यक्रमीत् । दधद् रत्नापि दाशुषे ।।

⊙ कलश के ऊपर पूर्ण-पात्र रखे[१]

ओम् पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहाइष मूर्ज ँ शतक्रतोः ।।

⊙ पूर्णपात्र पर कलाई लपेट कर १ सुपारी रखे

ओम् याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्व ँ ह सः ।।

⊙ कलश पर अक्षत छिड़क कर आवाहन करे

ओम् तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तद शास्ते यजमानो हर्विभिः ।
अहेड मानो वरुणे ह वोध्युरुश ँ समान आयुः प्रमोषीः ।।

⊙ दाहिने हाथ की अनामिका अँगुली; जिसमें पवित्री पहनी है, उससे कलश को छूकर यह मन्त्र पढ़े

---

१. पुण्याहवाचन में पूर्णपात्र में एक पियाले में जवा, अक्षत, पीली सरसो, दही, दूब, कलाई (रक्षासूत्र) रख कर कलश पर रखना चाहिए यही पूर्णपात्र है ।

ओम् कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी । अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ।।
कावेरी कृष्णवेणा च गंगा च महानदी । तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ।।
नदाश्च विविधा जाता नद्याः सर्वास्तथापराः । पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः । आयान्तु मम शान्त्यर्थम् दुरितक्षय कारकाः ।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः । अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा । आयान्तु मम शान्त्यर्थम् दुरितक्षय कारकाः ।।

⊙ कलश पर अक्षत छोड़कर प्रतिष्ठा करे

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ । कलशे वरुणाय नमः ।।

⊙ कलश की पूजा करें—३ बार जल छोड़े

पादयोः पाद्यं, हस्तयोः अर्ध्यम्, आचमनीयं जलं समर्पयामि; स्नानार्थम् जलं समर्पयामि,

⊙ गन्ध-अक्षत, फूल, धूप-दीप, नैवेद्य, आचमन, पान, सुपारी, दक्षिणा चढ़ा दे

गन्धं समर्पयामि, अक्षतान् समर्पयामि, पुष्पाणि, धूपं, दीपम्, नैवेद्यं निवेदयामि, नैवेद्यान्ते आचमनीयं, मध्ये पानीयम्—उत्तरापोशनम, ताम्बूलपूंगीफलम् दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि, वरुणाय नमः ।

⊙ जल छोड़े

अनया पूजया वरुणादि - आवाहित देवताः प्रीयन्तां न मम ।।

⊙ अक्षत लेकर प्रार्थना करे—प्रार्थना के बाद अक्षत कलश पर छोड़ दे

ओम् देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः । त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवाः सपैतृकाः । त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ।।
त्वत् प्रसादादिमं कर्म कर्त्तुमीहे जलोद्भव । सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।।
नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय, सुश्वेतहाराय सुमंगलाय ।
सुपाश हस्ताय झषासनाय, जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ।।
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनायक । पुण्याहवाचनं यावत् तावत् त्वं सन्निधो भव ।।

⊙ यजमान दोनों पैर का घुटना मोड़ कर बैठ जाय ⊙ दोनों हाथों को कमल के समान बनाकर इस पुण्याहवाचन कलश को उठा ले ⊙ कलश को अपने माथे में लगावे और प्रार्थना करे

ओम् त्रीणि पदाविचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन् ।।

ओम् दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च । तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। अस्तु दीर्घमायुः । अस्तु दीर्घमायुः । अस्तु दीर्घमायुः ।।

⊙ फिर कलश को अपनी जगह पर रख दें

⊙ ब्राह्मण के दाहिने हाथ में क्रम से जल-अक्षत-फूल आदि दे

upayogibooks.com

⊙ यजमान जल ले पढ़े—

।। ओम् शिवा आपः सन्तु ।।

⊙ फिर यजमान कहे—

।। ओम् सौमनस्यमस्तु ।।

⊙ यजमान अक्षत दे कहे—

।। ओम् अक्षताः पान्तु ।।

⊙ यजमान फूल दे कहे—

।। ओम् पुष्पाणि पान्तु ।।

⊙ यजमान-पान दे-कहे—

।। ओम् ताम्बूलानि पान्तु ।।

⊙ यजमान-दक्षिणा दे, कहे—

।। ओम् दक्षिणाः पान्तु ।।

⊙ ब्राह्मण जल लेकर कहे—

।। सन्तु शिवा आपः ।।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। अस्तु सौमनस्यम् ।।

⊙ ब्राह्मण अक्षत लेकर कहे—

।। मांगल्यमस्तु ।।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे—

।। श्रीरस्तु ।।

⊙ ब्राह्मण-पान ले, कहे—

।। ऐश्वर्यमस्तु ।।

⊙ ब्राह्मण दक्षिणा ले-कहे—

।। ओम् आरोग्य मस्तु ।।

⊙ यजमान हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

ओम् दीर्घायुः शान्तिः पुष्टिः तुष्टिः श्रीः यशो विद्या विनयो बहुपुत्रं बहुधनं चास्तु ।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। अस्तु ।।

⊙ यजमान कहे—

।। ओम् यं कृत्वा सर्व वेद यज्ञ क्रिया करण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा ऋग्-यजु-सामाथर्वणः—आशीर्वचनं बहु-ऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिः-अनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ।।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। ओम् वाच्यताम् ।।

⊙ यजमन कहे—

।। व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-दया-शम-दान-विशिष्टानाम्-सर्वेषाम् ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् ।।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। ओम् समाहित मनसः स्म ।।

⊙ यजमान कहे—

।। ओम् प्रसीदन्तु भवन्तः ।।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। ओम् प्रसन्नाः स्मः ।।

⊙ इसके बाद यजमान अपने सामने बगल-बगल २ मिट्टी का पियाला (पात्र) रखे

⊙ कमल के समान हाथ बना कर पुण्याहवाचन के कलश को उठावे

⊙ निम्न मन्त्रों को पढ़ता हुआ कलश का जल १-१ बूँद क्रमशः पियाले में गिराए ।

⊙ दाहिने पियाले में

॥ ओम् शान्तिरस्तु, पुष्टिरस्तु, तुष्टिरस्तु, वृद्धिरस्तु, ऋद्धिरस्तु, अविघ्नमस्तु, आयुष्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, शिवमस्तु, शिवं कर्मास्तु, कर्मसमृद्धिरस्तु, पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु, वेदसमृद्धिरस्तु, शास्त्रसमृद्धिरस्तु, धन-धान्य-समृद्धिरस्तु, इष्टसम्पदस्तु ॥

⊙ बाएं पियाले में —

॥ ओम् अरिष्ट निरसन मस्तु । यत् पापं रोगमशुभम्-अकल्याणम्-तद् दूरे प्रतिहत मस्तु ॥

⊙ फिर दाहिने पियाले में—

॥ यद् यत् श्रेयस्तदस्तु । उत्तरोत्तरे कर्मणि-अविघ्नमस्तु । उत्तरोत्तर महर् हरभि वृद्धिरस्तु ॥

॥ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम् । तिथिकरणमुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्नाधि देवताः प्रीयन्ताम् । तिथिकरणे समुहूर्ते सुनक्षत्रे सुलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम् ॥

॥ ओम् अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् । माहेश्वरी पुरोगा-उमामातरः प्रीयन्ताम् । वशिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् । अरुन्धती पुरोगा एक पत्न्यः प्रीयन्ताम् । ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम् । विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् । ऋषयः-छन्दांसि-आचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम् । ब्रह्मा च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् । अम्बिका सरस्वत्यौ प्रीयेताम् । श्रद्धामेधे प्रीयेताम् । दुर्गा पांचाल्यौ प्रीयेताम् । भगवती कात्यायनी प्रीयताम् । भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् । भगवती ऋद्धिकरीप्रीयताम् । भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् । पुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवती तुष्टिकरी

प्रीयताम् । भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् । कुलदेवताः प्रीयन्ताम् । सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम् । सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् ।

⊙ बाएं पियाले में—

॥ ओम् हताश्च ब्रह्मद्विषः । हताश्च परिपन्थिनः । हताश्च विघ्नकर्त्तारः । शत्रवः पराभवं यान्तु । शाम्यन्तु घोरणि । शाम्यन्तु पापानि । शाम्यन्तु ईतयः ॥

⊙ दाहिने पियाले में—

॥ ओम् शुभानि वर्द्धन्ताम् । शिवा आपः सन्तु । शिवा ऋतवः सन्तु । शिवा अग्नयः सन्तु । शिवा आहुतयः सन्तु । शिवा वनस्पतयः सन्तु । शिवा अतिथयः सन्तु । अहोरात्रे शिवे स्याताम् । निकामे-निकामे न पर्जन्यो वर्षतु । फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् । योगक्षेमो नः कल्पताम् । शुक्र-अंगारक-बुध-बृहस्पति-शनि-राहु-केतु सोम सहिता आदित्य पुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम् । भगवान् नारायणः प्रीयताम् । भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम् । भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम् । पुरोनु वाक्यया यत्पुण्यं तवस्तु । याज्यया तत्पुण्यं तवस्तु । वषट्कारेण यत्पुण्यं तवस्तु । प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तवस्तु ॥

⊙ कलश को अपनी जगह पृथिवी पर रख दे ।

⊙ हाथ जोड़कर यजमान कहे—

॥ ओम् एतत् कल्याणं युक्तं पुण्य पुण्याहं वाचयिष्ये ॥

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। ओम् वाच्यताम् ।

⊙ यजमान कहे—

।। ओम् ब्राह्म्यं पुण्यं महद्यच्च सृष्टि-उत्पादन कारकम् । वेद वृक्षोद्भवं पुण्यं तत् पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ।।
भो ब्राह्मणाः मम गृहे पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ।।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। ओम् पुण्याहम् । ओम् पुण्याहम् । ओम् पुण्याहम् ।।

।। ओम् पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः । पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदा पुनीहि मा ।।

⊙ यजमान कहे—

।। ओम् पृथिव्या मुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुराकृतम् । ऋषिभिः सिद्धिगन्धर्वैः तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ।।

।। भो ब्राह्मणाः मम गृहे कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु नः ।।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। ओम् कल्याणम् । ओम् कल्याणम् । ओम् कल्याणम् ।।

।। ओम् यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः । ब्रह्मन्राजन्याभ्या ᳪ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ।।

।। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासम यं मे कामः समृद्ध्यता मुपमादो नमतु ।।

⊙ यजमान कहे—

।। ओम् सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्यादिभिः कृता । सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः ।।
भो ब्राह्मणाः मम गृहे ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ।।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। ओम् कर्म ऋद्ध्यताम् । ओम् कर्म ऋद्ध्यताम् । ओम् कर्म ऋद्ध्यताम् ।।

।। ओम् सत्रस्यऋद्धि रस्य गन्म ज्योति रमृता अभूम ।
दिवं पृथिव्या अद्ध्या रूहा मा विदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः ।।

⊙ यजमान कहे—

।। ओम् स्वस्त्यस्तु याऽविनाशाख्या नित्यं मंगलदायिनी । विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः ।।
भो ब्राह्मणाः मम गृहे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। ओम् स्वस्ति । ओम् स्वस्ति । ओम् स्वस्ति ।।

।। ओम् स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।

⊙ यजमान कहे—

॥ ओम् समुद्रमथनाज्—जाता जगदानन्द कारिका । हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः ॥

॥ भो ब्राह्मणाः मम गृहे श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥

⊙ ब्राह्मण कहे—

॥ ओम् अस्तु श्रीः । अस्तु श्रीः । अस्तु श्रीः ॥

॥ ओम् श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन् निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्म इषाण ॥

⊙ यजमान कहे—

॥ ओम् कृतेऽस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टानां ब्राह्मणानां वचनात् सर्वः परिपूर्णोऽस्तु ।

⊙ ब्राह्मण कहे—

॥ ओम् अस्तु परिपूर्णः ।

⊙ बायीं ओर का पियाला नाई या किसी नौकर से बाहर फिकवा दे कोई छुवे नहीं ।

॥ तिलक अभिषेक ॥

⊙ ब्राह्मण पुण्याहवाचन कलश के ऊपर पियाले में जो रोड़ी-अक्षत है, उससे यजमान के माथे में तिलक करे ।

⊙ तिलक मंत्र—

।। ओम् आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः । तिलकं तु प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये ।।

⊙ दाहिनी ओर के पियाले में जो जल गिराया है, उस जल को यजमान पर कुशा से छिड़के—

⊙ अभिषेक मन्त्र— [अभिषेक के समय यजमान पत्नी यजमान के बायीं ओर बैठ जाय]

।। ओम् आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान् ऊर्जे दधातन महेरणाय चक्षसे ।
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः । उशतीरिव मातरः ।
तस्माऽअरङ्ग मामवो यस्य क्षयाय आपोजन यथाचनः ।

ओम् यथावाण प्रहाराणां कवचं भवति वारिणः । तद् दैवोपघातानां शान्तिर्भवतु वारिणा ।।
ओम् शान्तिः, शान्तिः, सुशान्तिर्भवतु ।।

ओम् सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म विष्णु महेश्वराः । वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः ।।
प्रद्युम्नश्चा निरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते । आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वैनिर्ऋतिस्तथा ।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः । ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ।।
कीर्तिर्लक्ष्मी धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रियामतिः । बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्चमातरः ।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः । आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध जीव सितार्क जाः ।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च देवताः । देव दानव गन्धर्वाः यक्ष राक्षस पन्नगाः ।।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च । देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ।।

अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानि च । औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ।।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः । एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्म कामार्थ सिद्धये ।।

⊙ दक्षिणा संकल्प--यजमान कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर पुण्याहवाचन की दक्षिणा ब्राह्मण को संकल्प करके दे ।

ओम् अद्य शुभ पुण्य तिथौ ...गोत्रः... नामाऽहम्-अस्य कृतस्य पुण्याहवाचन कर्मणः तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थम् मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहम्-उत्सृजे ।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे-- ।। स्वस्ति ।।

⊙ यजमान हाथ में जल लेकर पृथिवी पर छोड़ दे —

ओम् पुण्याहवाचनेन कर्माङ्ग देवताः प्रीयन्ताम् ।

।। षोडशमातृका पूजन ।।

⊙ अग्निकोण में [पूर्व-दक्षिण का कोण] षोडशमातृका-सप्तमातृका-घृतमातृका की स्थापना-पूजा करे

।। षोडशमातृका पूजन ।।

⊙ बाएं हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से १७ खाने में थोड़ा-थोड़ा छिड़के, आवाहन—प्रतिष्ठा करे---

१. ओम् गणपतये नमः — गणपतिमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।
२. ओम् गौर्यै नमः — गौरीमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।
३. ओम् पद्मायै नमः — पद्मामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

४. ओम् शच्यै नमः — शचीमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

५. ओम् मेधायै नमः — मेधामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

६. ओम् सावित्र्यै नमः — सावित्रीमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

७. ओम् विजयायै नमः — विजयामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

८. ओम् जयायै नमः — जयामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

९. ओम् देवसेनायै नमः — देवसेनामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

१०. ओम् स्वधायै नमः — स्वधामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

११. ओम् स्वाहायै नमः — स्वाहामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

१२. ओम् मातृभ्यो नमः — मातृः आवाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

१३. ओम् लोकमातृभ्यो नमः — लोकमातृः आवाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

१४. ओम् धृत्यै नमः — धृतिमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

१५. ओम् पुष्ट्यै नमः — पुष्टिमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

१६. ओम् तुष्ट्यै नमः — तुष्टिमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

१७. ओम् आत्मनः कुलदेवतायै नमः — आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि ।

upayogibooks.com

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमंतनो त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन्दधातु ।
विश्वे देवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।

ओम् गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता । गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश ।।
गौर्याद्याः कुल देवतान्त मातरो गणपतिसहिता। सुप्रतिष्ठताः वरदा भवन्तु ।

⊙ फूल लेकर आवाहन करे—

ओम् दारिद्य दावानल नाशिकाः सदा, भजाम्यहं दुःखनिधौ निमग्नः ।
कृपा कटाक्षं मयि मन्दबुद्धौ, मदर्थ मायान्तु निपात्य मातरः ।।

⊙ अक्षत छोड़कर आसन दे—

ओम् सिंहासनं सुन्दर शोभनञ्च, सुसज्जितं तन्मणिभिः सुसौम्यम् ।
शिवप्रदः षोडश संख्यकाश्च, गृह्णन्तु देवासुर पूज्यमानाः ।।

⊙ तीन बार जल छोड़े—

⊙ १. पाद्य २. अर्घ ३. आचमन

ओम् अनेक तीर्थोपहृतानि नीराणि, आदाय गन्धान्वितमद्य पाद्यम् ।
सम्पादितं सारयुतं सुरम्यं गृह्णन्तु चोत्फुल्ल सरोज नेत्राः ।।

ओम् जलज चम्पक पुष्प गणान्वितं, रुचिर मर्घ्य मधन्य करस्थितम् ।
सकल सारमयं हि यदुत्तमं, कुरुत स्वीकरणं मम मातरः ।।

ओम् सकल गन्धयुतं सुमनोहरं, सकल रोग विनाशकरं शुभम्।
ललित माचमनं सुखपूर्वकं, कुरुत स्वीकृत मज्ञ सुमातरः॥

⊙ पंचामृत स्नान—

ओम् पंचविकार नाशकं दुग्धादिभिर्निर्मित मद्य सुन्दरम्।
निःशेष पायान्तक मच्छ दर्शनं, गृह्णन्तु दासस्य सदा सुमातरः॥

⊙ स्नान—

ओम् स्नानीयचूर्ण सकलेन विराजितेन, गन्धान्वितेन कुसुमैश्च सुवासितेन।
स्नानं विधेय मधुना रुचिरेण नीरेणात्यन्त मुग्ध हृदयेऽपि कृपा विधेय॥

⊙ वस्त्र (कलाई)—

ओम् कौशेय मच्छं हि सुवस्त्र मेतद् वन्द्याः स्थितं वै पुरतः सुमञ्चे।
ददामि गन्धेन युतं ममापि प्रियञ्च कुर्वन्तु सदा पुराणाः॥

⊙ रोड़ी—

ओम् प्रभात कालस्य रवेः समानं श्रीरक्तचूर्णम् मनसा ददामि।
धूपादिकेनाति सुगन्धितं तद् गृह्णन्तु प्रीत्याखिल लोकवन्द्याः॥

⊙ चंदन—

ओम् गन्धं प्रकामं रुचिरं सुवन्द्याः ददाम्यहं चात्र भवत् प्रियार्थम्।
लोकैक कूपे पतितं क्वणन्तं रक्षन्तु चाज्ञान विनाशिकाः माम्॥

⊙ अक्षत—

ओम् तण्डुलास्तु भवदर्थ मिहाद्य चार्पिताः, कुरुत वं स्वीकरणम् तथैव।
पूजिताः सकल लोकसाहाय्याः सौख्यदाः पापहराश्च देव्यः॥

⊙ फूल—

ओम् पुष्पाणि सन्तीह सुगन्धवन्ति, चाघ्राय सानन्दतरा भवन्तु।
सन्ताप युक्तं निजमद्यमत्तं, नक्तं दिवं धन्यतमाः पुनन्तु॥

⊙ धूप—

ओम् मनुष्य देवासुर सान्द्र सौख्यदं, लवंगपाटी रजचूर्ण संयुतम्।
सद्यः सुगन्धी कृत हर्म्य कोष्ठकं, धूपं प्रियार्थं प्रददामि मातरः॥

⊙ दीप—

ओम् लोकान्ध कारस्य विनाशदक्षं, सद्वर्त्ति सद्पूर्ति युतं प्रदीपम्।
प्रज्वाल्य सानन्द अमुं ददामि, गृह्णन्तु चाज्ञान विनाशिका मे॥

⊙ नैवेद्य—

ओम् पवित्रपात्रे विधिवत् प्रसारितं, सुगन्ध द्रव्यैश्च सुगन्धितं मुदा।
सुधाशनाः! स्वीकुरुत प्रियं तथा, नैवेद्य मेतन्मनसा सुमातरः॥

⊙ पान-सुपारी —

ओम् एला लवंग निचय रति गन्ध युक्तं, ताम्बूल मद्य हृदयेन ददामि रम्यम् ।
गृह्णन्तु भद्रमधिकं वितरन्तु मह्य, सह्येन लोक इह वंञ्चलनं कदापि ।।

⊙ दक्षिणा—

ओम् देवासुरैर्नित्य मशेषकाले, सुगीयमाना मम मातरश्च ।
गृह्णन्तु सद्यः प्रियदक्षिणां वै, ध्यायेन तथ्ये मयि वर्तितव्यम् ।।

⊙ नीराजन—

ओम् नीराजनां षोडश संख्यका मुदा, करोमि दुःखस्य विनाशिकामहम् ।
अनेक पापार्दित मानवं च या, पवित्र मत्रा तनुते जगद् युगे ।।

⊙ हाथ घुमाकर प्रदक्षिणा —

ओम् प्रदक्षिणा मद्य करोमि सद्यः, पदे-पदे दुःख विनाश कारिणीम् ।
जनौघ पापस्य करोति नाशं, दासस्य या सा मुद मादधाति ।।

⊙ पुष्पाञ्जलि —

ओम् ज्ञात्वा सुखं सुचिरं भुवने मया नो, भ्रान्तं सदापि नव योनि समुद्भवेन ।
शान्ति नं चात्र विलपामि घनांधकारे, युक्त्या कयापि कलयन्तु ममापि भद्रम् ।।

⊙ प्रार्थना—

(१) ओम् समख्ये देव्या धिया सन दक्षिणयो रुचक्षसा।
मामऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहन्त वर्चोरं विदेय तवदेवि सन्दृशि ॥

(२) ओम् गणेश पूर्विका देव्यो गौर्यादि प्रमुखाः स्मृताः।
प्रसीदन्तु हि कण्याण्यो निर्विघ्नं कुरुताध्वरम् ॥

(३) ओम् आयुरारोग्य मैश्वर्यम् ददध्वं मातरो मया।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः ॥

(४) न चार्चनं पुण्यतमं शुभ प्रदम्, जानाम्यहं धन्यतमाः सुमातरः।
सुरप्रियाः षोडशमातृकाः मम, भूयास रज्ञान विनाश कारिकाः ॥

॥ सप्तस्थल मातृकापूजन ॥

⊙ षोडशमातृका के बगल में ७ खाना बना कर सप्तमातृका बनायी जाय

⊙ बाँये हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से हर खानों पर थोड़ा-थोड़ा छिड़के।

⊙ आवाहन करे—

१. ओम् ब्राह्म्यै नमः — ब्राह्मी मावाहयामि। २. ओम् माहेश्वर्यै नमः — माहेश्वरी मावाहयामि।
३. ओम् कौमार्यै नमः — कौमारी मावाहयामि। ४. ओम् वैष्णव्यै नमः — वैष्णवी मावाहयामि।
५. ओम् वाराह्यै नमः — वाराही मावाहयामि। ६. ओम् इन्द्राण्यै नमः — इन्द्राणी मावाहयामि।
७. ओम् चामुण्डायै नमः — चामुण्डा मावाहयामि।

⊙ प्रतिष्ठा—हाथ में बचा हुआ अक्षत सप्तमातृका पर निम्न मन्त्र पढ़कर छोड़ दे।

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन्दधातु।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥

⊙ पाद्य-अर्घ-आचमन गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी दक्षिणा चढ़ाकर पूजन करे

⊙ हाथ में जल लेकर छोड़ दे निम्न मन्त्र पढ़े—

एतानि गंधाक्षत-पुष्प-धूपदीप-नैवेद्य-ताम्बूल पूंगीफल दक्षिणा द्रव्येण कृताया अनया पूजया प्रीयन्तां न मम्।
ओम् क्षेमकर्त्री, तुष्टिकर्त्री, पुष्टिकर्त्री, वरदात्री भव।

॥ सप्त घृतमातृका पूजन ॥

⊙ षोडशमातृका-सप्तमातृका के बगल में घृतमातृका बनाई जाती है। एक साफ (स्वच्छ) ईंटा या काठ लेकर उस पर सफेद कपड़ा लपेट दे, ऊपर-नीचे कलाई से बाँध दे, जिससे कपड़ा गिरे या खिसके नहीं, इसी कपड़े पर लाल रोड़ी से २८ बिन्दु बनाना चाहिए।

⊙ (नमूना नक्शे में देखें)।

⊙ घृतधारा दे—पान की चड़ से घी बोर कर एक समान ७ धारा (पंक्ति) सब से नीचे वाले ७ बिन्दुओं के नीचे दे—
निम्न मन्त्र पढ़े—

⊙ घृतधारा मन्त्र—

१ ओम् वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्र धारम् ।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा ।।

२ ओम् नमोऽस्तु वसुमातृभ्यो घृतमातृभ्य एव च ।
कर्मण्यस्मिन् सिद्ध्यर्थं धारां वास्यामि मातरः ।।

⊙ धारा एकीकरण—१ बताशा से या १ गुड़ के टुकड़े से सातों धाराओं को मिला दे, निम्न मंत्र पढ़ता रहे—

ओम् कामधुक्षः

श्री पूर्वम् सप्तमातृश्च घृतमातृस्तथैव च । गुडेन मेलयिष्यामि ताः सर्वार्थ प्रसाधिकाः ।।

⊙ फिर अक्षत छिड़क कर सप्तघृतमातृका का आवाहन करे—

१. ओम् श्रियै नमः — श्रियमावाहयामि ।
२. ओम् लक्ष्म्यै नमः — लक्ष्मीमावाहयामि ।
३. ओम् धृत्यै नमः — धृतिमावाहयामि ।
४. ओम् मेधायै नमः — मेधामावाहयामि ।
५. ओम् स्वाहायै नमः — स्वाहामावाहयामि ।
६. ओम् प्रज्ञायै नमः — प्रज्ञामावाहयामि ।
७. ओम् सरस्वत्यै नमः — सरस्वतीमावाहयामि ।

ओम् श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती । मांगल्येषु प्रसूयन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥
ओम् वसोर्धारादेवताभ्यो नमः ।

⊙ अक्षत छोड़कर प्रतिष्ठा करे—

मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ᳰ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा सइह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ । वसोर्धारा देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु ।

⊙ पूजन – ३ बार जल छोड़े—

ओम् पादयोः पाद्यं, हस्तयोः अर्घं, स्नानानीयं जलं समर्पयामि ।

⊙ गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप—

गन्धार्चनं समर्पयामि, अक्षतं समर्पयामि, पुष्पाणि समर्पयामि । धूपम्-आघ्रायामि, दीपं दर्शयामि ।

⊙ हाथ धोकर नैवेद्य –

नैवेद्यं निवेदयामि ।

⊙ आचमन—

नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

⊙ पान-सुपारी—

मुख शुद्ध्यर्थं ताम्बूलं-पूंगीफलं समर्पयामि ।

⊙ दक्षिणा—

दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि ।

⊙ हाथ में लेकर जल छोड़ दे—

अनया पूजया वसोर्धारा देवताः प्रीयन्तां न मम् ।

⊙ प्रार्थना करे—

ओम् ध्व्यादि देव्यः सदा पूज्याः सप्त वै घृत मातरः । कल्याणानि प्रयच्छन्तु सकुटुम्बस्य मे सदा ।।
यदंगत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः । कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ।।

।। आयुष्यमंत्र जप ।।

⊙ यजमान पुष्प-अक्षत लेकर प्रार्थना करे । ब्राह्मण निम्न मन्त्रों को पढ़े—

(१) ओम् यदायुष्यं चिरं देवाः सप्त कल्पान्त जीविषु । ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम् ।।

(२) ओम् दीर्घानागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः । अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम् ।।

(३) सत्यानि पंचभूतानि विनाश रहितानि च । अविनाश्या युषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम् ।।

(४) ओम् आयुष्यं वर्चस्य ꣳ रायस्पोष मौद्भिदम् । इदं ꣳ हिरण्यं वर्चस्व जैत्राया विशता दुमाम् ।।

(५) न तद् रक्षा ꣳ सि न पिशाचास्तरन्ति देवानाभोजः ।
प्रथम ज ꣳ ह्येतत् । यो बिभर्ति दाक्षायण ꣳ हिरण्य ꣳ ।
स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः । समनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ।

(६) यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ७ शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।

तन्य आवघ्नामि शत शारदा यायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ।।

।। नान्दीमुखश्राद्ध ।।

⊙ अपने सामने १ पत्तल रखे, उसी पर चार स्थानों पर जल-जवा-दूब आदि क्रमशः छोड़े—

⊙ पहले—हाथ में ४ बार जल ले-लेकर छोड़े—निम्न मन्त्र पढ़े—

१. ओम् सत्य वसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावने जनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः ।

२. ओम् मातृ-पितामही-प्रमितामहीः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावने जनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः ।

३. ओम् पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावने जनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः ।

४. ओम् मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावने जनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ।

⊙ आसन हेतु— ४ बार १-१ टुकड़ा दूब छोड़े—निम्न मन्त्र पढ़े—

१. ओम् सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः ।
नान्दीश्राद्धे क्षणौक्रियेताम् यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ।।

२. ओम् मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः ।
नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्, यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ।।

३. ओम् पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः ।
नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्, यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ।।

४. ओम् मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः ।
नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्, यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ।।

⊙ पूजन— जल चढ़ावे—
।। ओम् शिवा आपः सन्तु ।।

⊙ चन्दन-रोड़ी चढ़ावे—
।। ओम् गन्धाः पान्तु ।।

⊙ अक्षत चढ़ावे—
।। ओम् अक्षतं चारिष्ट मस्तु ।।

⊙ फूल चढ़ावे—
।। ओम् सौमनस्य मस्तु ।।

⊙ हाथ में जल लेकर फिर ४ बार छोड़े—

१. ओम् सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

२. ओम् मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

३. ओम् पितृ-पितामह-वृद्धप्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वाहा इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

४. ओम् मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

⊙ भोजन निष्क्रय यथाशक्ति द्रव्य चढ़ावे—

१. ओम् सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं भोजन निष्क्रयभूतं द्रव्यम्-अमृत-रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

२. ओम् मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं भोजन निष्क्रयभूतं द्रव्यम्-अमृत-रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

३. ओम् पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं भोजननिष्क्रय भूतं द्रव्यम्-अमृत-रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

४. ओम् मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं भोजन-निष्क्रयभूतं द्रव्यम्-अमृरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

⊙ हाथ में दूध-जवा-जल लेकर ४ बार छोड़े—

१. ओम् सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ।

२. ओम् मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम ।

३. ओम् पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ।

४. ओम् मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ।

⊙ हाथ में जल लेकर पूर्व की ओर धारा देते हुए ४ बार छोड़े—

⊙ यजमान कहे—

॥ ओम् अघोराः पितरः सन्तु ॥

⊙ ब्राह्मण कहे—

॥ सन्त्वघोराः पितरः ॥

⊙ हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

ओम् गोत्रन्नो वर्धतां, दातारो नोऽभिवर्धन्तां, वेदाः सन्ततिरेव च ।

श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु । अन्नं च नो बहुभवेद तिथींश्च लभे महि ॥

याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन । एताः सत्याः आशिषः सन्तु ॥

⊙ ब्राह्मण कहे—

॥ सन्तु एतः सत्या आशिषः ॥

⊙ जवा-दूब-जल-दक्षिणा लेकर संकल्प करे—

१. ओम् सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठार्थं द्राक्षाऽमलक यव मूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ।

२. ओम् मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठार्थं द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ।

३. ओम् पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठार्थं द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ।

४. ओम् मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठार्थं द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ।

[नोट—कुछ लोग सीधा दान करते हैं ।]

⊙ सीधा दान संकल्प—

अद्य मयाचरितस्य अमुक कर्मणः कर्माङ्गत्वेन नान्दीश्राद्ध नैमित्तकेन च ब्राह्मण भोजन पर्याप्तामान्नं तद् फल सिध्यर्थं दक्षिणां च गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ।

⊙ ब्राह्मण मन्त्र पाठ करे—

ओम् उपास्मै गायता नरः पवमाना यन्दवे । अभिवेवांइयक्षेत । इडामग्ने पुरुद ऋ स ऋ निंगोः शश्वत्तम हवमानाय साध । स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने साते सुमतिर्भूत्वस्मे ।

⊙ यजमान कहे—

।। ओम् अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम् ।।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। ओम् सुसम्पन्नम् ।।

⊙ हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे, ब्राह्मण मन्त्रपाठ करे—

ओम् वाजे वाजे वत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
अस्य मध्वः पिवत मादयध्वं तृप्तायात पथिभिर्देवयानैः ।।

ओम् आमा वाजस्य प्रसवो जगम्या वे मे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे ।
आमागन्तां पितरा मातरा चामा सोमोअमृतत्वेन गम्यात् ।।
विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ।

मातापितामहा चैव तथैव प्रपितामही । पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ।।
मातामहस्तत् पिता च प्रमाता महकादयः । एतेभवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मंगलम् ।।

⊙ यजमान कहे—

मयाचरिते सांकल्पिक नान्दीश्राद्धे-न्यूनातिरिक्तो यो विधिः सः भवद् वचनात्गणपतिप्रसादात् च परिपूर्णोऽस्तु ।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। अस्तु परिपूर्णः ।।

।। रक्षा विधान ।।

⊙ पुण्याहवाचन कलश के ऊपर के पियाले में जो पीली सरसों रखी है उसे हाथ में लेकर प्रार्थना करे—

ओम् यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा । स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ।।
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्त्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषा मविरोधेन शान्ति कर्म समारभे ।।
भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन । ते सर्वेऽप्य र गच्छन्तु इदं यज्ञं करोम्यहम् ।।

⊙ सरसों छिड़के—सरसों बायें हाथ में रख कर दाहिने हाथ से ४-४ दाना दशों दिशाओं में (पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण तथा चारों कोने में ईशान, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य) एवं ऊपर आकाश में अपने सामने पृथिवी पर छिड़कना चाहिए ।

॥ ओम् पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेयां गरुड़ध्वजः । दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैऋत्यां मधुसूदनः ॥

पश्चिमे चैव गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः । उत्तरे श्रीपती रक्षेदैशान्यां हि महेश्वरः ॥

ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु । अनुक्तमपि यत् स्थानं रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक् ॥

॥ रक्षा सूत्रबन्धन ॥

⊙ सरसों छिड़कने के बाद इसी पियाले में जो रक्षासूत्र (कलाई) रखी है, उसे लेकर ब्राह्मण यजमान के हाथ में बांध दे । (यह कलाई यजमान के हाथ भर लम्बी होनी चाहिए)

॥ ओम् येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वां प्रति बध्नामि रक्षे माचल माचल ॥

॥ आचार्य वरण ॥

⊙ यजमान आचार्य का वरण करे, पहले पाँव धोये—

ओम् आपद् घन ध्वान्त सहस्र भानवः, समीहितार्थार्पण कामधेनवः ।

समस्त तीर्थाम्बु पवित्र मूर्तयो रक्षन्तु मां ब्राह्मण पाद पांसवः ॥

⊙ ब्राह्मण के माथे में रोड़ी तिलक-अक्षत लगावे—मन्त्र पढ़े —

ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ।।

⊙ कुश-अक्षत-जल-द्रव्य-धोती-लोटा-अँगोछा-सुपारी-जनेऊ आदि लेकर संकल्प करे—

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ ... गोत्रः नामाऽहम्–अस्मिन् कर्मणि शुभता सिध्यर्थम्-आचार्यकर्म कर्तृत्वेन एभिः वरण –सामग्रीभिः ... गोत्रं शर्माणं त्वाम् वृणे ।

⊙ ब्राह्मण संकल्प लेकर कहे—

।। ओम् वृतोऽस्मि ।।

⊙ ब्राह्मण यजमान पर जल छिड़क दे—मन्त्र पढ़े—

ओम् व्रतेन दीक्षा माप्नोति दीक्षयाऽप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्य माप्यते ।।

।। जापकवरण ।।   गणेशजप ब्राह्मण वरण ।

⊙ यजमान गणेश मन्त्र जप करने के लिए एक ब्राह्मण का वरण करे

⊙ ब्राह्मण को तिलक-अक्षत लगाकर माला पहना दे

⊙ कुश-अक्षत-जल-द्रव्य-वरण सामग्री लेकर संकल्प करे—

।। अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ [अमुक] गोत्रः [अमुक] नामाऽहं मूर्त्तिप्रतिष्ठा कर्मणो निर्विघ्न समाह्यर्थम् यथासंख्यकं गणेश मन्त्र जपार्थम् [अमुक] गोत्रं [अमुक] नामकं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे ।

⊙ ब्राह्मण को वरण सामग्री दे दे। ⊙ ब्राह्मण लेकर कहे—

।। ओम् वृतोऽस्मि ।।

⊙ ब्राह्मण उत्तराभिमुख बैठक गणेश मन्त्र का पूर्णाहुति तक जप करे।

।। पंचगव्य करण ।।

⊙ एक मिट्टी के पात्र (कुल्हड़-पुरवा) में—

⊙ (१) गोमूत्र, (२) गोबर, (३) गोदुग्ध, (४) गोघृत (घी), (५) गोदधि (दही) मिलाए—ब्राह्मण मन्त्र पढ़े।

⊙ गोमूत्र—

ओम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात् ।।

⊙ गोबर—

ओम् मानस्तोके तनये मा नऽआयुषि मानो गोषुमानोऽअश्वेषु रीरिषः।
मानो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ।।

⊙ दूध—

ओम् आप्याय स्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सं गथे ।।

⊙ दधि—

ओम् दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णो रश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत् प्रणऽआयु ꣳ षितारिषत् ।।

⊙ घी—

ओम् तेजोसि शुक्र मस्य मृतमसि धाम । नामासि प्रियं । देवाना मनाधृष्टन्देव यजन मसि ।।

कुशोदक—(कुशा धोकर वह जल मिला दे)

।। ओम् देवस्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहूभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।।

⊙ एक काष्ठ (शुद्ध लकड़ी) लेकर सब को चला दे, कहे—"ओम्"

⊙ कुश से पूजा स्थल तथा पूजा सामग्री पर पंचगव्य छिड़के निम्न मन्त्र पढ़े—

(१) ओम् आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जेदधातन महेरणाय चक्षसे ।

(२) यो वः शिव तमो रसस्तस्य भाजयते हनः उशती रिव मातरः ।

(३) तस्माऽ अरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजन यथा चनः ।

(४) ओम् गो शरीरात् समुद्भूतं पंचगव्यं सुपावनम् । प्रोक्षणं मण्डपस्यैव करिष्यामि सुरार्थकम् ।।

(५) ओम् मण्डपाभ्यन्तरे देवाः सदेव्यः सगणाधिपः । तस्मात् संप्रोक्षणार्थेन सन्तुष्टा वरदाः सदा ।।

⊙ कुशा से अपने ऊपर छिड़के : मन्त्र पढ़े ।

ओम् गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः समन्वितम् । सर्वपाप विशुद्ध्यर्थं पंचगव्यं पुनातु माम् ।।२।।

⊙ हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—मंत्र—

ओम स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्व वेदाः ।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥
देवाः आयान्तु । यातुधाना अपायान्तु । विष्णवे नमः । विष्णोः इमं सत्रं रक्षस्व ।

॥ मंडप पूजन ॥

[मंडप पूजन विधि परिशिष्ट में देखें]

⊙ इन्द्रध्वजपूजन—बायें हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से इन्द्रध्वज के ऊपर २-२ दाना अक्षत छिड़के - मन्त्र पढ़े—

⊙ आवाहन मन्त्र—

ओम् त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ꣹ हवे हवे सुहव ꣹ सूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣹ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥

ओम् इन्द्रध्वजाय नमः ।

⊙ पूजन—जल-गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा-ऋतुफल चढ़ाकर ध्वज की पूजा करे ।

⊙ प्रार्थना—अक्षत-पुष्प लेकर हाथ जोड़े—

ओम् इमं रक्तवर्णन्तु यथाहस्त सुविस्तृतम् । इन्द्रध्वजं चालभामि महेन्द्राय सुप्रीत्स्ये ॥
अमुमिन्द्रध्वजं चित्रं सर्वं विघ्न विनाशकम् । अस्मिन् मण्डप पार्श्वे तु स्थापयामि सुरार्चने ॥

⊙ हाथ में जल लेकर छोड़े—

॥ अनया पूजया इन्द्रध्वज देवता प्रीयतां न मम ॥

॥ वास्तुपीठ पूजन ॥

⊙ नैऋत्यकोण [दक्षिण-पश्चिम का कोण] में वास्तुपीठ की पूजा करे। ⊙ पूर्व मुख बैठ कर आचमन-प्राणायाम करे

⊙ हाथ में अक्षत-जल लेकर संकल्प करे—

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ...गोत्रः...नामाऽहम् करिष्यमाण देव प्रतिष्ठा कर्मणि वास्तु पूजन करिष्ये ॥

⊙ हाथ का जल-अक्षत आदि सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ वास्तुपीठ के चारों कोण में ४ लोहे का कीला गाड़ दे ॥मंत्र॥

॥ ओम् विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः ॥
मण्डपेऽत्राव तिष्ठन्तु आयुर्बल कराः सदा ॥

⊙ कीला गाड़कर १-१ पत्ता में दही-उरद-जल लेकर चारों कोने में [जहाँ कीला गाड़ा है] रख दे। मंत्र पढ़े—

१. अग्नि कोण में :— ॥ ओम् अग्निभ्योऽप्यथ सर्वेभ्यो ये चान्येतत् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदन मुत्तमम् ॥

टिप्पणी—यदि मंदिर परिसर में वेदी पूजन हो रहा है, मंदिर की जमीन पक्की है, तो वहाँ कीला गाड़ना सम्भव नहीं होगा, अतः मंदिर के बाहर चारों कोने में यह कीला गड़वा दे, अग्निपुराण में मंदिर प्रासाद के चारों ओर ही कीला (शंकु गाड़ने को लिखा है।

२. नैऋर्त्यकोण में :— ।। ओम् नैऋर्त्याधिपतिश्चैव नैऋर्त्यां ये च राक्षसाः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि सर्वे गृह्णन्तु मन्त्रितम् ।।

३. वायव्यकोण में :— ।। ओम् वायव्याधि पतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुष्पमोदनमुत्तमम् ।।

४. ईशानकोण में :— ।। ओम् रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तत् समाश्रिताः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि गृह्णन्तु सतोत्सुकाः ।।

⊙ इसके बाद वास्तु पीठ पूजा करे—

।। वास्तुपीठ पूजा ।।

⊙ बाएं हाथ में चावल लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना पीठ की रेखा— (लाइन) ६४ खाना बनाने के लिए जो खींची है उस पर छोड़ें—

⊙ पश्चिम से पूर्व वाली रेखा पर—

(१) ओम् लक्ष्म्यै नमः	(२) ओम् यशोवत्यै नमः	(३) ओम् कान्तायै नमः
(४) ओम् सुप्रियायै नमः	(५) ओम् विमलायै नमः	(६) ओम् शिवायै नमः
(७) ओम् सुभगायै नमः	(८) ओम् सुमत्यै नमः	(९) ओम् इडायै नमः

⊙ दक्षिण से उत्तर वाली रेखा पर—

(१) ओम् धन्यायै नमः (२) ओम् प्राणायै नमः (३) ओम् विशालायै नमः
(४) ओम् स्थिरायै नमः (५) ओम् भद्रायै नमः (६) ओम् जयायै नमः
(७) ओम् निशायै नमः (८) ओम् विरजायै नमः (९) ओम् विभवायै नमः ।

भो रेखा देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवत । रेखादेवताभ्यो नमः ।

⊙ ६४ खानो पर २-२ दाना चावल छिड़के—आवाहन करे—

१. ओम् शिखिने नमः—शिखिनम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२. ओम् पर्जन्याय नमः—पर्जन्यम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३. ओम् जयन्ताय नमः—जयन्तम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४. ओम् कुलिशायुधाय नमः—कुलिशायुधम्—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५. ओम् सूर्याय नमः—सूर्यम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
६. ओम् सत्याय नमः—सत्यम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
७. ओम् भृशाय नमः—भृशम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
८. ओम् आकाशाय नमः—आकाशम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
९. ओम् वायवे नमः—वायुम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

१०. ओम् पूष्णे	नमः—पूषणम्	—आवाहयामि	—स्थापयामि	—पूजयामि
११. ओम् वितथाय	नमः—वितथम्	—आवाहयामि	—स्थापयामि	—पूजयामि
१२. ओम् गृहक्षताय	नमः—गृहक्षतम्	—आवाहयामि	—स्थापयामि	—पूजयामि
१३. ओम् यमाय	नमः—यमम्	—आवाहयामि	—स्थापयामि	—पूजयामि
१४. ओम् गन्धर्वाय	नमः—गन्धर्वम्	—आवाहयामि	—स्थापयामि	—पूजयामि
१५. ओम् भृंगराजाय	नमः—भृंगराजम्	—आवाहयामि	—स्थापयामि	—पूजयामि
१६. ओम् मृगाय	नमः—मृगम्	—आवाहयामि	—स्थापयामि	—पूजयामि
१७. ओम् पितृभ्यो	नमः—पितृन्	—आवाहयामि	—स्थापधामि	—पूजयामि
१८. ओम् दौवारिकाय	नमः—दौवारिकम्	—आवाहयामि	—स्थापयामि	—पूजयामि
१९. ओम् सुग्रीवाय	नमः—सुग्रीवम्	—आवाहयामि	—स्थापयामि	—पूजयामि
२०. ओम् पुष्पदन्ताय	नमः—पुष्पदन्तम्	—आवाहयामि	—स्थापयामि	—पूजयामि
२१. ओम् वरुणाय	नमः—वरुणम्	—आवाहयामि	—स्थापयामि	—पूजयामि
२२. ओम् असुराय	नमः—असुरम्	—आवाहयामि	—स्थापयामि	—पूजयामि
२३. ओम् शोषाय	नमः—शोषम्	—आवाहयामि	—स्थापयामि	—पूजयामि

२४. ओम् पापाय	नमः—पापम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२५. ओम् रोगाय	नमः—रोगम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२६. ओम् अहये	नमः—अहिम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२७. ओम् मुख्याय	नमः—मुख्यम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२८. ओम् भल्लटाय	नमः—भल्लटम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२९. ओम् सोमाय	नमः—सोमम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३०. ओम् सर्पाय	नमः—सर्पम्	—आवाहयामि—स्थापयामि पूजयामि
३१. ओम् अदित्यै	नमः—अदितिम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३२. ओम् दित्यै	नमः—दितिम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३३. ओम् आपाय	नमः—आपम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३४. ओम् सावित्राय	नमः—सावित्रम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३५. ओम् जयाय	नमः—जयम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३६. ओम् रुद्राय	नमः—रुद्रम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३७. ओम् अर्यमणे	नमः—अर्यमणम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

upayogibooks.com

३८. ओम् सवित्रे	नमः—सवितारम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३९. ओम् विवस्वते	नमः—विवस्वतम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४०. ओम् विबुधाधिपाय	नमः—विबुधाधिपम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४१. ओम् मित्राय	नमः—मित्रम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४२. ओम् राजयक्ष्मणे	नमः—राजयक्ष्माणम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४३. ओम् पृथ्वीधराय	नमः—पृथ्वीधरम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४४. ओम् आपवत्साय	नमः—आपवत्सम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४५. ओम् ब्रह्मणे	नमः—ब्रह्माणम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४६. ओम् चरक्यै	नमः—चरकीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४७. ओम् विदार्यै	नमः—विदारीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४८. ओम् पूतनायै	नमः—पूतनाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४९. ओम् पापराक्षस्यै	नमः—पापराक्षसीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५०. ओम् स्कन्दाय	नमः—स्कन्दम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५१. ओम् अर्यम्णे	नमः—अर्यमण.	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

५२. ओम् जृम्भकाय नमः—जृम्भकम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

५३. ओम् पिलिपिच्छाय नमः - पिलिपिच्छम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

५४. ओम् इन्द्राय नमः—इन्द्रम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

५५. ओम् अग्नये नमः—अग्निम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

५६. ओम् यमाय नमः—यमम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

५७. ओम् निर्ऋतये नमः—निर्ऋतिम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

५८. ओम् वरुणाय नमः—वरुणम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

५९. ओम् वायवे नमः—वायुम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

६०. ओम् कुवेराय नमः—कुवेरम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

६१. ओम् ईश्वराय नमः—ईश्वरम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

६२. ओम् ब्रह्मणे नमः—ब्रह्माणम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

६३. ओम् अनन्ताय नमः—अनन्तम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

६४. ओम् वास्तोष्पतये नमः—वास्तोष्पतिम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

⊙ अक्षत छोड़कर प्रतिष्ठा करे ।

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयान्तामोम् प्रतिष्ठ ।।

ओम् भूर्भुवः स्वः शिख्यादिमण्डल देवता इहागच्छत —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि ।

⊙ पीठ की पूजा कर दे—

३ बार जल-गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य आचमन-फल-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ा दे

⊙ हाथ में जल लेकर छोड़ दे । कहे—

।। ओम् अनया पूजया शिख्यादि मण्डल देवताः प्रीयन्तान्नमम ।।

⊙ हाथ जोड़ ले

।। शिख्यादि मंडल देवताः क्षेमकर्त्तारः—तुष्टिकर्त्तारः पुष्टिकर्त्तारो वरदा भवत ।।

।। पीठ पर ताम्रकलश स्थापित करे ।।

[कलश स्थापनविधि परिशिष्ट पेज…पर देखे]

⊙ सुवर्ण की वास्तु प्रतिमा लेकर अग्नि-उत्तारण-प्राण प्रतिष्ठा करे

[अग्नि उत्तारण आदि की विधि परिशिष्ट पेज…पर देखे]

⊙ प्रतिमा को कलश पर स्थापित करने के बाद सविधि पूजा करे

⊙ फूल लेकर आवाहन करे—

।। ओम् वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्थान् स्वावेशो अनमीवो भवानः ।।
यत्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।।

ओम् भूर्भुवः स्वः भगवन् वास्तु पुरुष इहागच्छ इह तिष्ठ आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि ।

।। ओम् आगच्छ भगवन् वास्तो सर्वदेवैरधिष्ठित । भगवन् कुरू कल्याणं यज्ञेऽस्मिन् सन्निधोभव ।।

⊙ फूल प्रतिमा पर चढ़ा दे

⊙ षोडशोपचार पूजन कर दे

⊙ हाथ में जल लेकर छोड़ दे—

अनेन पूजनेन वास्तुपुरुष देवता प्रीयतां न मम ।

⊙ एक पात्र में जल-अक्षत-गन्ध-फूल-फल-द्रव्य लेकर अर्घ दे—

टिप्पणी—कुछ लोग शिखी आदि ६४ देवों का अलग-अलग वलि लिखते हैं अतः शिखी आदि ६४ नामों को लेकर "एष वलिर्नमम" कह कर अलग-अलग दे । यथा — ओम् शिखिने एष वलिर्नमम ।।
६४ नाम पहले लिखा गया है इन्हीं नामो से आवाहन किया गया है

।। ओम् पूज्येषु त्रिषु लोकेषु यज्ञरक्षार्थं हेतवे । तद्विनार्चनं सिद्ध्यन्ति यज्ञदानान्य नेकशः ।।
अयोने भगवन् भर्गं ललाट स्वेद संभव । गृहाणार्घम् मयादत्तं वास्तोः स्वामिन् नमोऽस्तुते ।।

⊙ अर्घ को वास्तु पीठ के सामने चढ़ा दे ⊙ पात्र अलग रख दे

⊙ एक पत्ता पर दही-उरद-जल लेकर वलि दे

।। ओम् नाना पक्वान्न संयुक्तं नानागन्ध समन्वितम् । वलिं गृहाण देवेश वास्तु दोष प्रणाशक ।।
ओम् शिख्यादि देवसहिताय वास्तुपुरुषाय एषवलिर्नमम ।।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

ओम् पूजितोऽसि मयावास्तो हेमाद्यैरर्चनैः शुभैः । प्रसीद पाहि विश्वेश देहिमे सुखमोत्तमम् ।।
नमस्ते वास्तु पुरुष भू शय्याभिरत प्रभो । मद्गृहे धन धान्यादि समृद्धि कुरु सर्वदा ।।
स शैल सागरां पृथिवीं यथा वहसि मूर्धनि । तथा मां वह कल्याण सम्पत् सन्ततिभिः सह ।।
यथामेरुगिरेः शृंगे देवानामालयः सदा । तथा ब्रह्मादि देवानां प्रासादेऽस्मिन् स्थिरो भव ।।
नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वदोष हरोभव । शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे ।।

⊙ फूल प्रतिमा पर चढ़ा दे ।

।। क्षेत्रपाल पूजन ।।

⊙ यजमान वायव्य कोण में पश्चिम-उत्तर के कोण में क्षेत्रपाल पीठ के सामने उत्तराभिमुख बैठ जाय

⊙ आचमन-प्राणायाम करे ⊙ जल-अक्षत लेकर संकल्प करें—

।। अद्य शुभपुण्यतिथौ.... गोत्रः.... नामाऽहम् करिष्यमाण देव प्रतिष्ठाकर्मणि अजरादि मण्डल देवता-सहित श्री क्षेत्रपाल पूजनं करिष्ये ।।

⊙ हाथ का जल-अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ बाएं हाथ में अक्षत ले ले

⊙ दाहिने हाथ से क्षेत्रपाल पीठ पर २-२ दाना अक्षत छोड़कर मंडल देवताओ का आवाहन करे—

१. ओम् अजराय नमः—अजरम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

२. ओम् व्यापकाय नमः—व्यापकम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३. ओम् इन्द्रचौराय नमः—इन्द्रचौरम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

४. ओम् इन्द्रमूर्तये नमः—इन्द्रमूर्तिम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

५. ओम् उक्षाय नमः—उक्षम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

६. ओम् कूष्माण्डाय नमः—कूष्माण्डम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

७. ओम् वरुणाय नमः—वरुणम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

८. ओम् वटुकाय नमः—वटुकम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

९. ओम् विमुक्ताय नमः--विमुक्तम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१०. ओम् लिप्तकामाय नमः—लिप्तकामम् —आवाहयामि—स्थापयासि—पूजयामि
११. ओम् लीलाकाय नमः—लीलाकम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१२. ओम् एकदंष्ट्राय नमः– एकदंष्ट्रम् —आवाहयामि –स्थापयामि –पूजयामि
१३. ओम् ऐरावताय नमः - ऐरावतम् —आवाहयामि –स्थापयामि—पूजयामि
१४. ओम् ओषधिघ्नाय नमः– ओषधिघ्ननम् --आवाहयामि—स्थापयामि--पूजयामि
१५. ओम् बन्धनाय नमः—बन्धनम् --आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१६. ओम् दिव्यकाय नमः—दिव्यकायम् —आवाहयामि– स्थापयामि—पूजयामि
१७. ओम् कम्बलाय नमः—कम्बलम् —आवाहयामि- स्थापयामि—पूजयामि
१८. ओम् भीषणाय नमः—भीषणम् —आवाहयामि—स्थापयामि— पूजयामि
१९. ओम् गवयाय नमः—गवयम् – आवाहयामि—स्थापयामि– पूजयामि
२०. ओम् घण्टाय नमः—घण्टम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२१. ओम् व्यालाय नमः—व्यालम् --आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२२. ओम् अणवे नमः—अणुम् —आवाहयामि –स्थापयामि –पूजयामि

२३. ओम् चन्द्रवारुणाय नमः—चन्द्रवारुणम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

२४. ओम् पटाटोपाय नमः—पटाटोपम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

२५. ओम् जटालाय नमः—जटालम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

२६. ओम् क्रतवे नमः क्रतुम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

२७. ओम् घण्टेश्वराय नमः—घण्टेश्वरम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

२८. ओम् विटङ्काय नमः—विटङ्कम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

२९. ओम् मणिमानाय नमः—मणिमानम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३०. ओम् गणबन्धवे नमः—गणबन्धुम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३१. ओम् डामराय नमः—डामरम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३२. ओम् दुण्ढिकर्णाय नमः—दुण्ढिकर्णम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३३. ओम् स्थविराय नमः—स्थविरम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३४. ओम् दन्तुराय नमः—दन्तुरम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३५. ओम् धनदाय नमः—धनदम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३६. ओम् नागकर्णाय नमः—नागकर्णम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३७. ओम् महाबलाय	नमः—महाबलम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३८. ओम् फेत्काराय	नमः—फेत्कारम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३९. ओम् चीकराय	नमः—चीकरम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४०. ओम् सिंहाय	नमः—सिंहम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४१. ओम् मृगाय	नमः—मृगम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४२. ओम् यक्षाय	नमः—यक्षम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४३. ओम् मेघवाहनाय	नमः—मेघवाहनम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४४. ओम् तीक्ष्णोष्ट्राय	नमः—तीक्ष्णोष्ट्रम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४५. ओम् अनलाय	नमः—अनलम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४६. ओम् शुक्लतुण्डाय	नमः—शुक्लतुण्डम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४७. ओम् सुधालापाय	नमः—सुधालापम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४८. ओम् बर्बरकाय	नमः—बर्बरकम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४९. ओम् पावनाय	नमः—पावनम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

॥ ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा रः इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥

⊙ हाथ का शेष अक्षत पीठ पर छोड़ दे ॥ कहे—

॥ ओम् अजरादिमण्डल देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत् ॥

⊙ पीठ पर : बार जल-गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ाकर पूजा कर दे

⊙ हाथ में जल लेकर पीठ के सामने छोड़ दे ॥ कहे—

॥ ओम् अजरादि मण्डल देवताः प्रीयन्तां न मम ॥

⊙ हाथ जोड़ ले—

॥ ओम् क्षेमकर्त्तारः तुष्टिकर्त्तारः पुष्टिकर्त्तारो वरदा भवत् ॥

॥ ताम्रकलश स्थापित करे ॥

⊙ क्षेत्रपाल पीठ के ऊपर एक ताम्रकलश स्थापित करे

[कलश स्थापन विधि पृष्ठ·· पर देखे]

⊙ ताम्रकलश के ऊपर क्षेत्रपाल की सुवर्ण प्रतिमा सविधि स्थापित करे

[सुवर्ण प्रतिमा स्थापन-प्राणप्रतिष्ठा-अग्निउत्तारण आदि परिशिष्ट पृष्ठ···के अनुसार करे]

[सुवर्ण प्रतिमा के अभाव में १ सुपारी या नारियल में रक्षासूत्र लपेट कर रख दे]

⊙ कलश पर प्रतिमा रखकर

⊙ एक फूल लेकर आवाहन करे ॥ मंत्र ॥

॥ ओम् नहिस्पश मविदन्नन्यमस्माद् वैश्वानरात् पुर एतार मग्नेः ।
एमे नम वृधन्न मृता अमर्त्यम् वैश्वानरं क्षैत्र जित्याय देवाः ॥

॥ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥

॥ ओम् भूतप्रेत पिशाचाद्यैरावृतं शूल पाणिनम् ।
आवाहये क्षेत्रपालंतु कर्मण्यस्मिन् सुखायनः ॥

॥ ओम् भूर्भुवः स्वः सांगः सपरिवारः क्षेत्रपाल देवता इहागच्छ—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि ।

⊙ हाथ का फूल सुवर्ण प्रतिमा पर चढ़ा दे ⊙ जल-गन्ध आदि छोड़कर पूजन कर दे

⊙ हाथ में जल लेकर छोड़ दे ॥ कहे —

ओम् अनया पूजया क्षेत्रपाल देवता प्रीयतां न मम ॥

⊙ हाथ जोड़ ले

॥ ओम् नमामि क्षेत्रपालत्वामजरादि गणैः सह ।
पूजां गृहाण मे देव निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥

टिप्पणी— ⊙ कुछ लोग पीठ स्थित मण्डल देवताओं तथा कलश सुवर्ण प्रतिमा आदि का एक साथ ही पूजन लिखते हैं
⊙ कुछ पद्धतियो में (नहिस्पशमविदन्न—मन्त्र के स्थान पर नमोऽस्तु सर्पेभ्यो मन्त्र लिखा है ।

॥ ६४ योगिनी पूजन ॥

⊙ यजमान अग्निकोण में ६४ योगिनी पीठ के समीप आसन पर पूर्व मुख बैठे ⊙ आचमन-प्राणायाम करे

⊙ कुश अक्षत जल लेकर संकल्प करे

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः...... नामाऽहम् करिष्यमाण देव प्रतिष्ठाकर्मणि श्री महा काली-महा लक्ष्मी-महा सरस्वती पूजन पूर्वक विद्यादि चतुःषष्टि योगिनीनां स्थापनं पूजनं च करिष्ये ।

⊙ हाथ का कुश-अक्षत जल आदि सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ वेदी पर बने ६४ खानो पर अक्षत छोड़ कर ६४ योगिनी का आवाहन करे— मंत्र—

१. ओम् भूर्भुवः स्वः श्री महाकाल्यै नमः—श्री महाकालीम् -- आवाहयामि—स्थापयामि ।

२. ओम् भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः—श्री महालक्ष्मीम् — आवाहयामि—स्थापयामि ।

३. ओम् भूर्भुवः स्वः श्री महासरस्वत्यै नमः—श्री महासरस्वतीम् — आवाहयामि—स्थापयामि ।

टिप्पणी—पं० वायुनन्दन मिश्र की प्रतिष्ठा महोदधि में ६४ योगिनी का नाम शान्तिसार पद्धति के अनुसार दिया गया है जो इसी पुस्तक में परिशिष्ट में लिख दिया गया है। अन्य पद्धतिकारों ने रुद्रकल्पद्रुम के अनुसार गजानना आदि ६४ योगिनी का नाम लिखा है जो यहाँ लिखा गया है।

⊙ ६४ योगिनी नाम

१. ओम् गजाननायै नमः—गजाननाम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

२. ओम् सिंहमुख्यै नमः—सिंहमुखीम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३. ओम् गृध्रास्यायै नमः—गृध्रास्याम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

४. ओम् काकतुण्डिकायै नमः—काकतुण्डिकाम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

५. ओम् उष्ट्रग्रीवायै नमः—उष्ट्रग्रीवाम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

६. ओम् हयग्रीवायै नमः—हयग्रीवाम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

७. ओम् वाराह्यैं नमः—वाराहीम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

८. ओम् शरभाननायै नमः—शरभाननाम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

९. ओम् उलूकिकायै नमः--उलूकिकाम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

१०. ओम् शिवाख्यायै नमः—शिवाख्याम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

११. ओम् मयूर्यैं नमः—मयूरीम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

१२. ओम् विकटाननायै नमः— विकटाननाम् —आवाहयामि —स्थापयामि—पूजयामि

१३. ओम् अष्टवक्रायै नमः—अष्टवक्राम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पजयामि

१४. ओम् कोटराक्ष्यै	नमः—कोटराक्षीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१५. ओम् कुब्जायै	नमः—कुब्जाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१६. ओम् विकटलोचनायै	नमः—विकटलोचनाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१७. ओम् शुष्कोदर्यै	नमः—शुष्कोदरीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१८. ओम् ललजिह्वायै	नमः—ललजिह्वाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१९. ओम् श्ववंष्ट्रायै	नमः—श्ववंष्ट्राम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२०. ओम् वानराननायै	नमः—वानराननाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२१. ओम् ऋक्षाक्ष्यै	नमः—ऋक्षाक्षीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२२. ओम् केकराक्ष्यै	नमः—केकराक्षीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२३. ओम् बृहत्तुण्डायै	नमः—बृहत्तुण्डाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२४. ओम् सुराप्रियायै	नमः—सुराप्रियाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२५. ओम् कपालहस्तायै	नमः—कपालहस्ताम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२६. ओम् रक्ताक्ष्यै	नमः रक्ताक्षीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२७. ओम् शुष्क्यै	नमः—शुष्कीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पजयामि

upayogibooks.com

२८. ओम् श्येन्यै नमः—श्येनीम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

२९. ओम् कपोतिकायै नमः—कपोतिकाम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३०. ओम् पाशहस्तायै नमः—पाशहस्ताम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३१. ओम् दण्डहस्तायै नमः—दण्डहस्ताम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३२. ओम् प्रचण्डायै नमः—प्रचण्डाम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३३. ओम् चण्डविक्रमायै नमः—चण्डविक्रमाम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३४. ओम् शिशुघ्न्यै नमः—शिशुघ्नीम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३५. ओम् पापहन्त्र्यै नमः—पापहन्त्रीम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३६. ओम् काल्यै नमः—कालीम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३७. ओम् रुधिरपायिन्यै नमः—रुधिरपायिनीम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३८. ओम् वसाधयायै नमः—वसाधयाम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३९. ओम् गर्भभक्षायै नमः—गर्भभक्षाम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

४०. ओम् शवहस्तायै नमः—शवहस्ताम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

४१. ओम् आन्त्रमालिन्यै नमः—आन्त्रमालिनीम् —आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

४२. ओम् स्थूलकेश्यै	नमः— स्थूलकेशीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४३. ओम् बृहत्कुक्ष्यै	नमः—बृहत्कुक्षीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४४. ओम् सर्पास्यायै	नमः—सर्पास्याम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४५. ओम् प्रेतवाहनायै	नमः—प्रेतवाहनाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४६. ओम् दन्तशूककरायै	नमः—दन्तशूककराम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४७. ओम् क्रौञ्च्यै	नमः—क्रौञ्चीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४८. ओम् मृगशीर्षायै	नमः—मृगशीर्षाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४९. ओम् वृषाननायै	नमः—वृषाननाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५०. ओम् व्यात्तास्यायै	नमः—व्यात्तास्याम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५१. ओम् धूमनिश्वासायै	नमः—धूमनिश्वासाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५२. ओम् व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे	नमः—व्योमैकचरणोर्ध्वदृशम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५३. ओम् तापिन्यै	नमः— तापिनीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५४. ओम् शोषणीवृष्ट्यै	नमः—शोषणीदृष्टिम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५५. ओम् कोटर्यै	नमः—कोटरीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

५६. ओम् स्थूलनासिकायै	नमः—स्थूलनासिकाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५७. ओम् विद्युत्प्रभायै	नमः—विद्युत्प्रभाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५८. ओम् वलाकास्यायै	नमः – वलाकास्याम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५९. ओम् मार्जार्यै	नमः—मार्जारीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
६०. ओम् कटपूतनायै	नमः - कटपूतनाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
६१. ओम् अट्टाट्टहासायै	नमः—अट्टाट्टहासाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
६२. ओम् कामाक्ष्यै	नमः—कामाक्षीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
६३. ओम् मृगाक्ष्यै	नमः—मृगाक्षीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
६४. ओम् मृगलोचनायै	नमः—मृगलोचनाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

⊙ अक्षत छोड़कर प्रतिष्ठा करे—

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयान्तामोम् प्रतिष्ठ ।।

ओम् आवाहयाम्यहं देवी योगिनीः परमेश्वरीः । योगाभ्यासेन सन्तुष्टाः परध्यान समन्विताः ।।

चतुःषष्ठि समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः।
आवाहित देवताः सर्वाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत्।

⊙ पूजन करे—

ओम् चतुःषष्ठि योगिनीभ्यो नमः।

⊙ इस वाक्य से पाद्य-अर्घ-आचमन-स्नान-गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा-फल आदि चढ़ा कर पूजन करे।

⊙ हाथ में जल लेकर छोड़े—

अनया पूजया चतुषष्ठि योगिन्यः प्रीयन्तां न मम्।

⊙ प्रार्थना—

ओम् यवंगत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः। कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन ऋतुत्वभवम्॥
सम्पूजिता मया देव्यो योगिन्यः सगणाः शुभाः। मम यज्ञन्तु निर्विघ्नं कुर्वन्तु सह क्षेत्रपैः॥
चतुःषष्ठि योगिनीभ्यो नमः। क्षेमकर्त्र्यः, तुष्टिकर्त्र्यः, पुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत॥

॥ ताम्रकलश स्थापन ॥

⊙ ६४ योगिनी पीठ पर एक ताम्र कलश स्थापित करे कलश पूजन करे।
(कुछ लोग पीठ के बगल उत्तर की ओर कलश स्थापन लिखते हैं)

⊙ कलश स्थापन पूजन विधि परिशिष्ट में लिखी है। तदनुसार करना चाहिए

⊙ ताम्रकलश पर श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती की सुवर्ण प्रतिमा अग्नि उत्तारण-प्राण प्रतिष्ठा करके रखे
(सुवर्ण प्रतिमा नही है तो १ नारियल में वस्त्र लपेट कर रख दे उसी में तीनों देवियों का आवाहन पूजन करे)

⊙ सुवर्ण प्रतिमा का अग्नि उत्तारण-प्राण प्रतिष्ठा विधि परिशिष्ट में लिखी प्रक्रिया के अनुसार करे

⊙ तीनो देवियों का षोडशोपचार पूजन करे पूजन विधि इस प्रकार है—
(प्रतिमा के अभाव में नारियल या सुपारी रखकर आवाहन करे)

⊙ एक फूल लेकर तीनो देवियों का आवाहन करे—

।। १ ।। ओम् अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन् ।
स सस्त्यवश्यकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ।।
खड्गं चक्र गदेषु चापपरिधान् शूलं भुशुण्डीं शिरः ।
शंखं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग भूषावृताम् ।।
नीलाश्मद्युतिमास्य पाद दशकां सेवे महाकालिकाम् ।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ।।
श्री महाकाल्यै नमः । महाकालीमावाहयामि ।।

।। २ ।। श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वं लोकम्मइषाण ।।

।। ओम् अक्षस्त्रक् परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम् ।
दण्डं शक्ति मसिञ्च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम् ।।
शूलं पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम् ।
सेवे सैरिभ मर्दिनी मिह महालक्ष्मीं सरोज स्थिताम् ।।
।। ओम् श्री महालक्ष्म्यै नमः । श्री महालक्ष्मी मावाहयामि ।।

।। ३ ।। ओम् पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्ट धियावसुः ।।

।। ओम् घण्टा-शूल हलानि शंख मुशले चक्रं धनुः सायकम् ।
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त विलसच्छीतांशु तुल्य प्रभाम् ।।
गौरी देह समुद्भवां त्रिनयना माधारभूतां महा ।
पूर्वामत्र सरस्वती मनुभजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम् ।।
।। ओम् श्री महासरस्वत्यै नमः ।। महासरस्वती मावाहयामि ।।

⊙ षोडशोपचार तीनो देवियों की पूजा कर दे

।। श्री महाकाल्यैनमः ।। श्री महालक्ष्म्यैनमः ।। श्री महासरस्वत्यैनमः ।। कहता रहे

पाद्य —अर्घ-आचमन-स्नान हेतु जल, गन्ध - अक्षत-फूल - धूप - दीप - नैवेद्य - आचमन-फल - पान - सुपारी - दक्षिण चढ़ा दे
१ धोती, १ अंगोछा चढ़ा कर

⊙ दाहिने हाथ में जल लेकर छोड़े, कहे—

।। अनया पूजया श्री महाकाली—श्री महालक्ष्मी—श्री महासरस्वती देव्यः प्रीयन्तां न मम ।।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

श्री महाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती देव्यः क्षेमकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्य वरदा भवत ।।

।। अग्नि स्थापन ।।

⊙ हाथ में जल लेकर संकल्प करे—

।। ओम् अद्य अस्मिन् कर्मणि पंच भू संस्कार पूर्वकम्-अग्नि स्थापनम् करिष्ये ।।

⊙ ३ कुशा से वेदी बटोर कर कुशों को ईशान कोण में फेंक दे ।

⊙ गोबर से वेदी लीप कर ⊙ स्रुवा से ३ रेखा वेदी पर अपनी ओर से आगे की ओर (पश्चिम से पूर्व की ओर) खींचे ।

⊙ दाहिने हाथ का अंगूठा तथा अनामिका (तीसरी) अंगुली मिला कर रेखा पर की मिट्टी उठाकर वेदी से अलग फेंक दे ।

⊙ रेखाओं पर जल छिड़क दे ।

⊙ वेदी पर बीच में एक त्रिकोण △ बनाकर उसके बीच में लाल रोड़ी से 'रं' लिख दे ।

⊙ किसी सौभाग्यवती स्त्री (लोकाचार में बहन-बुआ आदि पूज्या स्त्रियां) से कांसे के पात्र में अग्नि मंगाए ।

⊙ हवनकर्त्ता स्वयं अग्निपात्र लेकर अपनी ओर थाली का मुख करके वेदी पर अग्नि रख दे, थाली में द्रव्य-अक्षत छोड़ दे ।

⊙ अग्नि रखने का मंत्र—

।। ओम् अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे । देवांऽ आसादयादिह ।।

⊙ अग्नि की रक्षा के लिए वेदी पर लकड़ी रख दे ।

⊙ हाथ में अक्षत लेकर अग्नि का आवाहन करे—

।। ओम् रक्त् माल्याम्बर धरं रक्त पद्मासन स्थितम् । स्वाहा स्वधा वषट्कारं रङ्कितं मेष् वाहनम् ।। शत मंगलकं रौद्रं वह्नि मावाह याम्यहम् । त्वं मुखं सर्व देवानां सप्तार्चिर मितद्युते ।। आगच्छ भगवन्नग्ने वेद्यामस्मिन् सन्निधो भव ।

ओम् भूर्भुवः स्वः वैश्वानर शाण्डिल्य गोत्र शाण्डिल्यासित देवलेति त्रिप्रवरः भूमिमातः वरुणपितः पश्चिमचरण पूर्व शिर-स्कन्ध-ऊर्ध्व पाद पातालदृष्टि गोचर मेषध्वज प्राङ्मुख अग्ने त्वं स्वागतो भव ।।

।। अग्नि पूजन ।।

⊙ चावल लेकर २-२ दाना अग्नि में छिड़के—सप्तजिह्वा का आवाहन करे—

(१) ओम् कनकायै नमः (२) ओम् रक्तायै नमः (३) ओम् कृष्णायै नमः ।
(४) ओम् उद्गारिण्यै नमः (५) ओम् सुप्रभायै नमः (६) ओम् बहुरूपायै नमः ।
(७) ओम् अतिरिक्तायै नमः ।। आवाहयामि । स्थापयामि । पूजयामि ।।

।। ओम् चत्वारिश्रृङ्गा त्रयोऽस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ।
ऽअस्य त्रिधा वद्धो वृषभो रोरवीति महो मर्त्या आविवेश ।।

।। ओम् अग्नये नमः ।।

⊙ जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-नैवेद्य-आचमन-ताम्बूल-पूंगीफल-दक्षिणा चढ़ा कर पूजन करे ।

[पूजन सामग्री वेदी के बाहर छोड़ें, अग्नि में नैवेद्य के अतिरिक्त पान-फूल आदि नहीं छोड़ना चाहिए ।]

⊙ हाथ में जल लेकर छोड़ दे—

।। अनया पूजया अग्निदेवता प्रीयतां न मम ।।

⊙ प्रार्थना करे—

।। ओम् अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । हिरण्य वर्ण मनलं समृद्धं विश्वतो मुखम् ।।

।। मण्डप स्थित ब्राह्मण वरण ।।

⊙ मण्डप में जो ब्राह्मण हो (१-५-७ विषम संख्या होनी चाहिए) उनके माथे में तिलक अक्षत लगा कर माथे पर फूल छोड़कर पूजा कर दे ।

⊙ कुशा-जल-अक्षत-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

।। अद्य विशेषण विशिष्टयां शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम्-अस्मिन् कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थम्
यथानाम गोत्रान् युष्मान् ब्राह्मणान् वृणे ।।

⊙ ब्राह्मण कहे—

॥ ओम् स्वस्ति ॥

॥ नवग्रह वेदी कलश पूजन ॥

⊙ ईशान कोण में १ कलश स्थापित करे तथा सूर्य-आदि नवग्रह तथा अधि-प्रत्यधि देवताओं की पूजा करनी चाहिए।

॥ कलश पूजन ॥

⊙ कलश पर चावल छोड़कर आवाहन करे। आवाहन मन्त्र—

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ᳪ समिमन्दधातु।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम्—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि।

⊙ पूजन—३ बार जल छोड़े—

ओम् पादयोः पाद्यं, हस्तयोः अर्घम् मुखे जल माचनीयं समर्पयामि।

टिप्पणी— ⊙ यदि विधिवत् कलश स्थापन करना है तो परिशिष्ट में लिखी कलश स्थापन विधि से कराना चाहिए।
⊙ कुछ लोग कलश स्थापित नहीं करते हैं।

⊙ क्रमशः गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप हाथ धोकर नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ाकर पूजन कर दे :

⊙ निम्न वाक्य पढ़ता रहे

ओम् वरुणाय नमः गन्धं समर्पयामि, अक्षतं समर्पयामि-पुष्पाणि समर्पयामि—धूपं-दीपं-समर्पयामि।
हस्तौ प्रक्षाल्य-नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते जलमाचमनीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि।
ऋतुफलं दक्षिणां च समर्पयामि।

⊙ हाथ में जल लेकर छोड़ दे—

।। अनया पूजया वरुणः प्रीयतां न मम ।।

⊙ हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

।। क्षेमकर्त्ता-तुष्टिकर्त्ता-पुष्टिकर्त्ता वरदो भव ।।

।। नवग्रह स्थापन पूजन ।।

⊙ बाएं हाथ में चावल लेकर दाहिने हाथ से नवग्रह वेदी पर अक्षत छोड़ कर आवाहन करे—मन्त्र—

⊙ १. सूर्य—

ओम् आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्य येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।
ओम् सूर्याय नमः—सूर्यम्—आवाहयामि—स्थापयामि - पूजयामि ।

⊙ २. चन्द्र—

ओम् इमं देवा ऽअसपत्न ᳪ सुबद्‌ध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ।
इमम मुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमो राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ᳪ राजा ।

ओम् चन्द्रमसे नमः—चन्द्रमसम्—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि ।

⊙ ३. मंगल—

ओम् अग्निर् मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् । अपा ᳪ रेता ᳪ सि जिन्वति ॥

ओम् भौमाय नमः—भौमम्—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि ।

⊙ ४. बुध—

ओम् उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते स ᳪ सृजेथा मयं च ।
अस्मिन् सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

ओम् बुधाय नमः—बुधम्—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि ।

⊙ ५. गुरु—

ओम् बृहस्पते ऽअति यदर्योऽ अर्हा द्युमद् विभाति क्रतु मज्जनेषु ।
यद्दी दयच्छ्वसऽऋत प्रजा तत दस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम् ॥

ओम् गुरुवे नमः—गुरुम्—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि ।

⊙ ६. शुक्र—

ओम् अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ७ शुक्र मन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयो मृतं मधु ।।

ओम् शुक्राय नमः --शुक्रम्—आवाहयामि - स्थापयामि—पूजयामि ।

⊙ ७. शनि—

ओम् शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंय्यो रभि स्त्रवन्तु नः ।।

ओम् शनैश्चराय नमः— शनैश्चरम्—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि ।

⊙ ८. राहु—

ओम् कया नश्चित्रऽआभुव दूती सदा वृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ।।

ओम् राहवे नमः —राहुम्··· आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि ।

⊙ ९. केतु—

ओम् केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या ऽअपेशसे । समुषद्भि रजा यथाः ।।

ओम् केतवे नमः—केतुम् —आवाहयामि – स्थापयामि—पूजयामि ।

⊙ प्रतिष्ठा—

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टम् यज्ञ ७ समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥

॥ अधिदेवता-आवाहन ॥

⊙ बाएँ हाथ में चावल लेकर २-२ दाना दाहिने हाथ से नवग्रह पीठ पर छोड़कर अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता आदि का आवाहन करे।

वाक्य—१. सूर्य दक्षिणे	—	ओम् रुद्राय	नमः—	रुद्रामावाहयामि।
२. चन्द्र दक्षिणे	—	ओम् उमायै	नमः—	उमामावाहयामि।
३. भौम दक्षिणे	—	ओम् स्कन्दाय	नमः—	स्कन्दामावाहयामि।
४. बुध दक्षिणे	—	ओम् विष्णवे	नमः—	विष्णुमावाहयामि।
५. गुरु दक्षिणे	—	ओम् ब्रह्मणे	नमः—	ब्रह्माणमावाहयामि।
६. शुक्र दक्षिणे	—	ओम् इन्द्राय	नमः—	इन्द्रमावाहयामि।
७. शनि दक्षिणे	—	ओम् यमाय	नमः—	यममावाहयामि।
८. राहु दक्षिणे	—	ओम् कालाय	नमः—	कालमावाहयामि।
९. केतु दक्षिणे	—	ओम् चित्रगुप्ताय	नमः—	चित्रगुप्तमावाहयामि।

टिप्पणी—अधि, प्रत्यधि, पंचलोकपाल, दशदिक्पाल के वैदिक मन्त्र पढ़ना हो तो हवन आहुति-प्रकरण मे देखे; केवल स्वाहा निकालकर यहाँ पढ़ सकते हैं।

॥ प्रत्यधि देवता ॥

१. सूर्य बामे —	ओम् अग्नये	नमः—अग्निम्	—आवाहयामि ।
२. चन्द्र बामे —	ओम् जलाय	नमः—जलम्	—आवाहयामि ।
३. भौम बामे —	ओम् भूम्यै	नमः—भूमिम्	—आवाहयामि ।
४. बुध बामे —	ओम् विष्णवे	नमः—विष्णुम्	—आवाहयामि ।
५. गुरु बामे —	ओम् इन्द्राय	नमः—इन्द्रम्	—आवाहयामि ।
६. शुक्र बामे —	ओम् इन्द्राण्यै	नमः—इन्द्राणीम्	—आवाहयामि ।
७. शनि बामे—	ओम् प्रजापतये	नमः—प्रजापतिम्	—आवाहयामि ।
८. राहु बामे —	ओम् नागाय	नमः—नागम्	—आवाहयामि ।
९. केतु बामे —	ओम् ब्रह्मणे	नमः—ब्रह्माणम्	—आवाहयामि ।

॥ पंचलोक पाल ॥

१. राहु उत्तरे —	ओम् गणपतये	नमः—गणपतिम्	—आवाहयामि ।
२. शनि उत्तरे —	ओम् दुर्गायै	नमः—दुर्गाम्	—आवाहयामि ।
३. सूर्य उत्तरे —	ओम् वायवे	नमः—वायुम्	—आवाहयामि ।
४. शुक्र पूर्वे —	ओम् आकाशाय	नमः—आकाशम्	—आवाहयामि ।
५. ग्रहोत्तरे —	ओम् अश्विनीकुमाराय	नमः—अश्विनीकुमारम्	—आवाहयामि ।

।। दशदिक्पाल ।।

१. ओम् इन्द्राय नमः	—	इन्द्रम्	—	आवाहयामि ।
२. ओम् अग्नये नमः	—	अग्निम्	—	आवाहयामि ।
३. ओम् यमाय नमः	—	यमम्	—	आवाहयामि ।
४. ओम् निर्ऋतये नमः	—	निर्ऋतिम्	—	आवाहयामि ।
५. ओम् वरुणाय नमः	—	वरुणम्	—	आवाहयामि ।
६. ओम् वायवे नमः	—	वायुम्	—	आवाहयामि ।
७. ओम् कुबेराय नमः	—	कुबेरम्	—	आवाहयामि ।
८. ओम् ईशानाय नमः	—	ईशानम्	—	आवाहयामि ।
९. ओम् ब्रह्मणे नमः	—	ब्रह्माणम्	—	आवाहयामि ।
१०. ओम् अनन्ताय नमः	—	अनन्तम्	—	आवाहयामि ।

⊙ स्थापना मन्त्र—

ओम् ग्रहा ऊर्जा हुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम् । तेषां विशि प्रियाणां वोह मिष मूर्जं ऽ᳚ समग्रभ मुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।।

⊙ प्रतिष्ठा मन्त्र—

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तन्नो त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इहमावयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥

ओम् आदित्यादि ग्रहमण्डल देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।

⊙ एक फूल लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़े—

१. ध्यान—

ओम् बृहस्पतिं दैत्य गुरु महीसुतं, शनैश्चरं चन्द्रसुतं च राहुम् ।
दिवाकरं चन्द्रमसं सुकेतुं, स्वकीय चित्ते बहुचिन्तयामि ॥

२. आवाहन—

ओम् समस्त प्रत्यूह समुच्चयस्य, विनाशने प्राप्त गुणाः सुभव्याः ।
आवाहनं वो वितनोमि देवाः, भवन्तु कल्याण वरा भवन्तः ॥

३. आसन—

ओम् रोचिष्णु कांचन चयांशु पिशङ्गिताशं, वैदूर्यरत्न निकरै रश्मि भासितं तम् ।
पीठं सदा सदमरैः प्रियमाहृतं स, सागा नवग्रह वराः सततं भजन्तु ॥

⊙ फूल पीठ पर चढ़ा दे

⊙ तीन बार जल छोड़े—निम्नलिखित तीन मन्त्र पढ़े—

१. पाद्य—

ओम् कस्तूरिका सुरभि चन्दन मोदयुक्त मेलालवंग घनसार सुवासितं च ।
पाद्यं ददामि जगदेक निवासदेवाः सांगा नवग्रहवराः प्रतिमानयन्तु ॥
ओम् पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

२. अर्घ्य—

ओम् सौजन्य सौख्यजननी जननी जनानां, येषां कृपैव कृपया वसु धारिणी वै ।
ते सर्वदेव गुरुगौरव धारिदेहा, अर्घ्यम् सदैव हि ग्रहा मम धारयन्तु ॥
ओम् हस्तयोः अर्घ्यम् समर्पयामि ।

३. आचमन—

ओम् कंकोलपत्र हरिचन्दन पुष्पयुक्त मेलालवंग लवली घनसार सारम् ।
दत्तं सकल सारमयं यदुत्तमं भजन्तु शुभ माचमनीय मम्भः ॥
ओम् मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

⊙ स्नान के लिए जल चढ़ा दे

ओम् जले समादाय विचित्रपुष्पा णि-अग्राणि चानीय निपातितानि ।
स्नानं विधेयं विबुधा समन्ता दागत्य युष्माभि रिहांगणे मे ॥
ओम् स्नानीयं जलं समर्पयामि ।

⊙ रोड़ी—

ओम् धूपादिके नाति सुवासितं तथा, शोंण श्रियानन्द विर्वधितेन ।
श्रीरक्त चूर्ण मलता मपहारकं च, नवग्रहा वो मनसार्पयामि ।।

⊙ अक्षत—

ओम् अक्षताश्चग्रहाः सर्वे कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृह्णन्तु कृपां कुरुत ।।

⊙ फूल—

ओम् सुमाल्यानि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै ग्रहाः ।
मयाहृतानि पूजार्थम् पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम ।।

⊙ धूप—

ओम् लवंगपाटी रजचूर्ण वर्धितं नरासुराणां मयि सौख्य दायकम् ।
लोकत्रये गन्ध चय प्रसारकं गृह्णन्तु धूपं गुरुकं नवग्रहम् ।।

⊙ दीप—

ओम् सद्वर्त्तिका ज्ञान विर्वधिका मिश्रां निपात्य दीपे विनिवेदितं तथा ।
प्रज्वालितं ध्वान्त विनाशकारकं गृह्णन्तु ज्ञानस्य विशाल रूपकम् ।।

⊙ हाथ धोकर नैवेद्य—

ओम् सिद्धान्न कर्पूर विराजितं पुरः सौरभ्य सान्द्रेण विधूपितं तथा ।
नैवेद्य मेतद् रुचिरं सुगन्धितं स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु वै ।।

⊙ ३ बार जल आचमन—

ओम् नैवेद्यान्ते जलमाचनीयम् - उत्तरापोशनं समर्पयामि ।

⊙ फल—

ओम् इदं फलं मया देव ! स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ।।

⊙ पान सुपारी—

ओम् दिव्या प्रहा नव समेत्य गृहं मदीयं भक्त्यार्पितं परम गन्धयुतं सुरम्यम् ।
एलालवंग बहुलं क्रमुकादि युक्तं ताम्बूल मद्य मम गृह्णत हे सुरेन्द्राः ।।

⊙ दक्षिणा—

ओम् देवासुरैः नित्यमशेष काले प्रगीयमाना प्रभवः पुराणाः ।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां च ध्यानेन भक्ते मयि वर्त्तितव्यम् ।।

⊙ * विशेषार्घ्य—दाहिने हाथ में जल-गन्ध-अक्षत लेकर निम्न मन्त्र पढ़कर नवग्रह के समीप भूमि पर छोड़ दें—

ओम् आदित्यादि ग्रहाः सर्वे पीठे चात्र प्रतिष्ठिताः । ते गृह्णन्तु मया दत्तम्-इदमर्घ्यम् नमोऽस्तु वः ।।

⊙ प्रार्थना—हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

ओम् ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।

गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ।।

आयुर्विद्यां धनं सौख्यं यशः शौर्यम् च पुष्कलम् । ददतु धनपुत्रान् मे सर्वान् कामांश्च वै सदा ।।

यत्कृतं पूजनं देवा भक्तिश्रद्धाविवर्जितम् । परिगृह्णन्तु तत्सर्वम् सूर्याद्या ग्रहनायकाः ।।

आदित्यादि ग्रहाः सर्वे नाना वर्णाः पृथग्विधाः । सुप्रच्छन्नाः प्रयच्छन्तु सौभाग्यं मम सर्वदा ।।

ओम् इन्द्रादिदश दिक्पालाः सायुधाश्च सवाहनाः । ब्रह्माविष्णुशिवैः सार्धम् रक्षां कुर्वन्तु सर्वतः ।।

---

* टिप्पणी—देशाचार में—नवग्रह पूजन के बाद नवग्रह को कपड़े की बनी ६ झंडी दी जाती है । झंडी का रंग— २ लाल (सूर्य-मंगल) २ सफेद (चन्द्र-शुक्र) १ पीली (गुरु) २ हरी (शनि-बुध) २ काली (राहु-केतु) नवग्रह वेदी के पास झंडी लगाई जाय ।

।। रुद्रकलश स्थापन ।।

⊙ ईशान कोण में नवग्रह पीठ के उत्तर रुद्रकलश की स्थापना करे
[कलश स्थापन विधि के अनुसार १ कलश स्थापित करे]

⊙ कलश के ऊपर १ नारियल अथवा सुपारी में लाल वस्त्र अथवा रक्षासूत्र [कलावा] लपेट कर रख दे

⊙ अक्षत लेकर असंख्यात रुद्र की प्रतिष्ठा-पूजा करे

⊙ आवाहन करे

।। ओम् असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम् । तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि ।।
।। मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्यबृहस्पति यँज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्वधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।। असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः ।।

⊙ षोडशोपचार पूजन कर दे

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

।। ओम् अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्र हत्ये भर हूतौ सजोषाः ।
यः श ँ सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँन् अवन्तु देवाः ।।
प्रधानं पुरुषो यस्त्वं ब्रह्म ध्येयं तदक्षरम् । नमस्तुभ्यं महादेव कार्याय कारणाय च ।।
न्यूनाधिकं च यत्किंचित् कृतमज्ञानतो मया । त्वत् प्रसादेन यज्ञेश तत् सर्वम् परिपूरय ।।

⊙ फूल कलश पर चढ़ा दे

॥ सर्वतोभद्र स्थापन-पूजन ॥

⊙ प्रधान पीठ पर चावल छोड़ कर सर्वतोभद्र पीठ पर स्थित देवताओं का आवाहन—पूजन करे—
आवाहन क्रम निम्न है—

१. ओम् ब्रह्मणे	नमः—ब्रह्माणम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२. ओम् सोमाय	नमः—सोमम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३. ओम् ईशानाय	नमः—ईशानम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४. ओम् इन्द्राय	नमः—इन्द्रम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५. ओम् अग्नये	नमः—अग्निम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
६. ओम् यमाय	नमः—यमम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
७. ओम् निर्ऋतये	नमः—निर्ऋतिम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
८. ओम् वरुणाय	नमः—वरुणम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
९. ओम् वायवे	नमः—वायुम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१०. ओम् अष्टवसुभ्यो	नमः—अष्टवसून्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

टिप्पणी—शिवलिंग में लिङ्गतोभद्र तथा अन्य देवों में सर्वतोभद्र स्थापित करे, लिंगतोभद्र नाम आगे है।

११. ओम् एकादश रुद्रेभ्यो	नमः—एकादशरुद्रान्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१२. ओम् द्वादशादित्येभ्यो	नमः—द्वादशादित्यान्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१३. ओम् अश्विभ्यां	नमः—अश्विनौ	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१४. ओम् विश्वेभ्यो देवेभ्यो	नमः—विश्वान्-देवान्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१५. ओम् सप्तयक्षेभ्यो	नमः—सप्तयक्षान्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१६. ओम् भूतनागेभ्यो	नमः—भूतनागान्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१७. ओम् गन्धर्वाप्सराभ्यो	नमः—गन्धर्वाप्सरसः	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१८. ओम् स्कन्दाय	नमः—स्कन्दम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
१९. ओम् नन्दिने	नमः—नन्दिनम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२०. ओम् शूलमहाकालाभ्यां	नमः—शूलमहाकालौ	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२१. ओम् दक्षादि सप्तगणेभ्यो	नमः—दक्षादि सप्तगणान्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२२. ओम् दुर्गायै	नमः—दुर्गाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२३. ओम् विष्णवे	नमः—विष्णुम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

२४. ओम् स्वधायै	नमः—स्वधाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२५. ओम् मृत्युरोगाभ्यां	नमः—मृत्युरोगौ	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२६. ओम् गणपतये	नमः—गणपतिम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२७. ओम् अद्भ्यो	नमः—अदः	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२८. ओम् मरुद्भ्यो	नमः—मरुतः	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
२९. ओम् पृथिव्यै	नमः—पृथिवीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३०. ओम् गंगानदीभ्यो	नमः—गंगानदीः	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३१. ओम् सप्तसागरेभ्यो	नमः सप्तसागरान्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३२. ओम् मेरवे	नमः—मेरुम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३३. ओम् गवायै	नमः—गवाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३४. ओम् त्रिशूलाय	नमः—त्रिशूलम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३५. ओम् वज्राय	नमः—वज्रम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३६. ओम् शक्तये	नमः—शक्तिम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३७. ओम् दण्डाय	नमः—दण्डम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

३८. ओम् खड्गाय	नमः—खड्गम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
३९. ओम् पाशाय	नमः—पाशम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४०. ओम् अंकुशाय	नमः—अंकुशम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४१. ओम् गौतमाय	नमः—गौतमम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४२. ओम् भरद्वाजाय	नमः—भरद्वाजम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४३. ओम् विश्वामित्राय	नमः—विश्वामित्रम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४४. ओम् कश्यपाय	नमः—कश्यपम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४५. ओम् जमदग्नये	नमः—जमदग्निम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४६. ओम् वशिष्ठाय	नमः—वशिष्ठम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४७. ओम् अत्रये	नमः—अत्रिम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४८. ओम् अरुन्धत्यै	नमः—अरुन्धतीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
४९. ओम् ऐन्द्रयै	नमः—ऐन्द्रीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५०. ओम् कौमार्यै	नमः—कौमारीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

५१. ओम् ब्राह्मयै	नमः—ब्राह्मीम्	—आवाहयामि —स्थापयामि—पूजयामि
५२. ओम् वाराहयै	नमः—वाराहीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५३. ओम् चामुण्डायै	नमः—चामुण्डाम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५४. ओम् वैष्णव्यै	नमः—वैष्णवीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५५. ओम् माहेश्वर्यै	नमः—माहेश्वरीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि
५६. ओम् वैनायक्यै	नमः—वैनायकीम्	—आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि

⊙ प्रतिष्ठा—

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा सऽइह मादयान्तामोम् प्रतिष्ठ ।।
ब्रह्माद्यावाहित सर्वतोभद्र मण्डलदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत ।

⊙ पूजन—जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-ताम्बूल-पूंगीफल-ऋतुफल-दक्षिणा आदि चढ़ाकर पूजन करे—
निम्न वाक्य पढ़ता रहे—

।। ओम् भूर्भवः स्वः ब्रह्माद्यावाहित सर्वतोभद्र देवताभ्यो नमः ।।

⊙ हाथ में जल लेकर छोड़ दे—निम्न वाक्य पढ़े—

।। ओम् अनया पूजया ब्रह्माद्यावाहित सर्वतोभद्र मण्डल देवताः प्रीयन्ताम् ।।

⊙ प्रार्थना मंत्र—

ओम् ब्रह्माद्यावाहिता देवाः सर्वतोभद्रमण्डले । पूजां गृह्णीत मद् वत्तां सर्वदा मे प्रसीदत ।।

।। लिंगतोभद्र स्थापन पूजन ।।

⊙ बाएं हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना लिङ्गतोभद्र पीठ पर छिड़के और प्रत्येक नाम से देवताओं का आवाहन करे—

१. ओम् असितांग भैरवाय	नमः—	असितांग भैरवम्	—	आवाहयामि
२. ओम् रुरुभैरवाय	नमः—	रुरु भैरवम्	—	आवाहयामि
३. ओम् चण्ड भैरवाय	नमः—	चण्ड भैरवम्	—	आवाहयामि
४. ओम् क्रोध भैरवाय	नमः—	क्रोध भैरवम्	—	आवाहयामि
५. ओम् उन्मत्त भैरवाय	नमः—	उन्मत्त भैरवम्	—	आवाहयामि
६. ओम् कपाल भैरवाय	नमः—	कपाल भैरवम्	—	आवाहयामि
७. ओम् भीषण भैरवाय	नमः—	भीषण भैरवम्	—	आवाहयामि
८. ओम् संहार भैरवाय	नमः—	संहार भैरवम्	—	आवाहयामि
९. ओम् भवाय	नमः—	भवम्	—	आवाहयामि
१०. ओम् शर्वाय	नमः—	शर्वम्	—	आवाहयामि

११. ओम् पशुपतये	नमः—	पशुपतिम्	—	आवाहयामि
१२. ओम् ईशानाय	नमः—	ईशानम्	--	आवाहयामि
१३. ओम् रुद्राय	नमः--	रुद्रम्	--	आवाहयामि
१४. ओम् उग्राय	नमः--	उग्रम्	--	आवाहयामि
१५. ओम् भीमाय	नमः--	भीमम्	--	आवाहयामि
१६. ओम् महते	नमः---	महान्तम्	--	आवाहयामि
१७. ओम् अनन्ताय	नमः--	अनन्तम्	--	आवाहयामि
१८. ओम् वासुकये	नमः—	वासुकिम्	--	आवाहयामि
१९. ओम् तक्षकाय	नमः--	तक्षकम्	—	आवाहयामि
२०. ओम् कुलिशायुधाय	नमः---	कुलिशायुधम्	---	आवाहयामि
२१. ओम् कर्कोटकाय	नमः—	कर्कोटकम्	—	आवाहयामि
२२. ओम् शंखपालाय	नमः—	शंखपालम्	—	आवाहयामि
२३. ओम् कम्बलाय	नमः—	कम्बलम्	—	आवाहयामि
२४. ओम् अश्वतराय	नमः —	अश्वतरम्	—	आवाहयामि
२५. ओम् शूलाय	नमः—	शूलम्	—	आवाहयामि

२६. ओम् चन्द्रमौलिने	नमः—	चन्द्रमौलिनम्	—	आवाहयामि
२७. ओम् चन्द्रमसे	नमः—	चन्द्रमसम्	—	आवाहयामि
२८. ओम् वृषभध्वजाय	नमः—	वृषभध्वजम्	—	आवाहयामि
२९. ओम् त्रिलोचनाय	नमः—	त्रिलोचनम्	—	आवाहयामि
३०. ओम् महेश्वराय	नमः —	महेश्वरम्	—	आवाहयामि
३१. ओम् शूलपाणये	नमः—	शूलपाणिम्	—	आवाहयामि

⊙ प्रतिष्ठा—अक्षत छिड़ककर प्रतिष्ठा करे— मन्त्र—

ओम् मनोजूतिर्जूषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ७ सम्मिमन्दधातु।
विश्वेदेवा सइह मादयान्तामोम् प्रतिष्ठ। लिङ्गतोभद्रमण्डल देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत।

⊙ पूजन—जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-फल-पान-सुपारी-दक्षिणा—चढ़ाकर पूजन करे—

निम्न मन्त्र पढ़ता रहे—

ओम् भूर्भुवः स्वः लिङ्गतोभद्रमण्डल देवताभ्यो नमः।

⊙ जल छोड़े—पूजन करके दाहिने हाथ में जल लेकर छोड़ दे। मन्त्र पढ़े—

॥ ओम् अनया पूजया लिङ्गतोभद्र देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥

॥ प्रधान देवता कलश स्थापन ॥

⊙ सर्वतोभद्र पीठ अथवा लिङ्गतोभद्र पीठ पर १ ताम्र कलश स्थापित करे

[कलश स्थापन विधि परिशिष्ट में पृष्ठ''''पर है]

⊙ प्रधान देवता की सुवर्ण प्रतिमा में प्राण प्रतिष्ठा करे

[अग्नि-उत्तारण पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा विधि परिशिष्ट में पृष्ठ '' पर देखे]

⊙ प्राण प्रतिष्ठा के वाद प्रतिमा प्रधान् पीठ पर स्थित कलश पर स्थापित करे ⊙ षोडशोपचार पूजन करे—

॥ प्रधान देव पूजन विधि ॥

⊙ फूल लेकर आवाहन—

ओम् सहस्त्र शीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात । स भूमि ঙ सर्वतस्पृत्वा त्य तिष्ठद् दशाङ्गुलम् ॥

⊙ फूल लेकर आसन—

ओम् पुरुष एवेद ঙ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् । उता मृतत्वस्येशानो यदन्ने नातिरोहति ॥

⊙ पाद्य-जल छोड़े—

ओम् एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः । पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादास्या मृतन्दिवि ॥

⊙ अर्घ्य-जल छोड़े—

ओम् त्रिपादूर्ध्व उदैत्पूरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशना नशने ऽ अभि ॥

⊙ आचमन-जल छोड़े —

ओम् ततो विराड जायत विराजोअधिपूरुषः। सजातो ऽ अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः ॥

⊙ स्नान-जल छोड़े—

ओम् तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूंस्तांचक्रे वायव्या नाराण्या ग्राम्याश्च ये ॥

⊙ पंचामृत स्नान—

ओम् पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशे भवत् सरित् ॥

⊙ शुद्ध जल स्नान—

ओम् शुद्धवालः सर्वं शुद्धवालो मणिवालस्त ऽ आश्विनाः श्येतः।
श्येता क्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्र न भो रूपाः पार्जन्याः ॥

⊙ कपड़े से पोंछना—

ओम् तन्तुसंतान सन्नद्धैः शुक्लैः रक्तैस्तु पीतकैः। प्रतिमाजल बिन्दूंस्तान् शोषयामि सुवस्त्रकैः ॥

⊙ वस्त्र चढ़ाए—

ओम् तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दा ᳪ सिजज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्माद जायत ।।

⊙ दो बार जल छोड़ दे—

ओम् वस्त्रान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि ।

⊙ यज्ञोपवीत—

ओम् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्य मग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।

⊙ २ बार जल छोड़े—

ओम् उपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

⊙ चन्दन—

ओम् त्वाङ्गन्धर्वा अखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्माद मुच्यत ।।

⊙ अक्षत*—

ओम् अक्षन्नमी मदन्त ह्यवप्रिया ऽ अधूषत ।
अस्तोषतस्व भानवो विप्रान विष्ठया मती यो जान्विन्द्रते हरी ।।

टिप्पणी— *हनुमान तथा शालिग्राम की मूर्ति पर अक्षत नहीं चढ़ाए—भूमि पर छोड़ दे ।

upayogibooks.com

ओम् ओषधीः प्रतिमो दध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः । अश्वा इव स जित्व रीर्वीरुधः पार यिष्णवः ॥

⊙ इत्र—

ओम् अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परि बाधमानः ।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान्पुमा ᳪ सिपरिपातु विश्वतः ॥

⊙ आभूषण—

(१) ओम् स्वर्णघर्मः स्वाहा, स्वर्णार्कः स्वाहा, स्वर्ण शुक्रः स्वाहा, स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा, स्वर्ण सूर्यः स्वाहा ।
(२) नाना विधानि दिव्यानि नानारत्नोज्वलानि च । देहालंकरणार्थाय भूषणानि-अर्पयाम्यहम् ॥

⊙ धूप—

ओम् धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं योस्मान् धूर्व तितं धूर्वयं वयन्धूर्वामः ।
देवानामसि वहि्नतम ᳪ सस्नि तमं पप्रित मञ्जुष्ट तमन्देव हूतमम् ॥

⊙ दीप—

ओम् चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योअजायत । श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखा दग्नि रजायत ॥

⊙ हाथ धोकर—नैवेद्य—

(१) ओम् नाभ्याआसीदन्तरिक्ष ᳪ शीर्ष्णोर् द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकान्-अकल्पयन् ॥

(२) शर्करा खण्ड खाद्यादि दधि क्षीर घृतादिभिः। आहारैर्भक्ष्य भोज्यैश्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ तीन बार जल छोड़े—

ओम् नैवेद्यान्ते पानीयं जलं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि ।।

ओम् एलो शीर लवंगादि कर्पूर परिवासितम्। प्राशनार्थम् कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ।।

⊙ ऋतु फल—

ओम् याः फलिनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।

ओम् बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व ऊ ह सः ।।

⊙ दोनों हाथ की अनामिका (तीसरी अंगुली—जिसमें पैंती पहनी है) में चन्दन लगा कर—अंगूठे के सहारे प्रतिमा पर उस चन्दन को छिड़क दे—मन्त्र पढ़े—

⊙ करोद्वर्तन—

ओम् करोद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि।

नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं कुंकुमान्वितम्। करोद्वर्तनं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ।।

⊙ पान-सुपारी—

१४६ ओम् उतस्मास्य द्रवतस्तु रण्यतः पर्णन्नवे रनुवाति प्रगर्धिनः ।

श्येनस्येव ध्रजतो अङ्क सम्परि दधिक्राव्णः सहोर्जात रित्रतः स्वाहा ।।

⊙ दक्षिणाद्रव्य—

ओम् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीन्द्यामुते माम् कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

⊙ मन्त्रपुष्पांजलि—फूल लेकर हाथ जोड़ ले—मन्त्र पढ़कर फूल चढ़ा दे—

ओम् यज्ञ ेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन् ।
तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ।।

⊙ प्रदक्षिणा—हाथ घुमा कर प्रदक्षिणा करे—

ओम् सप्ता स्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः । देवा यद्यज्ञन्तन्वाना ऽ अबन्ध्नन्पुरुषं पशुम् ।।

⊙ जल छोड़े—

।। अनेन पूजनेन देवः प्रीयतां न मम ।।

।। कुश कण्डिका-हवन ।।

⊙ हवन वेदी के दक्षिण—१ पत्ता रख कर उसके ऊपर १ कुशा में गांठ लगा कर रख दे—इसकी ब्रह्मा की संज्ञा होगी ।

⊙ प्रार्थन करे—

।। ओम् यावत् कर्म समाप्यते तावत्वं सुस्थिरो भव ।।

⊙ हवन वेदी के उत्तर २ कुशा बगल-बगल (दोनों के बीच में ४ अंगुल की जगह रहे) रख दे। कुश का अग्रभाग उत्तर दिशा में रहे ।

⊙ प्रणीता पात्र अपने सामने रखे। उसमें जल भर दे। १ कुशा से ढंक दे और इस प्रणीता पात्र को उठा कर बगल-बगल रखे १ कुशा (पश्चिम वाले पर) पर रख दे।

⊙ ब्रह्मा (गांठ लगे कुशा) की ओर देखे।

⊙ जल भरे प्रणीता पात्र को उठा कर बगल वाले दूसरे कुशा पर रख दे। ⊙ वेदी के चारो ओर कुशा बिछाए।

⊙ ४ कुशा लेकर हवन वेदी के पूर्व रख दे, कुशा का अग्र भाग उत्तर दिशा की ओर रहे (अग्नि कोण से ईशान कोण तक)।

⊙ ४ कुशा लेकर ब्रह्मा (गांठ लगे कुशा) और हवन वेदी के बीच में रख दे। कुशा का अग्रभाग पूर्व दिशा में रहे। (ब्रह्मा से अग्नि पर्यन्त)

⊙ ४ कुशा हवन वेदी के पश्चिम (अपनी ओर) रख दे, अग्रभाग उत्तर की ओर रहे (नैऋत्यकोण से वायव्य कोण तक)।

⊙ ४ कुशा हवन वेदी और प्रणीता पात्र के बीच में रख दे, अग्रभाग पूर्व की ओर रहे, (अग्नि से प्रणीता पात्र पर्यन्त)।

⊙ इसके बाद हवन वेदी के उत्तर निम्न वस्तु रखे—

⊙ ३ कुशा पवित्र छेदन हेतु।

⊙ १ कुशा का बीच वाला २ पत्र (अर्थात् जड़ निकाल कर बीच की २ पत्ती लेकर रखे)

⊙ प्रोक्षणी पात्र-घी-स्रुवा- ३ हवन लकड़ी १-१ बीता की।

⊙ उपयमन हेतु कुशा ७—वेणी रूप (सातों कुशा को एक में मिला कर बट ले और ऊपर के हिस्से में गांठ लगा दे)।

⊙ सम्मार्जन हेतु कुशा ५ ।

⊙ पूर्णपात्र के लिए १ कलश या अन्य नवीन पात्र में चावल ।

⊙ पवित्र छेदन वाले १ कुशा को बाएं हाथ में रख ले, उसके ऊपर २ कुशा पत्र (बीच वाला भाग जो रखा है उसे) दहिने हाथ में लेकर ३ के ऊपर उसे रख कर चारों ओर १ बार लपेट दे। आगे का १ बीता छोड़ कर शेष तोड़ कर दोनों कुशा ईशान कोण में फेंक दे।

⊙ इस १ बीता वाले कुशपत्र द्वय से प्रणीता का जल ३ बार प्रोक्षणी में छोड़े ।

⊙ कुशपत्र द्वय को दाहिने हाथ में रख ले।

⊙ प्रोक्षणी को बांये हाथ में ले ले,—कुश पत्र द्वय से ३ बार प्रोक्षणी का जल ऊपर उछाल दे।

⊙ प्रणीता के जल को प्रोक्षणी में डाल ले।

⊙ प्रोक्षणी के जल को हवन वेदी के उत्तर रखी सभी चीजों पर कुश पत्र द्वय से छिड़क दे।

⊙ अग्नि प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी को रख दे।

⊙ घी को कटोरा में रख ले और कटोरा को हवन की वेदी पर अग्नि के ऊपर रख दे।
(यदि कटोरा में पहले से घी रखा है, तो घी सहित उस कटोरा को अग्नि पर रख दे)।

⊙ १ तृण या कुशा जला कर घी के चारों ओर घुमा कर कुशा को अग्नि में डाल दे ।

⊙ स्रुवा को दाहिने हाथ में लेकर (स्रुवा का मुख नीचे की ओर करके) अग्नि में ३ बार तपा दे।

⊙ स्रुवा बाएँ हाथ में ले—सम्मार्जन ५ कुशा को दाहिने हाथ में लेकर—कुशा की जड़ से स्रुवा की जड़—कुशा के बीच भाग से स्रुवा का मध्य भाग—कुशा के अग्र भाग से स्रुवा का अग्र भाग—पोछ दे।

⊙ सम्मार्जन कुशा (जिस कुशा से स्रुवा को पोछा है) ईशान कोण में फेंक दे।

⊙ प्रणीता का जल स्रुवा पर छिड़क दे।

⊙ स्रुवा को दाहिने हाथ में लेकर—अग्नि में पहले की तरह फिर ३ बार तपा ले।

⊙ स्रुवा अपनी दाहिनी ओर एक कुशा पर रख दे ।

⊙ घी के कटोरा को अग्नि से उतार ले अपने सामने रख ले। ⊙ उसमें देखे—कोई तिनका आदि पड़ा हो तो निकाल दे।

⊙ दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली और अंगूठा मिला कर ३ बार कटोरा का घी १-१ बूंद ऊपर की ओर उछाल दे। (घी गरम होने पर कुशपवित्री से उछाले)।

⊙ उपयमन (वेणीरूप ७) कुशा को बांए हाथ में ले ले।

⊙ खड़ा होकर ब्रह्मा जी का मन में ध्यान करके तीनो लकड़ी क्रमशः १-१ लकड़ी घी में बोर कर अग्नि में चुपचाप डाल दे।

⊙ बैठ जाय, कुश पत्र द्वय के साथ प्रोक्षणीं का जल अग्नि के चारों ओर घुमा दे।

⊙ कुश पत्र द्वय से जल छिड़ककर अग्नि का सिंचन कर दे।

⊙ प्रोक्षणी अपने स्थान पर रख दे—कुश पत्र द्वय प्रणीता पर रख दे।

⊙ हवन करे।

⊙ घी की आहुति देकर स्रुवा का शेष घी प्रोक्षणी में छोड़ता जाय—

॥ हवन आहुति मंत्र ॥

१. ओम् प्रजापतये	स्वाहा ।	इदं प्रजापतये	न मम ।
२. ओम् इन्द्राय	स्वाहा ।	इदमिन्द्राय	न मम ।
३. ओम् अग्नये	स्वाहा ।	इदमग्नये	न मम ।
४. ओम् सोमाय	स्वाहा ।	इदं सोमाय	न मम ।
५. ओम् भूः	स्वाहा ।	इदमग्नये	न मम ।
६. ओम् भुवः	स्वाहा ।	इदं वायवे	न मम ।
७. ओम् स्वः	स्वाहा ।	इदं सूर्याय	न मम ।

⊙ ब्राह्मण यजमान पर जल छिड़के—मन्त्र पढ़े—

॥ ओम् यथा बाण प्रहाराणां कवचं वारकं भवेत् । तद्वद्दैवोप घातानां शान्तिर्भवति वारिका ॥

शान्तिरस्तु—पुष्टिरस्तु—वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु ॥

⊙ शाकल्य हवन करे— ⊙ ब्राह्मण या अन्य कोई घी छोड़े । यजमान हवन सामग्री शाकल्य का हवन करे ।

१. ओम् त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्-देवस्य हेडो अवयासि सीष्ठाः ।

यजिष्ठो वहि्नतमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ॶसि प्रमु मुग्ध्यस्मत् स्वाहा । इदमग्नो वरुणाभ्यां न मम ।

२. ओम् सत्वन्नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ।
अवयक्ष्यनो वरुण ऽ रराणो वीहिमृडीक ऽ सुहवो न एधि स्वाहा । इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम ।

३. ओम् अयाश्चाग्नेऽस्य नभि शस्ति पाश्च सत्व मित्व मया असि ।
अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ऽ स्वाहा ।। इदमग्नये न मम ।

४. ओम् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा विततः महान्तः ।
तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर् विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ।।
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।।

५. ओम् उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवाधमं वि मध्यम ऽ श्रथाय ।
अथावय मादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम स्वाहा । इदं वरुणा यादित्या यादितये न मम ।।

⊙ उदक (जल) स्पर्श—आचमन कर ले ।

⊙ दो आहुति गौरी गणपति को दे—

१. ओम् गणानांत्वा गणपति ऽ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ऽ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ऽ
हवामहे वसोमम आहमजानि गर्भध मा त्वमजासि गर्भधम् । गणपतये नमः स्वाहा ।

२. ओम् अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ।। —गौर्यैनमः स्वाहा ।

॥ नवग्रह होम ॥

⊙ नवग्रह की लकड़ी को क्रमशः लेकर घी में बोर कर शाकल्य के साथ हवन करे— १. सूर्य— (मदार की लकड़ी)

ओम् आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन् न मृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्य येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ ओम् सूर्याय नमः स्वाहा ।

२. चन्द्र— (छऊल)

ओम् इमम्देवा ऽ असपत्न ဟ सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठधाय महते जानराज्या येन्द्रस्येन्द्रियाय ।
इमम मुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्र मस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ဟ राजा ॥
ओम् चन्द्रमसे नमः स्वाहा ।

३. मंगल (खैर)

ओम् अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽ अयम् । अपा ဟ रेता ဟ सिजन्वति ॥
ओम् भौमाय नमः स्वाहा ।

४. बुध (चिच्चड़ी)

ओम् उद्‌बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्व मिष्टा पूर्ते स ဟ सृजेथा मयञ्च ।
अस्मिन् सधस्थे ऽ अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥ ओम् बुधाय नमः स्वाहा ।

५. गुरु (पीपल)

ओम् बृहस्पते ऽ अति यदर्यो ऽ अर्हाद्द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दी दयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।। ओम् गुरवे नमः स्वाहा ।

६. शुक्र (गूलर)

ओम् अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रं पयः सोमम् प्रजापतिः ।
ऋतेन सत्य मिन्द्रियं विपान ᳪ शुक्र मन्धसः इन्द्रियस्येन्द्रिय मिदम् पयोऽमृतं मधु ।।
ओम् शुक्राय नमः स्वाहा ।

७. शनि (शमी)

ओम् शन्नो देवी रभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये । शंय्यो रभि स्रवन्तु नः ।।
ओम् शनैश्चराय नमः स्वाहा ।

८. राहु (दूब)

ओम् कयानश्चित्र ऽ आभुव दूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ।।
ओम् राहवे नमः स्वाहा ।

९. केतु (कुशा)

ओम् केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या ऽ अपेशसे । समुषद्भि रजा यथाः ।। ओम् केतवे नमः स्वाहा ।

७. ओम् असि यमो ऽ अस्या दित्यो ऽ अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन ।
असि सोमेन समया विपृक्त ऽ आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ।। ओम् यमाय नमः स्वाहा ।

८. ओम् कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या ऽ उन्नयामि ।
समापो अद्भि रग्मत समोषधीभि रोषधीः ।। ओम् कालाय नमः स्वाहा ।

९. ओम् इन्धा नास्त्वा शत ঌ हिमा द्युमन्त ঌ समिधी महि ।
वयस्वन्तो वयस्कृत ঌ सहस्वन्तः सहस्कृतम् ।।
अग्ने सपत्न दम्भ नम दब्धासो ऽ अदाभ्यम् ।
चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ।। ओम् चित्रगुप्ताय नमः स्वाहा ।

।। प्रत्यधि देवता-आहुति ।।

१. ओम् अग्नि दूतं पुरो दधे हव्यवाह मुप ब्रुवे । देवां ऽऽ आसादया विह ।।
ओम् अग्नये नमः स्वाहा ।

२. ओम् अप् स्वन्तर मृत मप्सु भेषज मपा मुत प्रशस्ति ष्वश्वा भवत वाजिनः ।
देवी रापो यो न ऊर्मिः प्रतूर्तिः ककुन्मान् वाजसास्ते नायं वाजঌ सेत् ।।
ओम् अद्भ्यो नमः स्वाहा ।

॥ अधिदेवता हवन ॥

१. ओम् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुक मिव वन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ ओम् ईश्वराय नमः स्वाहा ।

२. ओम् श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनो व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणा मुम्म ऽ इषाण सर्वं लोकम्म ऽ इषाण ॥ ओम् उमायै नमः स्वाहा ।

३. ओम् यद क्रन्दः प्रथमञ्जायमान उद्यन्त् समुद्रां दुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्यंबाहू ऽ उपस्तुत्यम् महिजातन्तेअर्वन् ॥ ओम् स्कन्दाय नमः स्वाहा ।

४. ओम् विष्णो रराट मसि विष्णोः श्नप् त्रेस्थो विष्णोः ।
स्यू रसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णव मसि विष्णवे त्वा ॥ ओम् विष्णवे नमः स्वाहा ।

५. ओम् ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः ।
स बुध्न्याऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः ॥ ओम् ब्रह्मणे नमः स्वाहा ।

६. ओम् त्रतार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ঁ हवे हवे सुहव ঁ शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहुता मिन्द्र ঁ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ओम् इन्द्राय नमः स्वाहा ।

३. ओम् स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः ।।

ओम् पृथिव्यै नमः स्वाहा ।

४. ओम् इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढ़ मस्या पा ऌ सुरे ।।

ओम् विष्णवे नमः स्वाहा ।

५. ओम् सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमम् पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ।
जहि शत्रूं रप मृधो नु दस्वाथा भयं कृणुहि विश्वतोः नः ।।

ओम् इन्द्राय नमः स्वाहा ।

६. ओम् अदित्यै रास्ना सीन्द्राण्या उष्णीषः । पूषासि घर्माय दीष्व ।। ओम् इन्द्राण्यै नमः स्वाहा ।

७. ओम् प्रजापते न त्व देता न्यन्यो विष्वा रूपाणि परिता बभूव ।
यंत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽ अस्तु वय ऌ स्याम पतयो रयीणाम् ।।

ओम् प्रजापतये नमः स्वाहा ।

८. ओम् नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। ओम् सर्पेभ्यो नमः स्वाहा ।

९. ओम् ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स ब्रुध्न्या उपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः ।। ओम् ब्रह्मणे नमः स्वाहा ।

॥ पंचलोकपाल आहुति ॥

१. ओम् गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसोमम । आहमजानि गर्भध मा त्वम जासि गर्भधम् ॥ ओम् गणपतये नमः स्वाहा ।

२. ओम् अम्बे ऽ अम्बिके ऽ अम्बालिके न मानयति कश्चन । ससस्त्य श्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥
ओम् दुर्गायै नमः स्वाहा ।

३. ओम् वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्त वि ꣳ शतिः । ते ऽअग्रे ऽश्व मयुं जस्ते ऽ अस्मिन् जब मा दधुः ॥
ओम् वायवे नमः स्वाहा ।

४. ओम् ऊर्द्ध्वा ऽअस्य समिधो भवन्त्यूर्द्ध्वा शुक्रा शोची ꣳ ष्यग्नेः । द्यु मत्त मा सु प्रतीकस्य सूनोः ॥
ओम् आकाशाय नमः स्वाहा ।

५. ओम् अश्विनोर्भैषज्येन ब्रह्मवर्चसा याभि षिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन ।
वीर्या यान्नाद्य याभिषिञ्चा मीन्द्रस्येन्द्रियेण वलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥
ओम् अश्विभ्यां नमः स्वाहा ।

॥ दशदिक्पाल आहुति ॥

१. ओम् त्रातार मिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम् ।
हृ्वयामि शक्रं पुरुहूत मिन्द्र ꣳ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ओम् इन्द्राय नमः स्वाहा ।

२. ओम् अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाह मुप ब्रुवे । देवां ऽऽ आसाद या दिह ।। ओम् अग्नये नमः स्वाहा ।

३. ओम् असि यमो ऽ अस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन ।
असि सोमेन समया विपृक्त ऽ आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ।। ओम् यमाय नमः स्वाहा ।

४. ओम् एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व स्वाहा । अग्नि नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरः सद्भ्यः स्वाहा ।।
यम नेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणा सद्भ्यः स्वाहा । विश्वेदेव नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चाद्सद्भ्यः स्वाहा ।
मित्रावरुण नेत्रेभ्यो वा मरुन्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य उत्तरा सद्भ्य स्वाहा सोम नेत्रेभ्यो देवेभ्य
उपरि सद्भ्यो दुवस्वद्भ्यः ।। ओम् निर्ऋतये नमः स्वाहा ।

५. ओम् इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वा मवस्यु रा चके ।। ओम् वरुणाय नमः स्वाहा ।

६. ओम् वायु रग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम् । शिवो नियुद्भिः शिवाभिः ।।
ओम् वायवे नमः स्वाहा ।

७. ओम् कुविदंग यवमन्तो यवं चिद् यथा दान्त्यनु पूर्वम् वियूय ।
इहे हैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ।। ओम् कुबेराय नमः स्वाहा ।

८. ओम् ईशावास्य मिद ७ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम् ।। ओम् ईशानाय नमः स्वाहा ।

९. ओम् ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या ऽ उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः ।। ओम् ब्रह्मणे नमः स्वाहा ।

१०. ओम् नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
ये ऽ अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। ओम् अनन्ताय नमः स्वाहा ।

⊙ षोडश मातृका हवन— ⊙ सप्त स्थल मातृका हवन ⊙ घृतमातृका हवन ⊙ वास्तु हवन ⊙ ६४ योगिनी हवन ⊙ क्षेत्रपाल हवन ⊙ सर्वतोभद्र पीठ देवता अथवा लिंगतोभद्र देवता हवन ⊙ प्रधान देवता हवन ⊙ खीर पूड़ी का हवन ⊙ गायत्री मन्त्र से कम-से-कम २८ आहुति खीर पूड़ी की दे ।

।। स्विष्टकृत आहुति ।।

⊙ स्रुवा में घी तथा एक लड्डू लेकर आहुति दे

।। ओम् अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा ।। इदमग्नये न मम ।।

टिप्पणी—षोडश मातृका आदि सभी पीठ पर आवाहित देवताओ के नाम पूजन प्रकरण में लिखे हैं उन्हीं नामो से हवन करे प्रत्येक नाम के साथ—नमः के बाद स्वाहा जोड़ ले

जैसे—गौर्यै नमः स्वाहा ।। शच्यै नमः स्वाहा—आदि

॥ कर्मकुटी ॥

॥ जलाधिवास ॥

⊙ यजमान (पत्नी सहित) जलाधिवास स्थल पर आकर पूर्व मुख बैठे

[जलाधिवास हवन वेदी के उत्तर करना चाहिए]

⊙ यजमान अपने सामने किसी चौकी-पीढ़ा आदि पर सभी नई मूर्त्तियों को रख ले

[मूर्त्तियों का मुख पश्चिम या उत्तर की ओर रहे]

⊙ यजमान आचमन-प्राणायाम करे ⊙ फूल लेकर हाथ जोड़े

⊙ ब्राह्मणगण शान्ति पाठ करे

॥ ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ঁ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्ति ब्रह्मशान्तिः सर्वं ঁ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ओम् शान्तिः ॥ शान्तिः ॥ शान्तिः ॥

⊙ यजमान कुश—अक्षत-जल द्रव्य लेकर संकल्प करे—

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ.....गोत्रः.....नामाऽहं करिष्यमाण देव प्रतिष्ठा कर्मणि आसां मूर्त्तीनां देवता योग्यताधिष्ठान सिद्ध्यर्थम् जलाधिवासाख्यं कर्म करिष्ये ॥

टिप्पणी— १ कुछ पद्धतिकार पूर्वमुख मूर्त्तियों को रखने को लिखते हैं तब यजमान उत्तर मुख बैठे

⊙ संकल्प पढ़कर हाथ का जल-अक्षत आदि सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ मूर्त्तियों को कुशा से पोंछ दे ⊙ पोंछ कर कुशा ईशान कोण में फेक दे

⊙ घी गरम कर हलका सा मूर्त्तियों में लगा दे

⊙ घी में शहद मिलाकर सभी मूर्त्तियों में हलका सा लेप कर दे

⊙ मूर्त्तियों में कहीं कोई छिद्र आदि हो तो घी-शहद से उसे बन्द कर दे

⊙ गंगा मिट्टी या किसी पवित्र नदी-तालाब की मिट्टी मूर्त्तियों में लगा दे

।। ओम् सत् संस्काराय देवानां मलस्य परि शुद्धये ।
मृत्स्नया स्नापयाम्येव देवता तुष्टि हेतवे ।।

⊙ गोबर-गोमूत्र-दूध-हवन का भस्म क्रमशः अलग-अलग मूर्त्तियों में लगा दे

गोबर ।। १ ।। गवां योनिसमुद्भूतैः पवित्रैः शुद्धिकारकैः ।
गोमयैः स्नापयाम्येव देव संस्कार सिद्धये ।।

गोमूत्र ।। २ ।। सुरभेर्गात्र सम्भूतैः पावनैः शुभकारकैः ।
गोमूत्रैः स्नापयाम्येव सज्योतिर्मल शुद्धये ।।

दूध ।। ३ ।। गोस्तनेभ्यः समुत्पन्नैः पयोभिर्निर्मलैः शुभैः ।
स्नापयामि देवांस्तान् प्रतिष्ठा शुभहेतवे ।।

भस्म ।। ४ ।। यथा वह्निस्तृणादीनां सुभस्म प्रकरोति यत् ।
तथा मूर्त्ति समूहानां भस्मसु च विधास्यति ।।

⊙ गंगा जल अथवा शुद्ध तीर्थ-नदी तालाब का जल चढ़ा दे

।। ओम् गंगादि सलिलैर्दिव्यैस्तीर्थोदक समन्वितैः । स्नापयामि देवांस्तान् सुगणादि सुशोभितान् ।।

⊙ मूर्त्तियों के आगे एक कलश-पात्र रखे ⊙ कलश में जल भर दे

⊙ अक्षत-फूल लेकर हाथ जोड़े ।। मन्त्र पढ़े ।।

।। ओम् काशी कुशस्थलीमाया ऽ वन्त्यायोध्या मधोः पुरी । शालिग्रामः सगोकर्णः नर्मदा च सरस्वती ।।
गंगाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च । वृषारुढ़ा सरोजाक्षी पद्म हस्ताशशि प्रभा ।।
आगच्छन्तु सरिज्ज्येष्ठा गंगा पाप प्रणाशिनी । नीलोत्पल दलश्यामा पद्म हस्ताम्बु जेक्षणा ।।
आयातु यमुनादेवि कूर्मयान स्थिता सदा । प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा ।।
उर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गण्डकी तथा । एता नद्याश्च तीर्थानि गुह्य क्षेत्राणि सर्वशः ।।
तानि सर्वाणि कुम्भे ऽ स्मिन् विशन्तु ब्रह्म शाशनात् ।।

टिप्पणी— १. कुछ पद्धतिकारों ने सरसों छोड़कर यदत्र संस्थितम्—मन्त्र द्वारा भूतादिकों को हटाकर जलाधिवास स्थल को शुद्ध करने को भी लिखा है

२. कुछ पद्धतियों में पात्र जल ध्यान पहले ही लिखा है, मूर्त्तियों को कुशा से पोंछने—गोबर-गोमूत्र-भस्म आदि लगाने के पूर्व यह कलश अभिमन्त्रित प्रक्रिया दी गई है।

⊙ हाथ का अक्षत फूल कलश में छोड़ दे

⊙ कलश के चारो ओर अक्षत छोड़े ।। मन्त्र पढ़े—

१. ओम् इन्द्राय नमः ।। पूर्वे
२. ओम् अग्नये नमः ।। इति अग्निकोणे ।।
३. ओम् यमाय नमः ।। इति दक्षिणे ।।
४. ओम् निर्ऋतये नमः ।। इति नैर्ऋत्य कोणे ।।
५. ओम् वरुणाय नमः ।। इति पश्चिमे ।।
६. ओम् वायवे नमः ।। इति वायव्यकोणे ।।
७. ओम् कुवेराय नमः ।। इति उत्तरे ।।
८. ओम् ईशानाय नमः ।। इति ईशानकोणे ।।

ओम् अष्ट लोक पालान् आवाहयामि ।।

⊙ कलश की पूजा कर दे—रोड़ी-चावल-फूल चढ़ा दे—

ओम् अष्ट लोक पालाय नमः ।। —कहता रहे ।।

⊙ इस कलश का जल मूर्त्तियों पर चढ़ाए ।। मन्त्र पढ़े—

[जल धारा दे धार टूटे नहीं]

।। ओम् अश्मन्नूर्जं पर्वते शिश्रियाण मद्भ्य ओषधीभ्यो वनस्पतिभ्यो अधिसम्भृतं पयः ।
तां न इषमूर्जम् धत्त मरूतः स ᳪ रराणा अस्मँस्ते क्षुन्मयि त ऊर्ग्यँ द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ।।

⊙ शुद्ध जल से मूर्त्तियों को धोकर ⊙ शुद्ध वस्त्र से पोछ कर मूर्त्तियों को यथा स्थान रख दे

⊙ गन्ध पुष्प मूर्त्तियों पर चुप चाप चढ़ा दे

।। कौतुक बंधन ।।

⊙ आचार्य के हाथ से नाप कर एक-एक बीता का सफेद ऊन का सूत लेकर मूर्त्तियों के दाहिने हाथ (देवी के बाएँ हाथ) में बांध दे—

[शिवलिंग में लपेट दे] मन्त्र पढ़े—

।। ओम् रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवी मिदमहं तं वलगमुत् किरामि ।
यं मे निष्ट्यो यम मात्यो निचखाने दमहं तं वलगमुत् किरामि ।
यं मे समानो यम समानो निचखाने दमहं तं वलगमुत् किरामि ।
यं मे सवन्धुर्यम सवन्धु निचखाने दमहं तं वलगमुत् किरामि ।
यं मे सजातो यम सजातो निचखानोत् कृत्यां किरामि ।।

⊙ हाथ जोड़ कर आचार्य से कहे—

।। भो आचार्य ! देवस्या वयवान् सम्यक् निरीक्षस्व ।।

⊙ आचार्य मूर्त्तियों को देख ले

⊙ बड़े पात्रों में [जिसमें मूर्त्तियों को रखने पर मूर्त्तियाँ जल से ढक जाय] शुद्ध जल भर दे

⊙ जल में पंचगव्य-हिरण्य-दूर्वा-यव-पीपल-पलाश का पत्र छोड़ दे

⊙ हाथ में जल-अक्षत पुष्प लेकर संकल्प पढ़े—

॥ ओम् शुभ पुण्यतिथौ… गोत्रः… नामाऽहं सप्रासाद आसां मूर्त्तीनां प्रतिष्ठा कर्मणि जलमातृकादीन् पूजयिष्ये ॥

⊙ हाथ का जल अक्षत-फूल सामने भूमि पर छोड़ दे.

⊙ बाएं हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से दो-दो दाना अक्षत जल पात्रों में छिड़के—

॥ १ ॥ ओम् मत्स्यै नमः ।

॥ २ ॥ ओम् कच्छप्यै नमः ।

॥ ३ ॥ ओम् कूर्म्यै नमः ।

॥ ४ ॥ ओम् वाराह्यै नमः ।

॥ ५ ॥ ओम् दर्दुर्यै नमः ।

॥ ६ ॥ ओम् शिशुमार्यै नमः ।

॥ ७ ॥ ओम् ईश्वर्यै नमः ।

॥ ८ ॥ ओम् सप्तजल मातृः आवाहयामि ॥ पूजयामि ॥

⊙ हाथ का अक्षत छोड़ दे ।

⊙ जल पात्र के समीप एक शुद्ध पात्र या पत्तल पर ७ जगह अक्षत पुंज रखे

⊙ इन सात अक्षत पुंजों पर अक्षत छोड़कर जीव मातृकाओ का आवाहन करे—

॥ १ ॥ ओम् मत्स्यै नमः ।

॥ २ ॥ ओम् हृद्यै नमः ।

॥ ३ ॥ ओम् गोधायै नमः ।

॥ ४ ॥ ओम् मकर्यै नमः ।

॥ ५ ॥ ओम् डुण्डुभ्यै नमः ।

॥ ६ ॥ ओम दर्दुर्यै नमः ।

॥ ७ ॥ ओम् जल्यै नमः ।

⊙ फिर जल पात्र में अक्षत छोड़कर योगिनी आदि का आवाहन करे—

।। १ ।। ओम् चतुष्षष्टि योगिनीभ्यो नमः । ।। २ ।। ओम् सप्त सागरेभ्यो नमः ।

।। ३ ।। ओम् मानसादि सप्तसरोभ्यो नमः । ।। ४ ।। ओम् पुष्करादि तीर्थेभ्यो नमः ।

।। ५ ।। ओम् गंगादि महानदीभ्यो नमः । ।। ६ ।। ओम् वरुणाय नमः ।

।। ओम् तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तद शास्ते यजमानो हर्विभिः ।
अहेडमानो वरुणेह वोध्युरूश ᳪ समान आयुः प्रमोषीः ।।

⊙ जीव मातृका तथा योगिनी आदि की पूजा कर दे—गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दे

⊙ एक पत्ता पर दही-उरद रख कर जल पात्र के समीप रखे

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

।। जल पात्र स्थित देवता इदं दधिमाषभक्त वलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य रक्षां कुरू ।।

⊙ हाथ का जल दही-उरद के पास छोड़ दे

⊙ जल पात्र में पंचामृत छोड़ दे

।। ओम् पञ्चनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्रो तसः ।
सरस्वती त पञ्चधा सो देशे भवत सरित ।।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

॥ ओम् जलाधिवासितो देवो मम भाग्योदयं कुरु ।
त्वदधिष्ठान संयोग्यं त्वत् प्रसादात् सुरेश्वर ॥

⊙ फूल जल पात्र में छोड़ दे

⊙ मूर्त्तियों में कुशा तथा नवीन लाल वस्त्र लपेट दे । मन्त्र पढ़े—

॥ ओम् देवानांरक्षणार्थाय रक्त सूत्रं कुशैर्युतम् । तद्वै प्रतिसराख्यं च वध्नामि सुरहेतवे ॥

⊙ कुश—रक्त वस्त्र लपेट कर मूर्त्तियो को जल पात्र में अधिवास करा दे । मन्त्र पढ़े—
[मूर्त्तियों का मुख पूर्व या उत्तर रहे]

॥ ओम् अवते हेडो वरुण नमोभि रवयज्ञे भिरीमहे हविर्भिः ।
क्षयं नास्मभ्य मसुर प्रचेतो राजन्ने ना ऽऽ सि शिश्रयः कृतानि ॥
उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवाधमं विमध्यम ऽऽ श्रथाय ।
अथावय मादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम् ॥

⊙ मूर्त्तियों को जल में अधिवास कराने के बाद

टिप्पणी— ⊙ जलाधिवास के लिए लघुदर्पण में यह मन्त्र दिया है—

१७१ ओम् उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् । उपयाम गृहीतोऽसि सूर्यायत्वा भ्राजायैषतेयोनिः सूर्यायत्वा भ्राजाय ॥

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

ओम् प्रतिमासु कलानां च सिद्ध्यर्थं रक्षणायजगत् प्रभो । जलेशानां रक्षभो देव मत्तोऽप्सु समधिष्ठिताम् ।।
नमस्तेऽर्चे सुरेशानि प्रणीते विश्वकर्मणा । प्रभाविता शेष जगद्धात्रे इहतुभ्यं नमो नमः ।।
त्वयि सम्पूजयामीशं नारायण मनामयम् । रहिता शेषदोषस्त्व मृद्धयुक्ता सदाभव ।।
सर्वसत्यमयं शान्तं परं ब्रह्म सनातनम् । त्वमेवालं करिष्यामि त्वं वन्द्यो भवते नमः ।।

⊙ फूल मूर्त्तियों पर छोड़ दे

⊙ आचार्य को सुवर्ण तथा गौ दे ⊙ कुश-अक्षत लेकर संकल्प करे—

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ'' गोत्रः''' नामाऽहं कृतैतत् जलाधिवास कर्मणि परिपूर्णतावाप्तये शुभता सिद्ध्यर्थम् इदं हिरण्यम् [तन्निष्क्रयीभूतं द्रव्यं] एवं च गाम् [गोनिष्क्रयी भूतं द्रव्यम्]

गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

⊙ ब्राह्मण को सुवर्ण-गौ दान दे ⊙ ब्राह्मण लेकर कहे— ।। स्वस्ति ।।

⊙ अन्य ब्राह्मणों को भी दक्षिणा दे ⊙ मूर्त्तियों से सम्बद्ध सूक्त तथा शान्ति सूक्त का पाठ करे ।।

।। इति जलाधिवास ।।

टिप्पणी— ⊙ सोना-गौ के अभाव में निष्क्रय द्रव्य देना चाहिए ।

⊙ जलाधिवास एक रात, एक याम, एक मुहूर्त, अथवा गौ दुहने में जो समय लगता है उतने समय तक हो सकता है। यथा समय आवश्यकता सुविधा देकर आचार्य की आज्ञा से यथेष्ट काल तक जलाधिवास करना चाहिए ।

॥ अन्नाधिवास ॥

⊙ यजमान [पत्नी सहित] मण्डप के नैर्ऋत्य कोण में पूर्व मुख बैठें

⊙ आचमन-प्राणायाम कर ले ⊙ पवित्री पहन ले

⊙ अक्षत-पुष्प लेकर शान्ति पाठ करे

> ॥ ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ᳪ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ᳪ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि । ओम् शान्तिः । शान्तिः । शान्तिः । सुशान्ति र्भवतु ॥ सर्वारिष्ट शान्तिरस्तु ॥

⊙ हाथ का अक्षत फूल सामने पृथिवी पर छोड़ दे

⊙ कुश-अक्षत-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे—

> ॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ ··· गोत्रः ··· नामाऽहं मम गृहे प्रचुर धनधान्य पुत्रपौत्रादि सुख सम्पत्त्यादि निवासार्थम् आसां मूर्त्तीनां देवता योग्यताधिष्ठान सिद्ध्यर्थञ्च धान्याधिवासं करिष्ये ॥

⊙ संकल्प पढ़ कर हाथ का कुश अक्षत-जल सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ अधिवास स्थल को गोबर से लीप कर [यदि पहले से लीपी है तो जल छिड़क कर] शुद्ध करे

⊙ गोबर से लिपी हुई भूमि पर धान्य [अन्न] फैला दे

upayogibooks.com

⊙ धान्य के ऊपर शुद्ध-महीन-नया वस्त्र बिछा दे

⊙ उठ कर जलाधिवास स्थल पर जाय

⊙ पूर्व मुख बैठ कर = आचमन—प्राणायम करे

⊙ फूल लेकर जल में स्थित देवों की प्रार्थना करे

॥ १ ॥ ओम् उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देव यन्तस त्वेमहे ।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदा नब इन्द्र प्राशुर्भवा सचा ॥

॥ २ ॥ ओम् उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश समुत्तिष्ठ सुरेश्वर ।
उत्तिष्ठ जगदाधार त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ॥

॥ ३ ॥ ओम् उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश त्यज निद्रां महाशय ।
जलाधिवासन विधि त्यक्त्वा स्वीकुरु हि मण्डपम् ॥

⊙ फूल जल पात्र स्थित मूर्त्तियों पर चढ़ा दे

⊙ क्रमशः १-१ मूर्त्ति जल पात्र से निकाले शुद्ध वस्त्र से पोछ कर जल सुखा दे ⊙ किसी पात्र में रखता जाय

⊙ सभी मूर्त्तियों को उठा कर शंख-भेरी-मृदंग-मंगल गीत आदि के साथ मण्डप के नैऋत्य कोण में अन्नाधिवास के स्थान पर आए और मूर्त्तियों को पश्चिम मुख रखे

⊙ स्वयं यजमान पूर्व मुख बैठ जाय

⊙ धान्य के ऊपर जो वस्त्र बिछाया है उस पर १ कुशा फैला दे

⊙ उसी धान्य-वस्त्र-कुश के ऊपर ज्येष्ठता के क्रम से १-१ मूर्त्ति को रख दे। मन्त्र पढ़े—

।। ओम् धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा ।। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वा सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णा त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि ।।

⊙ मूर्त्तियों के ऊपर फिर एक कपड़ा फैला दे

⊙ कपड़े के ऊपर धान्य [अन्न] फैला दे ⊙ मूर्त्तियां बन्द हो जांय

[परिवार सहित यह अन्न फैलाना चाहिए]

⊙ अन्न फैला कर उसके ऊपर कुशा-गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दे

[कुछ लोग षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजा करते हैं]

⊙ देव सम्बन्धित सूक्त पाठ—शान्ति पाठ—मंगलगान करे

॥ इति अन्नाधिवास ॥

॥ देव स्नान मंडप ॥

⊙ मण्डप में उत्तर की ओर बीच वाले भाग में तीन वेदी बनाये
[गूलर की लकड़ी से बनी तीन काठ की चौकी रखे—यही वेदी है]

⊙ तीनों चौकी २८ अंगुल लम्बी तथा २४ अंगुल चौड़ी और ६ अंगुल ऊंची बनानी चाहिए

⊙ तीनों चौकी क्रमशः दक्षिण से उत्तर की ओर रखे

⊙ तीनों पीठों के बीच में ८-८ अंगुल स्थान रिक्त रखना चाहिए

⊙ तीनों वेदी पर बालू या शुद्ध मिट्टी बिछा दे ⊙ तीनों वेदी पर चावल से 卐 स्वस्तिक बना दे

॥ पूजन विधि ॥

⊙ यजमान दक्षिण वाली वेदी के सामने पूर्व मुख बैठे ⊙ आचमन—प्राणायाम कर ले ⊙ फूल लेकर विश्वकर्मा का ध्यान करे

॥ ओम् विश्वकर्मातु कर्त्तव्यः श्मश्रुलो मुसलाधरः । सं दंशपर्णिर्द्वि भुजस् तेजो मूर्त्तिः प्रतापवान् ॥

भो विश्वकर्मन् भूतात्मन् शिल्प कर्म विशारद । आगच्छ भगवन् देव ह्यस्मिन् वै स्नान मंडपे ॥

टिप्पणी—लघुदर्पण में विश्वकर्मा के लिए वैदिक मन्त्र दिया गया है—

॥ ओम् विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यं तस्मै विशः शमनमन्त पूर्वीरय मुग्रयो विहव्या यथासत् ॥

⊙ फूल तीनों वेदियों पर छोड़ दे

⊙ तीनों वेदी पर पंचगव्य छिड़कें

॥ ओम् पंचगव्यं पूतकरं सर्वं संशुद्धि कारणम् । अतः सम्प्रोक्षिता मह्यम् वेदिकाः शुभलक्षणाः ॥

⊙ तीनों वेदी पर कुशा बिछा दे [कुशा का अग्रभाग पूर्व की ओर रहे]

॥ ओम् इमान् कुशान् भद्रपीठे मूर्त्तीनां सुस्थिराय च । आसादयामि ब्रह्मदेव रचितान्यून संयुतान् ॥
सुकाष्ठ निर्मितान् पीठान् सर्वलक्षण संयुतान् । प्रतिमा स्थापनार्थम् तु पूजयामि वेदिकत्रयान् ॥

⊙ तीनों वेदियों पर १-१ फूल छोड़ दे

⊙ तीनों वेदियों पर शुद्ध वस्त्र बिछा दे

⊙ यजमान यहाँ से उठकर नैर्ऋत्यकोण में अन्नाधिवास के स्थल पर आये

⊙ अन्नाधिवास स्थल पर पूर्व मुख बैठे

⊙ आचमन-प्राणायाम करे

⊙ मूर्त्तियों के ऊपर से धान्य हटाकर साफ कर ले

टिप्पणी—लघुदर्पणकार ने इन पीठों के नीचे सप्तधान्य बिछाने को लिखा है । अग्निपुराण में भी सप्तधान्य बिछाने का उल्लेख है अन्य पद्धतिकारो ने यह नहीं लिखा है ।

⊙ फूल लेकर देवों की प्रार्थना करे—

।। ओम् उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस् त्वेमहे । उप प्रयन्तु मरुतः सु दानव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा ।।
स्वागतं देव देवेश विश्वरूप नमोऽस्तुते । शुद्धेऽपि त्वदधिष्ठाने शुद्धिं कुर्मः सहस्वताम् ।।
[स्वागतं देवदेवेशि विश्वरूपे नमोऽस्तुते]

⊙ फूल मूर्त्तियों पर छोड़ दे ⊙ मूर्त्तियों को धान्य से बाहर निकाले

⊙ कुशा से मूर्त्तियों को पोंछ दे ⊙ शुद्ध जल से स्नान करा दे

⊙ किसी पात्र में मूर्त्तियों को रखे — अथवा

[मूर्त्तियां बड़ी तथा भारी हों तो यजमान स्पर्श कर ले, अन्य पवित्र जन मूर्त्तियों को उठाकर स्नान मंडप में ले जाय]

⊙ शंख भेरी-मंगलगीत के साथ मूर्त्तियों को स्नान मंडप में लाए

।। पहली वेदी पर रखे ।।

⊙ मूर्त्तियों को स्नान मंडप में लाकर दक्षिण वाली पहली वेदी पर रखे

⊙ मूर्त्तियों का मुख पश्चिम की ओर रहे ⊙ रखते समय मन्त्र पढ़े—

ओम् स्तीर्णम् बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरू पृथु प्रथमानं पृथिव्याम् ।
देवेभिर्युक्त मदितिः सजोषाः कृण्वाना सुविते दधातु ।।

टिप्पणी—कुछ पद्धतिकारों ने पूर्व मुख मूर्त्तियों को रखने को लिखा है किन्तु लघुदर्पण एवं उद्योत ग्रन्थ में पश्चिम मुख लिखा है ।

॥ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरंगैस् तुष्टुवा ऽ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

⊙ यजमान पूर्व मुख प्रथम वेदी [दक्षिण वाली वेदी] के सामने बैठ जाय

⊙ अपने सामने १२ कलश स्थापित करे
[ये १२ कलश दक्षिण से उत्तर के क्रम से १ पंक्ति में रखे]

⊙ कलशों के नीचे सप्तधान्य छोड़ दें ⊙ कलशों में लाल या पीला तीन-तीन कच्चा सूत लपेट दे
⊙ कलशों में शुद्ध जल तथा पंच पल्लव छोड़ दे ⊙ इसके अतिरिक्त
⊙ इन १२ कलशों में क्रमशः [दक्षिण से उत्तर के क्रम से] निम्न वस्तुएं छोड़े

१. प्रथम में—सप्तमृत्तिका, २. दूसरे में—पंचवृक्ष छाल जल, ३. तीसरे में—गोमूत्र,
४. चौथे में—गोबर ५. पांचवे में—भस्म ६. छठवे में—चंदन मिला जल

⊙ शेष ६ कलशों में—सुगन्धित जल
[इन कलशों में उत्तर वाला अन्तिम बारहवां कलश "स्थपति संज्ञक" है]

⊙ यजमान आचमन—प्राणायाम करे

टिप्पणी—पद्धतियों में "कषाय जल" का उल्लेख है । पांच वृक्षों की छाल को पानी में भिगो कर [पंच वृक्ष त्वक-उदक] जल लेले —इसे ही कषाय कहते हैं । अग्निपुराण के अनुसार ५ वृक्ष हैं —जामुन, सेमर, खिरेंटी, बेर, मोलसिरी ॥

⊙ बारहवां [स्थपति संज्ञक] कलश उठाकर मूर्त्ति के सामने रखे

⊙ फूल लेकर इस कलश में तीर्थों का आवाहन करे—

ओम् काशी कुशस्थलीमायाऽवन्त्य योध्या मधोः पुरी। शालिग्रामं सगोकर्णं नर्मदा च सरस्वती ॥ १ ॥

झषारूढ़ा सरोजाक्षी पद्महस्ता शशिप्रभा। आगच्छतु सरिज्ज्येष्ठा गंगा पाप प्रणाशिनी ॥ २ ॥

नीलोत्पल दलश्यामा पद्महस्ताम्बु जेक्षणा। आयातु यमुना देवी कूर्मयान स्थिता सदा ॥ ३ ॥

प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमीतथा। चर्मिला चन्द्रभागा च सरयूगण्डकी तथा ॥ ४ ॥

जम्बुका च शतद्रुश्च कालिका सुप्रभा तथा। वितस्ता च विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः ॥ ५ ॥

गोदावरी महावर्ता शर्करावर्त्तमार्जनी। कावेरी कौशिकी चैव तृतोया च महानदी ॥ ६ ॥

विटंका प्रतिकूला च सोमनन्दा च विश्रुता। करतोया वेत्रवती वेदिका वेणुका च या ॥ ७ ॥

आत्रेय गंगा वैतरणी काश्मीरी ह्लादिनी च या। प्लावती शवित्रासा कल्माषा संशिनी तथा ॥ ८ ॥

वशिष्ठा च ऊपापा च सिन्धु वत्यारूणी तथा। ताम्रा च त्रिसन्ध्या च तथा मन्दाकिनीपरा ॥ ९ ॥

तैलिकाह्नी च पारा च दुन्दुभिर्नकुली तथा। नीलगन्धा च बोधा च पूर्णचन्द्रा शशिप्रभा ॥ १० ॥

अमरेशं प्रभासं च नैमिषं पुष्करं तथा। आषाढ़िं डिण्डिमारत्नं भारभूतं वलाकुलम् ॥ ११ ॥

हरिश्चन्द्रं परं गुह्यं मध्यं मध्यम केश्वरम्। श्री पर्वत समाख्यातं जलेश्वर मतः परम् ॥ १२ ॥

आम्नात केश्वरं चैव महाकालं तथैवच। केदार मुत्तमं गुह्यं महाभैरवमेव च ॥ १३ ॥

गयां चैव कुरुक्षेत्रं गुह्यं कनखलं तथा। विमलं चन्द्रहासं च माहेन्द्रं भीम मष्टकम् ॥ १४ ॥

वस्त्रापद रुद्र कोटिम विमुक्त महाबलम् । गोकर्णम् भद्रकर्णम् च माहेशं स्थानमुत्तमम् ।। १५ ।।
छागलाह्वं द्विरण्डं च कर्कोटं मण्डलेश्वरम् । कालञ्जर वनं चैव देवदारुवनं तथा ।। १६ ।।
शंकुकर्णं तथैवेह स्थलेश्वर मतः परम् । गंगाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च ।। १७ ।।
एता नद्यश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणिसर्वशः । तानि सर्वाणि कुम्भेस्मिन् विशन्तु ब्रह्म शासनात् ।। १८ ।।

⊙ फूल कलश पर छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

।। ओम् कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः । देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ ।।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् । त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः । शिवः स्वयं त्वेमासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।।
आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः । त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ।।
त्वत् प्रसादादिमं कर्म कर्त्तुमीहे जलोद्भव । सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।।
क्षेम कर्त्ता, तुष्टि कर्त्ता, पुष्टि कर्त्ता, वरदो भव ।।

⊙ फूल कलश पर छोड़ दे

।। बलिप्रदान ।।

⊙ हाथ में जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ……गोत्रः…… नामाऽहम् करिष्यमाण देवस्नपनांग भूतं सिद्धार्थ घृत पायसैः
रुद्राय बलिप्रदानं करिष्ये ।।

⊙ हाथ का जल सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ एक पत्ता पर खीर तथा खीर के ऊपर २ बूंद घी छोड़कर लेले

⊙ देव स्नान मंडप से बाहर जाकर पूर्व दिशा में पत्ता सहित खीर रख दे

⊙ हाथ में जल लेकर खीर के पास छोड़ दे। मन्त्र पढ़े—

।। ओम् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।
ओम् रुद्राय एष सिद्धार्थ घृत पायस बलि न मम ।।

⊙ हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे

।। ओम् भूताधिपेभ्यः सर्वेभ्यः प्रेत प्रेभ्यस्तथैव च।
इमं हि पायस बलि ददामि शुभ हेतवे ।।

टिप्पणी— १. कुछ पद्धतिकारों ने बलि प्रदान के पूर्व शिल्पिवर्ग मूर्त्ति बनाने वाले की पूजा भी लिखते हैं।

॥ अष्टदिक् पालबलि ॥

⊙ कुछ पद्धतिकारों ने इस स्थान पर अष्टदिक्पालों को भी बलिप्रदान लिखा है जो निम्न प्रकार है—

⊙ क्रमश: १-१ पत्ता पर १-१ ग्रास खीर तथा खीर के ऊपर २ बूंद घी छोड़कर ले ले

⊙ स्नान मण्डप के चारो— [पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण] दिशा तथा चारो कोणों में खीर सहित १-१ पत्ता रखे और जल छोड़ दे ॥ मन्त्र पढ़ता रहे—

१. पूर्व में— ओम् इन्द्राय सांगाय इमं बलिं समर्पयामि । भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममाभ्युदयं कुरु ॥ अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम्

२. अग्निकोण में— ओम् अग्नये सांगाय इमं बलिं समर्पयामि । भो अग्ने दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममाभ्युदयं कुरु ॥ अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयताम्

३. दक्षिण में— ओम् यमाय सांगाय इमं बलिं समर्पयामि । भो यम दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममाभ्युदयं कुरु ॥ अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम्

४. नैर्ऋत्य में— ओम् निर्ऋतये सांगाय इमं बलिं समर्पयामि । भो निर्ऋते दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममाभ्युदयं कुरु ॥ अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम्

५. पश्चिम में— ओम् वरुणाय सांगाय इमं बलिं समर्पयामि । भो वरुण दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममाभ्युदयं कुरु ॥ अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम्

६. वायव्य में— ओम् वायवे सांगाय इमं वलिं समर्पयामि । भो वायो दिशं रक्ष वलिं भक्ष ममाभ्युदयं कुरू ।। अनेन वलिदानेन वायुः प्रीयताम्

७. उत्तर में— ओम् सोमाय सांगाय इमं वलिं समर्पयामि । भो सोम दिशं रक्ष वलिं भक्ष ममाभ्युदयं कुरू ।। अनेन वलिदानेन सोमः प्रीयताम्

८. ईशान में— ओम् ईशानाय सांगाय इमं वलिं समर्पयामि । भो ईशान दिशं रक्ष वलिं भक्ष ममाभ्युदयं कुरू ।। अनेन वलिदानेन ईशानः प्रीयताम्

।। स्नानमंडप रक्षाभिधान ।।

⊙ वलि प्रदान कर हाथ-पांव धो ले ⊙ स्नान मंडप में फिर आकर अपने स्थान पर बैठे

⊙ आचमन—प्राणायाम कर ले

⊙ बांए हाथ में पीली सरसों ले ले ⊙ दाहिने हाथ से थोड़ा-थोड़ा स्नान मण्डप में चारो ओर छिड़के ।। मन्त्र पढ़े—

।। ओम् पूर्वे रक्षतु देवेन्द्र आग्नेया मग्नि देवता ।।
।। अवाचीं तु यमो रक्षेत् नैर्ऋतीं निर्ऋतिस्तथा ।।
।। प्रतीचीं वरुणो रक्षेद् वायवीं वायु देवता ।।
।। सोमो रक्षे दुदीचीन्तु ईशानी मीश देवता ।।
।। ऊर्ध्वम् रक्षतु धातावो ह्यधो ऽनन्तश्च रक्षतु ।।
।। अनुक्त मपि यत् स्थानं रक्ष त्वीशो ममाद्रि धृक् ।।

⊙ कुछ लोग यहाँ पर निम्नलिखित वैदिक मन्त्रों का पाठ भी करते हैं —जो इस प्रकार है—

॥ १ ॥ ओम् त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्र ऌ हवे हवे सुहव ऌ शूरमिन्द्रम् ।
हृ्वयामि शुक्रं पुरुहूत मिन्द्र ऌ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥

॥ २ ॥ ओम् अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे । देवाँ आसाद या विह ॥

॥ ३ ॥ ओम् असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन ।
असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि बन्धनानि ॥

॥ ४ ॥ ओम् एषतेनिर्ऋते भागस्तं जुषस्व स्वाहा । अग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरःसद्भ्यः स्वाहा । यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणा सद्भ्यः स्वाहा । विश्वेदेव नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चाद्सद्भ्यः स्वाहा । मित्रावरुण नेत्रेभ्यो वा मरुन्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य उत्तरा सदभ्यः स्वाहा । सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य उपरि सद्भ्यो ऊवस्वद्भ्यः स्वाहा ॥

॥ ५ ॥ ओम् इमं मे वरूण श्रुधी हवमद्याचमृडय । त्वामवस्यु राचके ॥

॥ ६ ॥ ओम् वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम् । शिवोनियुद्भिः शिवाभिः ॥

॥ ७ ॥ ओम् कुविदंग यवमन्तो यवंचिद् यथा दान्त्यनु पूर्वम् पियूय ।
इहे हैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ॥

॥ ८ ॥ ओम् ईशावास्यमिद ऌ सर्वम् यत् किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भञ्जीथा मागधः कस्य स्विद धनम् ॥

॥ ९ ॥ ओम् ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः ।
सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः ॥

॥ १० ॥ ओम् नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

॥ स्नान पूर्व पुण्याह वाचन ॥

⊙ यजमान अपने दक्षिण ४ ब्राह्मण [उत्तर की ओर मुख करके] बिठाए

⊙ ब्राह्मणों के हाथ में जल-फूल-अक्षत दे दे

⊙ हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

॥ भो ब्राह्मणाः देव स्नपन कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥

⊙ ब्राह्मण कहे—

॥ ओम् पुण्याहम् ॥ ओम् पुनन्तुमा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वाभूता निजातवेदा पुनीहि मा ॥

⊙ यजमान कहे—

॥ भो ब्राह्मणाः देव स्नपनकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। ओम् कल्याणम् ।। यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः ।
ब्रह्म राजन्याभ्यां ७ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ।।

⊙ यजमान कहे—

।। भो ब्राह्मणाः देव स्नपन कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ।।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। ओम् कर्म ऋद्ध्यताम् ।। सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम दिवं पृथिव्या ।
अध्यारुहामा विदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः ।।

⊙ यजमान कहे—

।। भो ब्राह्मणाः देव स्नपन कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ।।

⊙ ब्राह्मण कहे—

।। ओम् स्वस्ति ।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ।।

⊙ यजमान कहे—

।। भो ब्राह्मणाः देव स्नपन कर्मणः श्री रस्तु-इति भवन्तो ब्रुवन्तु ।।

⊙ ब्राह्मण कहे— ।। अस्तु श्रीः ।।

।। श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।।
इष्णन् निषाण मुम् मइषाण सर्वलोकम् मइषाण ।।

⊙ यजमान अक्षत-फूल-जल-द्रव्य लेकर ब्राह्मणों को दक्षिणा दे

।। अद्य कृतस्य देव स्नपन पुण्याह वाचन कर्मणः सांगता सिध्यर्थम् दक्षिणाद्रव्यं गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो
विभज्य दातु मह मुत्सृजे ।।

⊙ ब्राह्मणों को दक्षिणा दे दे

।। देवस्नान प्रयोग ।।

⊙ यजमान जल-अक्षत लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ...... गोत्रः ...... नामाऽहम् आसु मूर्त्तिषु [अस्यां मूर्त्तौ] [अस्मिन् लिंगे]
देवताधिष्ठान योग्यता सिद्ध्यर्थम् नानाद्रव्योदक कलशैः अर्चाशुद्धि स्नपनं करिष्ये ।।

⊙ हाथ का जल सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ मूर्त्तियों को कलश जलों से स्नान कराए

[वेदी के आगे रखे १२ कलशों से क्रमशः गोमूत्र-गोबर आदि १-१ कलशों का जल कुशा से मूर्त्तियों पर छिड़के—

⊙ १२ कलशों का क्रम तथा उनका मन्त्र इस प्रकार है—

१. सप्तमृत्तिका कलश— ओम् अग्निमूर्धा दिवः ककुत् पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेता ७ सिजिन्वति ।।
ओम् सत् संस्काराय देवानां मलस्यपरिशुद्धये। मृतस्नया स्नापयाम्येव देवता तुष्टिहेतवे ।।

२. वृक्षछाल जल— ओम् यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्ष से।
प्र प्र वय ममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न श ७ सिषम् ।।
ओम् यज्ञियवृक्षत्वक् कषायैर् निर्मलैः परिशोधितैः।
उष्णैर्मलहरैः सम्यक् स्नापयामि सुखाप्तये ।।

३. गोमूत्र से— ओम् तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ।।
ओम् गवां योनिसमुद्भूतैः पवित्रैः शुद्धि कारकैः। गोमूत्रैः स्नापयाम्येव देव संस्कार सिद्धये ।।

४. गोबर से— ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ।।
ओम् सुरभेर्गात्र सम्भूतैः पावनै शुभ कारकैः। गोमयैः स्नापयाम्येव सज्योतिर्मल शुद्धये ।।

५. भस्म से — ओम् मानस्तोके तनये मान आयुषि मानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः।
मानो वीरान् रुद्रभामिनोवधी हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ।।
ओम् वहि्नस्तृणादीनां सुभस्म प्रकरोति यत्। तथा मूर्त्ति समूहानां भस्मसु च विधास्यति ।।

६. गन्धोदक से— ओम् त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वा मोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मा दमुच्यत् ।।
ओम् शुद्धैर्मनोहरैर्दिव्यैर्गन्धादि सहितैर्जलैः । स्नापयामि प्रसन्नार्थं माशु सिद्धि कराय ते ।।

⊙ शेष अन्य ६ कलशों से क्रमशः स्नान कराए ।। मन्त्र पढ़े—

७. सातवां कलश— ओम् नमः शम्भवाय मयोभवाय च नमः शंकराय च ।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।।
ओम नमोदेवाधिदेवाय गुणानां वृत्तिदाय च । गन्धतोयैः स्नापयाम्यत्र आहिमां परमेश्वर ।।

८. आठवां कलश— ओम् ह ऊँ सः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषद तिथिर् दुरोणसत् ।
नृ ष द्वर स दृत सद्व्योम सदब्जा गोजाऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ।।
ओम् नमस्ते वेवदेवेश नमस्ते दैत्यसूदन । सर्वगन्ध समायुक्तैर्वारिभिः स्नापयाम्हम् ।।

९. नवां कलश— ओम् यातेरूद्र शिवातनूरा घोरा पाप काशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ।।
ओम् नमो दैवतनाथाय पुरुषेच्छा कराय च । गन्ध संभार संयुक्तं जलं दास्यामि यत्नतः ।।

१०. दसवां कलश— ओम् विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नपत्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णव मसि विष्णवेत्वा ।।
ओम् प्रधानायाप्रमेयाय कार्याय कारणाय च । जलैर्मृगमदैर्युक्तैः स्नापयामि स्वकाम्यया ।।

११. ग्यारहवां कलश— ओम् ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः ।।
ओम् नमोहिरण्य गर्भाय हिरण्य कवचाय च । नमो ब्रह्मस्वरूपाय स्नापयामि शुभैर्जलैः ।।

१२ बारहवां कलश— ओम् शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुतवारुहः । अधाशत क्रत्वोयूयमिमम्मे अगदङ्कृत ।।
ओम् देवदेव परं शान्तं विश्वस्याघौघनाशकम् । शुद्धवारिस्थकुम्भेन स्नापयामि शुभाप्तये ।।

⊙ स्नान कराने के बाद शुद्ध वस्त्र से मूर्त्तियों को पोछ दे

⊙ मूर्त्तियों पर दूब-सफेद फूल चढ़ाकर पीला कपड़ा छोड़ दे ।। मन्त्र पढ़े—

ओम् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्चशरदः शतम् ।।

।। ओम् नमोऽस्तु वरदा यायु नमस्ते जगद् धारिणे । एभिर्दूर्वाक्षतैः पुष्पैरर्चा मीह शुभाप्तये ।।
श्वेतं सुनिर्मलं शान्तं तन्तुसंतान संयुतम् । देवेभ्योऽहं प्रदास्यामि सुरसन्तुष्टिकारकम् ।।

टिप्पणी— १. कुछ पद्धतिकारो ने सफेद महीन वस्त्र से मूर्त्तियों को ढकने को लिखा है
२. कुछ पद्धतिकार "तच्चक्षुर्देवहितम्" मन्त्र की जगह "सुजातो ज्योतिः…"यह मन्त्र लिखा है। दोनो एक ही कार्य परक है कोई मन्त्र पढ़े ।।
३. शिवलिंग हो तो दूब-फूल और अक्षत, चढ़ाए

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

॥ ओम् उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वे महे । उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशुर्भवासचा ॥

ओम् उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश त्यक्तलौकिक वृत्तक । अघौघ संक्षयं कृत्वा सर्वसौख्य प्रदोभव ॥

⊙ फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दे

॥ इति प्रथमवेदी स्नान कर्म ॥

॥ द्वितीय वेदी स्नान विधि ॥

⊙ यजमान मूर्त्तियों के ऊपर से कपड़ा हटा दें

⊙ मूर्त्तियों को प्रथम वेदी से उठा कर द्वितीय वेदी पर पश्चिम की ओर मुख करके रखे ॥ मन्त्र पढ़े —

ओम् भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

॥ ओम् इदं भद्रासनं दिव्यं यज्ञकाष्ठ विनिर्मितम् । मध्यवेद्यां स्थापयाम्यत्र देवानां स्थिर हेतवे ॥

देव देव समागच्छ पीठेऽस्मिन् सुमनोहरे । प्रसीद पूजयिष्यामि यथा मम मतिस्तथा ॥

 टिप्पणी—कुछ पद्धतिकारों ने मूर्त्तियों को मध्य वेदी पर भी पूर्व मुख रखने को लिखा है । उद्योत में पश्चिम मुख रखने को लिखा है - वही प्रक्रिया इस पद्धति में ली गयी है .

⊙ मूर्त्ति के हाथ में बंधा ऊन का सूत खोल दे ॥ मन्त्र पढ़े—

ओम् मुञ्चामि त्वा हविषा जीव नाथ कम ज्ञात यक्ष्मावुत राजयक्ष्मात् ।
ग्राहिर्जग्राह यदि वैतवेनं तस्या इन्द्राग्नी प्रमु मुक्त मेनम् ॥

⊙ लाल कच्चा सूत लेकर पुनः मूर्त्तियों के दाहिने हाथ में बांध दे ।

[देवी के बाएं हाथ में बांधे ⊙ शिवलिंग में लपेट दे] मन्त्र पढ़े— ॥ ओम् शिपिविष्टाय ते नमः ॥

॥ नेत्रोन्मीलन ॥

⊙ १ चांदी की कटोरी में शहद घी मिला कर रखे ⊙ सबको हटा दे या पर्दा कर दे

⊙ एक सोने की सलाई से चांदी के कटोरे में रखे शहद-घी से मूर्त्तियों में नेत्रों को बना दे

१. [शिवलिंग हो तो पूरे लिंग को बराबर-बराबर तीन भागों में बांटकर बीच वाले भाग में मुख की कल्पना करे उसी भाग में नेत्र स्थान की कल्पना कर शहद-घी लगाए]

टिप्पणी— १. लघुदर्पण में ११२ अंगुल लम्बा सूत्र बांधने को लिखा है

२. अग्नि पुराण में लिखा है—विष्णवे शिपिष्टः—इस मन्त्र से ऊन के सूत से पट्‌द वस्त्र में सरसों की पोटली बांध कर मूर्त्ति के दाहिने हाथ में पोटली (कौतुक) कंगन (कंकण) बांध दे

३. कुछ लोग आचार्य को भी कौतुक बांधने को लिखते हैं ।

४. शिवलिंग में लाल सूत इस प्रकार बांधना चाहिए कि शिवलिंग तीन भागों में विभाजित हो जाय

२. [मूर्त्तियों में नेत्र बना है तो घी-शहद केवल लगा दे]

⊙ नेत्रोन्मीलन का मन्त्र—

॥ १ ॥ ओम् चित्रं देवानां मुदगाद नीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ॥

॥ २ ॥ ओम् अग्निर् ज्योतिर् ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर् ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥

॥ ३ ॥ ओम् आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्य येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

॥ ४ ॥ ओम् देवस्य प्रतिमायाश्च सुष्ठु तेजोऽभिवृद्धये ।
द्विचक्षुषोश्च निर्माणं करोमि स्वात्म सिद्धये ॥

॥ ५ ॥ ओम् दिव्याञ्जनं मधुघृतं रजतस्थं शुभान्वितम् ।
दास्यामि सौम्य दृष्ट्यर्थम् सुवर्णस्य शलाकया ॥

टिप्पणी— १. चित्रं देवानाम्—इस मन्त्र की आधी ही ऋचा पढ़ी जाती है
२. वाणलिंग में नेत्रोन्मीलन नहीं होता है
३. पद्धतिकारों ने शस्त्र से शिल्पी नेत्र बनाए—यह भी लिखा है
४. नेत्रोन्मीलन के समय मूर्त्ति के पास आचार्य के अतिरिक्त दूसरा कोई व्यक्ति नहीं रहे अथवा किसी वस्त्र से परदा कर दे, कोई देखे नहीं ।

⊙ नेत्रों के मध्य में शहद-घी से पुतली बना दे (टिप्पणी भी देखें)

।। ओम् सौम्य रूपस्य सिद्ध्यर्थं मक्ति यक्ष्म पुट द्वयम् । ऊर्ध्वाधस्तु पृथग्भूतं कल्पयामि सुखाप्तये ।।

⊙ मूर्त्तियों के समीप खीर तथा अन्य नैवेद्य वस्तु रख दे ⊙ १. शीशा (मुख देखने के लिए) मूर्त्तियों के पास रख दे

⊙ मूर्त्तियों पर जल छिड़क दे ।। मन्त्र पढ़े—

।। ओम् पुष्करादि समीचीनैस्तीर्थस्थै र्वारिभिः । मार्जयामि देवदेवेशं सदा ह्यमर वल्लभम् ।।

⊙ कुछ लोग आठ दीप जला कर रखते हैं और निम्न मन्त्र पढ़ते है—

।। ओम् अष्टौ दीपान् प्रदास्यामि पायस भक्ष्यमुत्तमम् । भोज्यं सुन्दरमादर्शम् दर्शयामि सुखाप्तये ।।

टिप्पणी— १. शिवलिंग में पुतली बनाने का एक अन्य मन्त्र यह है—

।। ओम् लिंगस्य प्रतिमायाश्च सुष्ठुतेजोऽभिवृद्धये । चक्षुर्द्वयस्य निर्माणम् करोमि स्वात्म सिद्धये ।।

२. विष्णु में — ओम् नमो भगवते विष्णवे लक्ष्मीप्रियाय ऋद्धि सिद्धि प्रियाय च हिरण्य रेतसे पराय परमात्मने विश्वरूपाय ते नमः ।।

३. देवी में— ओम् नमो भगवत्यै देव्यै दुर्गायै हिरण्य रेतस्यै परमात्मायै विश्वरूपिण्यै ते नमः ।।

४. राधाकृष्ण में— ओम् नमो भगवते श्री कृष्णाय हिरण्यरेतसे पराय परमात्मने विश्वरूपाय राधा प्रियाय ते नमः ।।
ओम् नमो भगवत्यै राधायै हिरण्यरेतस्यै परायै परमात्मायै विश्वरूपायै कृष्ण प्रियायै ते नमः ।।

—इस तरह श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, हनुमान, गणेश, सूर्य, सीता, पार्वती आदि में योजना कर ले

⊙ उसके बाद गोदान करे—

॥ अद्य कृतस्य नेत्रोन्मीलनकर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् तथा च देवानां सौम्यदृष्टि सिद्ध्यर्थमिदं गोनिष्क्रय भूतं द्रव्यमाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

⊙ अन्य ब्राह्मणों को भी दक्षिणा दे ⊙ शिल्पी को द्रव्य दे

⊙ इस द्वितीय वेदी के सामने ११ कलश रखे
[ये कलश दक्षिण से उत्तर के क्रम से एक पंक्ति में रखे]

⊙ इन ११ कलशों में क्रमशः (दक्षिण की ओर से प्रारम्भ कर उत्तरोत्तर)

१—सप्तमृत्तिका २—पंचवृक्ष छाल जल ३—गोमूत्र ४—गोबर
५—भस्म ६—चंदन मिश्रित जल शेष—५ में गुलाब जल=भर दे

⊙ कलशों में रक्षा सूत्र (कलावा) बांध दे ⊙ पंच पल्लव छोड़ दे

⊙ फूल लेकर कलश स्थापन करे ॥ मन्त्र पढ़े—

॥ ओम् आजिघ्र कलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दवः । पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद् रयिः ॥

⊙ फूल कलशों पर छोड़ दे

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

॥ अद्य आसु मूर्त्तिषु शिल्पि शस्त्र दोष निवृत्यर्थम् एकादश कलशोदकेन देवान् स्नापयामि ॥

⊙ हाथ का जल सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ मूर्त्तियों में घी-शहद मिला कर लगा दे ॥ मन्त्र पढ़े—

॥ ओम् इमं मे वरूण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वा मवस्युरा चके ॥

⊙ क्रमशः ११ कलशों के जल से स्नान कराए ॥ क्रमशः मन्त्र पढ़े—

॥ १ ॥ मृत्तिका कलश—

॥ ओम् अग्नि मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति ॥

॥ २ ॥ वृक्ष छाल जल कलश—

॥ ओम् यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे । प्र प्रवय ममृतं जातवेदसं प्रियमित्रं नश ꣳ सिषम् ॥

॥ ३ ॥ गोमूत्र कलश—

॥ ओम् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो योनः प्रचोदयात् ॥

॥ ४ ॥ गोबर कलश से—

॥ ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षाम् नित्य पुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ॥

॥ ५ ॥ भस्म कलश से—

॥ ओम् प्रसद्य भस्मना योनि मपश्च पृथिवी मग्ने ।
स ऽ सृज्य मातृ मिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनराऽसदः ॥

॥ ६ ॥ गन्धोदक कलश से—

॥ ओम् गन्ध द्वारां दुराधर्षाम् नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ॥

⊙ शेष पांच कलशों के जल से क्रमशः स्नान कराए ॥ ५ मन्त्र इस प्रकार है—

१. ओम् नमः शम्भवाय मयोभवाय च नमः ।
शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

२. ओम् ह ऽ सः शुचिषद् वसुरन्तरिक्ष सद्धोतावेदिषद तिथिर्दुरोणसत् ।
नृषद्वर सदृतसद्व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥

३. याते रुद्र शिवा तनूर घोरा पाप काशिनी । तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाक शीहि ॥

४. विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥

५. ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः ।।

⊙ स्नान कर शुद्ध वस्त्र से मूर्त्तियों को पोछ दे

⊙ मूर्त्तियों पर दूर्वा—अक्षत-फूल चढ़ा दे ।। मन्त्र पढ़े—

।। ओम् शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वारुहः ।
अधाशत क्रत्वो यूय मिमम्मे अगदङ्कृत ।।

⊙ मूर्त्तियों पर कपड़ा छोड़ कर ढंक दे

⊙ चांदी की कटोरी, सोने की सलाई तथा सुवर्ण और गौदान करे

।। अद्य इदं सहिरण्यं गोनिष्क्रय द्रव्यम् आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

⊙ अन्य ब्राह्मणों को दक्षिणा दे

टिप्पणी— ⊙ चांदी की कटोरी, सोने की सलाई मूर्त्तिकार शिल्पी को देना चाहिए उसके अभाव में आचार्य को दे

⊙ एक वेदी से दूसरी वेदी पर लाने के समय शंख भेरी आदि बाजा बजाना चाहिए तथा सुहासिनी स्त्रियां मंगलगान करती रहें ।।

⊙ फूल लेकर मूर्त्तियों की प्रार्थना करे—

॥ ओम् उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वे महे ।
उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा ॥

॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश जगदाधार विग्रह । करिष्यमाणां पूजां मे गृहाणानुग्रहं कुरू ॥

⊙ फूल मूर्त्तियों पर छोड़ दे । ⊙ मूर्त्तियों पर से कपड़ा हटा दे

⊙ मूर्त्तियों को द्वितीय वेदी से उठा कर तीसरी वेदी पर लाया जाय ॥ मन्त्र पढ़े—

ओम् भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

ओम् आगच्छ वरदो देवो मम भक्तिः स्थिरा सदा ।
स्नानार्थम् स्थापयामीह भद्रपीठे सुशोभने ॥

॥ इति द्वितीय वेदी स्नान ॥

॥ तीसरी वेदी ॥

⊙ तीसरी वेदी (उत्तर वाली वेदी) पर मूर्त्तियों को स्थापित करे

⊙ वेदी के पास चारो ओर ८ कलश रखे

[४ कलश चारो कोने तथा ४ कलश चारो ओर [पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण की ओर रखे]

⊙ इन आठों कलशों में रक्षा-सूत्र (कलावा) बांध दे

⊙ आठों कलशों में थोड़ा-थोड़ा जल भर दे ⊙ पंच पल्लव छोड़ दे

[इन कलशों को समुद्र संज्ञक कलश कहते हैं]

⊙ इन आठ कलशों में जल-पल्लव के अतिरिक्त क्रमशः निम्न वस्तु भी रखे

[क्रमशः १-१ कलश में १-१ वस्तु रखे]

१. पूर्व कलश में — क्षारोदक	२. अग्निकोण कलश में — दूध
३ दक्षिण कलश में — दही	४. नैर्ऋत्य कोण कलश में — घी
५. पश्चिम कलश में — ईख का रस	६. वायव्यकोण कलश में — सुरोदक
७. उत्तर दिशा कलश में — स्वादूदक	८. ईशानकोण कलश में — नारियल जल

⊙ इन आठ कलशों के अलावा ६२ कलश निम्न प्रकार से रखे :—

⊙ वेदी के पश्चिम ये कलश रखे जायेंगे ⊙ रखने का क्रम—

१. पहली पंक्ति में — ५ कलश	२. दूसरी पंक्ति में — २० कलश
३. तीसरी पंक्ति में — २ कलश	४. चौथी पंक्ति में — ६ कलश
५. पांचवी पंक्ति में — १४ कलश	६. छठी पंक्ति में — १० कलश
७. सातवी पंक्ति में — ४ कलश	⊙ —इसी छठी पंक्ति में—१ अतिरिक्त कलश [१० कलशो से ४ अंगुल की दूरी पर]

⊙ [इन ६२ कलशों को दक्षिण से उत्तरोत्तर के क्रम में रखना चाहिए]

⊙ [मूर्त्तियों को इसी क्रम से स्नान कराया जायगा]

⊙ इन सभी ६२ कलशों में रक्षासूत्र (कलावा) बांध दे ⊙ सब में पंच पल्लव तथा थोड़ा-थोड़ा जल भर दे

⊙ क्षारोदक—समुद्र जल या खारे कुआं का जल लेना चाहिए

⊙ सुरोदक—ईख के रस में अदरक छोड़ दे—यही सुरोदक है

⊙ गर्भोदक से नारिकेल (नारियल) का जल लिया जाता है

⊙ स्वादूदक—का अर्थ स्वादिष्ट जल है अर्थात् सुन्दर पीने योग्य जल। गुलाब जल केवड़ा जल आदि ले सकते हैं।

⊙ पंच पल्लव तथा जल के अतिरिक्त इन ९२ कलशों में निम्न वस्तुएँ निम्न प्रकार से रखे—

१ प्रथम पंक्ति — १. पहली पंक्ति के— ५ कलशों में— शुद्ध जल

२ दूसरी पंक्ति— १. दूसरी पंक्ति के— २० कलशों में— क्रमशः—

१. पहले में—	८ पल सप्तमृत्तिका	२. दूसरे में—	जल
३. तीसरे में—	७ पल गोबर	४. चौथे में—	जल
५. पांचवे में—	१२ पंल गोमूत्र	६. छठे में—	जल
७. सातवे में—	१ मुट्ठी भस्म	८. आठवे में—	जल
९. नवे में—	३ पल पंचगव्य	१०. दसवे में—	जल
११. ग्यारहवे में—	१६ पल दूध	१२. बारहवे में—	जल
१३. तेरहवे में—	२० पल दही	१४. चौदहवे में—	जल
१५. पन्द्रहवे में—	७ पल घी	१६. सोलहवे में—	जल
१७. सत्रहवे में—	३ पल शहद	१८. अठारहवे में—	जल
१९. उन्नीसवे में—	३ पल शक्कर	२०. बीसवे में—	जल

टिप्पणी— ४ तोला का एक पल होता है

तीसरी पंक्ति के— २ कलशो में शुद्ध जल

चौथी पंक्ति के— ६ कलशों में—पहले १ में पंचामृत, शेष ५ में शुद्ध जल

पांचवी पंक्ति के— १४ कलशों में क्रमशः—

१. पहले में—	गन्ध मिश्रित जल	२. दूसरे में—	पंचवृक्ष छाल जल
३. तीसरे में—	सर्वौषधि या सतावर	४. चौथे में—	सफेद फूल
५. पांचवे में—	शान्ति उदक	६. छठे में—	अष्टफल जल
७. सातवे में—	सुवर्ण जल	८. आठवे में—	गौशृंगोदक
९. नवे में—	सप्तधान्य जल	१०. दसवे में—	सहस्त्रछिद्र कलश
११. ग्यारहवे में—	दिव्यौषधि या दूर्वा जल	१२. बारहवे में—	पंचपल्लव जल
१३. तेरहवे में—	रत्न जल	१४. चौदहवे में—	तीर्थोदक

छठी पंक्ति में— १० कलश—इनमें क्रमशः निम्न पेड़ की पत्तियां तथा शुद्ध जल डाल दे—

१. कदम्ब	२. सेमर	३. जामुन	४. अशोक	५. पाकड़
६. आम	७. बेल	८. बरगद	९. पान	१०. पलाश (छिउल)

⊙ छठी पंक्ति के १ अतिरिक्त कलश में शुद्ध जल

सातवी पंक्ति में— ४ कलश—शुद्ध जल भरे

टिप्पणी—१, काशी के पद्धतिकारों ने पांचवी पंक्ति में दसवां कलश सहस्त्रछिद्र कलश रखने को लिखा है उसके सहायक स्वरूप १ कलश अतिरिक्त रखने की प्रक्रिया लिखी है

⊙ कलशों के समीप—सुन्दर श्वेतवस्त्र, सुगन्धित तैल, जवा का आटा, गेहूँ का आटा, चावल का आटा, मसूर का आटा, तथा जटामांसी चूर्ण, वेल का चूर्ण, आवला का चूर्ण रखे

⊙ एक पात्र में—यक्षकर्दम बनाकर रखे—

[यक्षकर्दम बनाने की विधि—१ भाग कपूर, २ भाग करस्तूरी; २ भाग कुंकुम, ३ भाग घिसा हुआ चन्दन=एक में ही सब मिलाकर लेप तैयार करे—इसे यक्षकर्दम कहते हैं]

टिप्पणी— ⊙ शान्ति उदक के लिए गंगाजल अथवा मंडप में स्थित कलशों से जल निकाल ले। अग्नि पुराण में शान्ति मन्त्र से १०० बार अभिमन्त्रित जल को शान्ति उदक लिखा है तथा सहस्रछिद्र कलश जल के लिए समुद्र जल=रख ले। कहीं-कहीं मुक्ता (सीपी) जल रखते हैं।

⊙ सुवर्ण, गोश्रृंग, रत्न, फल, धान्य को धोकर उसी जल को कलश में छोड़ देना चाहिए

⊙ पं० वायुनन्दन मिश्र की प्रतिष्ठा महोदधि में ६२ कलश नहीं ५५ कलश ही रखने की विधि इस प्रकार दी गयी है— १. वेदी के चारो ओर ८, २. वेदी के पश्चिम दिक्कलश ५ (मिट्टी, गोबर, गोमूत्र, भस्म, पंचगव्य भर कर) ३. इसके पश्चिम ५ कलशों में क्रमशः दूध-दही-घी-शहद-शक्कर भर कर रखे, ४. इसके पश्चिम १० कलशों में शुद्ध जल, ५. इसके पश्चिम ३५ कलशों में—५ में पंचामृत, ५ में शुद्धजल, ५ में वृक्षकषाय, १० में क्रमशः १. फूल, २. फल, ३. सोना, ४. गोश्रृंगोदक, ५. सप्तधान्य, ६. सहस्त्रछिद्रकलश, ७. सर्वोषधि ८. पंचपल्लव ९. दूर्वा १०. नवरत्न तथा १० में शुद्ध जल=भर कर रखे

⊙ अक्षत पुष्प लेकर कलशों की स्थापना करे—

।। ओम् अजिघ्रकलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दवः । पुनरुर्जा निवर्तस्वसानः सहस्त्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद् रयिः ।।

।। कलशे वरुणादि देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।।

⊙ अक्षत-पुष्प सभी कलशों पर छोड़ दे

।। कलश स्नान ।।

⊙ पहली पंक्ति के पहले कलश का जल मूर्त्तियों पर छिड़के ।। मन्त्र पढ़े—

।। ओम् समुद्राय त्वा वाताय त्वा सरिराय त्वा वाताय स्वाहा । अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा । प्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा । अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहा ऽशिमिदाय त्वा वाताय स्वाहा ।।

।। ओम् गंगादि सलिलैर्दिव्यैस्तीर्थोदकसमन्वितैः । स्नापयामि देवेशं तं महाशान्तिकरंपरम् ।।

टिप्पणी— ⊙ कलश जल से स्नान कराने की प्रक्रिया लिखी है, अतः कलश जल से स्नान कराये अथवा कुश आदि से मूर्त्तियों पर कलश जल छिड़के

⊙ मूर्त्तियों पर दूब-अक्षत-फूल-चन्दन चढ़ा कर प्रार्थना करे—

।। नमस्तेऽर्चे सुरेशान् प्रकृते विश्वकर्मणः । प्रभाविता शेष जगद्धात्रे [जगद्धात्रि] इह तुभ्यं नमो नमः ।।
त्वयि सम्पूजयामीशं [सदाशिव] [नारायण] मनामयम् । रहिता शेष दोषैस्त्वमृद्धियुक्ता सदाभव ।।
सर्वसत्त्व मयं शान्तं परं ब्रह्म सनातनम् । त्वमेवालं करिष्यामि त्वं वन्द्यो भवते नमः ।।

⊙ मूर्त्तियों के हाथ में बांधा लाल सूत्र खोल दे ⊙ तथा एक बीता नाप कर दूसरा ऊर्ण सूत्र मूर्त्तियों के दाहिने हाथ में बांध दे [देवी की मूर्त्ति हो तो बांये हाथ में बांधे—प्रतिष्ठाभास्कर में लिखा है]

⊙ इसके बाद पहली पंक्ति के शेष ४ कलश जल से क्रमशः १-१ से स्नान कराये ।। मन्त्र पढ़े—

।। १ ।। ओम् इदमापः प्रवहता वद्यं च मलं चयत् । यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरूणम् ।
आपो मा तस्मा देनसः पवमानश्चमुंचतु ।।
देव देव परं शान्तं विश्वस्या घोघनाशनम् । शुद्ध वारिस्थ कुम्भेन स्नापयामि शुभाप्तये ।।

।। २ ।। ओम् आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत भस्मै तत्स्योने कृणुध्व ७ सुरभा इलोके ।
तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं विभृताप्स्वेनत् ।।
अनेन वारिणा युष्मान् सालङ्कृत विभूषितान् । स्नापयामि देवांस्तान् सुर गणादि सुशोभितान् ।।

॥ ३ ॥ ओम् इमं मे वरुणश्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥
गंगा सरस्वतीचैव यमुनादि नदीस्तथा । ताभिरद्भिः स्नापयामि त्वं सर्वसौन्दर्यं लब्धये ॥

॥ ४ ॥ ओम् तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ स मान आयुः प्रमोषीः ॥
पवित्रवारिभिः शुद्धैश्शीतलैः सुमनोहरैः । एवं भूतैर्जलैर्देवं स्नापयामि सुरार्चितम् ॥

⊙ इसके बाद—द्वितीय पंक्ति में रखे २० कलशों के जल से (क्रमशः १-१ कलश-जल से) स्नान कराये

१. सप्तमृत्तिका कलश से— ओम् अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ।
अपा ँ रेता ँ सिजिन्वति ॥

२. शुद्ध जल कलश से— ओम् देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥

३. गोबर कलश से— ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

४. शुद्ध जल कलश से— ओम् वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्यऋत ।
सदन्यसि वरुणस्यऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदन मासीद ॥

५. गोमूत्र कलश से — ओम् तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

६. शुद्ध जल कलश से— ओम् आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ।।

७. भस्मोदक कलश से— ओम् प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवी मग्ने ।
स ७ँ सृज्य मातृ भिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः ।।

८. शुद्धोदक कलश से— ओम् शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयो रभि स्रवन्तु नः ।।

९. पंचगव्य कलश से— ओम् पयः पृथिव्याम् पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे ।
पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।।

१०. शुद्धोदक कलश से— ओम् योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः । उशती रिव मातरः ।।

११. क्षीरोदक कलश से— ओम् आप्या यस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे ।।

१२. शुद्धोदक कलश से— ओम् तस्मा अरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपोजन यथा च नः ।।

टिप्पणी —पं० वायुनन्दन मिश्र के प्रतिष्ठा महोदधि में क्रमांक १० शुद्धोदक कलश जल के लिए निम्न मन्त्र लिखा है —

ओम् देवी रापो अपान्नपाद्यो व ऊर्म्मिर्हंविष्य इन्द्रियावान् मदिन्तमः ।
तं देवेभ्यो देवत्रावत्त शुक्रपेभ्यो येषां भागस्त्थ स्वाहा ।।

१३. दधि कलश से— ओम् दधि क्राव्णो अकारिषन् जिष्णों रश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिनो मुखाकरत् प्रण आयु ७ षितारिषत् ॥

१४. शुद्धोदक कलश से— ओम् युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्वाय सविता धियः ।
अग्नेर् ज्योति निचाय पृथिव्या अध्या भरत् ॥

१५. घृतोदक कलश से— ओम् घृतवती भुवनानामभि श्रियोर्वी पृथ्वी मधु वुधे सुपेशसा ।
घावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥

१६. शुद्धोदक कलश से— ओम् देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्वाहुभ्याम् । पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥

१७. मधु कलश जल से— ओम् मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः ।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव ७ रजः मधु द्यौरस्तु नः
पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

१८. शुद्ध जल कलश से— ओम् आपो अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नों घृतप्वः पुनन्तु ।
विश्व ७ हिरिप्रं प्रवहन्ति देवी रुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि ॥

१९. शर्करा कलश से— ओम् अपा ७ रसमुद्वय स ७ सूर्ये सन्त ७ समाहितम् ।
अपा ७ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाभ्युत्तम मुपयाम ॥
गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्ये षते योनि रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

२०. शुद्धोदक कलश से— ओम् शुद्ध वालः सर्व शुद्ध वालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्ष्योरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥

⊙ शुद्ध वस्त्र से मूर्त्तियों का जल पोंछ दे ⊙ सुगन्धित तेल लगा दे—

॥ ओम् यज्ञायज्ञावो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे ।
प्र प्रवय ममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न श ऽ शिषम् ॥

⊙ मूर्ति के समक्ष रखे गए यव-शालि-गेहूँ-मसूर-आँवला चूर्ण— मिला कर मूर्त्तियों में लगा दे—

॥ ओम् द्रुपदा दिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव ।
पूतं पवित्रेणे वाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥

टिप्पणी— १. कलश नम्बर १९ शर्करा स्नान के लिए —गौड़ पद्धति में निम्न मन्त्र दिया है—

॥ ओम् आयंगौ पृश्नि रक्रमीद सदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥

२. कलश नम्बर २० शुद्धोदक स्नान के लिए गौड़ीय पद्धति में निम्न मन्त्र दिया है—

॥ ओम् आपो हयद् बृहती विश्व मायन् गर्भं दधाना जनयन्ती रग्निम् ।
ततो देवाना ऽ समवर्तता सुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

११ ३. पं० वासुनन्दन को उक्त पुस्तक में कलशोदकों के स्नान के बाद पुनः दूध-दही-घी-शहद-शर्करा-पंचकषाय — कलशों से तथा प्रत्येक कलश स्नान के बाद शुद्ध कलश जल स [illegible] है

⊙ जटामांसी चूर्ण तथा यक्ष कर्दम (कस्तूरी-कुंकुम-कपूर-चंदन — को मिला कर रखा है) मूर्तियों में लगा दे—

॥ ओम् या ते रूद्र शिवा तनूर घोरा पाप काशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥

॥ ओम् अ ꣳ शुना ते अ ꣳ शुः पृच्यतां परूषापरूः । गन्धस्ते सोम भवतु मदाय रसो अच्युतः ॥

॥ तृतीय पंक्ति कलश ॥

⊙ तृतीय (तीसरी) पंक्ति में रखे दो कलशों के जल से क्रमशः स्नान करा दे—

॥ १ ॥ ओम् मानस्तोके तनये मान आयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषु रीरिषः ।
मानो वीरान् रुद्र भामिनो वधी र्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ॥

॥ २ ॥ ओम् प्रतद् विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
यस्योरूषु त्रिषु विक्रमणे ष्वधि क्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥

॥ चतुर्थ पंक्ति कलश ॥

⊙ चतुर्थ पंक्ति में रखे ६ कलशों से क्रमशः १-१ से स्नान करायें—

[प्रथम कलश में पंचामृत है शेष ५ में शुद्ध जल]

⊙ प्रथम कलश पंचामृत से—

।। १ ।। ओम् आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे ।।

२. कलश शुद्ध जल—

।। ओम् उरू ऽ हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्था मन्वे तवा उ ।
अपदे पादा प्रतिधातवे ऽ करूताप वक्ता हृदया विधश्चित् ।।

३. कलश शुद्ध जल—

।। ओम् सन्ते पया ऽ सि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभि मातिषाहः ।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिविश्रवा ऽ स्युत्तमानि धिष्व ।।

४. कलश शुद्ध जल—

।। ओम् आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिर ऽ शुभिः । भवानः सप्रथस्तमः सखवृधे ।।

५. कलश शुद्ध जल—

।। ओम् अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधी रनु रुध्य से । गर्भे संजाय से पुनः ।।

६. कलश शुद्ध जल—

।। ओम् अपा ऽ रसमुद्वय स ऽ सूर्ये सन्त ऽ समाहितम् । अपा ऽ रसस्य यो रसस्तं वो
गृहृणाम्युत्तम मुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृहृणाम्येष ते योनि रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।।

॥ पंचम पंक्ति कलश स्नान ॥

⊙ पञ्चम पंक्ति में रखे हुए १४ कलशों से (क्रमशः १-१ से) स्नान करायें—

१. गन्धोदक से— ॥ ओम् गन्ध द्वारां दुराधर्षाम् नित्य पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ॥

२. वृक्ष छाल जल से— ॥ ओम् यज्ञा यज्ञा यो अग्नये गिरा गिरा च दक्ष से ।
प्र प्रवय ममृतञ् जात वेदस प्रियम् मित्रन् श ͨ सिषम् ॥

३. औषधि जल से— ॥ ओम् या ओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रि युगं पुरा ।
मनैनु बभ्रूणा मह ͨ शतं धामानि सप्त च ॥

४. पुष्पोदक कलश— ॥ ओम् ओषधीः प्रतिमो दध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा इव सजित्व रीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥

५. शान्ति जल कलश— ॥ ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ͨ शान्तिः पृथिवी शान्ति ।
रापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्ति ॥
विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ͨ शान्तिः ।
शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥

६. फलोदक कलश— ।। ओम् या फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पति प्रसूता स्तानो मुञ्चन्त्व ऍ ह सः ।।

७. सुवर्ण जल कलश — ।। ओम् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

८. गौश्रृंगोदक कलश— ।। ओम् हविष्मती रिमा आपो हविष्मां आ विवासति ।
हविष्मान्देवो अदध्वरोह विष्मां अस्तु सूर्यः ।।

९. सप्तधान्य जल कलश— ।। ओम् धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनु
प्रसिति मायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णा त्वच्छिद्रेण पाणिना
चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोसि ।।

१०. सहस्त्रछिद्र कलश— ।। ओम् सहस्राणि सहस्रशो वाह् वोस्तव हेतयः ।
तासा मीशानो भगवः पराचीना मुखाकृधि ।।

११. दूर्वा कलश— ।। ओम् काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि ।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।।

१२. पंचपल्लव कलश— ।। ओम् अश्वत्थे वो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता ।
गोभाज इत्किला सथ यत् सनवथ पूरुषम् ।।

१३. रत्नोदक कलश— ।। ओम् अष्टौ व्यख्यत् ककुभः पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून् ।
हिरण्याक्षः सविता देव आगाद् दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि ।।

१४. तीर्थोदक कलश— ।। ओम् ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ताः निषङ्गिणः ।
तेषा ७ सहस्र योजने व धन्वानि तन्मसि ।।

।। वेदी परितः कलशों से स्नान ।।

⊙ वेदी के चारों ओर रखे आठ [समुद्रसंज्ञक] कलशों से क्रमशः स्नान कराए—

१. क्षारोदक कलश— ।। ओम् कयानश्चित्र आभुव वूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ।।

२. क्षीर कलश— ।। ओम् आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य सङ्गथे ।।

३. दधि कलश — ।। ओम् दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णो रश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिनो मुखा करत प्रण आयु ७ षितारिषत् ।।

४. घृत कलश — ।। ओम् घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम् वस्य धाम ।
अनुष्व धमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ।।

५. ईखरस कलश— ।। ओम् अपा ७ रसमुद्वय स ७ सूर्ये सन्त ७ समाहितम् अपा ७ रसस्य यो रसस्तं वो गृह् णाम्युत्तम मुपयाम गृहीतो ऽ सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह् णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।।

६. सुरोदक कलश— ।। ओम् देवं बर्हिः सरस्वती सुदेवमिन्द्रे अश्विना ।
तेजो न चक्षु रक्ष्योर्वर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसु वने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ।।

७. स्वादूक कलश — ।। ओम् स्वादिष्ठ यामदिष्ठ यापवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतः ।।

८. नारिकेल जल— ।। ओम् सरस्वती योन्यां गर्भमन्त रश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्त्ति ।
अपा ७ रसेन वरुणो न साम्नेन्द्र ७ श्रियै जनयन्नप्सु- राजा ।।

६. ⊙ छठी पंक्ति में रखे वृक्ष पल्लव वाले १० कलशों से क्रमशः स्नान कराएं—

१. कदम्ब पल्लव कलश — ।। ओम् त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ७ हवे हवे सुहव ७ शूरमिन्द्रम् ।
हृवयामि शक्रं पुरूहूत मिन्द्र ७ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ।।

२. शाल्मली पल्लव कलश — ।। ओम् त्वं नो अग्ने तव देव पायुभि र्मघोनो रक्षतन्वश्च वन्द्य ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ७ रक्षमाण स्तव व्रते ।।

३. जामुन पल्लव कलश — ।। ओम् यमाय त्वाङ्‌गिरस्वते स्वाहा । स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे ।।

टिप्पणी— ⊙ सुरोदक के लिए ईख के रस में गुड़-अदरक मिला ले

⊙ पं० वायुमन्दन मिश्र ने जहां गूलर पल्लव कलश लिखा है वहीं पर पं० दौलतराम गौड़ ने आम्रपल्लव कलश लिखा है।

४. अशोक पल्लव कलश — ।। ओम् असुन्वन्तम यजमान मिच्छ स्तेन स्येत्या मन्विहि तस्करस्य ।
अन्य मस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्य मस्तु ।।

५. पाकर पल्लव कलश — ।। ओम् तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरूश ७ समान आयुः प्रमोषीः ।।

६. गूलर पल्लव कलश — ।। ओम् वायो ये ते सहस्त्रिणे रथासस्तेभिरा गहि । नियुत्वान् त् सोमपीतये ।।

७. बरगद पल्लव कलश — ।। ओम् वय ७ सोमव्रते तव मनस् तनू षु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ।।

८. बेलपत्र कलश — ।। ओम् तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्व मव से हूमहे वयम् ।
पूषानो यथा वेदसा मसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।।

९. नाग पलल्व कलश — ।। ओम् नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनुः ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

१०. पलाश पल्लव कलश — ।। ओम् ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचोवेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः ।।

।। सप्तम पंक्ति के चार कलशों से क्रमशः स्नान करा दे ।।

चारो कलशों का यही एक मन्त्र है—

।। ओम् आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीता स उद्भिदः ।
देवानो यथासद मिद् वृधे असन्न प्रायुवो रक्षि तारो दिवे-दिवे ।।

⊙ मूर्तियों के पास रखे गए महीन श्वेत वस्त्र से मूर्तियों को पोंछ कर साफ कर दें
⊙ विष्णु मूर्ति हो तो पुरुष सूक्त से ⊙ शिव लिंग हो तो रुद्र सूक्त से
= शुद्ध जल या तीर्थ जल से पुनः स्नान कराए
⊙ निम्न मन्त्र से कोई भी मूर्ति हो गंगा जल अथवा किसी पवित्र नदी के जल से स्नान करा दे—

॥ ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हव मद्या च मृडय । त्वा म वस्यु रा च के ॥

⊙ फिर सुन्दर सुवाहित सफेद वस्त्र से मूर्त्तियों का जल पोंछ दे

॥ सकली करण करे ॥

⊙ मूर्त्तियों के आगे षडङ्ग न्यास करे—इसे ही सकलीकरण कहते हैं ⊙ षडंगन्यास विधि :—

१. हृदय स्पर्श करे ॥ ओम् हृदयाय नमः ॥ २. शिर स्पर्श करे ॥ ओम् नं शिरसे स्वाहा ॥
३. शिखा स्पर्श करे ॥ ओम् शिखायै विषट् ॥ ४. दोनों बाहु स्पर्श करे ॥ ओम् खं कवचाय हुम् ॥

टिप्पणी— ⊙ पुरुषसूक्त तथा रुद्रसूक्त परिशिष्ट में देखें।
⊙ कुछ लोग षडंग न्यास मन्त्र पढ़ने के पहले विनियोग पढ़कर जल छोड़ते हैं, अतः यहां सुविधा के लिए विनियोग लिख रहा हूँ।
॥ ओम् विश्वत चक्षुरितिमंत्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुप छन्दः षडंग न्यासे विनियोगः ॥

⊙ दोनों नेत्र स्पर्श करे ।। ओम् व्रां नेत्रत्रयाय वौषट् ।।

⊙ दाहिना हाथ सिर पर से घुमाकर दोनों हाथ से ताली बजा दे ।। ओम् यं अस्त्राय फट् ।।

⊙ षडंग न्यास का मंत्र—

।। ओम् विश्वतश्चक्षुरूत विश्वतो बाहुरूत विश्व ·तस्पात् ।
सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः ।।

देवाः सर्वे समायान्तु ह्येकत्र शुद्ध पीठके ।
सायुधाः सगणश्चैव व्यापकास् सुशक्तिकाः ।।

⊙ फूल लेकर देव आवाहन करे—

।। ओम् एहि-एहि भगवन्देव लोकानुग्रह काम्यया ।
यज्ञभागं गृहाणेमं स्थाप्य देवनमोऽस्तुते ।। (टिप्पणी भी देखे)

।। ओम् [अमुक] देवाय नमः । देव मावाहयामि ।

टिप्पणी— १. शिवलिंग में— एह्येहि भगवञ्छम्भो लोकानुग्रहकारक । यज्ञभागं गृहाणेमं महेश्वर नमोऽस्तुते ।।
२. विष्णु में— एह्येहि भगवन् विष्णो लोकानुग्रह काम्यया ।
यज्ञभागं गृहाणेमं वासुदेव नमोऽस्तुते ।।
३. देवीमूर्त्ति में— एह्येहि जगतांमातः सर्वकाम प्रदेशुभे । यज्ञभागं गृहाणत्वं जगद्धात्रि नमोऽस्तुते ।।

⊙ फूल देवता के सामने छोड़ दे ⊙ एक पात्र में जल लेकर पाद्य दे

।। ओम् आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यं च ।
हिरण्य येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

अथवा

।। ओम् हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्र जाम् ।
चन्द्रां हिरण्य मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममा वह ।।
।। ओम् [अमुक] देवाय नमः । पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।।

⊙ पात्र का जल मूर्त्ति के सामने गिराये

⊙ फिर एक पात्र में जल गन्ध-फूल लेकर अर्घ्य दे

।। ओम् हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम् ।।
।। ओम् [अमुक] देवाय नमः । हस्तयोरर्घ्यम् समर्पयामि ।।

⊙ मूर्त्ति के सामने पात्र का जल आदि गिरा दे

⊙ एक पात्र में जल लेकर आचमन दे

।। ओम् विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद् यज्ञपता वहिर्हृ तम् ।
वातजूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति ।।
।। ओम [अमुक] देवाय नमः । आचमनीयं जलं समर्पयामि ।।

⊙ पात्र का जल मूर्ति के सामने चढ़ा दे

⊙ एक पात्र में पंचामृत लेकर स्नान के लिए मूर्त्ति के सामने रखे

॥ ओम् पञ्चनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती नु पञ्चधा सो देशेऽभवत् सरित् ॥

॥ ओम् [अमुक] देवाय नमः । स्नानार्थं पंचामृतं समर्पयामि ॥

⊙ एक पात्र में शुद्ध जल स्नान के लिए दे

॥ ओम् शुद्ध वालः सर्व शुद्ध वालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते ।
रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः ॥

॥ ओम [अमुक] देवाय नमः । स्नानार्थे शुद्धोदकं समर्पयामि ॥

⊙ मूर्त्तियों में चन्दन लगा दे

॥ ओम् गन्ध द्वारां दुराधर्षाम् नित्य पुष्टां करीषणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ॥

॥ ओम् [अमुक] देवाय नमः । गन्धं समर्पयामि ॥

⊙ मूर्त्तियों पर यज्ञोपवीत चढ़ाए

टिप्पणी—शिवलिंग हो तो—'त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्—इस मन्त्र से चन्दन लगाए ।

।। ओम् वेदाह मेतं पुरुषं महान्त मादित्यवर्णम् तपसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यते यनाय ।।

⊙ दो बार जल छोड़ दे

।। ओम् अमुक देवाय नमः । यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।। यज्ञोपवीतान्ते जलं समर्पयामि ।।

⊙ मूर्त्तियों पर रेशमी वस्त्र चढ़ाए

।। ओम् युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः ।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसः देवयन्तः ।।

⊙ मूर्त्तियों पर रेशमी दुपट्टा (उपवस्त्र) चढ़ा दे

।। ओम् सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथ मासदत्स्वः । वासो अग्ने विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो ।।

⊙ दो बार जल छोड़ दे

।। ओम् [अमुक] देवाय नमः । वस्त्रं उपवस्त्रं समर्पयामि । वस्त्रन्ते जलं समर्पयामि ।।

⊙ मूर्त्तियों पर माला फूल चढ़ा दे

ओम् ओषधीः प्रति मोवध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः । अश्वा इव सजित्वरी र्वीरुधः पार यिष्णवः ।।
।। ओम् [अमुक] देवाय नमः । पुष्पं समर्पयामि ।।

टिप्पणी— ⊙ शिवलिंग हो तो अक्षत-बेलपत्र भी चढ़ाना चाहिए ।
⊙ कुछ पद्धतिकार हस्त मुद्रा दिखाकर गन्धादि चढ़ाने को लिखा है ।

⊙ नैवेद्य मूर्त्तियों के सामने रखकर धूप करे

ओम् ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः । ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां ऽ शूद्रो अजायत ।।

⊙ दीप जलाकर आरती करे

।। ओम् चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि । रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृह ऽ हरिरेतिकनिक्रदत् ।।

।। ओम् [अमुक] देवायनमः । धूपमाघ्रापयामि ।।

।। ओम् [अमुक] देवाय नमः । दीपं दर्शयामि ।।

⊙ हाथ धोकर सामने रखे नैवेद्य को अर्पित करे

।। ओम् नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ।ऽ शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकां अकल्पयन् ।।

।। ओम् [अमुक] देवाय नमः । नैवेद्यं निवेदयामि ।।

⊙ एक पात्र में जल दे

।। ओम् नैवेद्यान्ते जल माचमनीयं समर्पयामि । मध्ये पानीयं समर्पयामि ।।

⊙ दोनों हाथ की अनामिका अंगुली में चन्दन लगाकर मूर्त्तियों के चरणों में लगा दे

।। ओम् [अमुक] देवाय नमः । करोद्वर्तनम् समर्पयामि । करोद्वर्तनार्थे गन्धानुलेपनं समर्पयामि ।।

⊙ पान सुपारी चढ़ा दे

।। ओम् यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत । वसन्तो स्यासी दाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ।।

।। ओम् [अमुक] देवाय नमः । ताम्बूल पत्रं-पूगीफलं समर्पयामि ।।

⊙ दक्षिणा चढ़ा दे

।। ओम् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

।। ओम् [अमुक] देवाय नमः । दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि ।।

⊙ कपूर की आरती करे [अग्नि पुराण के अनुसार ६८ दीपों से यह आरती (नीराजन) करनी चाहिए ।

।। ओम् इद ꣳ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ꣳ सर्वगण ꣳ स्वस्तये ।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोक सन्य भयसनि ।
अग्निः प्रजां बहुलां में करो त्वन्नं पयोरेतो अस्मासु धत्त ।।

।। ओम् [अमुक] देवाय नमः । कर्पूरार्तिक्यं नीराजनं समर्पयामि ।।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे

।। ओम् यज्ञेन यज्ञमय जन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन् ।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।

।। ओम् [अमुक] देवायनमः । मंत्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

⊙ फूल मूर्तियों के सामने छोड़ दे

[कुछ पद्धतिकार यहाँ पर मूर्तियों की प्रदक्षिणा भी लिखते हैं]

[कुछ पद्धतिकार पुरुष सूक्त से विष्णु की तथा रुद्राध्याय से शिव लिंग की स्तुति करने को भी लिखा है]

⊙ इस प्रकार पूजा समाप्त कर स्नान-वस्त्र, नैवेद्य दक्षिणा आदि शिल्पि अथवा आचार्य को दे दे

[कुछ पद्धतिकार यहाँ पर गोदान-आचार्य दक्षिणा देने को भी लिखा है]

।। इति आग्नेय पुराणोक्त देव स्नान विधि ।।

टिप्पणी ⊙ पण्डित वायुनन्दन मिश्र तथा प० दौलतराम गौड़ की पद्धतियों में पूजाविधि समान है, किन्तु मन्त्रों में भेद है जैसे—वस्त्र के लिए एक ने 'युवा सुवासाः' लिखा है, एक ने 'अभिधा' मन्त्र लिखा है अतः पद्धति भेद से मन्त्र में भ्रान्त नहीं होना चाहिए ।

।। रथ-यात्रा ।।

⊙ स्नान के बाद मूर्तियों को सुन्दर वस्त्र-अलंकरण पहना दें

[शिव लिंग हो तो उसमें धोती-अँगोछा लपेट दे]

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

।। ओम् उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस् त्वे महे ।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा ।।

।। ओम् उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश उत्तिष्ठ जगतां पते ।
उत्तिष्ठ सर्वभूतेश त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ।।

⊙ फूल मूर्तियों पर चढ़ा दे

⊙ सभी मूर्तियों को उठाकर रथ पर स्थापित करे ।। मंत्र ।।

।। ओम् रथे तिष्ठन् नयति वाजिनः पुरो यत्र-यत्र कामयते सुखा रथिः ।
अभिशूनाम् मनायत मनः पश्चा वनु यच्छन्ति रश्मयः ।।

।। ओम् चतुश्चक्र युतं दिव्यं देवानां वल्लभं परम् ।
रथ मारुह्य देवेश यात्रां कुरु परमेश्वर ।।

⊙ शंख-भेरी-मृदंग (ढोलक) आदि बाजों को बजाते हुए मङ्गलगीत (कीर्तन) गाते हुये मूर्त्तियों को (रथ के) नगर-ग्राम-मण्डप की परिक्रमा कराए।

⊙ परिक्रमा के बाद रथ को मंडप के पश्चिम द्वार पर ला कर खड़ा करे।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे

॥ ओम् आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

॥ ओम् प्रविशय देव देवेश मंडपं सुमनो हरम्। अलं कुरु प्रयत्नेन ह्यर्चनं च गृहाण मे ॥

⊙ फूल मूर्त्तियों पर चढ़ा दे ⊙ मूर्तियों को रथ से उतार कर पश्चिम द्वार से मण्डप में लाए

⊙ मध्य वेदी के पश्चिम भाग में सुन्दर आसन पीठ पर पश्चिम मुख मूर्त्तियों को रखे

⊙ यजमान मूर्त्तियों के सामने पूर्व मुख बैठ जाय

⊙ यजमान आचमन—प्राणायाम करे ⊙ हाथ में अक्षत-जल लेकर संकल्प करे

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ……गोत्रः……नामाऽहम् अस्मिन् प्रतिष्ठा कर्मणि देवानां मधुपर्केण अर्चयिष्ये ॥

⊙ हाथ का जल-अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ एक कुश लेकर विष्टर दे

॥ ओम् विष्टरो विष्टरो विष्टरो विष्टरः प्रति गृह्यताम् ॥

॥ कुश विनिर्मिते दिव्ये भक्ति भाव समन्विते । देवाः स्वात्म स्वरुपा भो तिष्ठन्तां विष्टरे शुभे ॥

⊙ कुशा मूर्त्तियों के चरणों के पास रख दे

⊙ एक पात्र में गन्ध-पुष्प-दूर्वा-जल लेकर पाद्य दे

॥ ओम् देव देव नमस्तुभ्यं लोकानुग्रहकारक । पाद्यं गृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्धय ॥

॥ ओम् पाद्यं प्रतिगृह्णन्तु ॥

⊙ पात्र का जल मूर्त्तियों के समक्ष पृथिवी पर रख दे

⊙ एक दूसरे पात्र में जल-गन्ध-पुष्प लेकर अर्घ्य दे

॥ ओम् व्यक्ताव्यक्त स्वरुपाय भक्ताभीष्ट प्रदायिने । इदमर्घ्यम् मयादत्तं गृह्णीष्वा मर वल्लभ ॥

॥ ओम् अर्घ्यम् प्रतिगृह्णन्तु ॥

⊙ अर्घ्यपात्र मूर्त्तियों के सामने भूमि पर रख दे

⊙ एक पात्र में जल लेकर आचमन दे

॥ ओम् मन्दाकिन्यादि सम्भूतैर्जलैः शुद्धैः शुभावहैः । सम्यगा चम्यतां देव भक्ता भीष्ट प्रदायक ॥

⊙ आचमन पात्र मूर्ति के सामने रख दे

⊙ एक पात्र में वही-शहद-घी रखकर मधुपर्क दे

।। ओम् अन्नपते ऽ न्नस्य नो वेह्य नमी वस्य शुष्मिणः ।
प्र प्रदातारं तारिष ऊर्जम् नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ।।

।। दधि मध्वाज्य संयुक्तं विव्यं मंगल वायकम् ।
मधुपर्कम् गृहाणेश सर्वदा मधु पर्कय ।।

⊙ मधुपर्क-पात्र मूर्तियों के समक्ष रख दे

[इसके बाद वस्त्र - यज्ञोपवीत - गन्ध - माला फूल - धूप - दीप - नैवेद्य - ताम्बूल-दक्षिणा आदि चढ़ा कर यथा सम्भव पूजा कर दे]

।। गोदान ।।

⊙ कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर एक गोदान करे

।। अद्य शुभ पुण्य तिथौ……… गोत्रः……… नामा ऽ हम् शुभता सिद्ध्यर्थम् मधुपर्कं पूजन प्रतिष्ठार्थम् च तदंगत्वेन गोनिष्क्रयी भूतं द्रव्यं सांगता सहितं गोताय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रवदे ।।

⊙ ब्राह्मण को गोदान दे दे

॥ शिव पार्वती विवाह ॥

[लोकाचार में यहीं पर शंकर पार्वती का विवाह-पौपुंजी आदि करते हैं]

⊙ यजमान हाथ में अक्षत-जल लेकर संकल्प करे

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ ...... गोत्रः ...... नामाऽहम् अस्मिन शिवादि मूर्त्तीनां स्थिर प्रतिष्ठा कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थम् शिव-पार्वती विवाहाख्यं कर्म करिष्ये ॥

⊙ हाथ का जल-अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ शंकर-पार्वती मूर्ति बगल-बगल रख दे [पार्वती मूर्ति शिव लिंग के दाहिने रहेगी]

⊙ दोनों मूर्त्तियों के बीच एक पीला कपड़ा लगा दे [अंतः पट करे] ⊙ मंगल श्लोकों का पाठ करे

॥ योगं योगविदां विधूत विविध व्यासङ्ग शुद्धाशय ।
प्रादुर्भूत सुधारस प्रसृमर ध्यानास्पदा ध्यासिनाम् ॥
आनन्द प्लव मानवोध मधुरा मोदच्छटा मेदुरम् ।
तं भूमान मुपास्महे परिणतं दन्ता वलास्यात्मना ॥ १ ॥

टिप्पणी—शिव पुराण [रुद्र संहिता] के ४८ वें अध्याय में शिव पार्वती के विवाह का सन्दर्भ वर्णित है, शैलराज ने इस अवसर पर यजुर्वेद की माध्यन्दिनी शाखा में वर्णित स्तोत्रों से शिव की स्तुति की देखे गीता प्रेस संक्षिप्त शिव पुराण पेज २२८

उद्यद् दिनेश्वर रूचि निजहस्त पद्मैः । पाशाङ्कुशाभयवरान् बधतं गजास्यम् ।
रक्ताम्बरं सकल दुःख हरं गणेशम् । ध्यायेत् प्रसन्न मखिला भरणाभिरामम् ।। २ ।।

ब्रह्मादयोऽपि यदपाङ्ग तरंग भंग्या । सृष्टि स्थिति प्रलय कारणतां व्रजन्ति ।
लावण्य वारि निधि वीचि परिप्लुतायै । तस्यै नमोऽस्तु सततं जगदम्बिकायै ।। ३ ।।

⊙ यजमान मूर्तियों के सामने कन्यादान-पौपुजी के लिए एक नई परात तथा एक गेडुआ-जल पात्र रखे

⊙ यजमान दाहिने हाथ में अक्षत-फूल लेकर शिवजी की प्रार्थना करे [गोत्र आदि का स्मरण करे]

।। ओम् अरुपोऽयं परब्रह्म निर्गुणः प्रकृतेः परः । निराकारो निर्विकारो मायाधीशः परात् परः ।।
अगोत्र कुल नामाहि स्वतंत्रो भक्त वत्सलः । तदिच्छया हि सगुणस् सुतनुर्बहु नामभृत् ।।
सुगोत्री गोत्रहीनश्च कुलहीनः कुलीनकः । नो जानाति शिवं कोऽपि महायोगेश्वरं हरम् ।।
सगुणस्य महेशस्य लीलया रुप धारिणः । गोत्रं कुलं वि जानीहि नादमेव हि केवलम् ।।
शिवो नादमयं सत्यं नादशिव मयस्तथा । उभयोरन्तरं नास्ति नादस्य च शिवस्य च ।।
यस्याज्ञया जगदिदं च विशालमेव, जातं परात् परतरो निज बोधरूपः ।
शर्वः स्वतंत्र गतिकृत परभाव गम्यस्, सोऽसौ त्रिलोकपतिरद्य च नः सुदृष्टः ।

⊙ हाथ का अक्षत फूल शिव लिंग पर चढ़ा दे

⊙ शंकर-पार्वती के बीच का पीला कपड़ा (अन्तःपट) हटा दे

⊙ नवीन पीले बस्त्र से शंकर पार्वती की गांध बाँध दे

⊙ यजमान दाहिने हाथ में अक्षत-फूल लेकर कन्यादान करे

⊙ यजमान की पत्नी संकल्प पढ़ने तक पति के हाथ में जलधार देती रहे

⊙ जल पौपूंजी के परात में गिरना चाहिये

।। अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ ···गोत्रः········ नामाऽहम् सपत्नीकोऽहम् च शिवादि मूर्त्तीनां स्थिर प्रतिष्ठा कर्मणि जगदुद्धार हेतवे तथा चास्माकं समस्त पितृणाम् निरति शयानन्द ब्रह्मलोका वाप्त्यादि कन्यादान कल्पोक्त फलावाप्तये उमामहेश्वर प्रीत्यर्थम् च यथाशक्ति सुपूजिताम् कन्यास्वरूपिणीं गौरीं त्रैलोक्य नाथाय महेश्वराय पुरुष संयोग प्रधानगुण कारिणे जगद् व्यापिने भार्यार्थिने शिवाय सादरं समर्पयामि ।।

⊙ हाथ का अक्षत-फूल-जल थाल में छोड़ दे

टिप्पणी--१. कुछ लोग कुशा से ग्रन्थि बन्धन करते हैं

२. कुछ लोग कच्चे सूत की माला बनाकर दोनों को पहनाते हैं

३. शिव पुराण में ग्रन्थि बन्धन के बाद कन्यादान हिमालय ने किया है ऐसा लिखा है तदनुसार ग्रंथि बन्धन पहले लिखा गया है।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

।। ओम् इमां गौरीं तुभ्य महं ददामि परमेश्वर। भार्यार्थे परिगृह्णीष्व प्रसीद सकलेश्वर ।।
कालं गमय कालेश गौरी संश्लेष पूर्वकम्। विश्लेषस्तेन भविता सर्वकालं तवाश्रिता ।।
प्राप्ता गौरी महादेवा धुना प्राणाधिका प्रिया। दृष्ट्वा प्रियास्यत्र् चन्द्राभं त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ।।
कृपानिधे कृपां कृत्वा जनान् सम्पालयिष्यसि। सहस्र दोषं चास्माकं क्षम्यतां परमेश्वर ।।

⊙ फूल शिव लिंग पर चढ़ा दे ⊙ दूसरा फूल लेकर पार्वती की प्रार्थना करे

।। जगदम्बा महेशी त्वं शिवः साक्षात् पतिस्तव। तवस्मरणात् नार्यो भवन्तिहि पतिव्रताः ।।
प्रसीदत्वं महेशानि प्रसीद जगदम्बिके। प्रसीद देवि देवेशि मद् गृहे मंगलं कुरु ।।

⊙ फूल पार्वती जी पर चढ़ा दे

⊙ यजमान तथा यजमान पत्नी शंकर पार्वती की पाद पूजा (पौपुंजी) करे ⊙ सोना-चांदी-द्रव्य आदि लेकर संकल्प करे

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ...... गोत्रः...... नामाऽहम् उमा महेश्वर प्रीत्यर्थम् इदं सुवर्णम्-रजतम्-द्रव्यं वा दातु महमुत्सृजे ।।

⊙ ब्राह्मणगण निम्न मन्त्रों का पाठ करे—

।। ओम् कोदात् कस्माऽअदातं कामोदात् कामायादात्। कामोदाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते ।।

⊙ इसी तरह कुटुम्बी जन तथा नगर-ग्राम के व्यक्ति भी पौपुंजी करें,

॥ शय्याधिवास ॥

⊙ मण्डप में नवग्रह तथा सर्वतोभद्र पीठ के बीच की भूमि पर १ शय्या बिछावे

⊙ शय्या के नीचे सप्तधान्य छोड़ दे ⊙ शय्या पर चंदवा (चाँदनी) बांध दे (शय्या का सिरहाना पूर्व की ओर रखे)

⊙ शय्या पर ओढ़ने-बिछाने के लिए सुन्दर बिस्तर लगा दे

⊙ शय्या के समीप छड़ी-छाता पंखा दीपक रखने के लिए दीवट फल-फूल मिठाई आदि भोजन-सामग्री-मेवा-जलपात्र रखे

⊙ १ एक पात्र में घी शहद रखे ⊙ १ पात्र में तिल का तैल सरसों का चूर्ण (उबटन) रखे

⊙ शय्या के समीप शीशा, आसन तथा गृहस्थी का सामान रख दे

⊙ यजमान शय्या के दक्षिण उत्तर की ओर मुख करके बैठे

⊙ शय्या के ऊपर सफेद चावल से स्वस्तिक 卐 बना दे

⊙ स्वस्तिक के ऊपर १ कुशा रख दे (कुशा का अग्रभाग पूर्व की ओर रहे)

⊙ यजमान आचमन प्राणायाम करे ⊙ भगवान का ध्यान करे

॥ ओम् शान्ता कारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेधवर्णम् शुभांगम् ॥
लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यम् ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्व लोकैकनाथम् ॥

⊙ कुश अक्षत-जल लेकर प्रतिष्ठा संकल्प करे

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ ··· गोत्रः ··· नामाऽहम् करिष्यमाण देवप्रतिष्ठा कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थम् मूर्त्तिषु देवकला सान्निध्यर्थञ्च शय्याधिवासाख्यं कर्म करिष्ये ॥

⊙ कुश-अक्षत-जल सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ बाएं हाथ में अक्षत लेकर २-२ दाना अक्षत शय्या पर चारों ओर छिड़के

॥ शिवलिंग प्रतिष्ठा में मंत्र ॥

१. पूर्व में— ॥ ओम् शर्वाय नमः ॥

२. अग्नि कोण में— ॥ ओम् भवाय नमः ॥

३. दक्षिण में— ॥ ओम् पशुपतये नमः ॥

४. निर्ऋति कोण में— ॥ ओम् ईश्वराय नमः ॥

५. पश्चिम में— ॥ ओम् उग्राय नमः ॥

६. वायव्यकोण में— ॥ ओम् महादेवाय नमः ॥

७. उत्तर में— ॥ ओम् रुद्राय नमः ॥

८. ईशान कोण में— ॥ ओम् भीमाय नमः ॥

⊙ हाथ का शेष अक्षत शय्या पर छोड़ दे—

॥ ओम् भवाद्यावाहित देवताभ्यो नमः ॥

⊙ शय्या पर जल-चन्दन-अक्षत-फूल आदि चढ़ा कर शय्या की पूजा कर दे

⊙ यजमान सपत्नीक उठकर शय्या की तीन परिक्रमा करे

टिप्पणी—एक शय्या पर कई मूर्तियों को नहीं सुलाना चाहिए

⊙ शंख भेरी बाजा बजाकर मूर्तियों को शय्या पर लिटा दे ।। मंत्र ।।
[मूर्तियों का सिर पूर्व की ओर रखे]

।। ओम् नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च ।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।।

।। ओम् नमोऽस्तु ते ब्रह्मरूप सर्वकार्य प्रसाधक ।
वेदिकोपरि शय्यायां स्थिरो भव नमोऽस्तुते ।।

⊙ मूर्तियों को वस्त्र से ढँक दे (वस्त्र ओढ़ा दे)

।। ओम् विश्व तश्चक्षु रुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् ।
सं बाहुभ्यां धमति स पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः ।।

।। ओम् सर्ववर्णे प्रवे देव वाससी ते विनिर्मिते ।
ददामि प्रीतये तुभ्यं देव देव नमोऽस्तुते ।।

टिप्पणी—१. पद्धतियों में मध्य वेदी के ऊपर सर्वतोभद्र या लिङ्गतोभद्र पीठ के ऊपर शय्या बिछाने को लिखा है
२. लघुदर्पण में तीन वस्त्र ओढ़ाने को लिखा है

॥ विष्णु-कृष्ण-रामचन्द्र देव प्रतिष्ठा में ॥

१. पूर्व में— ॥ ओम् विष्णवे नमः ॥
२. अग्नि कोण में— ॥ ओम् श्रीधराय नमः ॥
३. दक्षिण में— ॥ ओम् मधुसूदनाय नमः ॥
४. नैर्ऋत्य कोण में— ॥ ओम् हृषीकेशाय नमः ॥
५. पश्चिम में— ॥ ओम् त्रिविक्रमाय नमः ॥
६. वायव्य कोण में— ॥ ओम् पद्मनाभाय नमः ॥
७. उत्तर में— ॥ ओम् वामनाय नमः ॥
८. ईशान कोण में— ॥ ओम् दामोदराय नमः ॥

⊙ हाथ का शेष अक्षत शय्या पर छोड़ दे—

॥ ओम् विष्ण्वादि आवाहित देवताभ्यो नमः ॥

⊙ शय्या पर जल-गन्ध-पुष्प आदि चढ़ा कर पूजा कर दे

॥ ओम् विष्णवे नमः ॥ —मंत्र पढ़ता रहे

⊙ यजमान सपत्नीक शय्या की तीन परिक्रमा करे ⊙ शंख-घण्टा-घड़ियाल बजाकर मूर्तियों को शय्या पर लिटा दे

[मूर्तियों का सिर पूर्व की ओर रहे]

॥ ओम् इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ़मस्य पा ँ सुरे स्वाहा ॥
॥ ओम् नमोऽस्तुते ब्रह्मरूप सर्वकार्य प्रसाधक । वेदिकोपरि शय्यायां स्थिरो भव नमोऽस्तुते ॥

⊙ मृतया का दान वस्त्र ओढ़ा दे

।। ओम् विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो वाहुरुत विश्वतस्पात् ।
सं वाहुभ्यां धमति स पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः ।।

।। ओम् सर्व वर्ण प्रदे देव वाससी ते विनिर्मिते । ददामि प्रीतये तुभ्यं देव देव नमोऽस्तुते ।।

⊙ शय्या के पास निद्रा कलश स्थापित करे

।। निद्रा कलश स्थापन ।।

⊙ शय्या के सिरहाने [पूर्व-दक्षिण की ओर अग्निकोण में] १ निद्रा कलश स्थापित करे

⊙ भूमि पर सप्तधान्य रखकर १ कलश रखे ⊙ कलश में जल तथा पंच पल्लव छोड़दे

⊙ कलश में कपड़ा लपेट दे ⊙ कलश के ऊपर एक पात्र में अक्षत रख दे

⊙ अक्षत के ऊपर एक सुपारी रक्षा सूत्र [कलावा] लपेट कर रख दे

⊙ अक्षत-फूल लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

।। ओम् अपो देवी रूपसृज मधुमतीर यक्ष्माय प्रजाभ्यः ।
तासामास्थाना वुज्जिहता मोषधयः सुपिप्पलाः ।।

।। ओम् निद्रादेवि नमस्तुभ्यं सर्व देहेषु सुस्थिरे ।
अस्मिन् कुम्भे प्रतिष्ठत्व मह मावाहयामि वै ।।

⊙ फूल कलश पर छोड़ दे ⊙ गन्ध-अक्षत-पुष्प चढ़ाकर कलश की पुजा करे

⊙ एक पात्र में जल-गन्ध-पुष्प लेकर निद्रादेवी की प्रार्थना करे ⊙ अर्घ दे

।। ओम् परमेष्ठिनं नमस्कृत्य निद्रा माधाह् याम्यहम् । मोहिनीं सर्वभूतानां मनोविभ्रम कारिणीम् ।।
विरूपाक्षे शिवे शान्ते आगच्छत्वं तु मोहिनी । वासुदेवहिते कृष्णे कृष्णाम्वर विभूषिते ।।
आगच्छ सहजा जस्र सुप्त संसार मोहिनी । सुषुप्तं संहरे देवि कुमार्ये कान्त मानसे ।।
श्रम निश्वास वाह्ये तु आगच्छ भुवनेश्वरि । तमः सत्त्व रजोपेते आगच्छ त्वर चारिणी ।।
मनो बुद्धिरहंकार संहाररत्वं सरस्वती । शब्द स्पर्शरूपञ्चं रसोगन्धश्च पञ्चमः ।।
अगाच्छ गृह्य संक्षिप्य मोहपाश निवन्धिनी । भवस्योत्पत्ति हेतुस्त्वं यावदाभूत संप्लवम् ।।
भुवः कल्पान्त सन्ध्यायां वससे त्वं चराचरे । भोगि शय्या प्रसुप्तस्य वासुदेवस्य शाश ने ।।
त्वं प्रतिष्ठासि वै देवि मुनियोनि समुत्थिते । पितृदेव मनुष्याणां स यक्षो रग रक्षसाम् ।।
पशु पक्षि मृगाणां च योग माया विवर्धिनी । वससे सर्व सत्वेषु मातेव हितकारिणी ।।

टिप्पणी— ⊙ कुछ पद्धतियों में न्यास के बाद निद्रादेवी का आवाहन—अर्घ लिखा है

⊙ पं० वायुनन्दन मिश्र ने "अपोदेवी" मन्त्र के स्थान पर आपोदेवी मन्त्र लिखा है

एहि सावित्रि मूर्त्तिस्त्वं चक्षुर्भ्यां स्थान गोचरे । विश नासापुटे देवि कण्ठे चोत्कण्ठिता विश ।।
प्रति भावय मां सर्वम् मातृवद् देवि सुन्दरि । इद मर्घ्यम् मयादत्तं पूजेयं प्रति गृह्यताम् ।।

⊙ मन्त्र पढ़कर पात्र का गन्ध -- जल फूल [अर्घ] कलश के सामने चढ़ा दे

⊙ हाथ जोड़कर प्रार्थना कर ले

।। ओम् उप प्रागात् परमं यत् सधस्य मर्वा अच्छा पितरं मातरं च ।
अद्या देवाञ्जुष्ट तमो हिगम्या अथा शास्ते दाशुषे वार्याणि ।। ओम् निद्रायै नमः ।।

।। तत् पश्चात् ।।

⊙ निद्रा कलश पूजन के बाद—

⊙ एक पात्र में शहद-घी लेकर मूर्त्ति के नेत्रों में अंजन की तरह लगा दे

।। १ ।। ओम् सुदेव मधु सर्पिर्भ्यां सुखनिद्रा हिताय च । अभ्यजामि सुखार्थे तु देवानां शान्ति दायकम् ।।
।। २ ।। ओम् आप्यायस्व मदिन्तम् सोम विश्वेभि र ७ शुभिः । भवानः सप्रथस्तमः सखा वृधे ।।

⊙ शहद-घी का पात्र शय्या के पास रख दे

⊙ एक दूसरे पात्र में रखा हुआ तिल का तेल तथा सरसों का तेल लेकर मूर्त्ति के पैर के नीचे भाग [तलुवा] में लगा दे

[शिव लिंग में एकदम नीचे जहाँ पैर की कल्पना की है, वहाँ लगाना चाहिए]

टिप्पणी—पं० वायुनन्दन मिश्र ने आप्यायस्व मदिन्तम् के स्थान पर आप्यायस्व समेतु ''' मन्त्र लिखा है ।

।। ओम् याते रुद्र शिवातनूर घोरापाप काशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरि शन्ताभि चाक शीहि ।।

।। ओम् तिल सर्षप सम्भूतैस्तैलैः सर्षपजैः शुभैः । मयोपलिप्यते देवं तैलं कान्ति प्रदं शुभम् ।।

⊙ तेल पात्र शय्या के पास रख दे

⊙ मूर्त्ति पर गन्ध-अक्षत-पुष्प फिर चढ़ा दे

⊙ मूर्त्ति के दाहिने हाथ में कंगन बांध दे ।। मन्त्र पढ़े—

।। ओम् बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोह मित्रां अपवाधमानः ।
प्रभञ्जन्त् सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माक मेद्ध्य विता रथा नाम् ।।

⊙ दाहिने हाथ से मूर्त्तियों का—पैर नाभि वक्षस्थल शिर का २ वार स्पर्श कर ले । दोनों बार निम्न मन्त्र पढ़े—

।। ओम् विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो वाहुरुत विश्वतस्पात् ।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः ।।

।। ओम् पादं नाभि च हृदयं शिरो देवस्य चालभे । देवस्य सौम्य दृष्ट्यर्थम् स्पृशामि हित काम्यया ।।

⊙ शय्या के दाहिनी ओर छत्र (छाता) रख दे ⊙ हाथ में जल लेकर छोड़ दे ।। मन्त्र पढ़े—

।। ओम् क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि । मात्वा हि ँ सीन्मा माहि ँ सीः ।।
।। ओम् वर्षात पत्राण करं सुदण्ड निर्मितं शुभम् । छत्रं ददामि भो देव तव वल्लभ कारकम् ।।

टिप्पणी—पं० वायुनन्दन मिश्र०ने कंगन बाधने की जगह बृहस्पते''' मन्त्र से सफेद वस्त्र चढ़ाने को लिखा है

⊙ शय्या की बायीं ओर चंवर या पंखा रखे ⊙ हाथ में जल लेकर छोड़ दे ॥ मंत्र ॥

॥ ओम् वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्त विꣳशतिः । ते अग्रे श्व मयुञ्जंस्ते भस्मिन् जव मा दधुः ॥

॥ ओम् यत्नेन निर्मितं दिव्यं व्यजनं वायु कारकम् । ददामि तव सौख्यार्थम् देवानां प्रीति वर्धकम् ॥

⊙ शय्या के पैर की ओर खड़ाऊँ रखे ⊙ जल छोड़े ॥ मन्त्र पढ़े—

॥ ओम् त्रीणिपदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन् ॥

॥ ओम् सर्वकण्टक नाशार्थे पादुके सुर पूजिते । समर्पयामि ते देव सुख सन्तान वृद्धये ॥

⊙ शय्या के दक्षिण दो कलशों में जल भर कर रख दे ॥ मन्त्र पढ़े—

॥ ओम् आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः ।
पुनरूर्जा निवर्तस्व सानः सहस्त्रं धुक्ष्वोरूधारा पयस्वती पुनर्मा विशता द्रयिः ॥

॥ ओम् इमौ द्वौ शान्ति कुम्भौ च सर्वशान्ति करौ परौ ।
पार्श्वयोः स्थापया मोह स्यातां शान्ति करौ मम ॥

⊙ शय्या के पास पात्र आसन, दर्पण (शीशा) घंटा, नैवेद्य, जलपात्र, दही, घी, शहद, दूध-वस्त्र आभूषण-ताम्बूल आदि गृहस्थी की सामग्री रखे ⊙ जल छोड़े ॥ मन्त्र पढ़े—

॥ ओम् अभि त्वा शूरनो नुमो दुग्धा इव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृश मीशान मवृशस्तस्थुषः ।

।। ओम् आस्तर्न दर्पणं घण्टा भक्ष्यं भोज्यं घृतं दधि । षड्रसान् जलपात्रं च ददामि तव प्रीतये ।।

⊙ हवन का भस्म-तिल-कुशा लेकर शय्या के चारों ओर तीन बार घुमा दे
(ईशान कोण से प्रारम्भ कर ईशान कोण तक घुमाए)

।। ओम् भस्मदर्भ तिलैर्देवं रक्षार्थम् वेस्टन त्रयम् । करोमि राक्षसानां हि सुदूरी करणाय च ।।

⊙ फूल लेकर देवों को शयन करा दे

।। ओम् देव देव जगद् व्यापिन् पर्यंङ्के वै सिते शुभे । सितवस्त्र समाच्छन्ने सोपधाने सुषुप्स्व हि ।।
सुप्ते त्वयि देव देवेश जगत् सुप्तं भवेदिदम् । विबुध्ये त्वं विबुध्येत् जगत्सर्वम् चराचरम् ।।

⊙ फूल मूर्तियों पर चढ़ा दे

⊙ इन्द्रादि दिक्पालों को वलि प्रदान करे ⊙ हाथ में जल लेकर संकल्प करे

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ ··· गोत्रः नामाऽहं [अमुक] देवार्चाधिवासनाङ् भूत मिन्द्रादि दिक्पालेभ्यः
सर्वभूतेभ्यश्च बलि प्रदानं करिष्ये ।।

⊙ हाथ का जल सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ मंडप से बाहर निकल आठो दिशाओं में वलि दे ⊙ क्रमशः १ पत्ता पर दही, चावल-काली उरद रख ले

⊙ इसके ऊपर गन्ध-फूल छोड़ दे ⊙ हाथ में जल लेकर मन्त्र पढ़े—

टिप्पणी — ⊙ कुछ लोग अक्षत के पुंज पर त्रातार मिन्द्र "आदि वैदिक मन्त्रों से दिक्पालों की पूजा करके बलि प्रदान करने को लिखा है। ये ८ वैदिक मन्त्र इस पुस्तक में पृष्ठ १६१ पर दिग्पाल आहुति प्रसंग में लिखा है

⊙ मन्त्र पढ़कर जल छोड़ दे ॥ दसों दिशाओं का मन्त्र इस प्रकार हैं—

१. पूर्व में — ॥ ओम् नमः पूर्वं दिग्वासिभ्यो दिक्पति दिग भूताधिपति—
दिग्गण पति दिग्रुद्र दिग्मातृ दिग क्षेत्र पालेभ्यो नमः।
दधि-माष तण्डुल वलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ न मम ॥

प्रार्थना — ॥ ओम् समस्त भूत रक्षेभ्यो भूतानाथेभ्य एव च।
माषभक्त वलिं दास्ये युष्मत् सन्तुष्टि कारकम् ॥

२. अग्नि कोण में — ॥ ओम् आग्नेय दिग्वासिभ्यो दिक्पति-दिग्भूताधिपति दिग्गणपति दिग्रुद्र दिग्मातृ-दिग्क्षेत्रपालेभ्यो नमः ॥ दधिमाष तण्डुल वलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ न मम ॥

३. दक्षिण दिशा में — ॥ ओम् दक्षिण दिग्वासिभ्यो दिक्पति-दिग्भूताधिपति दिग्गणपति दिग्रुद्र दिग्मातृ-दिग्क्षेत्र पालेभ्यो नमः ॥ दधि माष तण्डुल वलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ न मम ॥

४. नैर्ऋत्य कोण में— ॥ ओम् नैर्ऋत्य कोण दिग्वासिभ्यो दिक्पति-दिग्भूताधिपति-दिग् गणपति दिग्रुद्र दिग्मातृ दिग् क्षेत्र पालेभ्यो नमः ॥ दधि माष तण्डुल वलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ न मम ॥

५. पश्चिम दिशा में— ।। ओम् पश्चिम् दिग् वासिभ्यो दिक्पाल दिग्पति दिग् भूताधिपति दिग् गणपति दिग्रुद्र
दिग्मातृ दिग् क्षेत्र पालेभ्यो नमः । दधि माषतण्डुल वलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा
।। न मम ।।

६. वायव्य कोण में — ।। ओम् वायव्य दिग् वासिभ्यो दिक्पति दिग्भूताधि पति दिग् गणपति दिग् रुद्र दिग्मातृ
दिग् क्षेत्रपालेभ्यो नमः । दधि माषतण्डुल वलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा
।। न मम ।।

७. उत्तर दिशा में — ।। ओम् उत्तर दिग् वासिभ्यो दिक्पति दिग् भूताधिपति दिग् गणपति दिग्रुद्र दिग्मातृ
दिग् क्षेत्र पालेभ्वो नमः । दधिमाष तण्डुल वलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा
।। न मम ।।

८. ईशाम कोण में— ।। ओम् ईशान दिग् वासिभ्यो दिक् पति दिग् भूताधिपति दिग् गणपति दिग् रुद्र दिग् मातृ
दिग् क्षेत्र पालेभ्यो नमः । दधिमाष तण्डुल वलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा
।। न मम ।।

⊙ वलि प्रदान करके हाथ पाँव धोले ⊙ अपने स्थान पर बैठकर आचमन प्राणामाम करे

⊙ मुहूर्तभर देव स्मरण करे

⊙ शिवलिंग स्थापना में रुद्राध्याय । अन्य प्रतिष्ठा में पुरुष सूक्त का पाठ करे (पुरुष सूक्त-रुद्राध्याय परिशिष्ट में देखें)

।। हवन करे ।।

⊙ देव स्मरण करने के बाद यजमान हवन वेदी के पास आकर पूर्व मुख बैठे
⊙ आचमन प्राणायाम करे ⊙ घी की ८ या २८ या १०८ आहुति दे ।। मंत्र पढ़े—

१. विष्णु प्रतिष्ठा में — ।। ओम् पराय विष्ण्वात्मने नमः स्वाहा ।।
२. शिवलिंग में — ।। ओम् पराय शिवात्मने नमः स्वाहा ।।
३. श्रीराम जानकी में — ।। ओम् पराय रामात्मने नमः स्वाहा ।।
४. राधा कृष्ण में — ।। ओम् पराय कृष्णात्मने नमः स्वाहा ।।
५. देवी में — ।। ओम् पराय देव्यात्मने नमः स्वाहा ।।

(जो मूर्ति हो उसी के नाम से आहुति दे)

⊙ हवन के बाद प्रतिमा में न्यास करे

टिप्पणी— ⊙ कुछ लोग घी के साथ (तिल-जवा के अतिरिक्त) अन्य द्रव्य (शाकल्य हवन सामग्री आदि) से आहुति देने को लिखते हैं।

⊙ कुछ लोग पलाश लकड़ी तथा जव-तिल-चावल आदि द्रव्यों से हवन लिखते हैं।

⊙ लघु दर्पण में—सर्वतोभद्र या लिङ्गतोभद्र देव नाम मन्त्रों से भी यह हवन करने को लिखा है एवं हवन के समय ब्राह्मणगण जप करें—यह भी लिखा है ।

⊙ लघु दर्पण में—दधि-मधु-घृत मिलाकर स्थाप्य देवनाम मन्त्रों से हवन करने को लिखा है

॥ देव न्यास विधि ॥

(निम्नलिखित न्यास विधि सभी देव मूर्तियों के लिए है)

⊙ मूर्त्तियों के समीप (शय्या के दक्षिण) उत्तर मुख बैठ जाय

⊙ आचमन-प्राणायाम कर ले

⊙ हाथ में जल लेकर संकल्प करे

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ...गोत्रः...नामाऽहम् [अमुक] देवार्चाधिवासन कर्मणि देवकला सान्निध्यार्थम्
प्रणवादि न्यासान् करिष्ये ॥

⊙ हाथ का जल सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ फूल लेकर देवों की प्रार्थना करे—

॥ ओम् ब्रह्मेन्द्र सोमाग्नि कुवेर सौम्य देवादिभिर्वन्दित वन्दनीय ।
बुध्यस्व देवेश जगन्निवास मंत्र प्रभावेण सुखेन देव ॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश त्यज निद्रां जगत् पते ।
शय्याधिवासन विधि त्यक्त्वा गृहाण त्वं सुमण्डपम् ॥

⊙ हाथ का फूल मूर्त्तियों पर चढ़ा दे

⊙ हाथ में फिर फूल लेकर न्यास करे निम्न मन्त्र पढ़े— १. प्रणव न्यास—

॥ १ ॥ ओम् अं नमः पादयो र्न्यसामि ।

॥ २ ॥ ओम् उं नमः हृदये न्यसामि ।

॥ ३ ॥ ओम् मं नमः ललाटे न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल लेकर व्याहृति न्यास करे— २. व्याहृति न्यास—

॥ १ ॥ ओम् भूः नमः पादयो र्न्यसामि ।

॥ २ ॥ ओम् भुवः नमः हृदये न्यसामि ।

॥ ३ ॥ ओम् स्वः नमः ललाटे न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्त्ति के सामने छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल लेकर— १. मातृका न्यास करे—

॥ १ ॥ ओम् अं नमः शिरसि न्यसामि ।

॥ २ ॥ ओम् आं नमः मुखे न्यसामि ।

॥ ३ ॥ ओम् इं नमः दक्षिण नेत्रे न्यसामि ।

॥ ४ ॥ ओम् ईं नमः वाम नेत्रे न्यासामि ।

॥ ५ ॥ ओम् उं नमः दक्षिण कर्णे न्यसामि ।

॥ ६ ॥ ओम् ऊम् नमः वाम कर्णे न्यसामि ।

॥ ७ ॥ ओम् ऋं नमः दक्षिणगण्डे न्यसामि ।

॥ ८ ॥ ओम् ॠं नमः वामगण्डे न्यसामि ।

॥ ९ ॥ ओम् लृं नमः वाम नासापुटे न्यसामि ।

॥ १० ॥ ओम् लृम् नमः दक्षिण नासापुटे न्यसामि ।

॥ ११ ॥ ओम् एं नमः ऊर्ध्व-ओष्ठे न्यसामि ।

॥ १२ ॥ ओम् ऐं नमः अधरोष्ठे न्यसामि ।

॥ १३ ॥ ओम् औं नमः ऊर्ध्व दन्त पंक्तौ न्यसामि।

॥ १४ ॥ ओम् औम् नमः अधर दन्त पंक्तौ न्यसामि।

॥ १५ ॥ ओम् अं नमः ललाटे न्यसामि।

॥ १६ ॥ ओम् अः नमः जिह्वायां न्यसामि।

॥ १७ ॥ ओम् यं नमः त्वचि न्यसामि।

॥ १८ ॥ ओम् रं नमः चक्षुषो न्यंसामि।

॥ १९ ॥ ओम् लं नमः नासिकायां न्यसामि।

॥ २० ॥ ओम् वं नमः दशनेषु न्यसामि।

॥ २१ ॥ ओम् शं नमः श्रोत्रयोः न्यसामि।

॥ २२ ॥ ओम् षं नमः उदरे न्यसामि।

॥ २३ ॥ ओम् सं नमः कटौ न्यसामि।

॥ २४ ॥ ओम् हं नमः हृदये न्यसामि।

॥ २५ ॥ ओम् क्षं नमः नाभ्यां न्यसामि।

॥ २६ ॥ ओम् लं नमः लिङ्गे न्यसामि।

॥ २७ ॥ ओम् पं फं बं भं मं नमः दक्षिण वाहौ न्यसामि।

॥ २८ ॥ ओम् तं थं दं धं नं नमः वाम वाहौ न्यसामि।

॥ २९ ॥ ओम् टं ठं डं ढं णं नमः दक्षिण जंघायां न्यसामि।

॥ ३० ॥ ओम् चं छं जं झं ञं नमः वाम जंघायां न्यसामि।

॥ ३१ ॥ ओम् कं खं गं घं ङं नमः सर्वाङ्गुलिषु न्यसामि।

⊙ फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दे

⊙ दूसरा फूल ले ले— ४. ग्रहंन्यास—

|| १ || ओम् रविचन्द्राभ्यां नेत्रयोः न्यसामि। || २ || ओम् भौमाय नमः हृदये न्यसामि।

|| ३ || ओम् बुधाय नमः स्कन्धे न्यसामि। || ४ || ओम् गुरवे नमः जिह्वायाम् न्यसामि।

|| ५ || ओम् भृगवे नमः लिंगे न्यसामि। || ६ || ओम् शनैश्चराय नमः ललाटे न्यसामि।

|| ७ || ओम् राहवे नमः पादयोः न्यसामि। || ८ || ओम् केतवे नमः केशेषु न्यसामि।

⊙ फूल मूर्त्ति के सामने छोड़ कर ⊙ दूसरा फूल ले ले ५. नक्षत्र न्यास—

१. ओम् रोहिणीभ्यों नमः हृदये न्यसामि। २. ओम् मृगशिरसे नमः शिरसि न्यसामि।

३. ओम् आर्द्रायै नमः केशेषु न्यसामि। ४. ओम् पुनर्वसवे नमः ललाटे न्यसामि।

५. ओम् पुष्याय नमः मुखे न्यसामि। ६. ओम् आश्लेषाभ्यो नमः नासापुटयोः न्यसामि।

७. ओम् मघाभ्यो नमः दन्तेषु न्यसामि। ८. ओम् पूर्वाफाल्गुनीभ्यो नमः दक्षिणकर्णे न्यसामि।

९. ओम् उत्तराफाल्गुनीभ्यो नमः वामकर्णे न्यसामि। १०. ओम् हस्ताय नमः हस्तयोः न्यसामि।

११. ओम् चित्रायै नमः दक्षिण भुजे न्यसामि। १२. ओम् स्वात्यै नमः वामभुजे न्यसामि।

१३. ओम् विशाखा-अनुराधाभ्यां नमः दक्षिण वामस्तनयोः न्यसामि ।

१४. ओम् ज्येष्ठाभ्यो नमः दक्षिण कुक्षौ न्यसामि ।

१५. ओम् मूलाय नमः वाम कुक्षौ न्यसामि ।

१६. ओम् पूर्वाषाढाभ्यो नमः कटिपार्श्वयोः न्यसामि ।

१७. ओम् उत्तराषाढाभ्यो नमः लिंगे [योन्यां] न्यसामि ।

१८. ओम् श्रवण धनिष्ठाभ्यो नमः वृषणयोः [यथास्थाने] न्यसामि ।

१९. ओम् शतभिषजेभ्यो नमः नेत्रे न्यसामि ।

२०. ओम् पूर्वाभाद्रपदोत्तराभाद्र पदाभ्यो नमः ऊर्वोः न्यसामि ।

२१. ओम् रेवती-अश्विनीभ्यो नमः जंघयोः न्यसामि । २२. ओम् भरणी कृत्तिकाभ्यो नमः पादयोः न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्त्तियों के समने छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल ले ले ६. तारा न्यास—

१. ओम् ध्रुवाय नमः नाभ्यां न्यसामि । २. ओम् सप्तर्षिभ्यो नमः कण्ठे न्यसामि ।

३. ओम् मातृ मण्डलाय नमः कठि देशे न्यसामि । ४. ओम् विष्णु पदेभ्यो नमः पादयोः न्यसामि ।

५ ओम् नागवीथ्यं अंगवीथ्यै नमः वनमालायां न्यसामि । ६. ओम् ताराभ्यो नमः रोमकूपेषु न्यसामि ।

७. ओम् अगस्त्याय नमः कौस्तुभे न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दे

⊙ दूसरा फूल ले ले ७. मास न्यास—

१. ओम् चैत्राय नमः शिरसि न्यसामि। २. ओम् वैशाखाय नमः मुखे न्यसामि ।

३. ओम् ज्येष्ठाय नमः हृदये न्यसामि। ४. ओम् आषाढ़ाय श्रावणाय च नमः स्तनयोः न्यसामि।

५. ओम् भाद्रपदाय नमः उदरे न्यसामि। ६. ओम् आश्विनाय नमः कट्यां न्यसामि ।

७. ओम् कार्तिकाय-मार्गशीर्षाय च नमः ऊर्वोः न्यसामि।

८. ओम् पौषाय-माघाय च नमः जंघयोः न्यसामि।

९. ओम् फाल्गुनाय नमः पादयोः न्यसामि।

⊙ फूल मूर्तियों के समाने छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल ले ले ८. कालन्यास—

१. ओम् संवत् सराय--परिवत्सराय--इडावत्सराय--अनुवत्सराय च नमः—

—दक्षिणोर्ध्वात् प्रावक्षिण्येन बाहुषु न्यसामि ।

२. ओम् पर्वतेभ्यो नमः संधिषु न्यसामि । ३. ओम् ऋतुभ्यो नमः लिंगे न्यसामि ।

४. ओम् अहोरात्रेभ्यो नमः अस्थिषु न्यसामि। ५. ओम् क्षणाय-लवाय-काष्ठायै च नमः रोमषु न्यसामि।

६. ओम् कृताय नमः मुखे न्यसामि। ७. ओम् त्रेतायै नमः हृदये न्यसामि।

८. ओम् द्वापराय नमः नितम्बे न्यसामि । ९. ओम् कलियुगाय नमः पादयोः न्यसामि।

१०. ओम् चतुर्दश मन्वन्तरेभ्यो नमः बाह्वोः न्यसामि ।

११. ओम् पराय--परार्धाय च नमः जंघयोः न्यसामि ।

१२. ओम् महाकल्पाय नमः शरीरे न्यसामि ।

१३. ओम् उदगयनाय--दक्षिणायनाय च नमः पादयोः न्यसामि ।

१४. ओम् विषुवते नमः सर्वाङ्गुलिषु न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्तियों के समाने छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल ले ले ९. वर्णन्यास--

१. ओम् ब्राह्मणाय नमः मुखे न्यसामि ।

२. ओम् क्षत्रियाय नमः बाह्वोः न्यसामि ।

३. ओम् वैश्याय नमः ऊर्वोः न्यसामि ।

४. ओम् शूद्राय नमः पादयोः न्यसामि ।

५. ओम् संकरजेभ्यो नमः पादाग्रे न्यसामि ।

६. ओम् अनुलोभजेभ्यो नमः सर्वांग सन्धिषु न्यसामि ।

७. ओम् गोभ्यो नमः मुखे न्यसामि ।

८. ओम् अजाविकेभ्यो नमः हस्तयोः न्यसामि ।

९. ओम् ग्राम्यारण्य पशुभ्यो नमः सर्वत्र न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्तियों के समाने छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल ले ले १०. तोयन्यास—

१. ओम् मेघेभ्यो नमः केशेषु न्यसामि ।

२. ओम् अभ्रेभ्यो नमः रोमसु न्यसामि ।

३. ओम् नदीभ्यो नमः सर्वगात्रेषु न्यसामि ।

४. ओम् समुद्रेभ्यो नमः कुक्षिदेशे न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्त्तियों के समाने छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल ले ले ११. विद्यान्यास—

१. ओम् ऋग्वेदाय नमः शिरसि न्यसामि ।
२. ओम् यजुर्वेदाय नमः दक्षिणभुजे न्यसामि ।
३. ओम् सामवेदाय नमः वामभुजे न्यसामि ।
४. ओम् सर्वोपनिषदभ्यो नमः हृदयें न्यसामि ।
५. ओम् इतिहास पुराणेभ्यो नमः जंघयो र्न्यसामि ।
६. ओम् अथर्वाङ्गिरसेभ्यो नमः नाभौ न्यसामि ।
७. ओम् कल्पसूत्रेभ्यो नमः तथा च
८. ओम् व्याकरणेभ्यो नमः मुखे न्यसामि ।
९. ओम् तर्केभ्यो नमः कण्ठे न्यसामि।
१०. ओम् मीमांसायै नमः हृद्भागे न्यसामि ।
११. ओम् निरुक्ताय नमः हृदये न्यसामि ।
१२. ओम् छन्दः शास्त्रेभ्यो नमः दक्षिणनेत्रे न्यसामि।
१३. ओम् ज्योतिष् शास्त्रेभ्यो नमः वामनेत्रे न्यसामि ।
१४. ओम् गीताशास्त्रेभ्यो नमः दक्षिण श्रोत्रे न्यसामि ।
१५. ओम् भूत शास्त्रेभ्यो नमः वाम श्रोत्रे न्यसामि ।
१६. ओम् आयुर्वेदाय नमः दक्षिण वाहौ न्यसामि ।
१७. ओम् धनुर्वेदाय नमः वाम वाहौ न्यसामि ।
१८. ओम् योगशास्त्रेभ्यो नमः हृदये न्यसामि ।
१९. ओम् नीतिशास्त्रेभ्यो नमः पादयो र्न्यसामि ।
२०. ओम् वश्यतन्त्राय नमः ओष्ठे न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्त्तियों के समाने छोड़ दे

⊙ दूसरा फूल ले ले १२. वैराज न्यासे—

१. ओम् दिवे नमः मूर्ध्नि न्यसामि ।

२. ओम् सूर्यलोकाय नमः दक्षिणनेत्रे न्यसामि ।

३. ओम् चन्द्रलोकाय नमः वामनेत्रे न्यसामि ।

४. ओम् अनिल लोकाय नमः घ्राणे न्यसामि ।

५. ओम् व्योम्ने नमः नाभौ न्यसामि ।

६. ओम् समुद्रेभ्यो नमः बस्ति देशे न्यसामि ।

७. ओम् पृथिव्यै नमः पादयो र्न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्तियों के समाने छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल ले ले १३ देव न्यास—

१. ओम् हिरण्य गर्भाय नमः — शिरसि

२. ओम् कृष्णाय नमः — केशेषु

३. ओम् रुद्राय नमः — ललाटे

४. ओम् यमाय नमः — भ्रुवोः

५. ओम् अश्विभ्यां नमः — कर्णयोर्न्यसामि

६. ओम् वैश्वानराय नमः — मुखे

७. ओम् मरुद्भ्यो नमः — घ्राणे

८. ओम् वसुभ्यो नमः — कण्ठे

९. ओम् सद्रेभ्यो नमः — दन्तेषु

१०. ओम् आदित्येभ्यो नमः — मुखे न्यसामि ।

११. ओम् सरस्वत्यै नमः — जिह्वायां

१२. ओम् इन्द्राय नमः — दक्षिण भुजे

१३. ओम् वलये नमः — वामभुजे

१४. ओम् प्रह्लादाय नमः — दक्षिणस्तने

१५. ओम् विश्वकर्मणे नमः — वामस्तने

१६. ओम् नारदाय नमः — दक्षिण कुक्षौ

१७. ओम् अनन्तादिभ्यो नमः — वामकुक्षौ न्यसामि ।

१८. ओम् वरुणाय नमः — हस्तयोः न्यसामि ।

१९. ओम् मित्राय नमः — पादयोः न्यसामि ।

२०. ओम् विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः—ऊर्वोः न्यसामि ।

२१. ओम् पितृभ्यो नमः — जान्वोः न्यसामि ।

२२. ओम् यक्षेभ्यो नमः — जंघयोः न्यसामि ।

२३. ओम् राक्षसेभ्यो नमः — गुल्फयोः न्यसामि ।

२४. ओम् पिशाचेभ्यो नमः — पादयोः न्यसामि ।

२५. ओम् असुरेभ्यो नमः — पादाङ्गुलिषु न्यसामि ।

२६. ओम् विद्याधरेभ्यो नमः—पार्ष्णयोः न्यसामि ।

२७. ओम् ग्रहेभ्यो नमः — पादतलयोः न्यसामि ।

२८. ओम् गुह्यकेभ्यो नमः — गुह्ये न्यसामि ।

२९. ओम् पूतनादिभ्यो नमः — नखेषु न्यसामि ।

३०. ओम् कार्त्तिकेयाय नमः — दक्षिणकटिपार्श्वे न्यसामि ।

३१. ओम् गणेशाय नमः — वामकटि पार्श्वे न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल ले ले १४. मूर्ति न्यास करे—

१. ओम् मत्स्याय नमः — मूर्ध्नि न्यसामि ।

२. ओम् कूर्माय नमः — पादयो न्यसामि ।

३. ओम् नृसिंहाय नमः — ललाटे न्यसामि ।

४. ओम् वराहाय नमः — जंघयोः न्यसामि ।

५. ओम् वामनाय नमः — मुखे न्यसामि ।

६. ओम् परशुरामाय नमः — हृदये न्यसामि ।

७. ओम् रामाय नमः — बाहुषु न्यसामि ।

८. ओम् कृष्णाय नमः — नाभ्यां न्यसामि ।

९. ओम् बोधाय नमः — बुद्धौ न्यसामि ।

१०. ओम् कलंकिने नमः — जानुदेशे न्यसामि ।

११. ओम् केशवाय नमः — शिरसि न्यसामि । १२. ओम् नारायणाय नमः — मुखे न्यसामि ।
१३. ओम् माधवाय नमः — ग्रीवायां न्यसामि । १४. ओम् गोविन्दाय नमः — बाह्वो र्न्यसामि ।
१५. ओम् विष्णवे नमः — हृदये न्यसामि । १६. ओम् मधुसूदनाय नमः — पृष्ठे न्यसामि ।
१७. ओम् त्रिविक्रमाय नमः—कटकट्यो र्न्यसामि । १८. ओम् वामनाय नमः — जठरे न्यसामि ।
१९. ओम् श्रीधराय नमः — दक्षिण जंघे न्यसामि । २०, ओम् हृषीकेशाय नमः — वाम जंघे न्यसामि ।
२१. ओम् पद्मनाभाय नमः — गुल्फयो र्न्यसामि । २२. ओम् दामोदराय नमः — पादयो र्न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल ले ले १५, क्रतु न्यास करे—

१. ओम् अश्वमेधाय नमः — मूर्ध्नि न्यसामि । २. ओम् नरमेधाय नमः — ललाटे न्यसामि ।
३. ओम् राजसूयाय नमः — मुखे न्यसामि । ४. ओम् गोसवाय नमः — कण्ठे न्यसामि ।
५. ओम् द्वादशाहाय नमः — हृदि न्यसामि । ६. ओम् अहीनेभ्यो नमः — नाभौ न्यसामि ।
७. ओम् सर्वजिद्भ्यो नमः — दक्षिण कटयां न्यसामि । ८. ओम् सर्वमेधाय नमः — वामकट्यां न्यसामि ।
९. ओम् अग्निष्टोमाय नमः — लिङ्गे न्यसामि । १०. ओम् अतिरात्राय नमः — वृषणयों र्न्यसामि ।
११. ओम् आप्तोर्यामाय नमः — ऊर्वो र्न्यसामि । १२. ओम् षोडशिने नमः — जान्वो र्न्यसामि ।
१३. ओम् उक्थ्याय नमः — दक्षिण जंघायां न्यसामि । १४. ओम् वाजपेयाय नमः —वामजंघायां न्यसामि ।
१५. ओम् अत्यग्निष्टोमाय नमः — दक्षिण बाहौ न्यसामि ।
१६. ओम् चातुर्मास्याय नमः — वाम बाहौ न्यसामि ।

१७. ओम् सौत्रामणये नमः — हस्तेषु न्यसामि। १८. ओम् पशिवष्टिभ्यो नमः — अंगुलीषु न्यसामि।

१९. ओम् दर्शपूर्णमासाभ्यां नमः — नेत्रयो र्न्यसामि। २०. ओम् सर्वेष्टिभ्यो नमः — रोमकूपेषु न्यसामि।

२१. ओम् स्वाहा काराय नमः — स्तनयो र्न्यसामि।

२२. ओम् वषट्काराय नमः — स्तनयो र्न्यसामि।

२३. ओम् पञ्चमहायज्ञेभ्यो नमः — पादांगुलीषु न्यसामि।

२४. ओम् आहवनीयाय नमः — मुखे न्यसामि। २५. ओम् दक्षिणाग्नये नमः — हृदये न्यसामि।

२६. ओम् गार्हपत्याय नमः — नाभौ न्यसामि। २७. ओम् वेद्यै नमः — उदरे न्यसामि।

२८. ओम् प्रवर्ग्याय नमः — भूषणेषु न्यसामि। २९. ओम् सवनेभ्यो नमः — पादयो र्न्यसामि।

३०. ओम् इध्मेभ्यो नमः — बाहुषु न्यसामि। ३१. ओम् दर्भेभ्यो नमः — केशेषु न्यसामि।

⊙ फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दें ⊙ दूसरा फूल ले ले १६. गुण न्यास करे—

१. ओम् धर्माय नमः — मूर्ध्नि न्यसामि। २. ओम् ज्ञानाय नमः — हृदि न्यसामि।

३. ओम् वैराग्याय नमः — गुह्ये न्यसामि। ४. ओम् ऐश्वर्याय नमः — पादयो र्न्यसामि।

⊙ फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दे

(७) कुछ लोग मन्त्र न्यास भी लिखते हैं, जो इस प्रकार हैं — १ पुष्प लेकर निम्न मन्त्रों से न्यास करे   १७. मन्त्रन्यास—

॥ १ ॥ ओम् अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देव मृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् । पादयो र्न्यसामि ।

॥ २ ॥ ओम् इषे त्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवोवः । सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावती रनमीवा अयक्ष्मा मावस्तेन ईशतमाघस ँ सो ध्रु्वा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि । गुल्फयो र्न्यसामि ।

॥ ३ ॥ ओम् अग्न आयाहिवीतये गृणानोहव्य दातये । निहोता सत्सि बर्हिषि । जङ्घयो र्न्यसामि ।

॥ ४ ॥ ओम् शन्नोदेवी रभिष्टय आपोभवन्तु पीतये । शंय्योरभिस्रवन्तु नः । जान्वो र्न्यसामि ।

॥ ५ ॥ ओम् सुपर्णोऽसि गरुत्माँ स्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर् बृहद् रथन्तरे पक्षो । स्तोमं आत्मा छन्दा ँ स्यङ्गानि यजू ँ षिनाम । सामते तनूर्वामदेव्यं यज्ञा यज्ञियं पुच्छं धिष्ण्या शफाः । सुपर्णेसि गरुत्मान् दिवंगच्छ स्वः पत । —ऊर्वो र्न्यसामि ।

टिप्पणी—पं० दौलतराम गौड़ की पुस्तक प्रभुप्रतिष्ठार्णव में ॥ ५ ॥ ओम् सुपर्णोऽसि के स्थान पर **ओम् एका च मे तिस्रश्चमे तिस्रश्चमे पंच चमे·· ···** ॥ ६ ॥ ओम् शतमिन्नुशरदो मन्त्र के स्थान पर **ओम् दीर्घायुस्त ओषधे खनितायस्मै चत्वाखनाम्यहम् अथोत्वन्दीर्ग्घायु र्भूत्वा शतवलशाविरोहात् ।** ॥ ७ ॥ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च के स्थान पर **ओम् विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहूरुत विश्वतस्पात् । सम्बाहूभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देवएकः ।** मन्त्र दिया गया है ॥

।। ६ ।। ओम् स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ।। —जठरे न्यसामि ।

।। ७ ।। ओम् शतमिन्नु शरदो अन्तिदेवायत्रानश्चक्रा जरसन्तनूनाम ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानोमध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ।। —हृदये न्यसामि ।

।। ८ ।। ओम् श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण ।। —कण्ठे न्यसामि ।

।। ९ ।। ओम् त्रातार मिन्द्रमवितार मिन्द्र ऽ हवे हवे सुहव ऽ शूर मिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूत मिन्द्र ऽ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ।। —वक्त्रे न्यसामि ।

।। १० ।। ओम् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।। —नेत्रयो र्न्यसामि ।

।। ११ ।। ओम् मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृत आजातमग्निम् ।
कवि ऽ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ।। —मूर्ध्नि न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दे

⊙ यजमान अपने दाहिने हाथ में जल ले ले ⊙ ब्राह्मण निम्न विनियोग पढ़े १८. जीवन्यास—

।। ओम् अस्य प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः ऋग् यजुः सामानि छन्दांसि चैतन्यं देवता प्राण प्रतिष्ठायां जीवन्यासे विनियोगः ।

⊙ यजमान हाथ का जल सामने भूमि पर छोड़ दे ⊙ १ फूल लेकर जीव न्यास करे—

।। १ ।। ओम् ब्रह्म-विष्णुरुद्र ऋषिभ्यो नमः — शिरसि न्यसामि ।
।। २ ।। ओम् ऋग्यजुः साम छन्दोभ्यो नमः — मुखे न्यसामि ।
।। ३ ।। ओम् प्राणाख्य देवतायै नमः — हृदये न्यसामि ।
।। ४ ।। ओम् आं बीजाय नमः — गुह्ये न्यसामि ।
।। ५ ।। ओम् क्रौं शक्त्यै नमः — पादयोः न्यसामि ।
।। ६ ।। ओम् कं खं गं घं ङं अं पृथिव्यप् तेजो वायु-आकाशा त्मने आं हृदयाय नमः ।
।। ७ ।। ओम् चं छं जं झं ञं इं शब्द स्पर्श रूप रस गन्धात्मने ईंम् शिरसे स्वाहा ।
।। ८ ।। ओम् टं ठं डं ढं णं उं श्रोत्रत्वक् चक्षुर्जिह्वा घ्राणात्मने ऊँ शिखायै वौषट् ।
।। ९ ।। ओम् तं थं दं धं नं एं वाक् पाणि पाद पायू पस्थात्मने ऐं कवचाय हुम् ।
।। १० ।। ओम् पं फं बं भं मं ओं वचनादान विहरणोत्सर्गा नन्दात्मने औं नेत्र त्रयाय वौषट् ।

।। ११ ।। ओम् यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं अं मनो बुद्धि अहंकार चित्तात्मने अः अस्त्राय फट् ।

।। १२ ।। ओम् आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्य देवस्य प्राण इह प्राणाः ।

।। १३ ।। ओम् आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्य देवस्य जीव इह स्थितः ।

।। १४ ।। ओम् आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्य देवस्य सर्वेन्द्रियाणि ।

।। १५ ।। ओम् आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्य देवस्य वाङ् मनः त्वक् चक्षुः श्रोत्र प्राण प्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

⊙ एक फूल लेकर प्रतिमा-मूर्त्ति का हृदय भाग को स्पर्श करे—

।। ओम् अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्व मर्चायै माम हेति च कश्चन् ।।

⊙ फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दे ⊙ एक फूल लेकर तत्वन्यास करे १९. तत्वन्यास—

१. ओम् मं जीवात्मने नमः ।
२. ओम् भं प्राणात्मने नमः । देवशरीरे व्यापकं न्यसामि ।
३. ओम् वं बुद्ध्यात्मने नमः ।

टिप्पणी—श्री प्रभु विद्याप्रतिष्ठार्णव में तत्वन्यास की विधि इस प्रकार लिखी है— स्वहृत् पद्मात् ऐश्वर्यम् तेजः पुंजं वाम नाड्या निसार्य ब्रह्मरन्ध्रेण प्रतिमाया बुद्धिः कर्मेन्द्रियाणि मनः सहितानि यथास्थानं हृत् पद्म प्रणवेन-पुरवं न्यसेत् ।

४. ओम् फं अहंकारात्मने नमः ।	५. ओम् पं मन-आत्मने नमः । हृदि न्यसामि ।		
६. ओम् नं शब्दतन्मात्रात्मने	नमः ।	शिरसि न्यसामि ।	
७. ओम् धं स्पर्शतन्मात्रात्मने	नमः ।	मुखे न्यसामि ।	
८. ओम् दं रूप तन्मात्रात्मने	नमः ।	हृदये न्यसामि ।	
९. ओम् थं रस तन्मात्रात्मने	नमः ।	हस्तयो र्न्यसामि ।	
१०. ओम् तं गन्ध तन्मात्रात्मने	नमः ।	पादयो र्न्यसामि ।	
११. ओम् णं श्रोत्रात्मने	नमः ।	श्रोत्रयो र्न्यसामि ।	
१२. ओम् ढं त्वगात्मने	नमः ।	त्वचि न्यसामि ।	
१३. ओम् डं चक्षुरात्मने	नमः ।	नेत्रयो र्न्यसामि ।	
१४. ओम् ठं जिह्वात्मने	नमः ।	जिह्वायां न्यसामि ।	
१५. ओम् टं घ्राणात्मने	नमः ।	घ्राणे न्यसामि ।	
१६. ओम् ञं वागात्मने	नमः ।	वाचि न्यसामि ।	
१७. ओम् झं पाण्यात्मने	नमः ।	पाण्यो र्न्यसामि ।	
१८. ओम् जं पादात्मने	नमः ।	पादयो र्न्यसामि ।	
१९. ओम् छं पाय्वात्मने	नमः ।	पायौ न्यसामि ।	
२०. ओम् चं उपस्थात्मने	नमः ।	उपस्थे न्यसामि ।	
२१. ओम् ङं पृथिव्यात्मने	नमः ।	पादयो र्न्यसामि ।	
२२. ओम् घं अबात्मने	नमः ।	वस्तौ न्यसामि ।	

२३. ओम् गं तेज-आत्मने नमः । हृदि न्यसामि ।
२४. ओम् खं प्राणात्मने नमः । घ्राणे न्यसामि
२५. ओम् कं आकाशात्मने नमः । शिरसि न्यसामि
२६. ओम् शं पुण्डरीकाक्षाय नमः । हृदि न्यसामि ।
२७. ओम् षं सूर्यांय मण्डलात्मने नमः । कण्ठे न्यसामि ।
२८. ओम् सं सोमात्मने नमः । स्तन मध्ये न्यसामि ।
२९. ओम् रं ध्रस्थात्मने नमः । स्तनयो र्न्यसामि ।
३०. ओम् वं वह्न्यात्मने नमः । हृत् पुण्डरीकमध्ये न्यसामि ।

⊙ एक दूसरा फूल लेकर देवमूर्त्ति में सर्व साक्षी भाव ध्यान करे—ब्राह्मण निम्न मन्त्र पढ़े—

।। ओम् यं सर्वात्मने नमः ।। ओम् गं सर्वात्मने नमः ।
।। ओम् पं पुरुषात्मने नमः ।। ओम् वं अनुग्रहात्मने नमः ।
।। ओम् सं सर्वात्मने नमः ।। ओम् लं सर्वसंहरणात्मने नमः ।
।। ओम् अं कोपात्मने नमः ।। ओम् तत् पुरुषात्मने नमः ।

⊙ इतना पढ़कर फूल देव मूर्त्तियो पर चढ़ा दे

टिप्पणी—पं० वायुनन्दन मिश्र ने प्रतिष्ठा महोदधि में तीन आहुति देकर तत्त्वत्रयन्यास करने को लिखा है अग्निपुराण में तत्त्वन्यास के बाद लिखी है इस पद्धति में अग्निपुराण के अनुसार ही तत्त्वत्रय होम प्रक्रिया लिखी है ।

⊙ एक दूसरा फूल लेकर देवमूर्त्तियों में त्रितत्त्वन्यास करे २०. त्रितत्त्वन्यास —

॥ १ ॥	ओम् आत्मतत्त्वाय नमः ।	पादयो र्न्यसामि ।
॥ २ ॥	ओम् विद्यातत्वाय नमः ।	हृदि न्यसामि ।
॥ ३ ॥	ओम् शिवतत्वाय नमः ।	शिरसि न्यसामि ।
॥ ४ ॥	ओम् पृथिवी तत्वात्मने नमः ।	पादयो र्न्यसामि ।
॥ ५ ॥	ओम् अप् तत्वात्मने नमः ।	वस्तौ न्यसामि ।
॥ ६ ॥	ओम् तेजस् तत्वात्मने नमः ।	हृदये न्यसामि ।
॥ ७ ॥	ओम् वायु तत्वात्मने नमः ।	घ्राणे न्यसामि ।
॥ ८ ॥	ओम् आकाश तत्वात्मने नमः ।	शिरसि न्यसामि ।
॥ ९ ॥	ओम् गन्ध तत्वात्मने नमः ।	पादयो र्न्यसामि ।
॥ १० ॥	ओम् रस तत्वात्मने नमः ।	शिरसि न्यसामि ।
॥ ११ ॥	ओम् घ्राण तत्वात्मने नमः ।	घ्राणे न्यसामि ।
॥ १२ ॥	ओम् जिह्वा तत्वात्मने नमः ।	जिह्वायां न्यसामि ।
॥ १३ ॥	ओम् चक्षुष तत्वात्मने नमः ।	चक्षुषो र्न्यसामि ।

॥ १४ ॥ ओम् त्वक् तत्वात्मने नमः। त्वचि न्यसामि।

॥ १५ ॥ ओम् श्रोत्र तत्वात्मने नमः। कर्णयो र्न्यसामि।

॥ १६ ॥ ओम् पायु तत्वात्मने नमः। पायौ न्यसामि।

॥ १७ ॥ ओम् उपस्थ तत्वात्मने नमः। उपस्थे न्यसामि।

॥ १८ ॥ ओम् हस्त तत्वात्मने नमः। हस्तयो र्न्यसामि।

॥ १९ ॥ ओम् पाद तत्वात्मने नमः। पादयो र्न्यसामि।

॥ २० ॥ ओम् वाक् तत्वात्मने नमः। वाचि न्यसामि।

॥ २१ ॥ ओम् मनस् तत्वात्मने नमः। मनसि न्यसामि।

॥ २२ ॥ ओम् बुद्धि तत्वात्मने नमः। बुद्धौ न्यसामि।

॥ २३ ॥ ओम् अहंकारात्मने नमः। अहंकारे न्यसामि।

॥ २४ ॥ ओम् सत्वाय नमः। ओम् रजसे नमः।

॥ २५ ॥ ओम् तमसे नमः। ओम् पुरुषतत्वाय नमः।

॥ २६ ॥ ओम् राग तत्वाय नमः — सर्वान् हृदये न्यसामि।

॥ २७ ॥ ओम् विद्यातत्वाय नमः। ओम् नीति तत्वाय नमः।

॥ २८ ॥ ओम् तर्क तत्वाय नमः । ओम् काल तत्वाय नमः ।
॥ २९ ॥ ओम् माया तत्वाय नमः । ओम् ईश्वर तत्वाय नमः ।
॥ ३० ॥ ओम् सदाशिव तत्वाय नमः । ओम् शक्ति तत्वाय नमः ।
॥ ३१ ॥ ओम् शिव तत्वाय नमः । —सर्वान् सर्वाङ्गे न्यसामि ।

॥ यहाँ तक का न्यास सभी देव मूर्तियों के लिए है ॥

टिप्पणी— १०. श्री प्रभुविद्या प्रतिष्ठार्णव के अनुसार जिस देव की मूर्त्ति हो उसके नाम में चतुर्थी विभक्ति लगा कर उस देवमूर्त्ति की भावना - ध्यान - न्यास करे जैसे—

॥ ओम् शिं शिवात्मने नमः । ओम् विं विष्ण्वात्मने नमः । ओम् रां रामात्मने नमः ॥

⊙ उक्त पुस्तक में मूल वाक्य इस प्रकार है—

ततः अर्चा बीजं स्वाभिमतं मूर्त्या स्वमंत्रेण संयोज्य विशेष बीजाद्यनुपलब्धौ तु देवतानाम्नः आद्य मक्षरं रसानुस्वारं चतुर्थ्यन्तं तत्तद् देवतानाम्ना संयोज्य वेवं भावयित्वा बीजं न्यसेत् ।

॥ शिवलिंग में विशेष न्यास ॥

⊙ शिवलिंग की प्रतिष्ठा में निम्नलिखित विशेष न्यास होता है।

⊙ एक फूल लेकर पहले मूल मन्त्र न्यास करे १. अंगन्यास—

॥ १ ॥ ओम् ॐ हृदये न्यसामि। ॥ २ ॥ ओम् नं शिरसि न्यसामि।
॥ ३ ॥ ओम् मं शिखायां न्यसामि। ॥ ४ ॥ ओम् शिं कवचे न्यसामि।
॥ ५ ॥ ओम् वां नेत्रयो न्यसामि। ॥ ६ ॥ ओम् यं अस्त्रे न्यसामि।

⊙ हाथ का फूल मूर्ति के सामने छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल लेकर न्यास करे २. आयुधन्यास—

॥ १ ॥ ओम् वज्राय नमः। शिरसि न्यसामि।
॥ २ ॥ ओम् शक्तये नमः। मस्तके न्यसामि।
॥ ३ ॥ ओम् दण्डाय नमः। दक्षिणभुजे न्यसामि।
॥ ४ ॥ ओम् खड्गाय नमः। वामभुजे न्यसामि।
॥ ५ ॥ ओम् पाशाय नमः। जठरे न्यसामि।
॥ ६ ॥ ओम् अंकुशाय नमः। पृष्ठे न्यसामि।
॥ ७ ॥ ओम् ध्वजाय नमः। नाभ्यां न्यसामि।
॥ ८ ॥ ओम् त्रिशूलाय नमः। लिङ्गे-वृषणे च न्यसामि।

॥ ९ ॥ ओम् चक्राय नमः । जङ्घयोर्जानुनोश्च न्यसामि ।

॥ १० ॥ ओम् पद्माय नमः । गुल्फयोः पादयोश्च न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दे ⊙ दूसरा फूल लेकर ३. शक्ति न्यास करे—

॥ १ ॥ ओम् वामायै नमः । ललाटे न्यसामि ।

॥ २ ॥ ओम् ज्येष्ठायै नमः । मुखे न्यसामि ।

॥ ३ ॥ ओम् रूद्राण्यै नमः । गुह्ये न्यसामि ।

॥ ४ ॥ ओम् काल्यै नमः । कण्ठे न्यसामि ।

॥ ५ ॥ ओम् कलविकरणायै नमः । दन्तेषु न्यसामि ।

॥ ६ ॥ ओम् बलायै नमः । हृदये न्यसामि ।

॥ ७ ॥ ओम् बलप्रमथनायै नमः । जठरे न्यसामि ।

॥ ८ ॥ ओम् सर्वभूतदमनायै नमः । नाभौ न्यसामि ।

॥ ९ ॥ ओम् उन्मनायै नमः । सर्वाङ्गेषु न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दे

⊙ दूसरा फूल लेकर ४. ब्रह्म न्यास करे—

॥ १ ॥	ओम् ईशानाय नमः।	अंगुष्ठयो र्न्यसामि।
॥ २ ॥	ओम् तत्पुरुषाय नमः।	तर्जन्यो र्न्यसामि।
॥ ३ ॥	ओम् अघोरेभ्यो नमः।	मध्यमयो र्न्यसामि।
॥ ४ ॥	ओम् वामदेवाय नमः।	अनामिकयो र्न्यसामि।
॥ ५ ॥	ओम् सद्योजाताय नमः।	कनिष्ठिकयो र्न्यसामि।
॥ ६ ॥	ओम् सद्योजाताय नमः।	हृदि न्यसामि।
॥ ७ ॥	ओम् वामदेवाय नमः।	शिरसि न्यसामि।
॥ ८ ॥	ओम् अघोराय नमः।	शिखायां न्यसामि।
॥ ९ ॥	ओम् तत्पुरुषाय नमः।	कवचे न्यसामि।
॥ १० ॥	ओम् ईशानाय नमः।	अस्त्रे न्यसामि।
॥ ११ ॥	ओम् हृदयाय नमः।	कनिष्ठिकयो र्न्यसामि।
॥ १२ ॥	ओम् शिरसे स्वाहा।	अनामिकयो र्न्यसामि।
॥ १३ ॥	ओम् शिखायै वषट्।	मध्यमयो र्न्यसामि।
॥ १४ ॥	ओम् कवचाय हुँ।	तर्जन्यो र्न्यसामि।
॥ १५ ॥	ओम् अस्त्राय फट्।	अंगुष्ठयो र्न्यसामि।

⊙ फूल मूर्तियों के सामने छोड़ दे

⊙ तीन बार आचमन करे ⊙ दोनों हाथों की मुट्ठी बांध ले ।। मन्त्र पढ़े—

।। ओम् ई शानः सर्वं विद्याना मीश्वरः सर्व भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो ऽ धिपति र्ब्रह्मा शिवोमेऽस्तु सदाशिवोऽम् ।

⊙ [1]दोनों हाथों के अंगूठों को बंधी मुट्ठी में से खोल ले और दोनों अगूठों से शिवलिंग का स्पर्श करे ।। मन्त्र पढ़े—

।। ओम् ईशानः सर्वंविद्यानामीश्वरः सर्वंभूतानां ब्रह्माधि पति र्ब्रह्मणोऽधि पति र्ब्रह्मा शिवोमेऽस्तु सदाशिवोऽम् । ईशानं मूर्ध्नि न्यसामि ।

⊙ दोनों अंगूठों से तर्जनी अंगुलियो को मिला ले ।। मन्त्र पढ़े--

।। ओम् तत् पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।। तत्पुरुषं मुखे न्यसामि ।

⊙ अंगूठों के साथ मध्यमा अंगुलियों को मिला ले ।। मन्त्र पढ़े—

।। ओम् अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तुरुद्ररूपेभ्यः ।।
अघोरं हृदि न्यसामि ।

टिप्पणी— [1]परेण तेजसा संयोज्य कवचेनाव गुण्ठ्य सर्व कर्मसु नियोजयेत् । लिंगमुद्रां वद्ध्वा ईशान नाम्नीमुष्टौं वध्नीयात् ।। —वाक्य के अनुसार यह न्यास करना चाहिए बंधी मुट्ठी की क्रमशः १-१ अंगुली खोल कर अंगूठे के साथ मिला कर शिवलिंग का स्पर्श करे ।

⊙ अंगूठे के साथ अनामिका अगुलियों को मिला लें--

॥ ओम् वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय ।
नमो रूद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो ॥

वल विकरणाय नमो वलाय नमो वल प्रमथनाय नमः ।
सर्व भूत दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ —वासुदेवं गुह्ये न्यसामि ॥

⊙ अंगूठों के साथ कनिष्ठिका अंगुलियों को मिला ले--

॥ ओम् सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।
भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥

—सद्योजातं पादादारभ्य मस्तकान्तं न्यसामि ॥

⊙ एक फूल लेकर शिवलिंग कलाओं का न्यास करे ५. कलान्यास—

॥ १ ॥ ओम् ईशानं सर्व विद्यानाम् नमः । ईशानीकलां उपरिमूर्ध्नि न्यसामि ।

॥ २ ॥ ओम् ईश्वरः सर्व भूतानाम् नमः । अभयदां कलां पूर्वमूर्ध्नि न्यसामि ।

॥ ३ ॥ ओम् ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा नमः । इष्टदां कलां दक्षिण मूर्ध्नि न्यसामि ।

॥ ४ ॥ ओम् शिवोमेऽस्तु नमः । मरीचीं कलां उत्तर मूर्ध्नि न्यसामि ।

॥ ५ ॥ ओम् सदाशिवोऽम् नमः । ज्वालिनीं कलां पश्चिम वक्त्रे न्यसामि ।

।। ६ ।। ओम् तत्पुरुषाय विद्महे नमः । पूर्व वक्त्रे शान्तिं न्यसामि ।
।। ७ ।। ओम् महादेवाय धीमहि नमः । दक्षिण वक्त्रे विद्यां न्यसामि ।
।। ८ ।। ओम् तन्नो रूद्रों नमः । उत्तर वक्त्रे प्रतिष्ठां न्यसामि ।
।। ९ ।। ओम् प्रचोदयात् नमः । पश्चिम वक्त्रे धृतिं न्यसामि ।
।। १० ।। ओम् अघोरेभ्यो नमः । तमां हृदये न्यसामि ।
।। ११ ।। ओम् अथघोरेभ्यो नमः । जरां उरसि न्यसामि ।
।। १२ ।। ओम् घोरेभ्यो नमः । सत्वां स्कन्धयो र्न्यसामि ।
।। १३ ।। ओम् घोरतरेभ्यो नमः । निद्रां नाभौ न्यसामि ।
।। १४ ।। ओम् सर्वेभ्यो नमः । सर्वव्याधिं कुक्षौ न्यसामि ।
।। १५ ।। ओम् सर्वशर्वेभ्यो नमः । मृत्युं पृष्ठे न्यसामि ।
।। १६ ।। ओम् नमस्तेऽस्तु नमः । क्षुधां वक्षसि न्यसामि ।
।। १७ ।। ओम् रुद्ररूपेभ्यो नमः । तृषां उरसि न्यसामि ।
।। १८ ।। ओम् वामदेवाय नमः । जरां गुह्ये न्यसामि ।
।। १९ ।। ओम् ज्येष्ठाय नमः । रक्षां लिङ्गे न्यसामि ।
।। २० ।। ओम् श्रेष्ठाय नमः । रतिं दक्षिणोरौ न्यसामि ।

॥ २१ ॥ ओम् रुद्राय नमः । पालिनीं वामोरौ न्यसामि ।

॥ २२ ॥ ओम् कालाय नमः । कलां दक्षिण जानौ न्यसामि ।

॥ २३ ॥ ओम् कलविकरणाय नमः । संजीवनीं वाम जानौ न्यसामि ।

॥ २४ ॥ ओम् वलविकरणाय नमः । धात्रीं दक्षिण जंघायां न्यसामि ।

॥ २५ ॥ ओम् वलाय नमः । वृद्धि वाम जंघायां न्यसामि ।

॥ २६ ॥ ओम् वलप्रमथनाय नमः । छायां क्रियां च क्रमेण दक्षिण वामस्फिचि न्यसामि ।

॥ २७ ॥ ओम् सर्वभूतदमाय नमः । भ्रामणीं कटिदेशे न्यसामि ।

॥ २८ ॥ ओम् मनो नमः । शोषणीं दक्षिण पार्श्वे न्यसामि ।

॥ २९ ॥ ओम् उन्मनाय नमः । ज्वरां वाम पार्श्वे न्यसामि ।

॥ ३० ॥ ओम् सद्योजातं प्रपद्यामि नमः । सिद्धि दक्षिण पादे न्यसामि ।

॥ ३१ ॥ ओम् सद्योजाताय वै नमो नमः । ऋद्धिं वामपादे न्यसामि ।

॥ ३२ ॥ ओम् भवे नमः । दितिं दक्षिण पाणौ न्यसामि ।

॥ ३३ ॥ ओम् अभवे नमः । लक्ष्मीं वामपाणौ न्यसामि ।

॥ ३४ ॥ ओम् नातिभवे नमः । मेधां नासायां न्यसामि ।

॥ ३५ ॥ ओम् भवस्व मां नमः । कान्तिं शिरसि न्यसामि ।

॥ ३६ ॥ ओम् भव नमः । स्वधां दक्षिण बाहौ न्यसामि ।
॥ ३७ ॥ ओम् उद्भवाय नमः । प्रमां वामबाहौ न्यसामि ।
॥ ३८ ॥ ओम् तमाद्याः सर्वाः कला अस्मिन् मूर्त्तौ विशन्तु ।

॥ ३९ ॥ ओम् हंसां हृदयाय नमः । ॥ ४० ॥ ओम् हंसीं शिरसे स्वाहा ।
॥ ४१ ॥ ओम् हंसूं शिखायै वषट् । ॥ ४२ ॥ ओम् हंसैं कवचाय हुम् ।
॥ ४३ ॥ ओम् हंस हंसेति नेत्रत्रयाय वौषट् । ॥ ४४ ॥ ओम् हंसः अस्त्राय फट् ।
॥ ४५ ॥ ओम् विद्यादेवं हंसं भावयामि ।

॥ इति शिव न्यास ॥

॥ पार्वती न्यास ॥

⊙ एक फूल लेकर पार्वती की मूर्त्ति में न्यास करे—

॥ १ ॥ ओम् घं गौर्य्यै नमः — हृदये न्यसामि । ॥ २ ॥ ओम् हं गौर्य्यै नमः — शिरसे स्वाहा ।
॥ ३ ॥ ओम् यं गौर्य्यै नमः — शिखायै वषट् । ॥ ४ ॥ ओम् भं गौर्य्यै नमः — कवचाय हुम् ।
॥ ५ ॥ ओम् फं गौर्य्यै नमः — नेत्राभ्यां वौषट् । ॥ ६ ॥ ओम् हं गौर्य्यै नमः — अस्त्राय फट् ।

॥ गणेश न्यास ॥

१. गणेश में मूलमन्त्र न्यास—

॥ १ ॥ ओम् वं भ्रूमध्ये न्यसामि । ॥ २ ॥ ओम् क्रं कण्ठे न्यसामि ।

॥ ३ ॥ ओम् तुं हृदये न्यसामि । ॥ ४ ॥ ओम् डां नाभौ न्यसामि ।

॥ ५ ॥ ओम् यं लिंगे न्यसामि । ॥ ६ ॥ ओम् हुं पादयो न्यसामि ।

२. गणेश आयुध न्यास—

॥ १ ॥ ओम् वीजपूराय नमः — शिरसि न्यसामि ।
॥ २ ॥ ओम् गदायै नमः — मस्तके न्यसामि ।
॥ ३ ॥ ओम् त्रिशूलाय नमः — दक्षिण भुजे न्यसामि ।
॥ ४ ॥ ओम् धनुषे नमः — वाम भुजे न्यसामि ।
॥ ५ ॥ ओम् चक्राय नमः — नाभ्यां न्यसामि ।
॥ ६ ॥ ओम् कमलाय नमः — जठरे न्यसामि ।
॥ ७ ॥ ओम् पाशाय नमः — पृष्ठे न्यसामि ।
॥ ८ ॥ ओम् उत्पलाय नमः — लिंगे-वृषजे च न्यसामि ।
॥ ९ ॥ ओम् बाणाय नमः — जंघे न्यसामि ।

॥ १० ॥ ओम् अंकुशाय नमः — जान्वो र्न्यसामि ।

॥ ११ ॥ ओम् विषणाय नमः — गुल्फयो र्न्यसामि ।

॥ १२ ॥ ओम् रत्न कलशाय नमः — पादयो र्न्यसामि ।

१. गणेश शक्ति न्यास—

॥ १ ॥ ओम् तीव्रायै नमः — ललाटे न्यसामि ।

॥ २ ॥ ओम् ज्वालिन्यै नमः — मुखे न्यसामि ।

॥ ३ ॥ ओम् नन्दायै नमः — गुह्ये न्यसामि ।

॥ ४ ॥ ओम् गदायै नमः — कण्ठे न्यसामि ।

॥ ५ ॥ ओम् कामरुपिण्यै नमः — दन्तेषु न्यसामि ।

॥ ६ ॥ ओम् उग्रायै नमः — हृदये न्यसामि ।

॥ ७ ॥ ओम् तेजोवत्यै नमः — नाभौ न्यसामि ।

॥ ८ ॥ ओम् सत्यायै नमः — उदरे न्यसामि ।

॥ ९ ॥ ओम् सर्व विघ्न विनाशायै नमः — सर्वाङ्गेषु न्यसामि ।

४. गणेश अंग न्यास—

॥ १ ॥ ओम् श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं षट् बीजस्य गां हृदयाय नमः ।

॥ २ ॥ ओम् श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं षट् बीजस्य गीं शिरसे स्वाहा ।

॥ ३ ॥ ओम् श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं षट् बीजस्य गूं शिखायै वषट् ।

॥ ४ ॥ ओम् श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं षट् बीजस्य गैं कवचाय हुम् ।

॥ ५ ॥ ओम् श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं षट् बीजस्य गौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

॥ ६ ॥ ओम् श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं षट् बीजस्य गः अस्त्राय फट् ।

॥ इति गणेश न्यास ॥

॥ विष्णु मूर्ति में विशेष न्यास ॥

[विष्णु की मूर्ति में निम्नलिखित विशेष न्यास करे]

⊙ एक फूल लेकर विष्णु की मूर्ति में आयुध न्यास करे १. आयुध न्यास—

१. ओम् खड्गाय नमः — शिरसि न्यसामि । २. ओम् शार्ङ्गाय नमः – मस्तके न्यासामि ।

३. ओम् मुसलाय नमः — दक्षिण भुजे न्यासामि । ४. ओम् हलाय नमः — वामभुजे न्यासामि ।

५. ओम् चक्राय नमः — नाभि जठर पृष्ठेषु न्यसामि ।

६. ओम् शंखाय नमः — लिंगे-वृषणवेशे न्यसामि ।

७. ओम् गदायै नमः — जंघयोर्जानुनोश्च न्यसामि ।

८. ओम् पद्माय नमः — गुल्फयोः पादयोश्च न्यसामि ।

⊙ फूल मूर्ति के सामने छोड़ दे

⊙ एक दूसरा फूल लेकर विष्णु मूर्त्ति में अंग न्यास करे । २. अंग न्यास—

१. ओम् हृदयाय नमः — हृदये न्यासामि ।

२. ओम् शिरसे स्वाहा — शिरसि न्यसामि ।

३. ओम् शिखायै वषट् — शिखायां न्यसामि ।

४. ओम् कवचाय हुम् — सर्वाङ्गेषु न्यसामि ।

५. ओम् नेत्रत्रयाय वौषट् — नेत्रयो न्यंसामि ।

६. ओम् अस्त्राय फट् — करयो न्यंसामि ।

७. ओम् नमः — हृदये न्यसामि ।

८. ओम् नं नमः — शिरसि न्यसामि ।

९. ओम् भगवते नमः—शिखायां न्यसामि ।

१०. ओम् वासुदेवाय नमः — कवचे न्यसामि ।

११. ओम् नमो भगवते वासुदेवाय — अस्त्रं न्यसामि ।

१२. ओम् वत्साय नमः — दक्षिणवामस्तनयो न्यंसामि ।

१३. ओम् कौस्तुभाय नमः — उरसि न्यसामि। १४. ओम् वनमालायै नमः — कण्ठे न्यसामि।

१५. ओम नमः — पादयो र्न्यसामि। १६. ओम् नं नमः — जानुनो र्न्यसामि।

१७. ओम् मां नमः — गुह्ये न्यसामि। १८. ओम् भं नमः — नाभ्यां न्यसामि।

१९. ओम् गं नमः — हृदये न्यसामि। २०. ओम् वं नमः — कण्ठे न्यसामि।

२१. ओम् तें नमः — मुखे न्यसामि। २२. ओम् वां नमः — नेत्रयो र्न्यसामि।

२३. ओम् सुं नमः — भाले न्यसामि। २४. ओम् वें नमः — मूर्ध्नि न्यसामि।

२५. ओम् वां नमः — दक्षिण पार्श्वे न्यसामि। २६. ओम् यं नमः — वाम पार्श्वे न्यसामि।

⊙ एक दूसरा फूल लेकर द्वादशाक्षर मंत्र न्यास करे। ३. द्वादशाक्षर मंत्र न्यास—

१. ओम् कें केशवाय नमः — शिरसि न्यसामि। २. ओम् नं नाराणाय नमः — मुखे न्यसामि।

३. ओम् मों माधवाय नमः — ग्रीवायां न्यसामि। ४. ओमं भं गोविन्दाय नमः — कण्ठे न्यसामि।

५. ओम् गं विष्णवे नमः — पृष्ठे न्यसामि। ६. ओमं वं मधुसूदनाय नमः — कुक्षौ न्यसामि।

७. ओम् तें त्रिविक्रमाय नमः— कटि देशे न्यसामि। ८. ओम् वां वामनाय नमः — जंघयो र्न्यसामि।

९. ओम् सुं श्रीधराय नमः — वामगुल्फे न्यसामि।

१०. ओम् वें हृषीकेशाय नमः — दक्षिण गुल्फे न्यसामि।

११. ओम् वां पद्म नाभाय नमः — वामपावे न्यसामि ।

१२. ओम् यं दामोदराय नमः — दक्षिण पावे न्यसामि ।

⊙ हाथ का फूल मूर्त्ति के सामने छोड़ दे—

⊙ एक दूसरा फूल लेकर विष्णु में अष्टांग मंत्रों का न्यास करे । ४. अष्टांग मंत्र न्यास—

१. ओम् हुं हृदयाय नमः — हृदये न्यसामि ।

२. ओम् विष्णवे नमः — शिरसि न्यसामि ।

३. ओम् ब्रह्मणे नमः — शिखायां न्यसामि ।

४. ओम् प्रभुवाय नमः — कवचे न्यसामि ।

५. ओम् चक्रिणे नमः — अस्त्राय फट् अस्त्र हस्तयो र्न्यसामि ।

६. ओम् नमः शम्भवाय—गायत्रीम् — दक्षिण नेत्रे न्यसामि ।

७. ओम् विजयाय नमः—सावित्रीम् — वामनेत्रे न्यसामि ।

८. ओम् चक्र शूलाय नमः—पिंगलास्त्रम् — दिक्षु न्यसामि ।

⊙ हाथ का फूल मूर्त्ति के सामने छोड़ दे—

⊙ एक दूसरा फूल लेकर पुरुष सूक्तों का न्यास करे। ५. पुरुष सूक्त न्यास—

१. सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमि ঌ सर्वतस्पृत्वा स्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम् । —पादयो र्न्यसामि ।

२. पुरुषऽएवेद ঌ सर्वम् यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उता मृतत्व स्येशानों यदन्ने नाति रोहति । —जंघयो र्न्यसामि ।

३. एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि । —जान्वो र्न्यसामि ।

४. त्रिपा दूर्ध्वं ऽउदैत् पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशना नशनेऽअभि । —ऊर्वो र्न्यसामि ।

५. ततोविराड जायत विराजोअधिपुरुषः ।
सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः । —वृषणे न्यसामि ।

६. तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशंस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये । —कट्यामथवा कण्ठ्यो र्न्यसामि ।

७. तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दा ꣳ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मा दजायत । —नाभौ न्यसामि ।

८. तस्मा दश्वाऽअजायन्त येके चो भयादतः ।
गावोहि जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः । —हृदि न्यसामि ।

९. तं यज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुञ्जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्याऽऋषयश्चये । —स्तनयो र्न्यसामि ।

१०. यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते । —बाहू वो र्न्यसामि ।

११. ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ꣳ शूद्रोऽअजायत । —मुखे न्यसामि ।

१२. चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत ।
श्रोता द्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत । —चक्षुषो र्न्यसामि ।

१३. नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकां २ ऽअकल्पयन् । —कर्णयो र्न्यसामि ।

१४ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत।
वसन्तोस्यासी दाज्यङ् ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः। —भ्रुवो र्न्यसामि।

१५. सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञन् तन्वाना अवध्नन्पुरुषम्पशुम्। —माले न्यसामि।

१६. यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह् नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः। —शिरसि न्यसामि।

⊙ हाथ का फूल मूर्त्ति के सामने छोड़ दे—

⊙ एक दूसरा फूल लेकर उत्तर नारायण न्यास करे। ६. उत्तर नारायण न्यास—

१ ओम् अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे।
तस्यत्वष्टा विदध द्रूपमेतितन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे। —हृदये न्यसामि।

२. ओम् वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णम् तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। —शिरसि न्यसामि।

३. ओम् प्रजापतिश्चरतिगर्भे अन्तर जायमानो वहुधा विजायते।
तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास् तस्मिन् हतस्थु र्भुवनानि विश्वा। —शिखायां न्यसामि।

४. ओम् यो देवेभ्यः आतपति यो देवानां पुरोहितः।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये। —कवचे न्यसामि।

५. ओम् रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन्।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन् वशे। — नेत्रयो र्न्यसामि।

६. ओम् श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन् निषाणा मुं मइषाण सर्वलोकं म इषाण। —अस्त्रं न्यसामि।

⊙ हाथ का फूल मूर्त्ति के सामने छोड़ दे।

⊙ हाथ में एक फूल लेकर न्यास करे ७. मूलमंत्र न्यास—

१. ओम् धर्माय नमः — मूर्ध्नि न्यसामि।
२. ओम् ज्ञानाय नमः — हृदये न्यसामि।
३. ओम् वैराग्याय नमः — गुह्ये न्यसामि।
४. ओम् ऐश्वर्याय नमः — पादयोः न्यसामि।

⊙ हाथ का फूल मूर्त्ति के सामने छोड़ दे—

⊙ एक दूसरा फूल लेकर शक्ति न्यास करें। ८. शक्ति न्यास—

१. ओम् लक्ष्म्यै नमः — ललाटे न्यसामि। २. ओम् सरस्वत्यै नमः — मुखे न्यसामि।
३. ओम् रत्यै नमः — गुह्ये न्यसामि। ४. ओम् प्रीत्यै नमः — कण्ठे न्यसामि।
५. ओम् कीर्त्यै नमः — दिक्षु विदिक्षु च न्यसामि।
६. ओम् शान्त्यै नमः — हृदि न्यसामि।
७. ओम् तुष्ट्यै नमः — जठरे न्यसामि।
८. ओम् पुष्ट्यै नमः — सर्वत्र न्यसामि।

⊙ हाथ का फूल मूर्त्ति के सामने छोड़ दे—

⊙ एक फूल लेकर लक्ष्मी मूर्त्ति में न्यास करे ९. लक्ष्मी न्यास—

१. ओम् घं लक्ष्म्यै नमः — हृदये न्यसामि। २. ओम् हं लक्ष्म्यै नमः — शिरसे स्वाहा।
३. ओम् यं लक्ष्म्यै नमः — शिखायै वषट्। ४. ओम् भं लक्ष्म्यै नमः — कवचाय हुम्।
५. ओम् फं लक्ष्म्यै नमः — नेत्राभ्यां वौषट्। ६. ओम् हुं लक्ष्म्यै नमः — अस्त्राय फट्।
७. ओम् ह्लां श्रीं ह्लां क्षः परब्रह्माण्यै सर्वाधारायै नमः।
८. ओम् ह्लां श्रीं ह्लीं दिव्य तेजो धारिण्यै सुभगायै नमः।

॥ देवी मूर्ति में विशेष न्यास ॥

⊙ १ फूल लेकर देवी मूर्ति का स्पर्श करे : निवृत्ति न्यास करे   १. निवृत्ति न्यास—

१. ओम् ह्लीम् अं निवृत्त्यै नमः — शिरसि न्यसामि ।

२. ओम् ह्लीम् आं प्रतिष्ठायै नमः — मुखे न्यसामि ।

३. ओम् ह्लीम् इं विद्यायै नमः — दक्षिण नेत्रे न्यसामि ।

४. ओम् ह्लीम् ईम् शान्त्यै नमः — वाम नेत्रे न्यसामि ।

५. ओम् ह्लीम् उं धुन्धिकायै नमः — दक्षिण श्रोत्रे न्यसामि ।

६. ओम् ह्लीम् ऊं दीपिकायै नमः — वाम श्रोत्रे न्यसामि ।

७. ओम् ह्लीम् ऋं रेचिकायै नमः — दक्षिण नासापुरे न्यसामि ।

८. ओम् ह्लीम् ॠं मोचिकायै नमः — वाम नासापुरे न्यसामि ।

९. ओम् ह्लीम् ऌं परायै नमः — दक्षिण कपोले न्यसामि ।

१०. ओम् ह्लीम् ॡं सूक्ष्मायै नमः — वाम कपोले न्यसामि ।

११. ओम् ह्लीम् एं सूक्ष्मामृतायै नमः — ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ न्यसामि ।

१२. ओम् ह्लीम् ऐं ज्ञानामृतायै नमः — अधो दन्तपङ्क्तौ न्यसामि ।

१३. ओम् ह्लीम् ओम् सावित्र्यै नमः — ऊर्ध्व-ओष्ठे न्यसामि।
१४. ओम् ह्लीम् ओम् व्याविन्यै नमः — अधरोष्ठे न्यसामि।
१५. ओम् ह्लीम् अं सुरूपायै नमः — जिह्वायां न्यसामि।
१६. ओम् ह्लीम् अः अनन्तायै नमः — कण्ठे न्यसामि।
१७. ओम् ह्लीम् कं सृष्ट्यै नमः — दक्षिण बाहुमूले न्यसामि।
१८. ओम् ह्लीम् खं ऋद्ध्यै नमः — दक्ष कूर्परे न्यसामि।
१९. ओम् ह्लीम् गं स्मृत्यै नमः — दक्ष मणिबन्धे न्यसामि।
२०. ओम् ह्लीम् घं मेधायै नमः — दक्ष करांगुलि मूलेषु न्यसामि।
२१. ओम् ह्लीम् ङं कान्त्यै नमः — दशांगुलि-अग्रेषु न्यसामि।
२२. ओम् ह्लीम् चं लक्ष्म्यै नमः — वाम बाहुमूले न्यसामि।
२३. ओम् ह्लीम् छं द्युत्यै नमः — वाम कूर्परे न्यसामि।
२४. ओम् ह्लीम् जं स्थिरायै नमः — वाम मणिबन्धे न्यसामि।
२५. ओम् ह्लीम् झं स्थिरायै नमः — वामाङ्गुलि मूलेषु न्यसामि।
२६. ओम् ह्लीम् ञं सिद्ध्यै नमः — वामाङ्गुलि-अग्रेषु न्यसामि।
२७. ओम् ह्लीम् टं जरायै नमः — वक्षपादमूले न्यसामि।

२८. ओम् ह्रीम् ठं पालिन्यै नमः — वक्ष जानुनि न्यसामि ।

२९. ओम् ह्रीम् डं शान्त्यै नमः — वक्ष गुल्फे न्यसामि ।

३०. ओम् ह्रीम् ढं ऐश्वर्यै नमः — वक्ष पादाङ्गुलीषु न्यसामि ।

३१. ओम् ह्रीम् णं रत्यै नमः — वाम पादमूले न्यसामि ।

३२. ओम् ह्रीम् तं कामिन्यै नमः — दक्ष पादमूले न्यसामि ।

३३. ओम् ह्रीम् थं रदायै नमः — वाम जानुनि न्यसामि ।

३४. ओम् ह्रीम् दं ह्लादिन्यै नमः — वाम गुल्फे न्यसामि ।

३५. ओम् ह्रीम् धं प्रीत्यै नमः — वाम पादाङ्गुलिमूलेषु न्यसामि ।

३६. ओम् ह्रीम् नं दीर्घायै नमः — वाम पादाङ्गुलि-अग्रेषु न्यसामि ।

३७. ओम् ह्रीम् पं तीक्ष्णायै नमः — दक्षिण कुक्षौ न्यसामि ।

३८. ओम् ह्रीम् फं सुप्त्यै नमः — वाम कुक्षौ न्यसामि ।

३९. ओम् ह्रीम् बं अभयायै नमः — पृष्ठे न्यसामि ।

४०. ओम् ह्रीम् भं निद्रायै नमः — नाभौ न्यसामि ।

४१. ओम् ह्रीम् मं मात्रे नमः — उदरे न्यसामि ।

४२. ओम् ह्रीम् यं शुद्धायै नमः — हृदि न्यसामि ।

४३. ओम् ह्लीम् रं क्रोधिन्यै नमः — कण्ठे न्यसामि ।

४४. ओम् ह्लीम् लं कृपायै नमः — ककुदि न्यसामि ।

४५. ओम् ह्लीम् वं उल्कायै नमः — स्कन्धयो न्यसामि ।

४६. ओम् ह्लीम् शं मृत्यवे नमः — दक्षिण करे न्यसामि ।

४७. ओम् ह्लीम् षं पीतायै नमः — वाम करे न्यसामि ।

४८. ओम् ह्लीम् सं श्वेतायै नमः — दक्षिण पादे न्यसामि ।

४९. ओम् ह्लीम् हं अरूणायै नमः — वाम पादे न्यसामि ।

५०. ओम् ह्लीम् त्रं असितायै नमः — मूर्द्धादि पादान्तें न्यसामि ।

५१. ओम् ह्लीम् क्षं सर्वसिद्धिगौर्यै नमः — पादादि मूर्द्धान्तं न्यसामि ।

⊙ हाथ का फूल देवी मूर्त्ति के सामने छोड़ दे ।

⊙ एक दूसरा फूल लेकर देवी मूर्त्ति में वशिन्यादि न्यास करे । २. वशिन्यादि न्यास—

१. ओम् अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः क्लूं वासिनी वाग्देवतायै नमः — ब्रह्मरन्ध्रे न्यसामि ।

२. ओम् कं खं गं घं ङं क्लीं ह्लीम् कामेश्वरी वाग्देवतायैश्वर्यै नमः — ललाटे न्यसामि ।

३. ओम् चं छं जं झं ञं क्लीं मेदिनी वाग्देवतायै नमः — भ्रूमध्ये न्यसामि ।

४. ओम् टं ठं डं ढं णं हल्यूं विमला वाग्देवतायै नमः — कण्ठे न्यसामि ।

५. ओम् तं थं दं धं नं ज्म्रीम् अरुणा वाग्देवतायै नमः — हृदि न्यसामि ।

६. ओम् पं फं बं भं मं हस्ल ब्ल्यूं जयनी वाग्देवतायै नमः — नाभौ न्यसामि ।

७. ओम् यं रं लं वं हस ल्व्यूं सर्वेश्वरी वाग्देवतायै नमः — आधारे न्यसामि ।

८. ओम् शं षं सं हं क्षं क्ष्म्रीम् कौलिनी वाग्देवतायै नमः — सर्वाङ्गे न्यसामि ।

⊙ हाथ का फूल देवी मूर्त्ति के सामने छोड़ दे

⊙ एक फूल लेकर देवी मूर्त्ति में आयुध न्यास करे । ३. आयुध न्यास—

१. ओम् त्रिशूलाय नमः — शिरसि न्यसामि ।

२. ओम् खड्गाय नमः — मस्तके न्यसामि ।

३. ओम् चक्राय नमः — दक्षभुजे न्यसामि ।

४. ओम् बाणाय नमः — वामभुजे न्यसामि ।

५. ओम् शक्तये नमः — नाभौ न्यसामि ।

६. ओम् खेटकाय नमः — गुह्ये न्यसामि ।

७. ओम् चापाय नमः — जंघयो र्न्यसामि ।

८. ओम् पाशाय नमः — जानुनो र्न्यसामि ।

९. ओम् अङ्कुशाय नमः — गुल्फयोर् न्यसामि ।

१०. ओम् परशवे नमः — पादयो र्न्यसामि ।

⊙ फूल देवी मूर्त्ति के सामने छोड़ दे

⊙ एक फूल लेकर देवी मूर्त्ति में शक्ति न्यास करे। ४. शक्ति न्यास—

१. ओम् प्रभायै नमः — ललाटे न्यसामि। २. ओम् उमायै नमः — मुखे न्यसामि।
३. ओम् जयायै नमः — गुह्ये न्यसामि। ४. ओम् सूक्ष्म्यै नमः — कण्ठे न्यसामि।
५. ओम् विशुद्धायै नमः — दन्तेषु न्यसामि। ६. ओम् नन्दिन्यै नमः — हृदये न्यसामि।
७. ओम् सुप्रभायै नमः — नाभौ न्यसामि। ८. ओम् विजयायै नमः — उदरे न्यसामि।
९. ओम् सर्व सिद्धि प्रदायिन्यै नमः — सर्वाङ्गेषु न्यसामि।

⊙ फूल देवी मूर्त्ति के सामने छोड़ दे

⊙ एक दूसरा फूल लेकर देवी मूर्त्ति में अंग न्यास करे। ५. अंग न्यास—

१. ओम् ह्रीम दुर्गायै नमः — हृदयाय नमः।
२. ओम् ह्रीम् दुर्गायै नमः — शिरसे स्वाहा।
३. ओम् ह्रूम् दुर्गायै नमः — शिखायै वषट्।
४. ओम् ह्वैम् दुर्गायै नमः — कवचाय हुम्।
५. ओम् ह्रौम् दुर्गायै नमः — नेत्र त्रयाय वौषट्।
६. ओम् ह्रः दुर्गायै नमः — अस्त्राय फट्।

⊙ फूल देवी मूर्त्ति के सामने छोड़ दे

⊙ एक दूसरा फूल लेकर देवी मूर्त्ति में मूल मन्त्र न्यास करे। ६. मूल मन्त्र न्यास—

१. ओम् मूर्ध्नि न्यसामि। २. ओम् ऐम् मुखे न्यसामि।
३. ओम् ह्रीम् कण्ठे न्यसामि। ४. ओम् क्लीम् हृदि न्यसामि।
५. ओम् चां दक्षिण पार्श्वे न्यसामि। ६. ओम् मुं वाम पार्श्वे न्यसामि।
७. ओम् डां नाभौ न्यसामि। ८. ओम् यैम् गुह्ये न्यसामि।
९. ओम् विं गुल्फयो न्यसामि। १०. ओम् च्चें पादयो न्यसामि।

॥ इति देवी विशेष न्यास ॥

॥ सूर्य मूर्त्ति में विशेष न्यास ॥

⊙ १. सूर्य मूल मन्त्र न्यास—

१. ओम् ओस्इति पादयो न्यसामि। २. ओम् नं जान्वो न्यसामि।
३. ओम् मों गुह्ये न्यसामि। ४. ओम् भं नाभौ न्यसामि।
५. ओम् गं हृदये न्यसामि। ६. ओम् वं कण्ठे न्यसामि।
७. ओम् तें मुखे न्यसामि। ८, ओम् सूर् नेत्रयो न्यसामि।
९. ओम् याम् भाले न्यसामि। १०. ओम् यम् मूर्ध्नि न्यसामि।
११, ओम् नं दक्षिण पार्श्वे न्यसामि। १२. ओम् मं वाम पार्श्वे न्यसामि।

⊙ २. सूर्य आयुध न्यास (शिवजी की तरह)—

१. ओम् वज्राय नमः — शिरसि न्यसामि । २. ओम् शक्तये नमः — मस्तके न्यसामि ।
३. ओम् दण्डाय नमः — दक्षिण भुजे न्यसामि । ४. ओम् खड्गाय नमः — वामभुजे न्यसामि ।
५. ओम् पाशाय नमः — जठरे न्यसामि । ६. ओम् अंकुशाय नमः — पृष्ठे न्यसामि ।
७. ओम् ध्वजाय नमः — नाभ्याम् न्यसामि ।
८. ओम् त्रिशूलाय नमः — लिंगे-वृषणे च न्यसामि ।
९. ओम् चक्राय नमः — जंघयोर्जानुनो च न्यसामि ।
१०. ओम् पद्माय नमः — गुल्फयोः पादयोश्च न्यसामि ।

⊙ ३. सूर्य शक्ति न्यास—

१. ओम् दीप्तायै नमः — ललाटे न्यसामि । २. ओम् सूक्ष्मायै नमः — मुखे न्यसामि ।
३. ओम् विजयायै नमः — गुह्ये न्यसामि । ४. ओम् भद्रायै नमः — कण्ठे न्यसामि ।
५. ओम् आविर्भूतायै नमः — दन्तपंक्तिषु न्यसामि । ६. ओम् विमलायै नमः — हृदये न्यसामि ।
७. ओम् अघोरायै नमः — नाभौ न्यसामि । ८. ओम् विद्युतायै नमः — उदरे न्यसामि ।
९. ओम् सर्वतो मुख्यै नमः — सर्वाङ्गेषु न्यसामि ।

⊙ ४. सूर्य अंग न्यास—

१. ओम् सत्याय नमो घृणये सूर्याय विव्याय ब्रह्मणे शिरसे स्वाहा ।
२. ओम् नमः सूर्या वित्याय विष्णवे शिखायै वषट् ।
३. ओम् नमो घृणये सूर्याय-आदित्याय रुद्राय कवचाय हुम् ।
४. ओम् नमो घृणये सूर्याय-आवित्याय अग्नये नेत्र त्रयाय वौषट् ।

⊙ ५. सूर्य गायत्री न्यास—

१. ओम् तत् पादांगुष्ठयो र्न्यसामि ।
२. ओम् सं गुल्फयो र्न्यसामि ।
३. ओम् विं जंघयो र्न्यसामि ।
४. ओम् तुं जान्यो र्न्यसामि ।
५. ओम् वर्म् ऊर्वो र्न्यसामि ।
६. ओम् रेम् गुदे न्यसामि ।
७. ओम् णिम् वृषणे न्यसामि ।
८. ओम् यम् कण्ठे न्यसामि ।
९. ओम् भम् नाभौ न्यसामि ।
१०. ओम् र्गोम् जठरे न्यसामि ।
११. ओम् देम् स्तनयो र्न्यसामि ।
१२, ओम् वं हृदि न्यसामि ।
१३. ओम् स्यम् कण्ठे न्यसामि ।
१४. ओम् धीम् वक्त्रे न्यसामि ।
१५. ओम् मं तालुदेशे न्यसामि ।
१६. ओम् हिम् नासिकाग्रे न्यसामि ।
१७. ओम् धिम् चक्षुषो र्न्यसामि ।
१८. ओम् योम् भ्रू मध्ये न्यसामि ।

१९. ओम् योम् ललाटे न्यसामि।
२०. ओम् नः इति पूर्वे न्यसामि।
२१. ओम् प्रम् दक्षिणे न्यसामि।
२२. ओम् चोम् पश्चिमे न्यसामि।
२३. ओम् दम् उत्तरे न्यसामि।
२४. ओम् याम् मूर्ध्नि न्यसामि।
२५. ओम् त् इति सर्वत्र न्यसामि।
२६. ओम् तत् सवितुर्हृदि न्यसामि।
२७ ओम् वरेण्यम् शिरसि न्यसामि।
२८. ओम् भर्गो देवस्य धीमहि कवचे न्यसामि।
२९. ओम् धियो योनः नेत्रयो र्न्यसामि।
३०. ओम् प्रचोदयादिति अस्त्रे न्यसामि।

॥ नृसिंह मूर्ति में विशेष ॥

⊙ नृसिंह भगवान की मूर्ति में हृदयादि न्यास नहीं होता केवल षडंग न्यास करना चाहिए। षडंग न्यास के लिए भी केवल एक ही मन्त्र है, यही मन्त्र हर बार पढ़े—

१. ओम् नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा—हृदयाय नमः — हृदये न्यसामि।
२. ओम् नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा—शिरसे स्वाहा। शिरसि न्यसामि।
३. ओम् नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा—शिखायै वषट्। शिखायां न्यसामि।
४. ओम् नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा—कवचाय हुम्। सर्वाङ्गेषु न्यसामि।
५. ओम् नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा—नेत्र त्रयाय वौषट्। नेत्रयो र्न्यसामि।
६. ओम् नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा—अस्त्राय फट्। करयो र्न्यसामि।

⊙ ऊपर लिखे के अनुसार न्यास कर नृसिंह भगवान के लिए बलि प्रदान करे।

॥ आहुति ॥

⊙ न्यास कर्म समाप्त कर हवन वेदी के समीप आकर बैठे ⊙ आचमन— प्राणायाम करे ⊙ निम्न मन्त्रों से घी की आहुति दे—

॥ १ ॥ ओम् आत्म तत्त्वाय स्वाहा ।
॥ २ ॥ ओम् आत्म तत्त्वाधिपतये ब्रह्मणे स्वाहा ।
॥ ३ ॥ ओम् विद्या तत्त्वाय स्वाहा ।
॥ ४ ॥ ओम् विद्या तत्त्वाधिपतये विष्णवे स्वाहा ।
॥ ५ ॥ ओम् शिव तत्त्वाय स्वाहा ।
॥ ६ ॥ ओम् शिव तत्त्वाधिपतये रुद्राय स्वाहा ।

॥ १ ॥ ओम् शं नो वातः पवता ७ शं नस्तपतु सूर्यः ।
शं नः कनिक्क्रद् देवः पर्जन्यो ऽ अभिवर्षंतु ॥ स्वाहा ।

॥ २ ॥ ओम् शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन इन्द्रा वरूणा रातहव्या ।
शं न इन्द्रा पूषणा वाजसौता शमिन्द्रा सोमा सुविताय शं योः ॥ स्वाहा ।

॥ ३ ॥ ओम् शं नो देवी रभीष्टय आप भवन्तु पीतये । शं यो रभि स्रवन्तु नः ॥ स्वाहा ।

॥ ४ ॥ ओम् शि वो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तुमा माहि ७ सीः ।
निबर्तयाम्यायुषे नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ स्वाहा ।

॥ ५ ॥ ओम् त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम् । उर्वारूकमिव वन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमामृ तात् ॥ स्वाहा ।

॥ ६ ॥ ओम् इदं विष्णु विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् । समूढ़ मस्य पा ७ सुरे ॥ स्वाहा ।

टिप्पणी ⊙ जिस देवता की मूर्त्ति हो उसके नाम से ८ आहुति दे ।

⊙ यजमान हाथ में जल लेकर कहे—

।। ओम् गोत्रः ·····नामाऽहम् करिष्यमाण देव प्रतिष्ठा कर्मणि होमकृतः निवेदयामि ।।

⊙ हाथ का जल वेदी के सामने छोड़ दे ।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

।। ओम् यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन ।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।

⊙ फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दे ⊙ देव मूर्त्तियों को प्रणाम करे ।

⊙ अपने आसन के नीचे जल छोड़कर उस जल को माथ लगाले ।

⊙ मंडप से उठकर मन्दिर [प्रासाद] में जाय ।

⊙ मन्दिर के ऊपर के शिखर कलश तथा मन्दिर प्रासाद का अधिवासन-पूजन आदि करे ।

टिप्पणी ⊙ कुछ पद्धतिकारों ने द्वादश चक्र (आरा) बनाकर पूजनादि करने को लिखा है, यह विधि परिशिष्ट में दी जा रही है, जो करना चाहें, तदनुसार करें ।

॥ प्रासाद-शिखर कलश पूजन ॥

⊙ देव न्यास तथा आहुति के बाद प्रासाद [मन्दिर] भूमि-दीवार एवं शिखर कलश (मंदिर के ऊपर जो कलश लगता है) का अधिवासन-पूजन करे

⊙ मंडप से उठकर यजमान (पत्नी सहित) मंदिर में आए

⊙ यदि मंदिर के प्रांगण अथवा दालान आदि परिसर में ही वेदी आदि बनायी गयी है (अलग से मंडप नहीं बना है) तो उसी स्थल पर अथवा थोड़ा हट कर अलग यह संस्कार करे

⊙ यजमान पूर्व मुख बैठे ⊙ आचार्य उत्तर मुख बैठे

⊙ यजमान के ९-९ कोष्ठक (खानो) का ९ कोष्ठक बनाए (जैसे नवग्रह का कोष्ठक बनता है)

⊙ कुल ८१ कोष्ठक बनेगा

⊙ इन ८१ कोष्ठकों में ८१ कलश रखे

⊙ सभी कलशों के नीचे सप्तधान्य छोड़ दे ⊙ सभी कलशों में रक्षा सूत्र (कलावा) अथवा लाल कच्चा सूत तीन ताग कर बांध दे ।

⊙ सभी ८१ कलशों में शुद्ध जल-गन्ध-पुष्प छोड़ दे

⊙ इन कलशों के उत्तर किसी शुद्ध पीठ पर शिखर कलश रख ले

⊙ इन ६ कोष्ठकों के बीच वाले कलश में यथा क्रम निम्न वस्तुएं रखे—

१—बीचो बीच वाले कोष्ठक में जो बीच का १ कलश है उसमें निम्न पेड़ की पत्तियां रखे—

१. शमी २. गूलर ३. पीपल ४. चम्पा ५. अशोक ६. पलाश ७ पाकड़ ८. बरगद ९. कदम्ब १०. आम ११. बेल १२. अर्जुन

⊙ शेष ८ कलशो में शुद्ध जल-गन्ध-फूल रहेगा

२—पूर्व वाले कोष्ठक के बीचोबीच वाले १ कलश में निम्न वस्तुएं छोड़ें—

१. पद्मक २. गोरोचन ३. दूर्वा ४. कुशा ५. पीली सरसों [कुछ के मत से सफेद सरसों] ६. सफेद-चन्दन ७. लाल चन्दन ८. चमेली फूल ९. सेवार [नदी-तालाब में घास उत्पन्न होती है] १०. कुन्द पुष्प

⊙ शेष ८ कलशों में केवल गन्ध-फूल-जल रहेगा

टिप्पणी—८१ कलशो को रखने के लिए नव कोष्ठकों का चक्र सुविधा के लिए परिशिष्ट में दिया गया है उसे देखकर कोष्ठक बनाए, कलश रखे

⊙ चक्र को देख ले, तदनुसार प्रत्येक कोष्ठक के बीच वाले कलश में जल-गन्ध-पुष्प के अतिरिक्त यथाक्रम वृक्ष पल्लव मृत्तिका-ओषधि आदि वस्तुएं रखे ।

३—अग्नि कोण वाले कोष्ठक के बीचो बीच वाले १ कलश में निम्न वस्तुएं छोड़ें—

१. जव २. धान ३. तिल ४. सुवर्ण ५. चांदी ६. समुद्र में मिलने वाली किसी नदी के तट की मिट्टी

७. गोबर [भूमि पर जो स्पर्श नहीं हो ऐसा गोबर]

⊙ शेष ८ कलशों में गन्ध-पुष्प-जल रहेगा

४—दक्षिण वाले कोष्ठक के बीचो बीच वाले १ कलश में निम्न वस्तुएं छोड़ें—

१. सहदेवी २. विष्णु क्रान्ता ३. भृङ्गराज ४. शमी ५. शतावर ६. गुरिच ७. श्यामाक (सांवा)

८. महौषधि (सोंठ)

⊙ शेष ८ कलशों में जल-गन्ध-फूल रहेगा

५—नैऋत्यकोण वाले वाले कोष्ठक के बीचो बीच वाले १ कलश में निम्न वस्तुएं छोड़ें—

१. केला २. सुपारी ३. नारियल ४. बेल ५. नारंगी ६. बैर ७. आमला ८. मातुलिंग

[बिजौरा नींबू अथवा चकोतरा]

⊙ शेष ८ कलशों में जल-गन्ध-फूल रहेगा

६—पश्चिम कोष्ठक के बीचो बीच वाले कलश में—

१. पंचगव्य [गोबर-गोमूत्र-दही-दूध-घी] छोड़ दे

⊙ शेष ८ कशल में जल-गन्ध-फूल रहेगा

७—वायव्य कोण के कोष्ठक के बीचो बीच वाले कलश में—

१. शमी २. गूलर ३. पीपल ४. बरगद ५. पलाश की छाल

⊙ शेष ८ में जल-गन्ध-फूल

८—उत्तर वाले कोष्ठक के बीचो बीच वाले कलश में—

१. सहदेवी २. शतावर ३. शंखपुष्पी ४. गुरिच ५. वच ६. बला ७. घी कुमार ८. व्याघ्री (भटकटैया—ये औषधियाँ) छोड़े

⊙ शेष ८ में जल-गन्ध-फूल

९—ईशानकोण के बीचोबीच वाले कलश में—

१. सप्तमृत्तिका [१. हाथी २. घोड़ा ३. रथशाला ४. वाल्मीकि ५. गोशाला ६. तालाब ७. चौराहा की मिट्टी]

⊙ शेष ८ में जल-गन्ध-फूल

टिप्पणी ⊙ सुविधा की दृष्टि से मूर्त्तियों को जिन १०८ कलशों से स्नान कराया है। उन्हीं कलश के जल से शिखर-कलश तथा प्रासाद [मन्दिर] परिसर को भी स्नान करा ले। इन ८१ कलशों को रखने की आवश्यकता नहीं है। यद्यपि यह लोकाचार में होता है।

।। पूजन प्रारम्भ ।।

⊙ यजमान आचमन-प्राणायाम करे ⊙ ब्राह्मण शान्ति पाठ करे—

।। ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्ति विश्वेदेवाः शान्ति र्ब्रह्मशान्तिः सर्वं ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।।

⊙ यजमान कुश-अक्षत जल-द्रव्य लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे—

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ……गोत्रः……नामाऽहं करिष्यमाण [अमुक-अमुक] देव प्रतिष्ठा कर्मणि अस्मिन् प्रासादे देवताधिष्ठान योग्यता सिद्ध्यर्थम् स्नपन पूर्वकं प्रासादधि वासनं करिष्ये ।।

⊙ हाथ का कुश-अक्षत आदि अपने सामने भूमि पर छोड़ दे

⊙ एक फूल ले ले ⊙ निम्न मन्त्र पढ़े—

।। ओम् सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः ।।

⊙ यह पढ़कर हाथ का फूल सभी कोष्ठकों के बीचो बीच वाले नव कलशों में [जिनमें औषधि-मृत्तिका आदि छोड़ा है] छोड़ दे— (इसी मन्त्र से सभी नवों कलशों में फूल छोड़े)

(जिन ८-८ कलशों में केवल गन्ध-फूल-जल रखा है, उसमें नहीं छोड़ा जाता)

⊙ * फूल-अक्षत लेकर निम्न मन्त्र पढ़े--

॥ ओम् कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी । अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ॥
कावेरी कृष्ण वर्णा च गंगा चैव महानदी । तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ॥
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः । पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानिवै ॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदाः नदाः । आयान्तु मम शान्त्यर्थम् दुरितक्षय कारिकाः ॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः । अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः ॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा । आयान्तु मम शान्त्यर्थम् दुरितक्षय कारिकाः ॥
कलशाधिष्ठात्र्यो देवताः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु ॥

⊙ हाथ का अक्षत-फूल ८१ कलशों पर छोड़ दे

टिप्पणी—* कुछ पद्धतियों में यहां पर "हिरण्य वर्णम्" आदि १६ मन्त्रों से भी इन कलशों को अभिमन्त्रित करने को लिखा है, ये १६ मन्त्र परिशिष्ट में दिये गए हैं ।

⊙ एक किसी पात्र में पंचगव्य लेकर मन्दिर में ऊपर-नीचे-अन्दर-बाहर चारों ओर तथा शिखर कलश पर पंचगव्य छिड़क दे (कुशा से अथवा आम्रपल्लव से पंचगव्य छिड़कना चाहिए)। मन्त्र—

ओम् गोशरीरात् समुद्भूतैः पंचगव्यैः सुपावनैः ।
विलेपयामि प्रासादं सशिखरं संस्कार सिद्धये ॥

⊙ यजमान आसन पर बैठे हुए ही चारो ओर छिड़क दे, शेष पंचगव्य किसी व्यक्ति को दे दे वह सर्वत्र छिड़क दे।

⊙ सप्तमृत्तिका (किसी के मत से केवल वाल्मीकिमृदा, वेवार की मिट्टी) मन्दिर (प्रासाद) के दीवारों में लगा दे, मंत्र—

॥ ओम् मूर्धानं दिवो अरतिं-पृथिव्या वैश्वानरमृत आजात मग्निम् ।
कवि ँ सम्राज मतिथिं जनाना मासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥

॥ ओम् मृत्तिका सर्वपापघ्नी मृत्तिका काय शोधिनी ।
पवित्रं कुरू प्रासादं सर्व दोषात् समुद्धरेत् ॥

॥ कलश जल से प्रासाद स्नान ॥

⊙ इसके बाद यजमान क्रमशः सभी कोष्ठकों से बीच वाला एक-एक कलश उठाकर बाएँ हाथ में ले ले।

⊙ दाहिने हाथ से कुश अथवा आम्र पल्लव द्वारा कलश का जल शिखरकलश पर तथा प्रासाद (मन्दिर) की दीवरों पर एवं ऊपर नीचे चारो ओर छिड़के (यजमान अपने स्थान पर बैठे-बैठे जहाँ तक पहुँचे, जल छिड़क दे)

⊙ (जल छिड़क कर कलश यथास्थान रखता जाय)

⊙ कलशों का उठाने का क्रम और मन्त्र निम्न है—

१. सर्वप्रथम ईशान कोण वाले कोष्ठक का बीच वाला कलश (जिसमें सप्तमृत्तिका छोड़ी है)

॥ ओम् समुद्रा दूर्मिर् मधु मां उदार दुपा ॐ शुना सम मृतत्व मानट ।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवाना ममृतस्य नाभिः ॥

२. वायव्य कोण कोष्ठक मध्य कलश (जिसमें शमी गूलर आदि पंचवृक्ष छाल छोड़ा है) का जल छिड़के—

॥ ओम् यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वय ममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न श ॐ सिषम् ॥

३. पश्चिम ओर के कोष्ठक का मध्य कलश (जिसमें पंचगव्य छोड़ा है) का जल छिड़के ॥ मन्त्र—

॥ ओम् पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन् तरिक्षे पयो धाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

४. नैर्ऋत्य कोण कोष्ठक मध्य कलश (जिसमें आठ फल छोड़ा है)

॥ ओम् याः फलिनोर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन् त्व ॐ ह सः ॥

टिप्पणी—पं० दौलतराम गौड़ की पद्धति में ईशान कोण वाले कोष्ठक के मध्य कलश स्नान के लिए समुद्रा दूर्मि के स्थान पर समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा…… मन्त्र दिया है ।

५. उत्तर की ओर के कोष्ठक का मध्य कलश (जिसमें सतावर घीकुमार-भटकटैया आदि औषधि छोड़ी है)

।। ओम् ह ॐ सः शुचि षद् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषद तिथिर् दुरोणसत् ।
नृषद् वरं स वृत सद्‌व्योम सवब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ।।

६. पूर्व की ओर का मध्य कलश (जिसमें गोरोचन आदि छोड़ा है)

।। ओम् विष्णो रराट मसि विष्णोः श्नप् त्रेस्थो विष्णोः स्यू रसि ।
विष्णोर् ध्रुवोऽसि वैष्णव मसि विष्णवे त्वा ।।

७. आग्नेय कोण के कोष्ठक का मध्य कलश (जिसमें जव-धान्य-तिल आदि छोड़ा है)

।। ओम् वय ॐ सोम व्रते तव मनस् तनू षु विभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि ।।

८. दक्षिण ओर का मध्य कलश (जिसमें सहदेवी-भृंगराज शमी-शतावर-सावां-सोंठ आदि छोड़ा है)

।। ओम् विश्वतश् चक्षुरूत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरूत विश्वतस्पात् ।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर् द्यावाभूमी जनयन् देव एकः ।।

९. बीचो बीच वाले कोष्ठक का मध्य कलश (जिसमें शमी-पीपल-गूलर आदि पेड़ की पत्तियां छोड़ी है)

।। ओम् नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवी तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

टिप्पणी—आग्नेय कोण कलश के लिए पण्डित दौलत राम गौड़ की पुस्तक में वय ॐ सोमव्रते के स्थान पर सोम ॐ राजान··· मन्त्र दिया गया है ।

⊙ इसके बाद प्रत्येक कोष्ठक के शेष ८-८ कलशों का जल प्रासाद में चारो ओर तथा शिखर कलश पर छिड़के।

⊙ सभी कलशों के लिए एक ही मन्त्र है, इसे ही प्रत्येक बार पढ़े।

⊙ कलशों का क्रम = पूर्व-आग्नेय-दक्षिण-नैर्ऋत्य-पश्चिम-वायव्य-उत्तर-ईशान-मध्य कोष्ठक होगा। मन्त्र—

१. ओम् इदमापः प्रवहता वद्यं च मलं च यत्।
यच्चाभि दु द्रोहा नृतं यच्च शेपे अभीरुणम्॥

२. ओम् आपो मा तस्मा देनसः पवमानश्च मुञ्चतु।
दंव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देवयन्यायै यद् वो
शुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्त छन्धामि॥

⊙ इसके बाद शुद्ध वस्त्र अथवा सूत्र से शिखर कलश प्रासाद को लपेट दे।

⊙ शुद्ध जल से फिर शिखर कलश तथा प्रासाद को स्नान करा दे।

⊙ ध्वजा-पताका-माला-फूल-वंदनवार आदि से प्रासाद को चारो ओर से सजा दे

⊙ गन्ध-पुष्प से शिखर कलश तथा प्रासाद की पूजा कर दे

टिप्पणी—गौड़ी पद्धति में शेष ८-८ कलशो से स्नान के लिए एक ही मन्त्र दिया है, जब कि पं० वासुनन्दन मिश्र ने दोनों मन्त्र लिखा है।

⊙ फूल लेकर प्रासाद की प्रार्थना करे—

।। ओम् ह्रीम् सर्वदेव मया चिन्त्य सर्व रत्नो ज्वला कृते ।
यावच् चन्द्रश्च सूर्यश्च तावदत्र स्थिरो भव ।।

⊙ यजमान (सपत्नीक) आचार्य आदि सहित प्रासाद के बाहर आकर प्रासाद की ओर मुख करके खड़ा हो ।

⊙ एक फूल लेकर प्रार्थना करे—

१. ओम् प्रासाद पादशिलासु प्रासाद पादौ ध्यायामि ।
२. ओम् पादोर्ध्वं शिलासु जंघे ध्यायामि ।
३. ओम् तदूर्ध्वं शिलासु ऊरू ध्यायामि ।
४. ओम् तदूर्ध्वं कटि मेखलां ध्यायामि ।
५. ओम् स्तम्भान् पाद स्थाने ध्यायामि ।
६. ओम् घण्टां जिह्वा स्थाने ध्यायामि ।
७. ओम् दीपान् प्राणस्थाने ध्यायामि ।
८. ओम् जल निर्गम मपान स्थाने ध्यायामि ।
९. ओम् नाभि ब्रह्म स्थाने ध्यायामि ।
१०. ओम् पिण्डिकां हृत् पद्म स्थाने ध्यायामि ।
११. ओम् प्रतिमां पुरुष स्थाने ध्यायामि ।
१२. ओम् पादचारान्-अहंकार स्थाने ध्यायामि ।
१३. ओम् ज्योतिः चक्षुः स्थाने ध्यायामि ।
१४. ओम् तदूर्ध्वं प्रकृति स्थाने ध्यायामि ।
१५. ओम् तदूर्ध्वं प्रतिमा अपि आत्म स्थाने ध्यायामि ।
१६. ओम् तल कुम्भा दधो द्वारं प्रजनन स्थाने ध्यायामि ।

१७. ओम् शुकनासां नासा स्थाने ध्यायामि ।

१८. ओम् गवाक्षाणि कर्ण स्थाने ध्यायामि ।

१९. ओम् कायपालोम् स्कन्ध स्थाने ध्यायामि ।

२०. ओम् अमल सारिकाः ग्रीवा स्थाने ध्यायामि ।

२१. ओम् मज्जादि प्राण सहितं कलशं शिरः स्थाने ध्यायामि ।

२२. ओम् मृदं सुधा स्थाने ध्यायामि ।

२३. ओम् तत् प्रलेपे मांस स्थाने ध्यायामि ।

२४. ओम् सर्वं शिलाः अस्थि स्थाने ध्यायामि ।

२५. ओम् कीलादयः स्नायु स्थाने ध्यायामि ।

२६. ओम् शिखराणि चक्षुः स्थाने ध्यायामि ।

२७. ओम् ध्वजाः केश स्थाने ध्यायामि ।

⊙ हाथ का फूल प्रासाद के ऊपर चढ़ा दे

⊙ दूसरा फूल लेकर निम्न मन्त्र का पाठ करे—

।। ओम् मनोजूतिर् जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर् यज्ञ मिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु
विश्वे देवा स इह मादयन् तामोम् प्रतिष्ठ ।।

।। ओम् अमुक प्रासादाय नमः ।।

⊙ फूल प्रासाद पर छोड़ दे ⊙ गन्ध-फूल आदि प्रासाद की पूजा कर दे (मन्दिर के मुख्य द्वार पर यह ध्यान-पूजा की जाती है)

⊙ प्रासाद के भीतर जाकर अपने स्थान पर बैठ जाय

⊙ आचमन-प्राणायाम करे ⊙ आचार्य को प्रासाद पूजन की दक्षिण दे, गोदान-ब्राह्मण भोजन का भी विधान है।

॥ शिखर कलश स्थापन ॥

⊙ यजमान फूल लेकर शिखर कलश का स्पर्श करे ॥ मन्त्र—

॥ ओम् आजिघ्र कलशं मह्यात्वा विशन् त्विन्दवः ॥ पुन रूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वो रुधारा पयस्वती पुनर्मा विशता द्रयिः ॥

⊙ फूल शिखर कलश पर चढ़ा दे।

⊙ शिखर कलश उठा कर शिल्पी अथवा किसी अन्य व्यक्ति को दे दे, जो मन्दिर के ऊपर चढ़कर शिखर पर स्थापित कर दे (लगा दे)

(शिव मन्दिर हो तो कलश के साथ त्रिशूल लगाये)

(विष्णु मन्दिर हो तो चक्र लगाते हैं)

(कुछ लोग तांबे का पताका-ध्वजा (झंडा) शिखर कलश के पास लगाते हैं)

टिप्पणी—यदि मन्दिर बनते समय ही शिखर पर कलश आदि लगा दिया गया है तो मन्दिर के बाहर खड़ा होकर यजमान नीचे से ही शिखर कलश प्रतिष्ठा की विधि सम्पन्न करे।

॥ प्रासाद वास्तु पूजन ॥

⊙ प्रासाद के आग्नेय कोण में (आकाश पद में) एक गर्त (गड़ा) खोदे

⊙ एक मिट्टी के कच्चे पात्र में (हांडी) दही-दूर्वा-सप्तधान्य शैवाल (सेंवार-नदी तालाब का घास) गन्ध-अक्षत तथा वास्तु पीठ पर पूजित सुवर्ण की वास्तु प्रतिमा आदि को रख कर हांडी का मुख बन्द कर दे

⊙ हांडी को उसी गढ़े में स्थापित कर दे

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

॥ ओम् पूजितोऽसि मयावास्तो होमाद्यै रर्चनैः शुभैः । प्रसीद पाहि विश्वेश देहि प्रासादजं सुखम् ॥
वास्तु पुरुष नमस्तेऽस्तु भू शय्याभिरत प्रभो । मद्गृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा ॥
यथा मेरू गिरेः शृंगं देवाना मालयं सदा । तथा ब्रह्मादि देवानां मम यज्ञे स्थिरो भव ॥
भगवन् देव देवेश ब्रह्मादि देवतात्मक । तवार्चनं कृतं वास्तो प्रासादं कुरुमे प्रभो ॥
प्रार्थया मीत्यहं देवं प्रासाद स्याधिपस्तु यः । प्रायश्चित्तं प्रसंगेन प्रासादार्थे तु यत् कृतम् ॥
मूलच्छेद-तृणच्छेद कृमि कीट निपातनम् । हवनं जल जीवानां भूमो शस्त्रेण घातनम् ॥

टिप्पणी ⊙ ईशान कोण से अग्नि कोण तक की जगह को ९ भागों में नाप ले ⊙ ईशान कोण से जो आठवां स्थान बने उसे आकाश पद कहते हैं ⊙ आकाश पद में जानु पर्यन्त गर्त खोदना चाहिए ।

अनृतं भाषितं यच्च किञ्चिद् वृक्षस्य पातनम्.। एतत् सर्वम् क्षमस्वै नो यन्मया दुष्कृतं कृतम् ।।
प्रासादर्थे कृतं पाप मज्ञाने नाप्य चेतसा । तत् सर्वम् क्षम्यतां देव प्रासादं च शुभं कुरू ।।
सशैल सागरां पृथिवीं यथा वहसि मूर्धनि । तथा वह प्रासादं त्रैलोक्ये मंगलं कुरू ।।

⊙ प्रार्थना कर फूल हांड़ी पर छोड़ दे ।

⊙ गढ़ा को मिट्टी से बन्द कर दे ⊙ भूमि पर सीमेन्ट आदि लगाकर पक्का कर दे

⊙ पक्की जमीन हो जाने पर उस स्थान को गोबर से लीप कर गन्ध-अक्षत-पुष्प चढ़ाकर पूजा कर दे

⊙ एक पात्र में जल-दूध लेकर प्रासाद के चारो ओर धारा दे (जल-दुग्ध धारा टूटे नहीं)

⊙ तीन ताग का कच्चा सूत लेकर मन्दिर प्रासाद के चारो ओर लपेट दे ।

।। प्रासाद-उत्सर्ग ।।

⊙ देव के निमित्त प्रसाद (मन्दिर) का उत्सर्ग करे

⊙ आचमन-प्राणायाम करे ⊙ कुश-यत्र-जल लेकर संकल्प करे—

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ ······गोत्रः······ नामाऽहं इमं शिलेष्टका दार्वादि निर्मितं वलभी-जगती-प्रकार गोपुर परिवार देवता लयादि संयुतं तत्-तद् देवता लोक वाप्ति कामः कुल द्वयानु ग्रहायाम् [अमुक] देवता प्रीतये उत्सृजामि ।।

⊙ हाथ का कुश-यत्र-जल सामने भूमि पर छोड़ दे

फूल लेकर प्रार्थना करे—

॥ ओम् सर्व भूतेभ्य उत्सृष्टः प्रसादोऽयं मयार्जितः । रमन्तु सर्व भूतानि छाया सं श्रयणा दिभिः ॥

⊙ फूल प्रासाद द्वार के सम्मुख छोड़ दे ।

॥ पिण्डिका पूजन ॥

⊙ जहां पर मूर्त्तियों को स्थापित किया जाना है उस स्थान की पूजा करे

⊙ शिव लिंग स्थापित करने में जलहरी जहां बनानी है उस स्थान की पूजा की जाती है

⊙ विष्णु अथवा लक्ष्मी-नारायण-सीताराम-राधाकृष्ण आदि की मूर्त्ति स्थापन में जहां प्रतिमा खड़ी करनी है उस स्थल की पूजा करे ।

विधि ⊙ एक पात्र में गन्ध-पुष्प-कुश लेकर मन्त्र पढ़े—

॥ ओम् महाँ इन्द्रो वज्र हस्तः षोडशी शर्म यच्छतु हन्तु पाप् मानं योऽस्मान् द्वेष्टि ।
उपयाम गृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैषते योनिर् महेन्द्राय त्वा ॥

⊙ पात्र का गन्ध-जल उसी गर्त [स्थान पर] छोड़ दे

⊙ पंचरत्नी तथा सोने का कछुआ [कूर्म] छोड़ दे

⊙ गन्ध-अक्षत आदि छोड़ कर पूजा कर दे ॥ मन्त्र पढ़े—

॥ ओम् नमो व्यापिनि स्थिरे अचले ध्रुवे । ओम् श्रीं लं स्वाहा ॥

⊙ प्रार्थना करे—

॥ ओम् त्वमेव परमा शक्तिः त्वमेवा सन धारिका । देवाज्ञया त्वया देवि स्यातव्य मिह सर्वदा ॥

⊙ प्रार्थना करके जलहरी अथवा शिलापट उसी स्थान पर स्थिर कर दे

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

॥ ओम् वर्णाध्वने नमः ॥ ओम् पदाध्वने नमः ॥ ओम् मन्त्राध्वने नमः ॥
॥ ओम् भुवनाध्वने नमः ॥ ओम् तत्वाध्वने नमः ॥ ओम् सकलाध्वने नमः ॥

⊙ जलहरी अथवा शिलापट की गन्ध पुष्प से पूजा कर दे ।

॥ अन्य मूर्त्तियों के लिए पिण्डिका पूजन ॥

⊙ प्रधान मूर्त्ति के अलावा दूसरी जिन मूर्त्तियों को स्थापित करना है उनके स्थान की भी पूजा कर दे
⊙ जिस स्थान पर मूर्त्ति स्थापित करनी है उस स्थान पर शहद-घी-लगा दे ⊙ पंचगव्य छिड़क दे
⊙ शुद्ध जल से धो दे ⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

⊙ जो मूर्त्ति हो उसके मन्त्र से प्रार्थना करे [कुछ मूर्त्तियों की प्रार्थना] नीचे दी जा रही है—

नन्दी ॥ ओम् आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश् चर्षणीनाम् ।
संक्रन्दनो निमिष एक वीरः शत ॐ सेना अजयत साक मिन्द्रः ॥
नन्दिं पिण्डिकाम् आवाहयामि — पुजयामि ।

गरूड़ ।। ओम् सुपर्णोऽसि गरुत् मान् पृष्ठे पृथिव्याः सीद ।
भासान्तरिक्ष मापृण ज्योतिषा दिव मुत्तभान तेजसा दिश उ द्दृ ᳫ ह ।।
गरूड़ पिण्डिका मावाहयामि — पूजयामि ।

दुर्गा ।। ओम् जात वेदसे सुनवाम सोम मराती यतो नि वहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिता त्यग्निः ।।
दुर्गा पिण्डिका मावाहयामि — पूजयामि ।

गणेश जी ।। ओम् गणानां त्वा गणपति ᳫ हवा महे प्रियाणां त्वा प्रियपति ᳫ महे निधीनां त्वा
निधिपति ᳫ हवामहे वसो मम । आहम जानि गर्भधम् त्वम जासि गर्भधम् ।।
गणपति पिण्डिका मावाहयामि — पूजयामि ।

लक्ष्मी ।। ओम् श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन् निषाणा मुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण ।।
लक्ष्मी पिण्डिका मावाहयामि — पूजयामि ।

सूर्य ।। ओम् आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे वधातन । महेरणाय चक्षसे ।।
सूर्य पिण्डिका मावाहयामि — पूजयामि ।

हनुमान ।। ओम् आतिथ्य रूपम् मा सरम् महावीरस्य नग्न हुः ।
रूप मुप सदा मे तत् तिस्रोरात्रीः सुरासुता ।।
हनुमत् पिण्डिका मावाहयामि — पूजयामि ।

पार्वती ।। ओम् अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन् ।
सस् त्यवश्यकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ।।
पार्वती पिण्डिका मावाहयामि — पूजयामि ।

⊙ इसी तरह स्थापित होने वाली सभी मूर्त्तियों के स्थान को स्पर्श कर ले ⊙ गन्ध-अक्षत-पुष्प से पूजा कर दे

⊙ जलहरी अथवा उस शिला पर लगाए गए स्थान को जहां मूर्त्ति स्थापित करनी है, फूल मिले जल से धोकर साफ कर दे ⊙ शुद्ध वस्त्र से पोछ दे

⊙ जलहरी के भीतर पंचरत्नी-शिलाजीत-गोरोचन-हरताल-पारा आदि को छोड़ दे

⊙ गूगुल का रस उस स्थान पर छोड़ दे जिससे सारी वस्तुएं उस स्थान पर दृढ़ हो जांय

टिप्पणी—जलहरी [अर्घा] का मुख उत्तर दिशा की ओर रखे ⊙ हनुमान जी का मुख पश्चिम की ओर रखना चाहिए, जैसा लघुदर्पण १८५ पृष्ठ पर लिखा है— ग्रामाग्ते ग्राम सीमान्ते हनूमाँश्च महावलः ।
पश्चिमाभिमुखः स्थाप्यो रक्षा कर्म तु सुखार्थिनः ।।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

।। आसन शक्तिभ्यो नमः ।। पिण्डिकाया माधारशक्त्यै नमः ।।

।। सर्व देव मयो शानि त्रैलोक्याह्लाद कारिणि । त्वां प्रतिष्ठाम्यत्र मन्दिरे विश्वनिर्मिते ।।

।। यावच् चन्द्रश्च सूर्यश्च यावदेष वसुन्धरा । तावत् त्वं देव देवेशि मन्दिरेऽस्मिन् स्थिरा भव ।।

।। पुत्रा नायुष्मतो लक्ष्मी मचला मजरा मृताम् । अभयं सर्वभूतेभ्यः कर्तुंनित्यं विधेहि मे ।।

।। विजयं नृपतेः सर्वम् लोकानां क्षेम मेव च । सुभिक्षं सर्वलोकानां कुरु देवि नमोऽस्तुते ।।

।। मूर्ति स्थापन ।।

⊙ यजमान पिण्डिका के समीप से उठकर मूर्त्तियों के समीप आकर पूर्व अ— उत्तर मुख है

⊙ आचमन-प्राणायाम करे ⊙ शान्ति पाठ करे

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे— [जिस देवता की मूर्त्ति हो उसकी प्रार्थना करनी चाहिये कुछ प्रार्थना नीचे दी जा रही है]

शिवलिंग ।। ओम् प्रबुध्यस्व महाभाग देव देव जगत् पते । नील ग्रीव सुराधीश प्रबुद्ध शशि शेखर ।।
प्रबुद्ध पार्वती कान्त पंचवक्त्र नमोऽस्तु ते ।

टिप्पणी—पं० दौलतराम गौड़ ने अपनी पद्धति में पिण्डिका में भी न्यास—हवन आदि लिखा है ।
⊙ प्रार्थना करते समय शंख-भेरी-घंटा-घड़ियाल भी बजाना चाहिये ।

कृष्ण-विष्णु ।। ओम् प्रबुध्यस्व महाभाग देव देव जगत् पते । मेघ श्याम गदापाणे प्रबुद्ध कमलेक्षणे ।।
प्रबुद्ध भूधरानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते ।

दुर्गाजी ।। ओम् प्रबुध्यस्व महामाये देवि दुर्गे शुभप्रदे । स्थापनं ते करिष्यामि प्रसन्ना भव मे सदा ।।

अन्य देवो में ।। ओम् उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देव यन्तस् त्वे महे । उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा ।।

⊙ एक पात्र में जल-दूध-कुश का अग्रभाग-तिल-अक्षत-यव-फूल छोड़ कर अर्घ बना लें ⊙ नीचे का मन्त्र पढ़कर देवमूर्त्ति के सामने छोड़ दे ।। मन्त्र—

।। ओम् इमा आपः शिवतमाः पूताः पूततमा मेध्या मेध्यतमा ।
अमृता अमृतरसा पाद्यास्ता जुषन्तां प्रति गृह्यन्ताम् ।।

⊙ मूर्त्तियों को उठा कर प्रासाद में लाए पिण्डिका के पास शुद्ध आसन पर रखे [जिस मूर्त्ति को जहाँ स्थापित करना हो] उस स्थान के पास रखे [शिवलिंग को जलहरी के पास रखे]

⊙ फूल लेकर मंत्र पढ़े—

।। ओम् ईश्वरं भावयन् प्रतिष्ठितः परमेश्वरः ।।
प्रधान पुरुषो यावच्चन्द्र दिवाकरौ । तावत्त्वमनया शक्त्या युक्तोऽत्रैव स्थिरोभव ।।

⊙ फूल मूर्त्तियों पर चढ़ा दे ।

⊙ शिवलिंग को अर्घा [जलहरी] में स्थापित करे

⊙ अन्य मूर्त्तियों को यथा स्थान स्थापित करे

⊙ स्थापना के समय ब्राह्मण निम्न मंत्र पढ़े—

॥ ओम् ध्रुवोऽसि ध्रुवोंऽयं यजमानो स्मिन् नायतने प्रजया पशुभिर् भूयात् ॥ घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्यथा मिन्द्रस्यच्छदिरसि विश्व जनस्यच्छाया ॥

॥ ओम् स्थिरो भव शाश्वतो भव ॥

⊙ स्थापित करके बालू सीमेन्ट आदि से शिवलिंग एवं मूर्त्तियों को सुदृढ़ करे [जिससे हिले-गिरे नहीं]

⊙ नन्दी-गरुड़ आदि वाहन को भी यथास्थान स्थापित कर सुदृढ़ कर दे ⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

॥ ओम् लोकानुग्रह हेत्वर्थंम् स्थिरोभव सुखाय नः ।
सानिध्यं कुरु देवेश प्रत्यक्षं परिपालयं ॥

॥ प्रतिष्ठा करे ॥

⊙ यजमान दाहिने हाथ में जल लेकर कहे—

॥ ओम् अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्म विष्णु रुद्रा ऋषयः ऋग् यजुः सामानि छंदासि क्रियामय वपुः प्राणाख्यो देवता देवस्य प्राण प्रतिष्ठायां विनियोगः ॥

⊙ हाथ का जल सामने भूमि पर छोड़ दे—

⊙ एक फूल लेकर मूर्त्तियों का स्पर्श करे ॥ मंत्र पढ़े—

॥ १ ॥ ओम् आं ह्रीम् क्रीं यं रं लं वं शं षं हं सः देवस्य प्राणा इह प्राणाः ॥

॥ २ ॥ ओम् आं ह्रीम् क्रीम् यं रं लं वं शं षं हं सः देवस्य जीव इह स्थितः ॥

॥ ३ ॥ ओम् आं ह्रीम् क्रीम् यं रं लं वं शं षं हं सः देवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनस् त्वक् चक्षुष्
श्रोत्र जिह्वा घ्राण प्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

॥ ४ ॥ ओम् आत्वा हार्ष मन्तर भू ध्रु वस् तिष्ठ विचा चलिः ।
विशस् त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद् राष्ट्र मधिव् भ्रशत् ॥

॥ ५ ॥ ओम् अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्व मर्चायै मामहेति च कश्चन् ॥

⊙ हाथ का फूल मूर्त्ति के समीप छोड़ दे ⊙ दुसरा फूल लेकर देव मूर्त्ति का स्पर्श करे

⊙ शिवलिंग हो तो रुद्राध्याय ⊙ अन्य मूर्त्तियों पुरुष सूक्त का पाठ करे ॥ देवी मूर्त्ति में देवी सूक्त का पाठ करे

⊙ सूक्त पाठ के बाद फूल मूर्त्ति के पास छोड़ दे ⊙ प्रार्थना करे—

॥ स्वागतं देवदेवेश मद् भाग्यात् त्व मिहागतः । प्राकृतं त्वम् दृष्ट्वा मां बालवत् परिपालय ॥
धर्मार्थ काम सिद्ध्यर्थम् स्थिरो भव सुखाय नः ।

टिप्पणी—पुरुष सूक्त-रुद्राध्याय देवी सूक्त परिशिष्ट में देखें ।

।। प्रतिष्ठा के पौराणिक मंत्र ।।

⊙ कुछ लोग मूर्त्ति स्थापना के लिए पौराणिक मंत्रों का पाठ करते हैं जो नीचे दिये जा रहे हैं—

शिवलिंग में	।। ओम् त्र्यक्षं च दशवाहुं च चन्द्रार्धकृत शेखरम् । महायोगेश्वरं देवं स्थापयामि त्रिलोचनम् ।।
राधाकृष्ण	।। ओम् अतसी पुष्प संकाशं पीतवासं जनार्दनम् । देवकी तनयं कृष्णं स्थापयामि सुरोत्तम् ।।
	।। ओम् कृष्णस्य महिषीं देवीं जगदुद्भव कारिणीम् । संस्थापयामि राधे त्वां वरदा भव शोभने ।।
विष्णु मूर्त्ति	।। ओम् अतसी पुष्प संकाशं शंख चक्र गदा धरम् । संस्थापयामि देवेशं विष्णुः भूत्वा जनार्दनम् ।।
लक्ष्मी मूर्त्ति	।। ओम् विष्णोर्महिषीं देवीं जगदुद्भव कारिणीम् । संस्थापयामि लक्ष्मि त्वां वरदा भव शोभने ।।
श्रीराम मूर्त्ति	।। ओम् अतसी पुष्प संकाशं धनु र्वाणधरं विभुम् । कौशल्यातनयं रामं स्थापयामि रघूत्तमम् ।।
सीता मूर्त्ति	।। ओम् रामस्य महिषीं देवीं जगदुद्भव कारिणीम् । संस्थापयामि सीते त्वां वरदा भव शोभने ।।
लक्ष्मण मूर्त्ति	।। ओम् रामस्य दयितो भ्राता लक्ष्मणः शुभ लक्षणः । संस्थापयामि देव त्वां सुमित्रा नन्द वर्धन ।।
भरत मूर्त्ति	।। ओम् द्विभुजं श्यामलं कान्तं राम सेवा परायणम् । कैकेयी तनयं देवं भरतं स्थापयाम्यहम् ।।
हनुमानजी मूर्त्ति	।। ओम् रामदूत महावाहो पिङ्गाक्ष कपिनायक । संस्थापयामि त्वां भो वीर अंजनी हर्षदायक ।।
देवी मूर्त्ति	।। ओम् चिद्रूपिणीं मुनिध्येया मनोप्स वर वाहनाम् । दिव्यायुधां महामायां स्थापयामि सुरेश्वरीम् ।।

सूर्य मूर्त्ति ।। ओम् सहस्त्र किरणं शान्त मप्सरोगण सेवितम् । पद्महस्तं महाबाणं स्थापयामि दिवाकरम् ।।

गणेश मूर्त्ति ।। ओम् लम्बोदरं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं चारू वाहनम् । पाशांकुशाद्या युधाढ्यं स्थापयामि गजाननम् ।।

नन्दी मूर्त्ति ।। ओम् शिवद्वार गतसत्वं वै शिव वाहन मुत्तमम् । पार्वत्याः प्रीतिकरं च नन्दिनं स्थापयाम्यहम् ।।

लक्ष्मीनारायण ।। ओम् आगच्छतां महासत्वौ लक्ष्मीनारायणा विह । युवां संस्थापयाम्यत्र भक्त्या मयि प्रसीदताम् ।।

पार्वती जी ।। ओम् हिमालय सुतां रम्यां शिव वामाङ्क संस्थिताम् । जगद्धात्री मन्नपूर्णाम् गिरिजां स्थापयाम्यहम् ।।

।। प्राण सूक्त जप ।।

⊙ एक फूल लेकर देव मूर्ति के दाहिने कान में प्राणसूक्त का जप करे [प्राणसूक्त विभिन्न देवों के लिए नीचे दिया जा रहा है]

शिवलिंग ।। ओम् तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।।

नारायण ।। ओम् नारायणय विद्महे नारायणय धीमहि । तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।।

सूर्य ।। ओम् भास्कराय विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि । तन्न आदित्यः प्रचोदयात् ।।

गणेश ।। ओम् एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ।।

टिप्पणी ⊙ पौराणिक मंत्रों से षोडशोपचार पूजन करना है, तो इसी लेखक की "देव पूजा पद्धति" पुस्तक से करा सकते हैं। इस पुस्तक में प्रायः सभी प्रमुख देवों के लिए अलग-अलग पूजन प्रक्रिया मंत्र सहित दी गई है।

दुर्गा ।। ओम् कात्यायन्यै विद्महे कन्या कुमार्यै धीमहि । तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् ।।

नन्दी ।। ओम् तीक्ष्ण शृंगाय विद्महे वेदपादाय धीमहि । तन्नो वृषभः प्रचोदयात् ।।

श्रीकृष्ण । ओम् देवकी नन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ।।

[इसी तरह जिस देव की मूर्त्ति हो उसके लिये वाक्य रचना कर लेनी चाहिये]

⊙ प्राण सूक्त का जप कर हाथ का फूल मूर्त्ति के समीप छोड़ दे

⊙ विधिवत् देव मूर्त्ति का षोडशोपचार पूजन करे [षोडशोपचार पूजन पुरुष सूक्त से करना चाहिये]

।। षोडशोपचार पूजन ।।

⊙ फूल लेकर आवाहन—

ओम् सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । स भूमि ᳬ सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम् ।।

⊙ फूल लेकर आसन—

ओम् पुरुष एवेद ᳬ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् । उता मृतत्व स्येशानो यदन्नं नाति रोहति ।।

⊙ पाद्य जल छोड़े—

 ओम् एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः । पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादास्या मृतन्दिवि ।।

⊙ अर्घ्य-जल छोड़े—

ओम् त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पूरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशना नशने ऽ अभि ।।

⊙ आचमन-जल—

ओम् ततो विराड जायत विराजोऽधिपूरुषः । सजातो ऽ अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः ।।

⊙ स्नान-जल छोड़े—

ओम् तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् । पशूंस्तांश्चक्रे वायव्या नाराण्य ग्राम्याश्च ये ।।

⊙ पंचामृत स्नान—

ओम् पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः । सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशे भवत् सरित् ।।

⊙ शुद्ध जल स्नान—

ओम् शुद्धवालः सर्वं शुद्धवालो मणिवालस्त ऽ आश्विनाः श्येतः ।
श्येता क्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णाय मा अवलिप्ता रौद्रान् भो रूपाः पार्जन्याः ।।

⊙ कपड़े से पोंछना—

ओम् तन्तुसंतान सन्नद्धैः शुक्लैः रक्तैस्तु पीतकैः । प्रतिमाजल विन्दूंस्तान् शोषयामि सुवस्त्रकैः ।।

⊙ वस्त्र चढ़ाए—

ओम् तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दा ँ सिजज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्माद जायत ।।

⊙ दो बार जल छोड़ दे— ओम् वस्त्रान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि ।

⊙ यज्ञोपवीत— ओम् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्य मग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।

⊙ दो बार जल छोड़ दे— ओम् उपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

⊙ चन्दन— ओम् त्वाङ्गन्धर्वा अखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ।।

⊙ अक्षत*— ओम् अक्षन्नमी मदन्त ह्यवप्रिया अधूषत ।
अस्तोषतस्व भानवो विप्रान विष्ठया मती यो जान्विद्रते हरो ।।

⊙ माला फूल— ओम् ओषधी प्रतिमो दवध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा इव स जित्व रीर्वीरुधिः पार यिष्णवः ।।

⊙ छत्र— ओम् अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परि बाधमानः ।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान्पुमा ᳪ सम्परिपातु विश्वतः ।।

टिप्पणी—*शालिग्राम को मूर्त्ति पर अक्षत नहीं चढ़ाए—भूमि पर छोड़ दे—

⊙ आभूषण—

(१) ओम् स्वर्ण घर्मः स्वाहा, स्वर्णार्कः स्वाहा, स्वर्ण शुक्रः स्वाहा, स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा, स्वर्ण सूर्यः स्वाहा ।

(२) ओम् नाना विधानि दिव्यानि नानारत्नोज्ज्वलानि च । देहालंकरणार्थाय भूषणानि-अर्पयाम्यहम् ॥

⊙ धूप—

ओम् धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं योऽस्मान् धूर्व तितं धूर्वयं वयन्धूर्वाम ।
देवानामसि वह्निनतम ꣳ सस्नि तमं पप्रितमञ्जुष्टतमन्देव हूतमम् ॥

⊙ दीप—

ओम् चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत । श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखा दग्नि रजायत ॥

⊙ हाथ धोकर नैवेद्य—

(१) ओम् नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णोर् द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकान् - अकल्पयन् ॥

(२) ओम् शर्करा खण्ड खाद्यादि दधिक्षीर घृतादिभिः ।
आहारैर्भक्ष्य भोज्यैश्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

⊙ जल—

ओम् नैवेद्यान्ते पानीयं जलं समर्पयामि । उत्तरापोशनं समर्पयामि ॥

ओ म् एलो शीर लवंगादि कर्पूर परिवासितम् । प्राशनार्थम् कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥

⊙ ऋतु फल— ओम् याः फलिनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणोः ।
ओम् वृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व ँ ह सः ।।

⊙ दोनों हाथ की अनामिका (तीसरी अंगुली जिसमें पैती पहनी है) में चन्दन लगा कर—अंगूठे के सहारे प्रतिमा पर उस चंदन को छिड़क दें—मंत्र पढ़ें—

⊙ करोद्वर्तन— ओम् करोद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि ।
नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं कुंकुमान्वितम् । करोद्वर्तनं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ।।

⊙ पान-सुपारी— ओम् उतस्मास्य द्रवतस्तु रण्यतः पर्णन्नवे रनुवाति प्रगर्धिनः ।
श्येनस्ये वध्रजतो ऽ अङ्क सम्परि दधिक्राव्णः सहोर्जात रितत. स्वाहा ।।

⊙ दक्षिणाद्रव्य—ओम् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीन्द्यामुते माङ् कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

⊙ मंत्रपुष्पांजलि फूल लेकर हाथ जोड़ ले—मंत्र पढ़कर फूल चढ़ा दें—

ओम् यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन् ।
तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।

⊙ प्रदक्षिणा—हाथ घुमा कर प्रदक्षिणा करें—

ओम् सप्ता स्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः । देवा यद्यज्ञन्तन्वाना ऽ अबध्नन्पुरुषं पशुम् ।।

⊙ जल छोड़ें— ओम् अनेन पूजनेन देवः प्रीयतां न मम ।

।। विशेष प्रार्थना ।।

⊙ षोडशोपचार पूजन के बाद फूल लेकर विशेष प्रार्थना करे—

।। ओम् नमस्ते त्यक्त सङ्गाय शान्ताय परमात्मने । ज्ञान विज्ञानरूपाय ब्रह्म तेजो ऽ नुशालिने ।

गुणातिक्रान्तरूपाय पुरूषाय महात्मने । अव्यक्ताय पुराणाय भगवन् सन्निहितो भव ।।

भगवन् देव देवेश त्वं पिता सर्व देहिनाम । त्वया व्याप्त मिदं सर्वम् जगत् स्थावर जङ्गमम् ।।

त्वमिन्द्रः पावकश्चैव यमो निर्ऋतिरेव च । वरूणो ऽ थानिलः सोम ईशानः प्रभुरव्ययः ।।

येन रूपेण भगवन् त्वया व्याप्तं चराचरम् । तेन रूपेण देवेश अर्चायां सन्निधो भव ।।

सर्वमंत्रादि संयुक्तो लोकानुग्रह काम्यया । मया स्थापितो देवो भव सन्निहितः सदा ।।

सूर्याचन्द्रमसौ यावद् यावत् तिष्ठति मेदिनी । तावत् त्वयात्र देवेश स्थेयं सर्वानुकम्पया ।।

।। मंदिर नामकरण ।।

⊙ यजमान हाथ में फूल लेकर कहे—

।। ओम् अस्य देवस्य [अमुकेश्वर] इति नाम सुप्रतिष्ठितं मस्तु ।।

।। ओम् अस्य देवालयस्य [अमुक] नाम सुप्रतिष्ठित मस्तु ।।

⊙ ब्राह्मणगण कहें ।। ओम् सुप्रतिष्ठित मस्तु ।।

⊙ यजमान ब्राह्मण के हाथ में अक्षत देकर कहे—

।। अस्य देवस्य नामकरण कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ।।

⊙ ब्राह्मण कहें— ।। पुण्याहम् । कल्याणम् । ऋद्धिः स्वस्ति-श्रीरस्तु ।। पुण्याह वाचन समृद्धिरस्तु ।।

⊙ ब्राह्मण हाथ का अक्षत यजमान के शिर पर छिड़क दें

।। अनेन नामकरणाङ्ग कर्मणः पुण्याहवाचनेन श्री परमेश्वरः प्रीयताम् ।।

⊙ यजमान ब्राह्मण को पुण्याह वाचन की दक्षिणा दे ।। संकल्प—

।। अद्य शुभ पुण्यतिथौ·······गोत्रः ······नामाऽहम् कृतंतत् देव मूर्त्ति नामकरण साद्गुण्यार्थम् पुण्याह-वाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथा काले दक्षिणां दास्ये ।।

।। पूजन सामग्री संकल्प ।।

⊙ देव पूजन के लिए शंख-घंटा-घड़ियाल आदि का दान ।। संकल्प—

। अद्य शुभ पुण्यतिथौ······गोत्रः····नामाऽहं अस्य देवस्य करिष्यमाण नित्य पूजोपकरणानि ताम्र कलशं शंखम्-धूप-दीप-नैवेद्य पात्राणि घण्टां-व्यजनं-उपधानादि सामग्री सहितां शय्यां [अमुक-अमुक] अन्य वस्तूनि च देवोद्देश्येन उत्सृजामि ।।

। प्रतिष्ठा होम ।।

⊙ यजमान हवन कुण्ड के पास आकर बैठे ⊙ प्रतिष्ठा होम करे---

⊙ घी की आहुति दे ⊙ पत्नी तथा अन्य व्यक्ति शाकल्य छोड़े—

।। ओम् देवाय स्थिरो भव स्वाहा ।। ओम् देवाया प्रमेयो भव स्वाहा ।।
।। ओम् देवाया नाविबोधो भव स्वाहा ।। ओम् देवाय नित्यो भव स्वाहा ।।
।। ओम् देवाय सर्वगो भव स्वाहा ।। ओम् देवाया विनाशो भव स्वाहा ।।
।। ओम् देवाय क्लृप्तो भव स्वाहा ।। ओम् भूः स्वाहा ।। इदमग्नये न मम ।।
।। ओम् भुवः स्वाहा ।। इदं वायवे न मम ।। ओम् स्वः स्वाहा ।। इदं सूर्याय न मम ।।

।। ओम् त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्-देवस्य हेडो अवयासि सीष्ठाः ।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ७ सि प्रमु मुग्ध्यस्मत् स्वाहा ।। इदमग्नो वरुणाभ्यां न मम ।

टिप्पणी ⊙ शिवलिंग में रुद्राध्याय से अन्य देवो में पुरुषसूक्त से देवी में देवीसूक्त से घी की आहुति दे [ये तीनों सूक्त परिशिष्ट में देखें]

⊙ कुछ पद्धतिकार सर्वतोभद्र-लिंगतोभद्र पीठ देवताओं के नाम से घी की आहुति लिखते हैं ।

॥ ओम् सत्वन्नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसा व्युष्टौ ।

अवयक्ष्यनो वरुण ဗ रराणो वीहिमृडीक ဗ सुहवो न एधि स्वाहा । इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम ।

॥ ओम् अयाश्चाग्नेऽस्य नमि शस्ति पाश्च सत्व मित्व मया असि ।

अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ဗ स्वाहा । इदमग्नये न मम ।

॥ ओम् ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा विततः महान्तः ।

तेर्भिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर् विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ।

—इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।

॥ ओम् उदुत्तमं वरूण पाश मस्म दवाधमं विमध्यम ဗ श्रथाय ।

अथा वय मादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्यान्न स्वाहा । इदं वरुणाया दित्याया दितये न मम ।

॥ ओम् प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ।

॥ दश दिक्पाल बलि ॥

⊙ रुई की १० बत्ती घी में भिगो कर बना ले ⊙ १ आम की पत्ती पर १ बत्ती जला कर रख ले

⊙ आम की पत्ती पर थोड़ा सा दही-उरद मिला कर बत्ती के साथ रख ले

⊙ जल छोड़ कर—आम की पत्ती सहित जलती हुयी बत्ती उठा कर आरती की तरह घुमा दे—हवन वेदी के चारों ओर [चारो कोने में भी] क्रमशः रखे—

⊙ दसो दिशाओं के लिये क्रम तथा मंत्र इस प्रकार है—१. पूर्व में—

॥ ओम् इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो इन्द्र। दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव॥

२. पूर्व-दक्षिण के कोने में—

॥ ओम् अग्नये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो अग्ने! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव॥

३. दक्षिण दिशा में—

॥ ओम् यमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो यम! दिशं बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव॥

४. दक्षिण-पश्चिम के कोने में—

॥ ओम् निर्ऋतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो निर्ऋते! दिशं रक्ष बलिं भय अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

५. पश्चिम में—

।। ओम् वरुणाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तिर्बलिं समर्पयामि ।

भो वरुण ! दिशं रक्ष बलिभक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव ।।

६. पश्चिम-उत्तर के कोने में—

।। ओम् वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि ।

भो वायो ! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता शान्ति तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव ।

७. उत्तर में—

।। ओम् कुवेराय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि ।

भो कुवेर ! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव ।

८. उत्तर-पूर्व के कोने में—

।। ओम् ईशानाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि ।

भो ईशान ! दिशं रक्ष बलिं यक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव ।

९. ईशान कोण व पूर्व के बीच में—

।। ओम् ब्रह्मणे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि ।
भो ब्रह्मन् ! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता शान्तिकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव ।

१०. नैऋत्य कोण और पश्चिम के बीच में—

।। ओम् अनन्ताय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि ।
भो अनन्त दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता शान्तिकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव ।

।। नवग्रह बलि ।।

⊙ इसी तरह १ बत्ती दही-उरद के साथ लेकर जल छोड़कर नवग्रह को बलि प्रदान करें—नवग्रह के पास रख दें

।। ओम् सूर्यादि नवग्रहेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि ।
भो सूर्यादि नवग्रहाः बलिं भक्षध्वम् अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्तारः क्षेमकर्त्तारः शान्तिकर्त्तारः तुष्टिकर्त्तारः पुष्टिकर्त्तारः वरदा भवत । अनेन बलिदानेन सूर्यादि नवग्रहाः प्रीयन्ताम् ।

॥ क्षेत्रपाल बलि ॥

⊙ १ मिट्टी के प्याले में ४ मुख की बत्ती जला ले

⊙ १ पत्तल पर दही-उरद-सिन्दूर-काजल लगा कर दीपक की पूजा कर दें ।

—(जल-रोड़ी-अक्षत-फूल-नैवेद्य-आचमन-दक्षिणा चढ़ा दें) ।

⊙ प्रार्थना करें—

ओम् नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूत प्रेत गणाधिप । पूजां बलिं गृहाणेयं सौम्यो भवतु सर्वदा ॥
आयु रारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा । मा विघ्नं भवतु मे पापं मा सन्तु परिपन्थिन ॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्चदेहि मे । सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूत प्रेताः सुखावहाः ॥

⊙ हाथ में जल लेकर निम्न वाक्य कहें—और जल छोड़ दें

ओम् क्षेत्रपालाय शाकिनी - डाकिनी - भूत - वेताल - पिशाच सहिताय इमं सदीप दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि । भो क्षेत्रपाल ! विशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता शान्तिकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव । अनेन वलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् ।

⊙ नाई या नौकर पत्तल सहित दीपक को उठा कर यजमान के ऊपर पीठ की ओर से ३ बार उतार कर घर से बाहर ले जाकर दीपक को रख दे । हाथ पाव धोकर घर में आवे

⊙ [1]नाई दीपक ले जाने लगे तो यजमान उसके ऊपर पीली सरसों छिड़क दे मंत्र पढ़े—

ओम् भूताय त्वा नारातये स्वरभि विर ख्येषं न् ॅ हन्ता दुर्याः । पृथिव्या मुर्वन्त रिक्ष मन्वेमि । पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्य दित्या उपस्थेऽग्ने हव्य ॅ रक्ष ।

⊙ यजमान तीन बार आचमन कर ले ⊙ स्विष्टकृत हवन—घी की १ आहुति बताशा या लड्डू के साथ दे—

।। ओम् अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा ।। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ।।

।। पूर्ण पात्र दान ।।

⊙ चावल भर कर रखा हुआ पूर्णपात्र दक्षिणा के साथ संकल्प करे—

।। अद्य कृतस्य अस्य कर्मणः सिध्यर्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतं ब्रह्मणे दातुमहमुत्सृजे ।।

⊙ ब्रह्मा की गांठ खोल दे—कुशा में गांठ लगा कर जो रखा है उस गांठ को खोल दे

⊙ प्रणीता पात्र के जल को पवित्रद्वय से अपने ऊपर छिड़के ।

।। ओम् सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु ।।

⊙ प्रणीता पात्र ईशानदिशा में उलट दें—मंत्र पढ़ें—

।। ओम् दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं च द्विष्मः ।।

टिप्पणी—[1]इसके लिये नाई को कुछ द्रव्य देना चाहिये

⊙ प्रणीता उलटने के बाद गिरे हुए जल को यजमान कुश पत्रद्वय से अपने ऊपर छिड़क ले—मंत्र पढ़ें—

॥ ओम् आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्त तमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥

⊙ वेणी रूप उपनयन कुशा को अग्नि में डाल दें।

॥ पूर्णाहुति संकल्प ॥

⊙ कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करे—

अद्य गोत्रः नामाऽहम् मम मनोऽभिलषित धर्मार्थकामादि यथेप्सितायु रारोग्यैश्वर्यं पुत्र पशु सखि सुहृत् सम्बन्धि बन्ध्वादि प्राप्तये ऽस्मिन् कर्मणि आवाहित देवतानां प्रीतये च दत्ताभिः आहुतिभिः परिपूर्णता सिद्धये पूर्णाहुति होमं च करिष्ये।

⊙ १ नारियल में कलाई या लाल वस्त्र लपेट कर सामने रख कर पंचोपचार पूजन कर दे। मंत्र पढ़े—

॥ ओम् पूर्णाहुत्यै नमः ॥

⊙ नारियल के छेद में घी भर ले ⊙ खड़ा होकर अग्नि में सीधे खड़ा कर दे। मंत्र—

ओम् पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जं ऽ शतक्रतोः स्वाहा।

⊙ आसन पर बैठ जाय—

⊙ जो कुशा वेदी के चारों ओर बिछाया है। उसे उसी क्रम से उठा कर घी में बोर कर अग्नि वेदी में डाल दे।

॥ ओम् देवागातु विदोगातुं वित्वा गातु मित । मनसस्पत इमं देव यज्ञ ᳫ स्वाहा-वातेधाः स्वाहा ॥

⊙ कटोरी में जो घी बचा है उसे हवन कुण्ड में गिरा दे । मंत्र पढ़े—

ओम् वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र मसि सहस्रधारम् ।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसो पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥

⊙ भस्म लगाएं [स्रुवा से हवन की राख लेकर अनामिका अंगुली से अपने लगा लें] ।

माथ में—**त्र्यायुषं जमदग्ने ।** ग्रीवा में—**कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।**

दक्षिण बाहु में—**यद्-देवेषु त्र्यायुषम् ।** हृदय में—**तन्नो ऽ अस्तु त्र्यायुषम् ।**

⊙ तर्पण-मर्जन करे—

⊙ तर्पण—हवन सामग्री (शाकल्य) वाले (थाली-परात) पात्र में थोड़ा सा जल लेकर—कुशा से बोर-बोर कर इस जल को अग्नि पर २८ बार गायत्री मंत्र से छिड़के । मंत्र—

ओम् भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्—तर्पयामि ॥

⊙ मार्जन—इसी तरह थाली का जल कुशा से बोर-बोर कर २८ बार अग्नि पर छिड़के । मंत्र—

ओम् भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्—मार्जयामि ।

⊙ संस्रव प्राशन—प्रोक्षणी का जल जिसमें हवन के बाद १-१ बूंद घी छोड़ा गया है । उसे अनामिका अंगुली से छूकर अपने मुख पर लगा ले ⊙ हाथ धोकर आचमन कर ले

⊙ कपूर आरती—१ थाली में चावल रख कर उस पर कपूर जलाकर रखे, खड़ा होकर आरती करे।

ओम् चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखा दग्नि रजायत।

ओम् कर्पूरगौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्। सदा बसन्तं हृदयार विन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

ओम् भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीप ज्योति र्नमोऽस्तु ते॥

⊙ चारों ओर घूम कर सभी वेदी पर आरती कर दें ⊙ आरती की थाली जमीन पर रख कर जल छोड़ दें।

⊙ द्रव्य छोड़कर सब लोग आरती ले लें। ⊙ पुष्पाञ्जलि—हाथ में फूल लेकर प्रार्थना करे—

ओम् यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवस्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥

॥ १ ॥ ओम् राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैं श्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैं श्रवणो ददातु॥
कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥

॥ २ ॥ ओम् स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वै राज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज माधिपत्य
मयं समन्त पर्यायी स्यात्-सार्वभौमः सार्वायुष आन्ता दा परार्धात्।
पृथिव्यै समुद्र पर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो
मरुत्तस्या वसन् गृहे॥ अविक्षितस्य काम प्रेर् विश्वे देवाः सभासद इति॥

॥ ३ ॥ ओम् विश्व तश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहु रुत विश्व तस्पात् ।
सम्बाहुभ्यां धमति सम्पत्रैर्द्यावा भूमी जनयन्देव एकः ॥

⊙ प्रदक्षिणा—हाथ में फूल लेकर वेदी के चारों ओर ३ बार परिक्रमा करे—फूल पीठ पर चढ़ा दे ।

ओम् यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानि-तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे-पदे ॥

॥ अभिषेक ॥

⊙ यजमान की पत्नी यजमान के बायीं ओर बैठ जाय । [यजमान अपने पुत्र-पौत्रों को भी साथ बिठा ले—देशाचार है ।]

⊙ ब्राह्मण पाँचों कलश से थोड़ा-थोड़ा जल एक पात्र में निकाल कर कुशा से यजमान पर छिड़के । मंत्र—

॥ १ ॥ ओम् देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽ श्विनोर् बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर् यन् त्रिये दधामि बृहस्पते ष्ट्वा साम्राज्ये नाभि षिचाम्यसौ ॥

॥ २ ॥ ओम् देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर् बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर् यन्त्रे णाग्नेः साम्राज्ये नाभि षिचामि ॥

॥ ३ ॥ ओम् देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर् बाहुभ्यं पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
अश्विनोर् भैषज्येन् तेजसे ब्रह्म वर्चसा याभि षिंचामि ॥
सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्या यान् नाद्या याभिषिंचामीन्द्रस्यइन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिंचामि ।

॥ ४ ॥ ओम् आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ।
॥ ५ ॥ ओम् योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः । उशतो रिव मातरः ।
॥ ६ ॥ ओम् तस्माऽअरङ्ग माम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जन यथाचनः ।

⊙ तिलक-आशीर्वाद—ब्राह्मण यजमान के माथे में तिलक-अक्षत लगावे । तिलक मंत्र—

॥ ओम् आदित्यादि ग्रहाः सर्वे नक्षत्राणि सराशयः । तिलकं तु प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये ॥

⊙ रक्षासूत्र बाँधे—यजमान के दाहिने हाथ में तथा यजमानपत्नी के बाएँ हाथ में कलाई बाँधे । मंत्र—

॥ ओम् येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वां प्रति बध्नामि रक्षे माचल माचल ॥

⊙ यजमानपत्नी फिर यजमान के दाहिने आकर बैठ जाय ।

⊙ गोदान—कुश-अक्षत-जल लेकर प्रत्यक्ष गौ के अभाव में निष्क्रय द्रव्य लेकर संकल्प करे—

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् कृतस्य कर्मणः सिद्ध्यर्थम् तत्सम्पूर्णफल—
प्राप्त्यर्थम् च गोनिष्क्रय भूतम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे ॥

⊙ ब्राह्मण गोदान लेकर कहे— ॥ स्वस्ति ॥

⊙ आचार्य दक्षिणा दान—कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर आचार्य-पुरोहित को दक्षिणा संकल्प करे—

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् कृतस्य कर्मणः सिध्यर्थम् फलावाप्तये च आचार्याय इमां मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥

⊙ आचार्य कहे— ॥ स्वस्ति ॥

⊙ भूयसी दक्षिणा—कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर भूयसीदान संकल्प करे—

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् कृतस्य कर्मणः न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थम् इमां भूयसीं दक्षिणां नानानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्चश्च विभज्य यथाकाले दातुमहमुत्सृजे ॥

⊙ ब्राह्मण भोजन संकल्प —

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् कृतस्य कर्मणः समृद्धयर्थे यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। दक्षिणां च दास्ये ॥

⊙ उत्तर पूजन—यजमान-गौरी-गणेश-कलश-नवग्रह चारों कोनों में स्थापित पीठ प्रधान देवता आदि सभी आवाहित देवताओं पर गन्ध-अक्षत-पुष्प छोड़ कर उत्तर पूजन कर दे। मंत्र—

॥ आवाहित देवताभ्यो नमः। उत्तर पूजां गृहणन्तु। प्रीयन्ताम् ॥

⊙ अग्नि विसर्जन—हवन वेदी के बाहर गन्ध-अक्षत-पुष्प छोड़ कर प्रार्थना करे—

॥ ओम् गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥

⊙ क्षमा प्रार्थना—अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करे—

॥ अपराध सहस्राणि क्रियन्ते ऽहर्निशं मया । दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर ॥
अन्यथा शरणन्नास्ति त्वमेव शरणं मम । तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष त्वं परमेश्वर ॥
आयुर्विद्यां धनं दत्त यशः सौख्यं च पुष्कलम् । पुत्रदार सुखं दत्त सर्वान् कामांश्च दत्त में ॥

⊙ अक्षत छोड़ कर विसर्जन—

ओम् यान्तु देव गणाः सर्वे पूजा मादाय मामकीम् । इष्ट काम समृध्यर्थम् पुनरागमनाय च ॥

⊙ पीठदान—कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर—नवग्रह-वास्तु-योगिनी-प्रधान देवता पीठ-शैया आदि का संकल्प करे—

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् कृतस्य कर्मणः समृद्ध्यर्थम्-इमानि सोपस्करादि-सहितानि पीठादीनि सदक्षिणानि आचार्याय गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

⊙ ध्वजा पताका दान—कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर नवग्रह की झंडी तथा इन्द्रध्वज का संकल्प करे—

१४५ ॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् कृतस्य कर्मणः सिध्यर्थम्-इदं मण्डपं ध्वज-पताकादि-उपस्करयुतम्-सदक्षिणाम्-आचार्याय सम्प्रददे ॥

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

॥ ओम् मया यत् कृतं यथा कालं यथा ज्ञानं यथा शक्ति ।

प्रतिष्ठा कर्म तेन श्री पापापहा महाविष्णुः प्रीयताम् ॥

⊙ हाथ का जल सामने भूमि पर छोड़ दे । ⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

ओम् प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णम् स्यादिति श्रुतिः ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
ओम् विष्णवे नमः । विष्णवे नमः । विष्णवे नमः ।

⊙ यजमान—जिस आसन पर बैठा है उसके नीचे जल छिड़क कर—उस जल को अपने माथे में और आँखों में लगा ले ।

⊙ ब्राह्मण—फल-फूल आदि लेकर यजमान तथा उसकी पत्नी को मंत्राक्षत दे—

ओम् श्रीर्वर्चस्व मायुष्य मारोग्य माविधात् पवमानं महीयते ।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्र लाभं शत संवत्सरं दीर्घमायुः ॥

ओम् मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः । शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणा मुदयस्तव ॥

⊙ यजमान और उसकी पत्नी की जो गाँठ बांधी है, खोल दी जाय । यजमान उठ कर ब्राह्मणों का पाँव छुवे ।

टिप्पणी—देशाचार में—यजमान पत्नी गौर को सिन्दूर चढ़ा कर सोहाग लेती हैं ।

॥ इति ॥

॥ परिशिष्ट-क ॥

॥ कलश स्थापन विधि ॥

⊙ कलश रखने के स्थान को दाहिने हाथ से स्पर्श करे—

ओम् मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतन्नो भरीमभिः ॥

⊙ सप्तधान्य रखें—

ओम् धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा ।

दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णा त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुसे त्वा महीनाम्पयोसि ॥

⊙ सप्तधान्य पर कलश रखें—

ओम् आजिघ्र कलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दवः ।

पुनरूर्जा निवर्तस्व सानः । सहस्रन्धुक्ष्वो रुधारा पयस्वती पुनर्मा विशता द्रयिः ॥

⊙ कलश में चावल भरे—

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युरा चके ।

⊙ कुक्ष के मत से जल भरें—

ओम् वरुणस्योत्तम्भन मसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य ।
ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदन मसि वरुणस्य ऋत सदन मासीव ।।

⊙ कलश में गन्ध—

ओम् त्वां गन्धर्वाऽअखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ।।

⊙ औषधि—

ओम् या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्य स्त्रियुगम्पुरा । मनैनु बभ्रूणा मह ७ शतन्धामानि सप्त च ।।

⊙ दूर्वा (दूब)—

ओम् काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।।

⊙ आम्रपल्लव—

ओम् अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके न मानयति कश्चन । स सस्त्य श्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ।।

⊙ सप्तमृत्तिका छोड़े—

ओम् स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः ।।

⊙ कुशा—

ओम् पवित्रेस्थों वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
तस्य ते पवित्र पते पवित्रपुतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।।

⊙ सुपारी छोड़े—

ओम् याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्व ऽ ह सः ।।

⊙ कलश के कंठ में लाल सूत बांध दे ⊙ १ धोती १ अंगोछा चढ़ा दे

ओम् युवा सुवासाः परवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः ।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ।।

⊙ कलश में द्रव्य छोड़े

ओम् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम् ।।

⊙ कलश में पंचरत्नी छोड़े

ओम् परिवाजपतिः कवि रग्नि र्हव्या न्यक्रमीत् । दधद् रत्नानि दाशुषे ।।

⊙ पंच पल्लव मन्त्र—

ओम् अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता । गोभाज इत् किला सथ यत् सनवथ पूरुषम् ।।

⊙ कलश के ऊपर पूर्ण-पात्र [१ पात्र में चावल भरकर] रखे

ओम् पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहाइष मूर्जं ऽ शतक्रतोः ।।

टिप्पणी—कुछ लोग पंच पल्लव लिखते हैं

⊙ पूर्णपात्र पर कलाई लपेट कर १ सुपारी रखे अथवा कपड़ा लपेट कर नारियल रखे

ओम् याः फलनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्व ऽ ह सः ॥

⊙ कलश पर अक्षत छिड़क कर आवाहन करे—

ओम् तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तद शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेड मानो वरुणे ह बोध्युरुश ऽ समान आयुः प्रमोषीः ॥

⊙ दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली, जिसमें पवित्री पहिनी है, उससे कलश को छूकर यह मंत्र पढ़े—

ओम् कला कलाहि देवानां दानवानां कलाकलाः। संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलश स्तेन कथ्यते ॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी। अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ॥
कावेरी कृष्णवेणा च गंगा च महानदी। तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ॥
नदाश्च विविधा जाता नद्याः सर्वास्तथापराः। पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम शान्त्यर्थम् दुरित क्षय कारकाः ॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः। अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा। आयान्तु मम शान्त्यर्थम् दुरित क्षय कारकाः ॥

⊙ कलश पर अक्षत छोड़कर प्रतिष्ठा करे—

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ಆ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ । कलशे वरुणाय नमः ।।

⊙ कलश की पूजा करें—३ बार जल छोड़ें

ओम् पादयोः पाद्यं, हस्तयोः अर्घ्यम्, आंचमनीयं जलं समर्पयामि; स्नानार्थम् जलं समर्पयामि,

⊙ गन्ध-अक्षत, फूल-दीप, नैवेद्य, आचमन, पान, सुपारी, दक्षिणा चढ़ा दे

ओम् गन्धं समर्पयामि, अक्षतान् समर्पयामि, पुष्पाणि, धूपं, दीपम्, नैवेद्यं निवेदयामि, नैवेद्यान्ते
आचमनीयं, मध्ये पानीयम्-उत्तरापोशनम, ताम्बूलपूंगीफलम् दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि, वरुणायनमः ।

⊙ जल छोड़े

ओम् अनया पूजया वरुणादि-आवाहित देवताः प्रीयन्तां न मम ।।

टिप्पणी—कलश पर दीपक रखे तो निम्न मंत्र पढ़े—

ओम् अग्निर्ज्योतिर् ज्योतिर्ग्निः स्वाहा । सूर्यो ज्योतिर् ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर् वर्चो
ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । सूर्यो वर्चो ज्योतिर् वर्चः स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।।

⊙ अक्षत लेकर प्रार्थना करे—प्रार्थना के बाद अक्षत कलश पर छोड़ दे

ओम् देव दानव संवादे मध्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्याः वसवो रुद्रा विश्वे देवाः सपैतृकाः। त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ॥
त्वत् प्रसादादिमं कर्म कर्त्तुमीहे जलोद्भव। सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥
नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय, सुश्वेतहाराय सुमंगलाय।
सुपाश हस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥
पाश पाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनायक। यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं स्थिरो भव ॥

॥ परिशिष्ट-ख ॥

॥ प्राण प्रतिष्ठा विधि ॥

⊙ अपने सामने किसी पात्र में सुवर्ण प्रतिमा रख ले ⊙ अक्षत जल लेकर संकल्प करे—

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ ...... गोत्रः ...... नामाऽहम्—अस्यां मूर्तौ [कई मूर्तियां हों तो—आसु मूर्त्तिषु]
अवघातादि दोष परिहारार्थम्—अग्नि-उत्तारणं देवता सान्निध्यर्थम् प्राण प्रतिष्ठां च करिष्ये।

⊙ हाथ का कुश अक्षत-जल सामने भूमि पर छोड़ दे।

⊙ सुवर्ण प्रतिमा को अग्नि में गरम कर ले

ओम् अग्नये ब्रह्म ऋभ वस्त तरक्ष् रग्निम् महामबोचा मा सुवृक्तिम् ।
अग्ने प्रावजरि तारं यविष्ठाग्ने महि प्रवि मा यजस्व ।।

⊙ प्रतिमा में घी लगा दे

ओम् अग्नि विशईडते मानुषीर्या अग्निं मानुषो नहुषो विजाताः ।
अग्निर्गान्धर्वीम् पथ्या मृतस्याग्नेर् गव्यूति घृत आनिसत्ता ।।

⊙ प्रतिमा में घी लगा कर एक पात्र में रखे

⊙ प्रतिमा के ऊपर जल धारा दे ।। जल धारा मंत्र—

।। १ ।। ओम् समुद्रस्य त्वा वक याग्ने परि व्यया मसि । पावको अस्मभ्य ७ शिवो भव ।।
।। २ ।। ओम् हिमस्य त्वा जरायु णाग्ने परि व्यया मसि । पावको अस्मभ्य ७ शिवो भव ।।
।। ३ ।। ओम् अपा मिदन्य यन ७ समुद्रस्य निवेशनम् ।
अन्यांस्ते अस्मन् तपन्तु हेतयः पावको ऽ अस्मभ्य ७ शिवो भव ।।
।। ४ ।। ओम् नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽ अस्त्वर्चिषे ।
अन्यांस्ते ऽ अस्मत् तपन्तु हेतयः पावको ऽ अस्मभ्य ७ शिवो भव ।।

।। ५ ।। ओम् प्राणदा ऽ अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः ।
अन्यांस्ते ऽ अस्मत् तपन्तु हेतयः पावको ऽ अस्मभ्य ७ँ शिवो भव ।।

⊙ पंचगव्य से शुद्ध करे—प्रतिमा को पंचगव्य से धो दे ।। मन्त्र—

ओम् पंचगव्यं हिरण्यं तु पवित्रं शुद्धि कारणम् । अतस्त्वा मभि पिञ्चामि देवाः शुध्यन्ति वै मुदा ।।

⊙ शुद्ध जल से धोकर —प्रतिमा को बाएं हाथ में रख ले, दाहिने हाथ में १ फूल लेकर——प्रतिमा स्पर्श करे—

⊙ प्राण प्रतिष्ठा करे ।। मन्त्र पढ़े—

।। १ ।। ओम् आं ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः अस्यां मूर्तौ प्राणा इह प्राणाः ।

।। २ ।। ओम् आं ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः अस्यां मूर्तौ जीव इह स्थितः ।

।। ३ ।। ओम् आं ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः अस्यां मूर्तौ सर्वेन्द्रियाणि वाङ-मनः-त्वक्-
चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पारित-पाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

।। ४ ।। ओम् अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु, अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्व मर्चायै, माम हेतु च कश्चन ।।

⊙ प्रतिमा को ताम्र कलश के ऊपर स्थापित कर दे, हाथ का फूल भूमि पर छोड़ दे ।

⊙ दुसरा फूल लेकर निम्नलिखित मन्त्रों से स्थापना करे—

।। १ ।। ओम् अयुम्पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्तो गायत्र्यै गायत्रं गायत्रादुपा ७ शुरुपा ७ शोस्त्रिवृत् त्रिवृत रथन्तरं वशिष्ठ ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः ।।

।। २ ।। ओम् अयन्दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य मनो वैश्व कर्मणम् ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुव् ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वार ७ स्वारा दन्तर्यामोन्तर्यामात् पञ्चदशः पञ्चदशाद् बृहद् भरद्वाज ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः ।।

।। ३ ।। ओम् अयम्पश्चाद् विश्व व्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्व व्यच सं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्या ऽऋक् सममृक् समाच्छुक्रः शुक्रात् सप्तदशः सप्तदशाद् वैरूपञ्जमदग्नि ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः ।।

।। ४ ।। ओम् इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्र ७ सौव ७ शरच्छ्रौत्र्य नुष्टुप्शारद्यनुष्टुभ ऐडमैडान्मन्थी मन्थिन एक वि७श एक वि७शाद् वैराजम् विश्वामित्र ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः ।।

॥ ५ ॥ ओम् इयमुपरि मतिस्तस्यै वाङ्भात्या हेमन्तो वाच्यः पंक्तिर् हैमन्तो पंक्त्यं निधनवन्निधनवत
आप्रयण ऽआप्रयणात् त्रिणव त्रयस्त्रि ऊ शौ त्रिणव त्रयस्त्रि ऊ शाम्या ऊ शाक्वर रैवते
विश्वकर्म ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया वाचं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥

ओम् वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवान् ।
यत्वेमहे प्रतिपन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

॥ ६ ॥ ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ऊ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥

⊙ फूल मूर्त्ति पर चढ़ा दे । ⊙ प्रतिमा का षोडशोपचार पूजन करे ।

॥ परिशिष्ट-ग ॥

⊙ वायुनन्दन मिश्र की प्रतिष्ठा महोदधिमें निम्नलिखित ६४ योगिनी के नाम दिए गए हैं—

१. दिव्य योगिनी	२. महायोगिनी	३. सिद्धयोगिनी
४. माहेश्वरी	५. प्रेताक्षी	६. डाकिनी
७. काली	८. कालरात्री	९. निशाकरी
१०. हुंकारी	११. सिद्धवैतालिक	१२. ह्रींकारी
१३. भूतडामर	१४. ऊर्ध्व केषी	१५. विरुपाक्षी

१६. शुष्कांगी | १७. नरभोजनी | १८. फेत्कारी
१६. वीरभद्रा | २०. धूम्राक्षी | २१. कलहप्रिया
२२. राक्षसी | २३. घोर रक्ताक्षी | २४. विशालाक्षी
२५. कौमारी | २६. चण्डी | २७. वाराही
२८. मुण्ड धारिणी | २९. भैरवी | ३०. वीरा
३१. भयंकरी | ३२. वज्रधारिणी | ३३. क्रोधा
३४. दुर्मुखी | ३५. प्रेतवाहिनी | ३६. कर्का
३७. दीर्घलम्बोष्ठी | ३८. मालिनी | ३९. मन्त्रयोषिनी
४०. कालाग्नि मोहिनी | ४१. मोहिनी | ४२. चक्रा
४३. कुण्डलिनी | ४४. वालुका | ४५. कौवेरी
४६. यमदूती | ४७. करालिनी | ४८. कौशिकी
४९. यक्षिणी | ५०. मक्षिणी | ५१. कौमारी
५२. मन्त्र वाहिनी | ५३. विशाला | ५४. कार्मुकी
५५. व्याघ्री | ५६. महाराक्षसी | ५७. प्रेतभक्षिणी
५८. धूर्जटी | ५९. विकटा | ६०. घोर रूपा
६१. कपालिका | ६२. निकला | ६३. अमला | ६४. सिद्धि प्रदा

पूर्व में—विजया | अग्नि—अजिता | दक्षिण में—अपराजिता | नैऋ‍र्त्यये—क्षेमकर्त्री
पश्चिम में—लक्ष्मी | वायव्य—वैष्णवी | उत्तर में—पार्वती | ईशान—जया

॥ परिशिष्ट-घ ॥

॥ मंडप पूजन प्रारम्भ ॥

१. यजमान मण्डप के ईशान कोण वाले स्तम्भ (खम्भा) के पास पूर्व मुख बैठे ⊙ आचमन–प्राणायाम करे।

⊙ अक्षत-फूल लेकर स्तम्भ पूजन——आवाहन करे—

॥ ओम् आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेश यन्न मृतम् मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

॥ ओम् आवाहयेत्तं द्विभुजं दिनेशं सप्ताश्ववाहं घुर्माणि प्रहेशम् ।
सिन्दूरवर्णम् प्रतिमा वभासं भजामि सूर्यम् कुल वृद्धि हेतोः ॥

॥ ओम् पद्मनाभ महावाहो सप्तश्वेत वाहन । आगच्छ भगवन् मानो स्तम्मे ऽस्मिन् सन्नियो भव ॥

॥ ओम् सूर्याय नमः ॥ सावित्र्यै नमः ॥ मंगलायै नमः ॥

⊙ हाथ का अक्षत-फूल स्तम्भ पर छोड़ दे ⊙ स्तम्भ की पूजा करे ।

⊙ तीन बार जल-गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ा कर स्पर्श कर दे ।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

।। ओम् नमः सवित्रे जगदेव चक्षुषे जगत् प्रसूति स्थिति नाश हेतवे ।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्म धारिणे विरञ्चि नारायण शंकरात्मने ।।

।। पद्महस्त रथारूढ़ पद्मासन सुमंगल । क्षमां कुरु दयालो त्वं गजराज नमोऽस्तुते ।।

⊙ फूल स्तम्भ के पास छोड़ दे ⊙ दाहिने हाथ से स्तम्भ को छू ले —

।। ओम् ऊर्ध्वं ऊषुण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता ऊर्ध्वो ।
वाजस्य सनिता यदञ्जिर्भिरवाघद्भिर् विहू्वयामहे ।।

।। ओम् मण्डपस्येशान भागे सुदृढं यथा हस्तकम् । छाया मंडप रक्षार्थम् स्तम्भमालभते स्वयम् ।।

२. ईशान कोण और पूर्व द्वार के बीच में स्थित स्तम्भ के पास आकर बैठे ⊙ आचमन–प्राणायाम करे ।

⊙ अक्षत-पुष्प लेकर स्तम्भ में देव आवाहन करे —

।। ओम् गणानान् त्वा गणपति ऽ हवा महे प्रियाणान् त्वा प्रियपति ऽ हवा महे निधीनान् त्वा
निधिपति ऽ हवा महे वसो मम । आहम जानि गर्भधमा त्वम जासि गर्भधम् ।।

।। ओम् आवाहयेत्तं गणराज देवं रक्तोत् पलाभासमशेष वन्धम् ।

विघ्नान्तकं विघ्नहरं गणेशं भजामि रौद्रं सहितं च सिद्ध्या ।।

॥ लम्बोदर महाकाय गजवक्त्र चतुर्भुज । आगच्छ गणनाथस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

॥ ओम् गणपतये नमः ॥ विघ्नहारिण्यै नमः ॥ जयायै नमः ॥ नागमात्रे नमः ॥

⊙ अक्षत-फूल स्तम्भ पर छोड़ दे ⊙ यथा विधि स्तम्भ की पूजा कर दे

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

॥ ओम् नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपायते नमः । नमस्ते रुद्ररूपाय करि रूपायते नमः ॥
लम्बोदर महाकाय सततं मोदक प्रिय । गौरी सुत गणेशत्वं विघ्नराज प्रसीद मे ॥

⊙ फूल स्तम्भ के सामने छोड़ दे ⊙ स्तम्भ को छू ले ॥ मन्त्र—

॥ ओम् ऊर्ध्वं ऊषुण ऊतयेतिष्ठा देवो न सविता ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर् वाघवभिर्
विह्वयामहे ॥

॥ मण्डपस्येशान पूर्वयोरन्तराले सुलक्षणम् । अस्मिन् मण्डप शोभार्थम् स्तम्भञ्चैव स्पृशाम्यहम् ॥

३. पूर्व द्वार तथा अग्नि कोण के बीच वाले स्तम्भ के समीप आकर पूर्व मुख बैठे ⊙ आचमन-प्राणायम करे।

⊙ अक्षत-फूल लेकर स्तम्भ का पूजन—आवाहन करे—

॥ ओम् यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे ॥ देवस् त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः
स ँ स्पृशस्पाहि । अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥

॥ ओम् एहि-एहि दण्डायुध धर्मराज कालञ्जनाभास विशाल नेत्र।

विशाल वक्षस्थल रुद्ररूप गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥

॥ चित्रगुप्तादि संयुक्त दण्डमुद्गर धारक। आगच्छ भगवन् धर्म स्तम्भे ऽ स्मिन् सन्निधो भव ॥

॥ ओम् यमाय नमः ॥ अञ्जन्यै नमः। क्रूरायै नमः। नियन्त्रं नमः ॥ आवाहयामि। स्थापयामि ॥

⊙ अक्षत-फूल स्तम्भ के पास छोड़ दे ⊙ यथा विधि पूजा कर दे

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे ⊙ प्रार्थना के बाद फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे

॥ ओम् ईशत् पीन नमस्तेऽस्तु दण्डहस्त नमोऽस्तुते। महिषस्य नमस्तेऽस्तु धर्मराज नमोऽस्तुते ॥

धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिपते यम। रक्तेक्षणमहावाहो मम पीडां निवारय ॥

⊙ स्तम्भ का स्पर्श कर ले ॥ मन्त्र—

॥ ओम् ऊर्ध्व ऊषुण ऊतयेतिष्ठा देवो न सविता ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर् वाघद्भिर् विह्वया महे ॥

॥ ओम् मण्डपस्याग्नेय कोणे पूर्वयोरन्तरे स्थितम्।

मण्डपस्या ऽ विनाशार्थम् स्तम्भञ्चैवा ऽऽ लभाम्यहम् ॥

४. अग्नि कोण में स्तम्भ के पास आकर पूर्वमुख बैठे ⊙ आचमन—प्राणायाम करे।

⊙ अक्षत-फूल लेकर आवाहन करे—

।। ओम् नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

।। ओम् एहि-एहि नागेन्द्र धराधरेश सर्वामरैर्वन्दित पादपद्म ।
नानाफणा मंडलराजमान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ।।

।। अशी विष समोपेत नाग कन्या विराजित । आगच्छ नाग राजेन्द्र स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।।

।। ओम् नागराजाय नमः । ओम् धरायै नमः । ओम् पद्मायै नमः । ओम् महापद्मायै नमः ।
आवाहयामि—स्थापयामि ।।

⊙ अक्षत-फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ यथा विधि पूजा करे।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे ⊙ प्रार्थना कर फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे।

।। ओम् नमः खेटक हस्तेभ्यः त्रिभोगेभ्यो नमो नमः । नमो भीषण देवेभ्यः खड्ग धृग्भ्यो नमो नमः ।।
खड्ग खेट धराः सर्पाः फणा मण्डल मण्डिताः । एक भोगाः साक्षसूत्रा वरदाः सन्तु मे सदा ।।

⊙ स्तम्भ का स्पर्श करे ।। मन्त्र—

ओम् ऊर्ध्व ऊषुण ऊतयेतिष्ठा देवो न सविता ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर् वाघद्भिर्
विह् वयामहे ।।

ओम् मण्डपस्याग्नेय कोणे दिव्यं वस्त्राविभूषितम् । प्रतिष्ठा कार्य सिद्ध्यर्थम् स्तम्भमालभते स्वयम् ।।

५. अग्नि कोण और दक्षिण के बीच वाले स्तम्भ के पास बैठे ⊙ आचमन—प्राणायाम करे ।

⊙ अक्षत-फूल लेकर आवाहन करे—

।। ओम् यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान उद्यन् समुद्रा दुत वा पुरोषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यम् महिजातन्ते अर्वन् ।।

।। ओम् आवाहयामि देवेशं षण्मुखं कृत्तिका सुतम् । रुद्र तेज समुत्पन्नं देव सेना समन्वितम् ।।
मयूर वाहनं शक्ति पाणि वै ब्रह्म चारिणम् । आगच्छ भगवन् स्कन्द स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।।

।। ओम् स्कन्दाय नमः । ओम् जयायै नमः । ओम् शक्तये नमः । आवाहयामि—स्थापयामि ।।

⊙ अक्षत-फूल स्तम्भ पर छोड़ दे ⊙ यथा विधि पूजा कर दे ।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

।। ओम् नमः स्कन्दाय देवाय घण्टा कुक्कुट धारिणे । पिनाकशक्ति हस्ताय षण्मुखाय च ते नमः ।।
मयूर वाहन स्कन्द गौरी सुत षडानन । कार्तिकेय महाबाहो दयां कुरु दयानिधे ।।

⊙ फूल स्तम्भ पर छोड़ दे ⊙ स्तम्भ का स्पर्श कर ले ।

।। ओम् ऊर्ध्व ऊषुण ऊतयेतिष्ठादेवो न सविता ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर् वाघद्भिर्
विह्वयामहे ।। अग्निदक्षिणयोर्मध्ये सुपुष्पादि विभूषितम् ।
[illegible]ष्ठ निर्मितं स्तम्भमालभामि शुभाप्तये ।।

६. दक्षिण-नैर्ऋत्य कोण के बीच वाले स्तम्भ के पास आकर बैठे ⊙ आचमन – प्राणायाम करे।

⊙ अक्षत-फूल लेकर आवाहन करे—

॥ ओम् तव वाय वृतस्पते त्वष्टुर् जामातरद्भुत। अवा ꣳ स्या वृणीमहे॥

॥ ओम् आवाहयामि देवेशं भूतानां देहधारिणम्। सर्वाधारं महावेगं मृगवाहन मीश्वरम्॥
ध्वजहस्तं गन्धवहं त्रैलोक्यान्तर चारिणाम्। आगच्छ भगवन् वायो स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव॥

॥ ओम् वायवे नमः। वायव्यै नमः। गायत्र्यै नमः। मध्यम सन्ध्यायै नमः। आवाहयामि–स्थापयामि॥

⊙ अक्षत-फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ यथा विधि पूजा करे।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

॥ ओम् नमो धरणि पृष्ठस्थ समीरण नमोऽस्तुते। धूम्र वर्ण नमस्तेऽस्तु शीघ्रगामिन् नमोऽस्तुते॥
धावन् धरणि पृष्ठस्थ समीरण नमोऽस्तुते। दण्डहस्त मृगारूढ़ वरं देहि वर प्रद॥

⊙ फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ स्तम्भ का स्पर्श कर ले।

॥ ओम् ऊर्ध्व ऊषुण ऊतयेतिष्ठा देवो न सविता ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर् वाघदभिर्
विह्वयामहे॥ निर्ऋति दक्षिणयोर्मध्ये स्वक्षं यज्ञीय काष्ठजम्।
शान्ति पुष्टिकरं रम्यं स्तम्भं चैवालभाम्यहम्॥

७. उठ कर नैर्ऋत्य कोण वाले स्तम्भ के पास आकर बैठे ⊙ आचमन—प्राणायाम करे ।

⊙ अक्षत-फूल लेकर आवाहन करे—

॥ ओम् आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य सङ्गथे ॥

॥ ओम् आवाहयामि देवेशं शशांकं रजनीपतिम् । क्षीरोदधि समुद्भूतं हर मौलि विभूषणम् ॥

सुधाकरं द्विजाधीशं त्रैलोक्य प्रीतकारकम् । औषध्यापनकरं सोमं कन्दर्प वर्धनम् ॥

आगच्छ भगवन् सोम स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

॥ ओम् सोमाय नमः । सावित्र्यै नमः । अमृत कलायै नमः । विजयायै नमः । आवाहयामि-स्थापयामि ॥

⊙ अक्षत फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ यथा विधि स्तम्भ की पुजा करे ।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

॥ ओम् अत्रिपुत्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते शशिलाञ्छन । श्वेताम्बर नमस्तेऽस्तु ताराधिप नमोऽस्तुते ॥

अत्रिपुत्र निशानाथ द्विजराज सुधाकर । सोमत्वं सौम्य भावेन ग्रहपीडां निराकुरु ॥

⊙ फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ स्तम्भ का स्पर्श करे ।

॥ ओम् ऊर्ध्व ऊषुण ऊतयेतिष्ठा देवो न सविता ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर् वाघद्भिर्

विह्वयामहे ॥ ओम् नैर्ऋत्य कोण भूमौतु सरलं कार्यसाधकम् ।

मनोहरं सौम्यरूपं स्तम्भञ्चै वालभाम्यहम् ॥

८. उठ कर नैर्ऋत्य-पश्चिम के मध्य वाले स्तम्भ के पास आकर बैठे ⊙ आचमन— प्राणायाम करे।

⊙ अक्षत-फूल लेकर आवाहन करे—

॥ ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वा मवस्युराचके ॥

॥ ओम् आवाहयमि देवेशं सलिलस्याधिपं प्रभुम् । शंख पाशधरं सौम्यं वरुणं यादसां पतिम् ॥

कुम्भीरथ समारूढ़ं मणिरत्न समन्वितम् । आगच्छ देववरुण स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

॥ ओम् वरूणाय नमः । वारूण्यै नमः । पाशधारिण्यै नमः । वृहत्यै नमः ॥ आवाहयामि-स्थापयामि ॥

⊙ अक्षत-फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ यथा विधि स्तम्भ की पूजा कर दे।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

॥ ओम् वरुणाय नमस्तेऽस्तु नमः स्फटिक दीप्तये । नमस्ते श्वेत हाराय जलेशाय नमो नमः ॥

शंखस्फटिक वर्णाभ श्वेतहाराम्बरावृत । पाशहस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे ॥

⊙ फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ स्तम्भ का स्पर्श कर ले

॥ ओम् ऊर्ध्व ऊषुण ऊतयेतिष्ठा देवो न सविता ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर् वाघद्भिर्

विह्वयामहे ॥ ओम् प्रत्यक्स्थं विश्वरूपस्थं विश्वकर्म विनिर्मितम् ।

सुराणामर्चन विधौ स्तम्भमेवालभाम्यहम् ॥

८. उठ कर पश्चिम द्वार तथा वायव्य कोण के बीच वाले स्तम्भ के पास आकर बैठे ⊙ आचमन—प्राणायाम करे।

⊙ अक्षत-फूल लेकर आवाहन करे—

।। ओम् वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वा ऽऽ दित्येभ्यस्त्वा संजनाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्या वताम्।
व्यन्तु वयोक्त ७ रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह।
चक्षुष्पा अग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि ।।

।। ओम् आवाहयामि देवेशान् वसूनष्टौ महाबलान्। सौम्य मूर्त्तिधरान् देवान् दिव्यायुधकरान्वितान् ।।
शुद्ध स्फटिक सङ्काशान् नाना वस्त्र विराजितान्। आवाहयामि स्तम्भेऽस्मिन् वसूनष्टौ सुखावहान् ।।

।। ओम् वसुभ्यो नमः। विनतायै नमः। अणिमायै नमः। भूत्यै नमः। गरिमायै नमः। आवाहयामि ।।

⊙ अक्षत-फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ यथा विधि स्तम्भ की पूजा करे।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

।। ओम् नमस्करोमि देवेशान् नाना वस्त्र विराजितान्। शुद्ध स्फटिक संकाशान् दिव्यायुध धरान् वसून् ।।
दिव्य वस्त्रा दिव्यदेहाः पुष्पमाला विभूषिताः। वसवोऽष्टौ महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा ।।

⊙ फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ स्तम्भ का स्पर्श करे

।। ओम् ऊर्ध्वं ऊषुण ऊतयेतिष्ठा देवो न सविता ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर् वाघद्भिर्
विह्वयामहे ।।

३६७ ।। ओम् वायुप्रत्यङ्गमध्यगतं सर्वकार्यार्थ साधनम्। सकलानन्दकं भव्यं स्तम्भमेवालभाम्यहम् ।।

१८. उठ कर वायव्य कोण वाले स्तम्भ के पास आकर बैठे ⊙ आचमन—प्राणायाम करे।

⊙ अक्षत-फूल लेकर आवाहन करे—

॥ ओम् सोमो धेनु ᳚ सोमो अर्वन्तमाशु ᳚ सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति ।
सादन्यं विदथ्य ᳚ सभेयं पितृश्रवणं यो ददाश दस्मै ॥

॥ ओम् आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम् । महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतं विभुम् ॥
दिव्यमालाम्बरधरं गदाहस्तं महाभुजम् । आगच्छ यक्ष राजेन्द्र स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

॥ ओम् धनदाय नमः । आदित्यायै नमः । लघिमायै नमः । सिनीवाल्यै नमः । आवाहयामि-स्थापयामि ॥

⊙ अक्षत-फूल स्तम्भ पर छोड़ दे ⊙ स्तम्भ की यथा विधि पूजा करे।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

॥ ओम् यक्षराज नमस्तेऽस्तु नमस्ते नरयानग । पीताम्बर नमस्तेऽस्तु गदापाणे नमोऽस्तुते ॥
दिव्यदेह धनाध्यक्ष पीताम्बर गदाधर । उत्तरेश महाबाहो वाञ्छितार्थफलप्रद ॥

⊙ फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ स्तम्भ का स्पर्श कर ले

॥ ओम् ऊर्ध्व ऊषुण ऊतयेतिष्ठा देवो न सविता ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर् वाघद्भिर् विह्वयामहे ॥

॥ ओम् वायुकोण स्थितं दिव्यं यथा हस्त प्रमाणकम् । ममाध्वर त्राणकरं स्तम्भमेवालभाम्यहम् ॥

११. उठकर वायव्य कोण और उत्तर द्वार के बीच वाले स्तम्भ के पास आकर बैठे ⊙ आचमन—प्राणायाम करे।

⊙ अक्षत-फूल लेकर आवाहन करें—

।। ओम् बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद् विभाति क्रतु मज्जनेषु। यद्दी दयच्छ्वस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।।

।। ओम आवाहयामि देवेशं गुरुं त्रिदशपूजितम्। हेम गोरोचना वर्णम् पीन स्कन्धं सुवक्षसम् ।। शंखञ्च कलशञ्चैव पाणिभ्यां हेम विभ्रमम्। आगच्छ देवगुरो चात्र स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।।

।। ओम् बृहस्पतये नमः। पौर्णमास्यै नमः। सावित्र्यै नमः। आवाहयामि —स्थापयामि ।।

⊙ अक्षत फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ यथाविधि स्तम्भ की पूजा कर दे

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

।। ओम् ब्रह्मपुत्र नमस्तेऽस्तु पीतध्वज नमोऽस्तुते। त्रिदशार्चित देवेश सिन्धूद्भव नमोऽस्तुते ।। पूजितोऽसि यथाशक्त्या दण्डहस्त बृहस्पते। क्रूर ग्रहाभि भूतस्य शान्तिं देवगुरो कुरु ।।

⊙ फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ स्तम्भ का स्पर्श कर ले

।। ओम ऊर्ध्व अषुण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर् वाघद्भिर् विह्वया महे।

।। ओम् वायव्योत्तरयोर्मध्ये भूषितं गुरु दैवतम्। मत्सु सत्रा विघ्नकरं स्तम्भं चैवालभाम्यहम् ।।

१२. वहां से उठकर उत्तर द्वार तथा ईशान कोण के मध्य वाले स्तम्भ के पास आकर बैठे ⊙ आचमन— प्राणायाम करे ।

⊙ अक्षत-फूल लेकर आवाहन करे—

।। ओम् विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्र मकृणो रवध्वम् ।
तस्मै विशः समनमन्त पूर्वी रय मुग्रो विहव्यो यथाऽसत् ।।

।। ओम् आवाहयामिदेवेशं विश्वकर्माणमीश्वरम् । मूर्त्तामूर्त्तकरं देवं सर्वं कर्त्तारमीश्वरम् ।।
त्रैलोक्य सूत्रकर्त्तारं द्विभुजं विश्वदर्शितम् । आगच्छ विश्वकर्मस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधोभव ।।

।। ओम् विश्वकर्मणे नमः । सिनीवाल्यै नमः । सावित्र्यै नमः । वास्तु देवतायै नमः । आवाहयामि—
स्थापयामि ।।

⊙ फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ यथाविधि स्तम्भ की पूजा कर दे । ⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

।। ओम् नमामि विश्वकर्माणं द्विभुजं विश्वदर्शितम् । त्रैलोक्य सूत्रकर्त्तारं महावल पराक्रमम् ।।
प्रसीद विश्व कर्मस्त्वं शिल्प शास्त्र विशारद । सदण्डपाणे द्विभुजस् तेजोमूर्तिधर प्रभो ।।

⊙ फूल स्तम्भ पर चढ़ा दे ⊙ स्तम्भ का स्पर्श कर ले—

।। ओम् ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर् वाघद्भिर्
विहृवयामहे ।।

।। ओम् सोमेष्वीशानयोर्मध्ये सर्वत्राणकरं परम् । सुगन्धाद्यर्चितममुं स्तम्भमेवालभाम्यहम् ।।

।। वलिका पूजन ।।

⊙ यजमान मण्डप के पश्चिम द्वार से बाहर आकर मण्डप के सामने पूर्व मुख खड़ा हो

⊙ अक्षत-फूल लेकर बारहों खम्भों के ऊपरी भाग में [जहाँ बन्धन है] नागमाता का ध्यान करे

[पद्धति में स्तम्भ शिरसि वलिका पूजन— वाक्य कहा गया है]

।। ओम् आयं गौ पृश्नि रक्रमीद सदन् मातरंपुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः ।।

।। ओम् सर्वेषां नागराजानां पातालतल वासिनाम् । नागमातर आयान्तु भवन्तु सगणाः स्थिराः ।।

।। ओम् नाग मात्रे नमः । आवाहयामि—पूजयामि ।।

⊙ गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा कर पूजा कर दे ।

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे—

।। ओम् नमोऽस्तु वलिकावन्ध सुवृढ़त्वं शुभाप्तिवम् । एनं मंडप सत्रन्तु रक्ष रक्ष निरन्तरम् ।।
शेषादि नागराजानः समस्ता मम मण्डपे । पूजां गृह्णन्तु सततं प्रसीवन्तु ममोपरि ।।

⊙ फूल बन्धन के ऊपर चढ़ा दे ।

टिप्पणी—इन बारहों स्तम्भों की पूजा मण्डप के भोतर से करनी चाहिये ⊙ पूजा पूर्व मुख अथवा उत्तर मुख होकर करे ।

⊙ दूसरा फूल लेकर मण्डप भूमि की प्रार्थना करे—

॥ ओम् भूमि भूमि मवगान्माता यथा मातरमभ्यगात् । भूयास्म पुत्रैः पशुभिर्योनो द्वेष्टिस भिद्यताम् ॥
नमस्ते पुण्डरी काक्ष नमस्ते विश्वभावन । नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वज ॥

⊙ हाथ का फूल मण्डप भूमि में चारों ओर छिड़क दे ⊙ मण्डप भूमि का स्पर्श कर प्रणाम कर ले ।

॥ द्वारपाल पूजन ॥

⊙ यजमान पूजन सामग्री तथा आचार्य-ब्राह्मण को साथ लेकर क्रमशः मण्डप के चारों द्वारों पर जाकर द्वारपालों का पूजन करे ।

१. पूर्व द्वारपाल पूजन

⊙ सर्वप्रथम पूर्व द्वार पर आवे । उत्तर की ओर मुख करके एक आसन पर बैठ जाय ।

⊙ ३ बार आचमन करे : प्राणायाम करे

⊙ दाहिने हाथ में कुश-अक्षत-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे—

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः··· नामाऽहं करिष्यमाण अमुक मूर्त्तीनां स्थिर
प्रतिष्ठा कर्मणि मण्डपाधिष्ठित स्तम्भादि देवतानां द्वारपालानां पूजनं करिष्ये ।

⊙ हाथ का कुश-अक्षत-जल सामने भूमि पर छोड़ दे ।

⊙ पूर्व द्वार के दोनों खम्भों के पास १-१ कलश स्थापित करे

[कलश स्थापन विधि परिशिष्ठ में देखें]

⊙ कलश स्थापन के बाद : दोनों कलशों पर द्वारपाल का आवाहन करे : विधि—

⊙ बायें हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से दोनों कलशों पर अक्षत छिड़के—

दाहिने कलश पर **।। ओम् प्रशान्ताय नमः ।।**

बायें कलश पर **।। ओम् शिशिराय नमः ।। पूर्वद्वारपालाभ्यां नमः ।।**

ओम् मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनो
त्वरिष्टं यज्ञ ꣸ समिमन्दधातु । विश्वेदेवा सइह मादयन्ता मोम् प्रतिष्ठ ।।

⊙ हाथ का अक्षत कलशों पर छोड़ दे ।

⊙ कलश पर द्वारपालों की पूजा कर दे

चुपचाप = ३ बार जल—गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दे । धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ा दे

⊙ हाथ में जल ले—ब्राह्मण पढ़े—

एतानि गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-द्वीप-नैवेद्य-ताम्बूल
पूंगीफल फल - दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि ।। पुर्वं द्वारपालाभ्यां नमः ।।

⊙ हाथ का जल दोनों कलश के सामने छोड़ दे ।

⊙ फिर हाथ में जल लेकर कहे—

॥ अनया पूजया पूर्वद्वारपालौ प्रीयेतां न मम ॥

⊙ हाथ का जल छोड़ दे । हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

॥ अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया ॥ सुप्रसन्नैश्च कर्त्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम् ॥

॥ पूर्वद्वारपालौ क्षेकर्त्तारौ-वृष्टिकर्त्तारौ वरदौ भवतम् ॥

⊙ जिस आसन पर बैठे हैं उसके नीचे जल छोड़कर आसन सहित उठकर दक्षिण द्वार पर आवे ।

२. दक्षिण द्वारपाल पूजन

⊙ दक्षिण द्वार पर उत्तर मुख आसन पर बैठ जाय ।

⊙ आचमन-प्राणायाम कर ले । दोनों खम्भों के पास २ कलश स्थापित करे ।

[कलश स्थापन विधि परिशिष्ट में देखें] कलश स्थापन के बाद—

⊙ कलशों पर द्वारपाल का आवाहन करे ।

⊙ बायें हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से पहले दाहिने फिर बायें कलश पर छिड़के : ब्राह्मण मंत्र पढ़े—

दाहिनी ओर— ॥ ओम् पर्जन्याय नमः ॥

बायीं ओर— ॥ ओम् अशोकाय नमः ॥

॥ ओम् दक्षिण द्वारपालाभ्यां नमः ॥

।। ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयान्ता मोम् प्रतिष्ठ ।।

⊙ हाथ का शेष अक्षत कलशों पर छोड़ दे। कलशों पर द्वारपाल की पूजा कर दे।
चुपचाप = जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दे।

⊙ हाथ में जल ले—मंत्र पढ़े—

।। अनया पूजया दक्षिण द्वारपालौ प्रीयेतां न मम ।।

⊙ हाथ का जल कलशों के सामने छोड़ दे : हाथ जोड़ कर प्रार्थना कर ले—

।। दक्षिण द्वारपालौ क्षेमकर्त्तारौ-तुष्टिकर्तारौ वरदौ भवतम् ।।

⊙ आसन के नीचे जल छोड़ कर आसन सहित उठ कर पश्चिम द्वार पर आवे ।

३. पश्चिम द्वारपाल पूजन

⊙ पश्चिम द्वार पर आकर : पूर्व मुख आसन पर बैठे। आचमन-प्राणायाम करे।

⊙ दोनों खम्भों के पास २ कलश स्थापित करे।
[कलश स्थापन विधि परिशिष्ट में देखें] कलश स्थापन के बाद—

⊙ दोनों कलशों पर अक्षत छोड़ कर द्वारपालों का आवाहन करे।

दाहिनी ओर ।। ओम् भूतसंजीवनाय नमः ।।

बायीं ओर ।। ओम् अमृताय नमः ।। पश्चिम द्वारपालाभ्यां नमः ।।

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन्दधातु ।

विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मोम् प्रतिष्ठ ।।

⊙ कलश का पूजन कर दे : चुपचाप—जल-गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दे

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

।। अनया पूजया पश्चिमद्वारपालौ प्रीयेतां न मम ।।

⊙ हाथ का जल छोड़ दे : हाथ जोड़कर प्रार्थना कर ले—

।। पश्चिम द्वारपालौ क्षेमकर्त्तारौ-तुष्टिकर्त्तारौ वरदौ भवतम् ।।

⊙ आसन के नीचे जल छोड़ कर—आसन सहित उठ कर उत्तर द्वार पर आवे ।

४. उत्तर द्वारपाल पूजन

⊙ उत्तर द्वार पर आकर : पूर्व मुख आसन पर बैठे । आचमन-प्राणायाम करे ।

⊙ दोनों खम्भों के पास २ कलश स्थापित करे । कलश स्थापन के बाद

⊙ कलशों पर द्वारपाल का आवाहन करे । अक्षत छोड़े मन्त्र पढ़े—

दाहिनी ओर ।। ओम् धनदाय नमः ।।

बायीं ओर ।। ओम् श्रीप्रदाय नमः ।। ओम् उत्तर द्वारपालाभ्यां नमः ।।

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन्दधातु।
विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मोम् प्रतिष्ठ ॥

⊙ चुपचाप पूजन कर दे : जल-गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दे।

हाथ में जल लेकर कहे—

॥ अनया पूजया उत्तरद्वारपालौ प्रीयेतां न मम् ॥

⊙ हाथ का जल कलशों के सामने छोड़ दे : प्रार्थना करे—

उत्तर द्वारपालौ क्षेमकर्त्तारौ-तुष्टिकर्त्तारौ वरदौ भवतम् ॥

⊙ आसन के नीचे जल छोड़कर उठे।

॥ तोरण पूजन ॥

⊙ मण्डप के चारों द्वारा पर तोरण [बन्दनवार] बाँधे ओर उनकी पूजा करें

⊙ अथवा—चारों द्वार के तोरण को एक ही स्थान पर रख कर पूजन कर दे, पूजा के बाद चारों द्वार पर बंधवा दे,

⊙ पूजन विधि इस प्रकार है

॥ पूर्वद्वार तोरण ॥

⊙ यजमान अक्षत-फूल लेकर पूर्व द्वार के तोरण में आवाहन करे

॥ ओम् आयाहि वज्रसंघात पूर्व द्वार कृताधिप। ऋग्वेदाधिपते तुभ्यं सुशोभन नमोऽस्तुते ॥

प्राची तु दिशमाश्रित्य सुवृद्धो नामतोरणः । महावीर्यो महाकाय इन्द्रायुध समप्रभ ॥

एहि-एहि ऋग्वेदाधिष्ठित इन्द्र देवत्य शान्त अश्वत्थ सुवृद्ध तोरण एनं सत्रं रक्ष सर्व विघ्नान् निवारय ।

॥ ओम् सुवृद्ध तोरणाय नमः ॥

⊙ तोरण पर गन्ध-अक्षत-फूल छोड़कर पूजा कर दे ⊙ प्रार्थना करे—

॥ ओम् यथा मेरुगिरेः शृंगे देवनामालयः सदा । तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानिकोभव ॥

॥ दक्षिण द्वार तोरण पूजन ॥

⊙ अक्षत-फूल लेकर दक्षिण द्वार के तोरण में आवाहन करे—

॥ ओम् औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरण मुत्तमम् । रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्य स्मिन् सुखायनः ॥

॥ ओम् सुभद्र तोरणाय नमः ॥

⊙ गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ाकर पूजा कर दे ⊙ प्रार्थना करे—

॥ ओम् यथा मेरुगिरेः शृंगं देवानामालयः सदा । तथा त्वं मम सत्रेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव ॥

॥ पश्चिम द्वार तोरण पूजन ॥

⊙ अक्षत-फूल लेकर पश्चिम द्वार पर तोरण में आवाहन करे—

॥ ओम् प्लाक्षं च पश्चिमे भीमं तोरणं स्वर्ण सन्निभम् । रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्य स्मिन् सुखायनः ॥

॥ ओम् सुभीम तोरणाय नमः ॥

⊙ गन्ध-अक्षत-पुष्प चढ़ा कर पूजन कर दे ⊙ प्रार्थना करे—

॥ ओम् यथा मेरुगिरेः शृंगं देवानामालयः सदा ॥ तथा त्वं मम सत्रेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव ॥

॥ उत्तर द्वार तोरण पूजन ॥

⊙ अक्षत-फूल लेकर उत्तर द्वार तोरण में आवाहन करे—

॥ ओम् न्यग्रोध तोरण मिव उत्तरे च शशि प्रभम् । रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्य स्मिन् सुशोभितम् ॥

॥ ओम् सुहोत्र तोरणाय नमः ॥

⊙ अक्षत-फूल चढ़ाकर तोरण की पूजा कर दे ⊙ प्रार्थना करे—

॥ ओम् यथा मेरुगिरेः शृंगं देवानामालयः सदा । तथा त्वं मम सत्रेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव ॥

टिप्पणी ⊙ कुछ पद्धतियों में चारों द्वार पर तोरण पूजन के लिये २-२ कलश स्थापित करने को लिखा है। तोरण शाखा पूजन, त्रिशूल-शृंग पूजन, धातृ-भग-इन्द्र आदि पूजन का विधान तथा मौलिबन्धन आदि लिखा, यह सब विधि महामण्डप पूजन में होता है। महामण्डप पूजन के लिए इसी लेखक की "महामण्डप पूजन विधि" देखें।

॥ दिक्पाल पूजन ॥

⊙ द्वारपाल पूजन के बाद क्रमशः दिक्पालों का पूजन करे

१. ॥ पूर्व द्वार में ॥

⊙ सबसे पहले पूर्व द्वार पर आये ⊙ उत्तर की ओर मुख कर बैठे

⊙ आचमन-प्राणायाम करे ⊙ प्रतिज्ञा संकल्प करे ⊙ हाथ में कुश-अक्षत-जल लेकर कहे—

॥ अद्य शुभ पुण्य तिथौ गोत्रः………नामाऽहं करिष्यमाण देव प्रतिष्ठा कर्मणि मण्डप पूजनान्तर्गत दिक्पालानां पूजनं करिष्ये ॥

⊙ हाथ का अक्षत-जल-फूल सामने पृथिवी पर छोड़ दे

⊙ एक कलश स्थापित करे [कलश स्थापन विधि परिशिष्ट में देखें]

⊙ कलश स्थापन के बाद इसी कलश पर अक्षत छोड़कर इन्द्र का आवाहन करे—

॥ १ ॥ ओम् सयोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमम् पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ।
जहि शत्रून् रप मृधो नुदा स्वथा भयं कृणुहि विश्वतो नः ॥

॥ २ ॥ एहि-एहि सर्वामर सिद्ध संघै रभिष्टुतो वज्रधरा मरेश ।
संवीज्य मानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते ॥

।। ३ ।। गजस्कन्ध समारूढं वज्रहस्तं पुरन्दरम्। देवराजं सहस्राक्ष मिन्द्र मावाह याम्यहम् ।।

।। ओम् इन्द्राय नमः । इन्द्र मावाहयामि-पूजयामि ।।

⊙ चुपचाप = कलश पर इन्द्र की पूजा कर दे—

⊙ जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी पैसा चढ़ा दे ⊙ दाहिने हाथ में जल लेकर पढ़े—

।। अनया पूजया पूर्व दिक्पाल इन्द्रो देवः प्रीयतां न मम ।।

⊙ हाथ का जल कलश के सामने छोड़ दे। ⊙ हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

।। ओम् इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः । शत यज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमोनमः ।।

⊙ कलश के पास १ पीले रंग की झण्डी लगा दे। हाथ में जल लेकर पढ़े—

।। ओम् त्रातार मिन्द्र मवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुवह ꣳ शूर मिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूत मिन्द्र ꣳ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ।।

।। इमां पातकां पीतां च ध्वजं पीतं सुशोभितम् । आलभामि सुरेशाय शचीपत्यै नमोनमः ।।

⊙ हाथ का जल झण्डी के पास छोड़ दे। ⊙ झण्डी पर अक्षत छोड़ता हुआ; पढ़े—

।। ओम् कुमुदाक्षाय नमः । आवाहयामि-पूजयामि ।।

⊙ चुपचाप = झण्डी पर = जल-गन्ध-अक्षत-फूल-चढ़ा कर पूजा कर दे। ⊙ हाथ में जल लेकर पढ़े—

।। अनया पूजया प्रीयतां न मम ।।

⊙ जल झण्डी के पास छोड़ दे।

⊙ हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

।। ओम् इन्द्रस्तु सहसा दीप्तः सहदेवाधिपो भवेत् । वज्रहस्तो महाबाहुस्तस्मै नित्यं नमोनमः ।।

⊙ १ पत्ता पर थोड़ी-सी दही-उरद तथा १ घी की बत्ती जला कर कलश के पास रख दे । ⊙ हाथ में जल लेकर पढ़े—

।। ओम् इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय साधुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय दधिमाषभक्त बलिम् समर्पयामि ।

बलिं भक्ष । सत्रं रक्ष । मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु ।।

⊙ हाथ का जल कलश के पास छोड़ दे । ⊙ हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

माषभक्तबलिं देव गृहाणेन्द्र शचीपते । सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

⊙ आसन से उठे और अग्निकोण में आवे ।

२. ।। अग्निकोण में ।।

⊙ अग्निकोण में आकर—उत्तर की ओर मुँह करके बैठ जाय ।

⊙ आचमन-प्राणायाम करे ।। १ कलश स्थापित करे ।।

⊙ कलश स्थापन के बाद=इसी कलश पर अक्षत छोड़कर 'अग्नि" का आवाहन करे—

।। १ ।। ओम् त्वन्नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्न्वश्च वन्द्य ।

त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ᳙ रक्षमाणस्तव व्रते ।।

।। २ ।। एहि-एहि सर्वामर हव्यवाह मुनि प्रवीरै रभितोऽभिजुष्ट ।

तेजोवता लोकगणेन सार्धम् ममाध्वरं पाहि कवे ! नमस्ते ।।

।। ३ ।। शक्तिहस्तं ज्वलद्रूपं छागारूढं सुरोत्तमम् । आवाहयामि तज्ज्वलनं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।।

।। अग्नये नमः । अग्नि मावाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि ।।

⊙ चुपचाप कलश पर अग्निदेव की पूजा कर दे—

—जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दे । ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

।। अनया पूजया अग्निकोणस्य दिक्पाल अग्निदेवः प्रीयतां न मम ।।

⊙ हाथ का जल कलश के सामने छोड़ दे । ⊙ हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

।। सर्वतेजो मयश्चैव रक्तवर्णो महाबलः । शक्तिहस्तो महावीर्यो वैश्वानर नमोऽस्तु ते ।।

⊙ १ लाल झण्डी कलश के पास लगा दे ।

⊙ हाथ में जल लेकर पढ़े—

।। ओम् अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपा ᳪ रेता ᳪ सिजिन्वति ।।

⊙ हाथ का जल झंडी के सामने छोड़ दे ⊙ प्रार्थना करे—

।। पताका मग्नये रक्तां गन्धमाल्यादि भूषिताम् । स्वाहा युक्ताय देवाय ह्यालभामि हविर्भुजे ।।

⊙ झंडी पर अक्षत छोड़ कर "कुमुद" का आवाहन करे—

।। ओम् कुमुदाय नमः । आवाहयामि-पूजयामि ।।

६८३ ⊙ चुपचाप झण्डी का पूजा कर दे । गन्ध-अक्षत-पुष्प आदि चढ़ा दे ।

⊙ हाथ में जल लेकर पढ़े—

॥ अनया पूजया प्रीयतां न मम ।

⊙ जल हण्डी के पास छोड़ दे— ⊙ हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

॥ आग्नेय पुरुषोरक्तः सर्वदेव मयोऽव्ययः ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमोनमः ॥

⊙ १ पत्ता में=दही-उरद-घी की बत्ती जला कर=कलश के पास रख दे ।

॥ ओम् अग्नये सांगाय-सपरिवाराय-सायुधाय-सशक्तिकाय इमं संतोय दधिमाष भक्तिर्बलिं समर्पयामि ।
बलिं भक्ष, सत्रं रक्ष, मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु ॥

⊙ हाथ का जल कलश के सामने छोड़ दे ⊙ प्रार्थना करे—

॥ इमं माषबलिं देव गृहाणाग्ने हुताशन । सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदोभव ॥

⊙ आसन से उठे ⊙ दक्षिण द्वार पर आ जाय ।

३. ॥ दक्षिण द्वार पर ॥

⊙ दक्षिण द्वार पर आकर उत्तर मुख बैठ जाय । ⊙ आचमन-प्राणायाम करे ।

⊙ १ कलश स्थापित करें. ⊙ कलश स्थापन के बाद—

⊙ इसी कलश के ऊपर "यम" का आवाहन-पूजन करे । ⊙ अक्षत छोड़ कर आवाहन करे—

॥ १ ॥ ओम् यमाय त्वां गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पितृमते ॥

॥ २ ॥ एहि-एहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरै रचित धर्ममूर्त्ते ।

सुरा-सुराणा मधिप प्रजेश यमाय नः पाहि क्रतुं नमस्ते ॥

॥ ३ ॥ महामहिष मारूढं दण्डहस्तं महाबलम् । आवाहयामि सत्रेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥

यमाय नमः । यमम्-आवाहयामि-स्थापयामि ॥

⊙ चुपचाप यम की पूजा कर दे = जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दे ।

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

॥ अनया पूजया दक्षिण दिक्पाल देवता प्रीयतां न मम ॥

⊙ हाथ का जल कलश के सामने छोड़ दे ⊙ हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

॥ ओम् दण्डहस्तः कृष्णवर्णो धर्माध्यक्षो महाबलः । प्रेताधि पतये सततं धर्मराजाय ते नमः ॥

⊙ कलश के पास = १ काली झण्डी लगा दे ⊙ हाथ में जल लेकर पढ़े—

॥ ओम् यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे ।

देवस्त्वा सविता मध्वा नक्तु पृथिव्याः स ꣳ स्पृशस्पाही । अर्चि रसि शोचि रसि तपोऽसि ॥

॥ कृष्णवर्णा पताकां च कृष्णवर्णध्वजं तथा । अन्तका यालभा मीह सत्रकर्मणि साक्षिणे ॥

⊙ हाथ का जल झण्डी के पास छोड़ दे । ⊙ झण्डी पर अक्षत छिड़के = निम्नलिखित वाक्य पढ़े—

॥ ओम् पुण्डरीकाक्षाय नमः । आवाहयामि ॥ पूजयामि ॥

⊙ चुपचाप झण्डी की पूजा करदे=जल-गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दे। ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

।। अनया पूजया प्रीयतां न मम ।।

⊙ हाथ का जल झण्डी के पास छोड़ दे। प्रार्थना करे—

।। ओम् यमश्चोत्पल वर्णाभः किरीट वण्डधृक् सदा। धर्माध्यक्षो विशुद्धात्मा तस्मै नित्यं नमोनमः ।।

⊙ १ पत्ता पर=दही-उरद=१ घी की बत्ती जला कर कलश के पास रख दे। ⊙ हाथ में जल लेकर पढ़े—

।। ओम् यमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय दधि माषभक्तबलिं समर्पयामि।
बलिमक्ष, सत्रं रक्ष। मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु ।।

⊙ हाथ का जल कलश के पास छोड़ दे ⊙ प्रार्थना करे—

।। ओम् इमं माष बलिं देव गृहाणान्तक वै यम। सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

⊙ चुपचाप उठ कर नैर्ऋत्य कोण में आ जाय।

४. ।। नैर्ऋत्य कोण में ।।

⊙ नैर्ऋत्य कोण [दक्षिण-पश्चिम का कोण] में आकर उत्तर मुख बैठे। ⊙ आचमन-प्राणायाम करे।

⊙ १ कलश स्थापित करे। ⊙ कलश स्थापन के बाद ⊙ इसी कलश के ऊपर अक्षत छोड़ कर "निर्ऋति" का आवाहन करे—

।। १ ।। ओम् असुन्वन्तम यजमान मिच्छस्तेन स्येत्या यन्विहि तस्करस्य।
अन्य मस्म दिच्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।।

।। २ ।। ओम् एहि-एहि रक्षोगण नायकस्त्वं विशाल वेताल पिशाच संघैः ।
ममाध्वरं रक्ष शुभाधिनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते ।।

।। ३ ।। ओम् निर्ऋतिं खड्गहस्तं च सर्वलोकैक पावनम् । आवाहयामि सत्रेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।।
ओम् निर्ऋतये नमः । निर्ऋतिमावाहयामि । स्थापयामि ।।

⊙ पुष्पांजलि—निर्ऋति की पूजा कर दे—जल-गन्ध-अक्षत-फूल-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दे ।

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

।। अनया पूजया नैर्ऋत्य कोणस्य दिक्पाल निर्ऋतिदेवः प्रीयतां न मम ।।

⊙ हाथ का जल कलश के सामने छोड़ दे । ⊙ हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

।। यो वै यक्षाधिपो देवो निर्ऋतिर्नील विग्रहः । महाखड्गधरो नित्यं तस्मै निर्ऋतये नमः ।।

⊙ १ नीली झण्डी कलश के पास लगा दे । ⊙ हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़े—

।। १ ।। ओम् नमः सुते निर्ऋते तिग्म तेजोऽयस्मयं विचृता बन्धमेतम् ।
यमेन त्वं यम्या संविदानोत्तमे नाके अधिरोह यैनम् ।।

।। २ ।। ओम् पताकां निर्ऋतिश्चैव नीलवर्णध्वजं तथा । पिशाच गणनाथाय आलभामि ममाध्वरे ।।

⊙ हाथ का जल झण्डी के सामने छोड़ दे ।

⊙ झण्डी पर अक्षत छोड़ कर "वामन" का आवाहन करे—

।। ओम् वामनाय नमः । आवाहयामि । पूजयामि ।।

⊙ चुपचाप झण्डी पर = गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा कर पूजा कर दे । ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

।। अनया पूजया प्रीयतां न मम ।।

⊙ हाथ का जल झण्डी के पास छोड़ दे । ⊙ प्रार्थना करे—

।। ओम् निऋ॑तिस्तु पुमान् कृष्णः सर्वरक्षाधिपो महान् ।
खड्गहस्तो महासत्त्वस् तस्मै नित्यं नमोनमः ।।

⊙ १ पत्ता पर = दही-उरद-घी की बत्ती जला कर कलश के पास रखे ।

⊙ हाथ में जल लेकर कहे —

ओम् निऋ॑तये सर्वरक्षाधिपतये सांगाय-सपरिवाराय-सायुधाय-सशक्तिकाय इमं सतोय दधि माष भक्त बलिं समर्पयामि । बलिं भक्ष सत्रं रक्ष मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु ।।

⊙ हाथ का जल कलश के पास छोड़ दे । ⊙ प्रार्थना करे—

ओम् इमं माष बलिं यक्षो गृहाण निऋ॑ति प्रभो । सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

⊙ चुपचाप उठ कर पश्चिम द्वार पर आवे ।

५. ॥ पश्चिम द्वार पर ॥

⊙ पश्चिम द्वार पर आकर पूर्व मुख बैठ जाय । ⊙ आचमन-प्राणायाम करे ।

⊙ १ कलश स्थापित करे । कलश स्थापन के बाद ⊙ इसी कलश पर अक्षत छोड़ कर "वरुण" का आवाहन करे—

॥ १ ॥ ओम् वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः । करतां नः सुराधसः ॥

॥ २ ॥ ओम् एहि-एहि पाथोगण नायकस्त्वं गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः ।
विद्याधरेन्द्रो रग गीयमान पाहि त्व मस्मान् भगवन्नमस्ते ॥

॥ ३ ॥ ओम् शुद्ध स्फटिक संकाशं जलेशं यादसां पतिम् । आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम् ॥
॥ वरुणाय नमः । वरुणमावाहयामि । स्थापयामि ॥

⊙ चुपचाप वरुण की पूजा कर दे — जल-गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दे ।

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

॥ अनया पूजया पश्चिम द्वारपाल वरुणदेवः प्रीयतां न मम ॥

⊙ हाथ का जल कलश के सामने छोड़ दे । ⊙ हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

ओम् वरुणः सोऽचलो विष्णुः पुरुषो निम्नगाधिपः । पाश हस्तो महातेजस्तस्मै नित्यं नमोनमः ॥

⊙ १ सफेद झण्डो कलश के पास लगा दे ।

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ।।

श्वेतवर्णाम् पताकां च ध्वजं श्वेतमयं शुभम् ।। वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाप्तये ।।

⊙ हाथ का जल झण्डी के पास छोड़ दे । ⊙ झण्डी पर अक्षत छोड़ कर "शंकुकर्ण" का आवाहन करे—

।। ओम् शंकुकर्णाय नमः ।। आवाहयामि । पूजयामि ।।

⊙ चुपचाप = झण्डी पर गन्ध-अक्षत-पुष्प चढ़ा कर पूजा कर दे । ⊙ हाथ में जल लेकर कहे -

।। अनया पूजया प्रीयतां न मम ।।

⊙ हाथ का जल झण्डी के पास छोड़ दे । ⊙ प्रार्थना करे—

।। पाशहस्तस्तु वरुणः साम्भसां पतिरीश्वरः ।। ।। पद्मिनी जीवनाथो हि तस्मै नित्यं नमोनमः ।।

⊙ १ पत्ता पर = दही-उरद १ घी की बत्ती जला कर कलश के पास रखे । ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

ओम् वरुणाय निम्नगाधिपतये सांगाय-सपरिवाराय-सायुधाय-सशक्तिकाय इमं सतोय दधि माषभक्त वलिं समर्पयामि । वलिं भक्ष-सत्रं रक्ष-मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु ।।

⊙ हाथ का जल कलश के पास छोड़ दे । ⊙ प्रार्थना करे—

।। माषभक्तवलिं देव गृहाण निम्नगाधिप ।। सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

⊙ चुपचाप उठ कर वायव्य कोण में आ जाय ।

६. ॥ वायव्य कोण में ॥

⊙ वायव्य कोण में [पश्चिम-उत्तर का कोना] आकर पूर्व मुख बैठे। ⊙ आचमन-प्राणायाम करे।

⊙ १ कलश यथाविधि स्थापित करे। कलश स्थापन के बाद— ⊙ इसी कलश पर अक्षत छोड़कर "वायु" का आवाहनकरे —

॥ १ ॥ ओम् वातो वा मनोवा गन्धर्वाः सप्तवि ꣳ शतिः अग्रेऽश्व मयुञ्जस्ते ऽअस्मिन् जव मा दधुः ॥

॥ २ ॥ एहि-एहि श्राद्धे मम रक्षणाय मृगाधिरूढ़ः सह सिद्ध संघैः।
प्राणाधिपः कालकवेः सहायो गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

॥ ३ ॥ अनाकारं महौजश्च सर्वगन्धवहं प्रभुम्। आवाहयामि सत्रेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥
ओम् वायवे नमः। वायुमावाहयामि। स्थापयामि ॥

⊙ चुपचाप वायु की पूजा कर दे।

⊙ जल-गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दे। ⊙ हाथ में जल लेकर कहे —

॥ अनया पूजया वायव्यकोण दिक्पाल वायुदेवः प्रीयतां न मम ॥

⊙ हाथ का जल कलश के पास छोड़ दे। ⊙ प्रार्थना करे —

॥ ओम् सर्वप्राणाधिपो नित्यं सर्वजन्तु व्यवस्थितः। ध्वजहस्ते मेघवर्णश्च तस्मै नित्यं नमोनमः ॥

⊙ १ धूम्ररंग [धुएं के रंग की] झण्डी कलश के पास लगा दे।

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

॥ ओम् वायुरग्ने गा यज्ञ प्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम् । शिवो नियुद्भिः शिवाभिः ॥

पताकां वायवे धूम्रां धूम्रवर्णध्वजं तथा । आलभा म्यनुरुपाय प्राणदाय हिताय च ॥

⊙ हाथ का जल झण्डी के पास छोड़ दे । ⊙ झण्डी पर अक्षत छोड़ कर "सर्वनेत्र" का आवाहन करे—

॥ ओम् सर्व नेत्राय नमः । आवाहयामि-पूजयामि ॥

⊙ चुपचाप झण्डी पर गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दे । ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

॥ अनया पूजया प्रीयतां न मम ॥

⊙ हाथ का जल झण्डी के पास छोड़ दे । प्रार्थना करे—

ओम् वातस्तु सर्ववर्णो यः सर्वगन्ध वहः शुचिः । पुरुषो ध्वज हस्तश्च तस्मै नित्यं नमोनमः ॥

⊙ १ पत्ता पर=दही-उरद (घी की बत्ती जला कर कलश के पास रखे । ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

ओम् वाताधिपाय सर्वप्राणाधिपतये सांगाय-सपरिवाराय सायुधाय-सशक्तिकाय इमं सतोय दधि माष भक्त वलिं समर्पयामि । वलिं भक्ष-सत्रं रक्ष-मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु ॥

⊙ हाथ का जल कलश के पास छोड़ दे । ⊙ प्रार्थना करे—

ओम् माषभक्त वलि वायो मया दत्त गृहाण भो । सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

⊙ चुपचाप उठ कर उत्तर द्वार पर आकर बैठें ।

७. ।। उत्तर द्वार पर ।।

⊙ उत्तर द्वार पर आकर पूर्व मुख बैठे। ⊙ आचमन-प्राणायाम करे।

⊙ १ कलश यथाविधि स्थापित करे। ⊙ कलश स्थापन के बाद—

⊙ इसी कलश के ऊपर अक्षत छोड़ कर "सोम-कुबेर" का आवाहन करे—

।। १ ।। ओम् वय ७ँ सोमव्रते तवमनस्तनूषुविभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ।

।। २ ।। एहि-एहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत् नक्षत्र गणेन सार्धम् ।
सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।।

।। ३ ।। यक्षस्कन्ध समारूढं गदाहस्तं महाबलम् । आवाहयामि देवेशं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।।

⊙ चुपचाप = कलश पर सोम-कुबेर की पूजा कर दे—

⊙ जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दे। ⊙ हाथ में जल लेकर पढ़े—

।। अनया पूजया उत्तरदिक्पाल सोम कुबेरदेवः प्रीयतां न मम ।।

⊙ हाथ का जल कलश के सामने छोड़ दे। ⊙ प्रार्थना करे—

।। ओम् गौरोपम पुमान् स्थूलः सर्वौषधि रसादयः । नक्षत्राधिपतिः सोमः तस्मै नित्यं नमो नमः ।।

⊙ १ सफेद झण्डी कलश के पास लगा दे।

⊙ हाथ में जल लेकर पढ़े—

ओम् कुविदंग यवमन्तो यवं चिद् यथा दान्त्यनुपूर्वम् वियूय ।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ।।
श्वेतवर्णाम् पताकां च श्वेतवर्णमयं ध्वजम् । सोमाया लभाम्येव पूजये च सदार्थिना ।।

⊙ हाथ का जल झण्डी के पास छोड़ दे । ⊙ झण्डी पर अक्षत छोड़ कर "सुमुख" की पूजा करे ।

ओम् सुमुखाय नमः । सुमुखमावाहयामि । पूजयामि ।।

⊙ चुपचाप=झण्डी पर गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दे । ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

।। अनया पूजया प्रीयतां न मम ।।

⊙ हाथ का जल झण्डी के पास छोड़ दे । ⊙ प्रार्थना करे—

ओम् गौरस्त्वं च युगे जातः सर्वौषधि समन्वित । नक्षत्राधिपतिः सौम्यः तस्मै नित्यं नमो नमः ।।

⊙ १ पत्ता पर=दही-उरद-१ घी की बत्ती जला कर कलश के पास रखे । ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

ओम् नक्षत्राधिपतये सोमाय सांगाय-सपरिवाराय-सायुधाय-सशक्तिकाय इमं सतोयमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।
बलिं भक्ष-सत्रं रक्ष । मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु ।।

⊙ हाथ का जल पत्ता के पास छोड़ दे । ⊙ प्रार्थना करे—

माषभक्त बलिं देव गृहाण त्वं धनप्रद । सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

⊙ चुपचाप उठ कर ईशान कोण में आ जाय ।

८. ॥ ईशान कोण में ॥

⊙ ईशान कोण (उत्तर पूर्व का कोना) में आकर पूर्व मुख बैठे। ⊙ आचमन-प्राणायाम करे।

॥ १ कलश यथाविधि स्थापित करे ।

⊙ कलश स्थापन के बाद— ⊙ इसी कलश के ऊपर अक्षत छोड़कर "शिव" (ईशान) का आवाहन करे—

॥ १ ॥ ओम् तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्व मवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसा मसद्वृधे रक्षिता पायु रदब्धः स्वस्तये ॥

॥ २ ॥ एहि-एहि विश्वेश्वर सिद्धसंघैस् त्रिशूलखट्वांग धरेणसार्धम् ।
लोकेश भूतेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

॥ ३ ॥ सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम् । आवाहये तमीशानं लोकाना मभय प्रदम् ॥

ओम् शिवाय नमः । ईशानाय नमः । आवाहयामि-पूजयामि ॥

⊙ चुपचाप—शिव-ईशान की पूजा कर दे— जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दे।

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

॥ अनया पूजया ईशान कोण दिक्पाल ईशान देवता प्रीयतां न मम ॥

⊙ हाथ का जल कलश के पास छोड़ दे— ⊙ हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

ओम् सर्वदेवाधिपो देवः ईशानः शुक्ल विग्रहः । शूलपाणि विरुपाक्षो तस्मै नित्यं नमोनमः ॥

⊙ १ सफेद झण्डी=कलश के पास लगा दे। ⊙ हाथ में जल लेकर पढ़े—

॥ १ ॥ ओम् अभित्वा शूरनो नुमोऽदुग्धा इवा धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृश ईशानमिन्द्रतस्थुषः॥

॥ २ ॥ ओम् ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां समनोहराम्। आलभामि महेशाय वृषारुढाय शूलिने॥

⊙ हाथ का जल झण्डी के पास छोड़ दे ⊙ झण्डी पर अक्षत छोड़ कर "ईशान" का आवाहन करे—

ओम् ईशानाय नमः। ईशान मावाहयामि-पूजयामि॥

⊙ चुपचाप=झण्डी पर गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दे। ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

॥ अनया पूजया प्रीयतां न मम॥

⊙ हाथ का जल झंडी के पास छोड़ दे। ⊙ प्रार्थना करे—

ओम् ईशानः पुरुषः शुक्लः सर्वदेवाधिपो महान्। शूलहस्तो विरूपाक्षस्तस्मै नित्यं नमोनमः॥

⊙ १ पत्ता पर=दही-उरद-घी की बत्ती जला कर कलश के पास रख दे। ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

ओम् ईशानाय सर्वदेवाधिपतये सांगाय-सपरिवाराय-सायुधाय-सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्त वलिं समर्पयामि। वलि भक्ष-सत्रं रक्ष-मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु॥

⊙ हाथ का जल पत्ता के पास छोड़ दे। ⊙ प्रार्थना करे—

ओम् इमं माष वलिं देव गृहाणेशान शंकर। सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

⊙ चुपचाप उठ कर=नैऋत्य कोण और पश्चिम द्वार के मध्य में बैठे।

९. ।। नैऋत्य-पश्चिम के मध्य ।।

⊙ नैऋत्य कोण और पश्चिम द्वार के बीच पूर्व मुख बैठ जाय । ⊙ आचमन-प्राणायाम करे ।

।। १ कलश स्थापित करे ।।

⊙ कलश स्थापन के बाद— ⊙ इसी कलश पर अक्षत छोड़ कर "अनन्त" का आवाहन करे—

।। १ ।। ओम् नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

।। २ ।। एहि-एहि पाताल धराधरेन्द्र नागांगना किन्नर गीयमाना ।
यक्षो रगेन्द्राप्सर लोकसंघै रनन्त रक्षाध्वर मस्मदीयम् ।।

।। ३ ।। निःशेष जगदाधार मशेष सुर पूजितम् । आवाहयामि सत्रेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।।
ओम् अनन्ताय नमः । अनन्तमावाहयामि - पूजयामि ।।

⊙ चुपचाप कलश पर अनन्त की पूजा कर दे—जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दे ।

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

।। अनया पूजया अनन्तदिक्पालदेवता प्रीयतां न मम ।।

⊙ हाथ का जल कलश के सामने छोड़ दे ⊙ हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

।। ओम् पन्नागाधिपतिर्देव अनन्तो नाम धूम्रक । पाताले वसते नित्य मनन्ताय नमो नमः ।।

⊙ १ धूम्रवर्ण की झंडी—कलश के पास लगा दे ।

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

।। ओम् ये वामीरोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु । येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

।। मेघवर्णाम् पताकां च मेघवर्णं ध्वजं तथा । आलभामि ह्यनन्ताय धरिणी धारिणे नमः ।।

⊙ हाथ का जल खंडी के पास छोड़ दे । ⊙ खंडी पर अक्षत छोड़ कर "धाता" का आवाहन करे—

ओम् धात्रे नमः । आवाहयामि—पूजयामि ।।

⊙ चुपचाप खण्डी की पूजा कर दे—गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दे । ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

।। अनया पूजया प्रीयतां न मम ।।

⊙ हाथ का जल खंडी के पास छोड़ दे । ⊙ प्रार्थना करे—

ओम् इदं योऽनन्तरूपेण ब्रह्माण्डं सचराचरम् । पुष्पवद् धारयेन् मूर्ध्नि तस्मै नित्यं नमोनमः ।।

⊙ १ पत्ता पर=दही-उरद-१ घी की बत्ती जला कर कलश के पास रखे । ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

ओम् अनन्ताय सर्व यज्ञाधिपतये सांगाय-सपरिवाराय-सायुधाय-सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्त वलि समर्पयामि । वलि-भक्ष, सत्रं रक्ष-मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु ।।

⊙ हाथ का जल कलश के पास छोड़ दे । ⊙ प्रार्थना करे—

ओम् इमं माष वलिं शेष गृहाणानन्तपन्नग । सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

⊙ चुपचाप उठ कर पूर्व में आवे ।

१०. ॥ पूर्व द्वार और ईशान कोण के बीच ॥

⊙ पूर्व में ईशान कोण और पूर्व द्वार के बीच उत्तर की ओर मुख करके बैठे। ⊙ आचमन-प्राणायाम करे।

॥ १ कलश यथाविधि स्थापित करे ॥

⊙ कलश स्थापन के बाद। ⊙ इसी कलश पर अक्षत छोड़ कर "ब्रह्मा" का आवाहन करे—

॥ १ ॥ ओम् ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः।
सबध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः ॥

॥ २ ॥ एहि-एहि विश्वाधिपते सुरेश लोकेन सार्धम् पितृदेवताभिः।
सर्वस्य धाताऽस्यमित प्रभावो विश्वाध्वरं नः सततं शिवाय ॥

॥ ३ ॥ श्वेतहंस समारूढं पद्मयोनिं जगद् गुरुम्। आवाहयामि सत्रेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥
ओम् ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि-पूजयामि ॥

⊙ चुपचाप कलश पर ब्रह्मा की पूजा करे। ⊙ जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दे।

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

॥ अनया पूजया ब्रह्मा दिक्पालदेवः प्रीयतां न मम ॥

⊙ हाथ का जल कलश के पास छोड़ दे। ⊙ प्रार्थना करे—

ओम् पद्मयोनिश्चतुर्मूर्तिर्वेदाधारः पितामहः। यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मै नित्यं नमोनमः ॥

⊙ १ लाल झंडी—कलश के पास लगा दे।

⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

।। ओम् ब्रह्मात इन्द्र गिर्वणः क्रियन्ते अनतिद् भुता । इमा जुषस्व हर्यश्व योजनेन्द्र याते अमन्महि ।।
पद्मवर्णाम् पताकां च पद्मवर्णध्वजं तथा । आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणेऽनन्त शक्तये ।।

⊙ हाथ का जल झंडी के पास छोड़ दे । ⊙ झंडी पर अक्षत छोड़ कर विधाता की पूजा करे ।

।। ओम् विधात्रे नमः । तम् आवाहयामि-पूजयामि ।।

⊙ चुपचाप=झंडी पर—गन्ध-पुष्प-अक्षत छोड़ कर पूजा कर दे ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

।। अनया पूजया प्रीयतां न मम ।।

⊙ हाथ का जल झंडी के पास छोड़ दे । ⊙ प्रार्थना करे—

ओम् पातालकुसुमाकारो ब्रह्मसर्वार्थ सूत्रधृक् । सर्वलोक पतिर्ज्येष्ठस्तस्मै नित्यं नमोनमः ।।

⊙ १ पत्ता पर—दही-उरद-१ घी की बत्ती जला कर कलश के पास रखे । ⊙ हाथ में जल लेकर कहे—

ओम् ब्रह्मणेसर्वलोकाधिपतये सांगाय-सपरिवाराय-सायुधाय-सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्त
वलिं समर्पयामि । वलिं भक्ष-सत्रं रक्ष । मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु ।।

⊙ हाथ का जल पत्ता के पास छोड़ दे । ⊙ प्रार्थना करे—

ओम् इमं माष वलिं ब्रह्मन् गृहाण कमलासन । सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

।। इति दिक्पाल पूजन ।।

।। शिवमन्दिर में घंटानाद ।।

⊙ शिव मन्दिर में द्वार पर एक घंटा भी टांगा जाता है, कुछ लोग उसकी भी पूजा करते हैं—यह लोकाचार है।

⊙ मन्दिर के बाहरी द्वार पर अथवा मन्दिर के भीतर जहां घंटा टांगना हो उस स्थान पर रोड़ी, अक्षत, फूल छोड़कर पूजा कर दे।

⊙ घंटा तथा जंजीर [जिसमें घंटा टंगेगा] दोनों अपने सामने किसी पत्तल पर रख कर यजमान पंचोपचार पूजन कर दें।

⊙ घंटा को यथास्थान टांग कर फिर गन्धाक्षत-पुष्प चढ़ा दे। ⊙ शिव जी की प्रसन्नता के लिए घंटा बजा दें।

।। विशेष निवेदन ।।

इस पुस्तक में यथासन्दर्भ पुरुष सूक्त, रुद्र सूक्त, देवी सूक्त—आदि तथा चक्रों के मुद्रण का उल्लेख परिशिष्ट के लिए किया गया है, किन्तु पुस्तक का आकार बढ़ता ही जा रहा है और पुस्तक का मूल्य भी अधिक हो जायगा। अतः लाघव की दृष्टि से परिशिष्ट में इन सब को नहीं छापा गया है। यथासन्दर्भ परिशिष्ट में देखें—पढ़कर भ्रम नहीं करेंगे। इसीलिए यह विशेष निवेदन करना पड़ रहा है।

⊙ ⊙ ⊙

।। प्रतिष्ठा सामग्री ।।

⊙ मूर्त्ति प्रतिष्ठा के लिए जो पूजन आदि सामग्री की आवश्यकता होती है, यथाज्ञान उसे यहां लिख रहा हूँ।

⊙ यह सामग्री सूची एकत्र करने की सुविधा को दृष्टि में रखकर लिखी गयी है।

⊙ इसमें मंडपनिर्माण जलयात्रा-मंडपप्रवेश वेदी पूजन-जलाधिवास-अन्नाधिवास-शय्याधिवास-शिवपार्वतीविवाह-हवन शिखर कलश-स्नान आदि जितने कृत्य होते हैं, उसमें जो-जो सामग्री लगती है, सबको एकत्र कर एक स्थान पर लिख दिया है, जिससे यजमान को सामग्री खरीदने-इकट्ठी करने में सुविधा हो सके।

⊙ सभी सामग्री एकत्र कर लें, जहां जरूरत हो वहाँ उपयोग करना चाहिए।

।। पूजन सामग्री ।।

रोड़ी — १०० ग्राम
अबीर-गुलाल २५ ग्राम
रंग—काला-पीला-हरा-लाल १-१ पुड़िया
[सर्वतोभद्र का चावल रंगने के लिए]
धूपबत्ती २ पैकेट
सुपारी १०० नग
कलावा २०० ग्राम

सूखी पीसी हलदी— १०० ग्राम
सिन्दूर २५ ग्राम
सुतली—[मंड़प बाधने हेतु अंदाज से]
हवन सामग्री ५ पैकेट बड़ा
कपूर १०० ग्राम
जनेऊ १ दर्जन
पंचमेवा २०० ग्राम

गरी का गोला — २ नग

बताशा — २५० ग्राम

रूई — २५ ग्राम

चंदन घिसा हुआ

लाल सूत — १ मीटर [तीन ताग कर के]

पीला सूत [२०० स्नान कलशों में बांधने भर के नाप का]

लौंग फूलदार १०

सूखा नारियल ५

मिठाई १ किलो

शहद ५०० ग्राम

सफेद कच्चा सूत [मन्दिर के चारो ओर लपेटने के लिए तीन ताग कर के]

इलायची १०

॥ तेल ॥

तिल का तेल ५० ग्राम सरसों का तेल ५० ग्राम सुगन्धित तेल ५० ग्राम इत्र १ छोटी शीशी

गुलाब जल १ छोटा बोतल

॥ पेड़ की पत्ती ॥

आम की पत्ती बंदन वार तथा फुटकर अधिक मात्रा में, पीपल, गूलर, पाकड़, बरगद, शमी, चम्पा, अशोक, पलास, बेल, अर्जुन, कदम्ब, जामुन, सेमर की पत्ती = २५-२५; केला का पत्ता ५

॥ पेड़ की छाल ॥

जामुन, सेमर, बैर, खिरंटी, मोलसिरी १००-१०० ग्राम

॥ फल ॥

केला, जलदार नारियल, बेल, नारंगी, मीठा नींबू, चकोतरा २-२, अन्य कोई २ प्रकार के फल = २-२ ५ प्रकार के ५ फल चढ़ाने के लिए, केला २ दर्जन फुटकर चढ़ाने के लिए

॥ जल ॥

गंगाजल अथवा शुद्ध जल [पूजा के लिए], नारियल का जल २ छटांक के अंदाज, ईख का रस २ छटाक के अंदाज, गो की सींग धोकर जल २ छटाक के अंदाज, पांच वृक्षों की छाल धोकर जल १ पाव के अंदाज, सोना धोकर जल २ छटांक के अंदाज, रत्न धोकर जल २ छटांक के अंदाज, समुद्र जल अथवा खारा कुंआ का जल २ छटांक के अंदाज, तीर्थ का जल २ छटांक के अंदाज, आठ फल धोकर जल २ छटांक के अंदाज

॥ पान-फूल ॥

सादा पान १००, लगा पान ५ बोड़ा, माला फूल २०, सादा फूल दो अंजुली, सफेद फूल १००, चमेली फूल १० कुंद का फूल १०, सेंवार १ मूठी [नदी-तालब की घास], तुलसी २५ पत्ती, दूब १ मूठी

॥ शय्या सामग्री ॥

१ छाता, १ छड़ी, १ शीशा, १ जोड़ा खड़ाऊं, १ पंखा, १ दीवट, १ आसन, १ घन्टी, १ घन्टा, १ घड़ियाल, १ शंख, १ चंदन होरसा, अन्य गृहस्थी सामान

॥ पंचगव्य-पंचामृत ॥

पंचामृत [बनाकर-अलग रख ले] [दूध-दही-घी-शहद-चीनी-तुलसी मिला कर], गो दूध-गो मूत्र-गो घृत-गो दधि-गो घी-पांचों को मिला कर १ कुल्हड़ में, घी-१। पाव दशदान के लिए, गो दूध-गो दही-गो घी-गोबर-गो मूत्र अलग-अलग १-१ पियाला में, गोबर २ तोला [गोबर जमीन पर नहीं गिरा हो], भस्म १ मूठी [किसी यज्ञ अथवा हवन की राख], घी दीपक जलाने के लिए, घी हवन के लिए

॥ औषधि ॥

सफेद चन्दन, लाल चन्दन, कूट, जटामासी, हरदी, काल्हहरदी, मुर्रा, वच, चम्पक, नागर मोथा, भटकटैया, गोरोचन, पद्मक, शंख पुष्पी, गुरिच, घी कुमार, अदरक, आमला का चूर्ण, बेल का चूर्ण, सहदेवी, सोंठ, विष्णुक्रान्ता, हड़ताल, पारा, शिलाजीत = १०-१० ग्राम, सतावर ५० ग्राम, गुग्गुल ५० ग्राम, केशर १० ग्राम, कस्तूरी १० ग्राम

॥ अन्न ॥

गेहूँ का आटा १ पाव, चावल का आटा १० ग्राम, मसूर का आटा १० ग्राम, जवा का आटा १० ग्राम, सरसों का उबटन १० ग्राम, पीली सरसों १०० ग्राम, काली तिल १ किलो [धोकर सुखा लें], काली उरद १ पाव, जवा ३॥ किलो [धोकर सुखा लें], खड़ा अन्न [मूर्त्तियों को ढंकने भर के लिए], चावल ३ किलो [धोकर सुखा लें], चीनी १ किलो, खीर १ पाव, पूड़ी ५, सेतुवा १० ग्राम, लावा १० ग्राम, पका चावल [भात], सावां १० ग्राम [अलग से], गुड़ २ पाव, सेंधा नमक १। पाव

सप्तधान्य ७ प्रकार का अनाज सब मिलाकर १ किलो [गेहूँ-जवा-चना-मूंगा-सावां-ककुनी-तिल]

नोट—जवा, तिल, चावल हवन के लिए तथा अन्य फुटकर कामों के लिए हैं, आवश्यकतानुसार अलग कर लेना चाहिए।

॥ मिट्टी तथा मिट्टी के पात्र ॥

२५ ईंटा हवन वेदी के लिए, २ तसला शुद्ध मिट्टी हवन वेदी के लिए, २०० कुल्हड़ [स्नान-कलशों तथा फुटकर कार्यों के लिए], ५० पियाला, सप्तमृत्तिका [सात स्थानों की मिट्टी, १ हाथी, २ घोड़ा, ३ रथ, ४ गौ के नीचे की ५ विमौर, ६ तालाब, ७ चौराहा की मिट्टी १-१ मूठी], १ गगरी, १ कच्ची हांड़ी, २५ पत्तल

॥ काठ का सामान ॥

१ शय्या [मूर्तियों के लिए], २५ बांस [मण्डप बनाने के लिए], आम की लकड़ी, ५ किलो [हवन के लिए] नवग्रह की लकड़ी [मदार, पलाश, चिचड़ी, पीपल, गूलर, शमी, दूब, कुशा], ४ बांस की छड़ी २-२ हाथ लम्बी [प्रधान पीठ पर चदवा बाधने के लिए], ४ बांस [शय्या में चदवा बाधने हेतु], ६ बांस की छड़ी १-१ बीता लम्बी [नवग्रह झंड़ी लगाने हेतु], १ बांस बड़ा [झंडा के लिए], १ काठ की चौकी [प्रधान पीठ के लिए] ६ काठ की चौकी [नवग्रह, षोडश मातृका, सप्तमातृका, ६४ योगिनी, क्षेत्रपाल, वास्तु पीठ के लिए], १ काठ का पीढ़ा [घृत मातृका के लिए], ३ गूलर की चौकी [स्नान पीठ के लिए]

॥ वस्त्र ॥

५ धोती पांचों कलशो के लिए, ५ अगोछा पांचों कलशो के लिए, ३ धोती वर्ण के लिए, ३ अगोछा वर्ण के लिए, ९ झंडी [२ लाल, २ हरी, २ काली, २ सफेद, १ पीली—१-१ बीता की], झंडा लाल टून का गोटा आदि लगा कर [आधा मीटर का], लाल टून १ मीटर अलग से चदवा बाधने हेतु, सफेद कपड़ा ४ मीटर पीठों पर बिछाने हेतु तथा अन्य कार्यों के लिए, १ लाल चदवा शय्या पर चदवा बाधने हेतु, शय्या पर ओढ़ने-बिछाने का बिस्तर, रेशमी पीला कपड़ा १ मीटर, मूर्त्तियों को पहनाने के लिए वस्त्र तथा अलंकार, पीला कपड़ा १ मीटर, सफेद कपड़ा

मूर्त्तियों के नीचे बिछाने तथा ओढ़ाने हेतु ३ जगहों के लिए [छोटी-बड़ी मूर्त्ति के हिसाब से], १ मीटर कपड़ा— मूर्त्तियों को पोछने हेतु, ऊन का टुकड़ा—१-१ बीता का जितनी मूर्त्तियां हों, लाल वस्त्र—मूर्त्तियों में लपेटने हेतु, आचार्य के लिए वस्त्र-उपवस्त्र—दशदान के लिए

॥ बरतन ॥

५ गगरा कलश हेतु, ३ लोटा वर्ण हेतु, १ लोटा कर्मपात्र पूजन जल हेतु, ५ कटोरी कलशों के मुख पर को, १ कटोरी छोटी प्रधान पर स्वर्ण मूर्त्ति रखने के लिए, १ परात १ गेडुवा—शिवपार्वती की पौपूजी हेतु, १ लोटा या बगौना, [पूर्ण पात्र के लिए], १ कटोरा आज्य स्थाली के लिए, बड़े पात्र —जिसमें मूर्त्तियों का जलाधिवास होगा, ४ लोहे का कीला [नागफनी वाला], १ तांबे की लोटिया या लोटा मडप हेतु अर्धपात्र, १ कांसे की थाली अग्नि लाने हेतु, शिव मन्दिर हों तो १ घण्टा तथा घण्टा लटकाने के लिए जंजीर, १ तांबे की कटोरी [तिल पात्र दश दान के लिए], १ कटोरी [घृतपात्र दशदान के लिए]

॥ प्रतिमा ॥

पंचरत्नी—सोना, चांदी, तांबा-पीतल, मूंगा—१-१ टुकड़ा=५ जगह, सुवर्ण प्रतिमा—सर्पाकार वास्तु की, सुवर्ण प्रतिमा—क्षेत्रपाल की, सुवर्ण प्रतिमा—महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती की, सुवर्ण प्रतिमा— प्रधान देव की, चांदी का १ कच्छप [कछुवा], चांदी की कटोरी नेत्रोन्मोलन हेतु, सोने की सलाई नेत्रोन्मीलन हेतु, सुवर्ण दान— के लिए यथा शक्ति, चांदी दान—के लिए यथा शक्ति

कृपया—यथाज्ञान सामग्री लिखी गयी है, आवश्यकतानुसार अपने आचार्य से यथा समय दिखा लेना चाहिए, संशोधन करा लेना चाहिए

इति

श्री श्रीधर शास्त्री कृत

प्रतिष्ठा प्रकाश पद्धति

समाप्त

⊙

शास्त्री प्रकाशन, प्रयाग द्वारा प्रकाशित कर्मकांड की पुस्तकें

१. वेदीपूजन
२. प्रतिष्ठा प्रकाश
३. देव प्रतिष्ठा विधि
४. विवाह संस्कार विधि
५. उपनयन संस्कार विधि
६. मूल शान्ति विधि
७. गृह प्रवेश पद्धति
८. शिलान्यास पद्धति
९. श्रीमद्भागवत सप्ताह पूजन विधि
१०. कलश प्रतिष्ठा पद्धति
११. दीपावली पूजन पद्धति
१२. एकादशी व्रतोद्यापन विधि
१३. रुद्राष्टाध्यायी तथा अभिषेक विधि
१४. माघमासेशय्यादान विधि
१५. गोदान पद्धति
१६. तुलादान पद्धति
१७. वैदिक हवन पद्धति
१८. दशगात्र विधि
१९. मध्य षोडशी श्राद्ध विधि
२०. वृषोत्सर्ग श्राद्ध पद्धति
२१. आद्यश्राद्ध पद्धति
२२. एकादशाह और सपिण्[illegible]
२३. रुद्राष्टाध्यायी विभा हिन्दी टीका सहित
२४. पंचक शान्ति विधि
२५. त्रयोदशाह विधि
२६. वार्षिक श्राद्ध पद्धति
२७. एकोद्दिष्ट श्राद्ध पद्धति
२८. पावर्ण श्राद्ध पद्धति
२९. अशौच शान्ति हवन विधि
३०. सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली
३१. जन्म तिथौ वर्धापन संस्कार विधि
३२. हरितालिका तीज व्रतोद्यापन विधि
३३. नारायणबलि प्रयोग विधि
३४. शतचण्डी विधान
[illegible]
३६. त्रिपिण्डी श्राद्ध
३७. ग्रह मेल मिलापक
३८. षष्ठवर्गीय कुंडली कैसे बनायें
३९. कोठा भरने की विधि
४०. हवन विधि हवन के मंत्र